(ब्रज लोकगीतन पै विवेचनात्मक लेख अरु लोकगीत)

सम्पादक

मोहनलाल मधुकर

राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी

118, वसुंधरा कॉलोनी, टोंक रोड, जयपुर

विसै सूची

प्रकासकीय

"ब्रज बाँसुरी" ब्रजलोकगीतन पै समीक्षात्मक लेखन की सामग्री कौ अछूतौ और अनूठौ संकलन है। हमैं देश के कौने कौने सौं प्रवुद्ध लोक साहित्यकारन के इतेक लेख मिले कै हम कृतकृत्य है गए। इन समीक्षात्मक लेखन में लोकगीतन के उदाहरन दैकैं शोध परक सामग्री तैयार करी गई है।

कछू पन्नान में लोकगीतन की वानगी है। या सामग्री में दो तरियाँ के लोकगीत हैं एक तौ लोक प्रचलित जिनके रचयितान के कोऊ अते पते नाएँ। दूसरे वे लोकगीत हैं, जो नए सृजनशील गीत कारन नैं लिखे हैं। इनके ये लोकगीत आज नहीं तौ कल सवन के होठन पै चढ़िंगे।

हमैं ब्रजलोकगीतन की विपुल सामग्री और मिली है। वा सामग्री कूँ या संकलन में हमारे दैवे की प्रवल इच्छा ही पर हम कारनवस नहीं दै पा रहे हैं। जव वा सामग्री कूँ निरखौ परखौ गयौ तौ खरी नहीं उतरी। संकलनकर्तान नैं वड़े श्रम सौं संकलन करौ है पर टेपरिकार्डर सौं जो लोकगीत टेप करे हैं विनकूँ जा काहू नैं लिपिवद्ध करौ तौ कहूँ न कहूँ खामी रह गई। याही सौं विनकौ अर्थ खत्म है गयौ है।

मेरौ अनुरोध है कै ब्रज लोक गीतन कौ लोक में अपार भंडार विखरौ परौ है। गर्भ सौं लैकैं मरण तक के न जानैं कितेक लोकगीत हर अंचल में विखरे परे हैं। जरुरत है विनकूँ सही रूप में लिपिवद्ध करवौ। यह काम आसान नाहै अति कष्ट साध्य है। पर, करवेवारे कूँ आसान हू है। व्याह वरौंद में रात रात भर जागरण होय जाए रतजगौ कहैं। स्वाभाविक ढंग सौं नारी कंठ सौं निसृत गीतन कूँ टेप आसानी सौं करौ जा सकै। सावधानी या वात की रखनी है कै टेप सौं लिपिवद्ध सही सही करौ जाए।

"ब्रज वाँसुरी' में आवद्ध लेख ब्रजभाषा साहित्य की अमोल निधि हैं। इन शोध परक लेखन सौं शोधार्थीन के सामई नए आयाम खुलिंगे। वे और उत्साह सौं ब्रजलोकगीतन पै अपनी लेखनी चलाइंगे। नए लोकगीत कार नए गीत लिखिंगे।

अन्त में ब्रज वाँसुरी के ताईं जिन ब्रजलोक साहित्यकारन नैं अपनी अमोल निधि भेंट करी है उनके प्रति हृदय सौं आभार।

होरी 23.3.97

गोपालप्रसाद मुद्गल

सम्पादकीय...............

लोकमानस की सहज सनातन समवेत स्वर लहरी की अनुगूँज भरे ब्रज लोकगीतन की पोथी 'ब्रज-बांसुरी' आपके हाथन में सौंपते भए अपार आनन्द कौ अनुभव है रह्यौ है। साँची पूछौ तौ लोक-मानस गहरी लोकानुभूति सौं लबालब भरिकैं उपटिबे लगै, भाव-विभोर है कैं सहज भाव सौं समवेत स्वरन में कछू गाइ उठै, बुही सरस लोकगीत बनि जाय। लोकगीतन माँहि मन-सुमेरु सौं निकसे ऐसे निर्मल निर्झरन कौ सहज स्वर मिलै है जो उछरि-उछरि कैं जन-मन कूँ अपार आनंद सौं आप्लावित करि डारै है। लोकगीतन की लय सौं लहरातौ-बलखातौ, उठतौ-गिरतौ लोकजीवन भावनान के उद्गारन सौं तन-मन प्रान, स्वास-प्रस्वास अरु रक्त प्रवाह कूँ तरंगित करतौ रहै है। साँचौ अरु सपूरौ लोकजीवन लोकगीतन कौ आधार है।

लोकजीवन के ये लोकगीत गाइबे कूँ होंय, हिलिमिलि कैं गाइबे कूँ। लोकजीवन की सहृदयता, सुकुमारता, निर्मलता अरु भाव-विह्वलता लोकगीतन में ही छलकै है, स्पंदित होइ है। लोकगीतन में जैसी सरलता, सरसता अरु सहजता मिलै है, वैसी और कहूँ नाँय मिलै। बनावटीपन सौं तौ लोकगीत कोसन दूरि रहैं हैं।

लय, माधुर्यभाव अरु भावना लोकगीतन के मुख्य तत्व हैं। लोकगीत लोक-मानस की सहज, सरल अरु अबाध अभिव्यक्ति हैं, लोकमुख की मधुर बानी हैं। बिनमें लोच होइ, जीवन्तता होइ, सहज भावनान कौ आवेग होइ, छन्द-व्याकरन अरु रीति के बन्धनन सौं मुक्ति होइ। मानव-समाज सधी-सुधरी भाषा की ठौर अपनी-अपनी बोलीन माँहि लोकगीतन कूँ गामतौ रह्यौ है, यासौं लोकगीतन की लोकभाषा अपनी शैली में निराली, शब्दन में अनगढ़ अरु उच्चारन में आंचलिकता सौं भरी भई होय।

लोकभाषा माँहि लोकानुभूतीन के व्यक्त हैबे के कारन लोकगीतन कौ लोकमानस पै बहौत गहरौ प्रभाव परै है। ये तत्काल लोकहिरदे के आरपार है जांय अरु लोकमानस- पटल पै अमिट छाप छोड़ैं हैं। जो बात लोकगीत की एक कड़ी में कही जाइ सकै है बापै सैकरान शब्दन की लम्बी कविता या पोथी हू व्यक्त नाँय करि सकै। लोकगीत के माध्यम सौं जो भाव बड़ी आसानी सौं लोगन के गरे उतरि जाय यु काऊ और साहित्य-विधा के माध्यम सौं कैसैंऊ नाँय भावै।

जि वड़े परेखे की वात है कै युग विसेस की काहू विवसता के कारन जन-मन नैं लोकगीतन कौ अलिखित अरु मौखिक रहवौआवस्यक मानि लियौ। काहू युग में लोकगीतन कूँ हाथोंहाथ लिखिकैं निश्चित शव्दन में बाँधिवे की, विनकूँ स्थिर रूप दैवे की चिन्ता नाँय करी गई। या कारन लोकगीत समै-समै पै न्यारे-न्यारे व्यक्तिन सौं प्रभावित हौंत रहे हैं। विनमें कछू गंगाजल अरु कछू मेह कौ पानी मिलतौ रह्यौ है। यासौं लोकगीत मौखिक हौंते भए हू अपने रूप कौ निरन्तर परिवर्तन, परिवर्धन अरु परिशोधन करत रहे हैं। भाषा वहते नीर की तरियाँ प्रगति-पथ-गामिनी होइ। वाकौ रूप सदां एक सौ नाँय रहै। सो जन-मन की रुचि अरु युग-प्रवाह के अनुसार लोकगीतन की भाषा हू अदलती-वदलती रही है। तौऊ शैली अरु भाषा कौ भेद हौंते भए हू इन असंख्य लोकगीतन की आत्मा अभिन्न है।

लोकगीतन की परंपरा अलिखित अरु अनाम रही है। विनके सिरजनहार कौ कछू अतौ-पतौ नाँय चलै, या कारन लोकगीतन में विनके रचवैया की निजी रुचि न हैकैं, लोकजीवन की व्यापक भावानुभूतीन कौ उद्वेलन अरु मानव के समूहगत भावन की अभिव्यक्ति मिलै है। वे लोकमंगल की भावना सौं परिपूरन होंइ, चेतन अरु जड़ सवकी हित-कामना सौं अनुप्राणित रहैं। लोकगायक याई व्यापक आत्मीयता की भावनान में तरंगायित हैकैं गाइ उठें हैं। यासौं वे लोक-समुदाय की अनुपम धरोहर हैं, लोक की अनमोल सम्पत्ति हैं, जन-जन की वेजोड़ थाती हैं, कवहूँ न छीजिवे वारे रस के निर्झर हैं। वे जन-भावनान के छलकते भए ऐसे कुल्लड़ हैं जिनके होठन पै उतरते ही जन-मन-मयूर मदमातौ हैकैं समवेत स्वरन में गाइ उठै है, सव सुधि-वुधि भूलिकैं नांचिवे लगि जाय।

लोकगीतन कूँ लोकजीवन के मंत्र कहौ गयौ है। लोकगीतन में संवेदनशीलता के संग-संग वेद-मंत्रन कौ सौ मन्दौ-मन्दौ सम्मोहन होइ जो अपनी सरल लय-गति सौं मन-मस्तक पै छाइवे लगै है। विनकी गेयता में शव्दन की ठौर स्वर, लय, ध्वनि, स्पन्दन, उतार-चढ़ाव अरु मूल लोकगीतन कौ मन्द, मध्दम लय-विधान याकौ प्रमान है। लोकगीतन में साहित्य,संगीत, कलात्मक सुन्दरता; जो कछू ढूँढौगे, सोई पाऔगे।

लोक-जीवन कूँ उल्लास, आनन्द अरु उत्साह वहौत भावै है। लोकगीत इनही भावन सौं ओतप्रोत होंय। लोकगीतन सौं दुख हलकौ है जाय, सुख दूनौ वढ़ि जाय अरु मेहनत की थकान महसूस ही नाँय होय। या कारन लोक-जीवन सौं लोकगीतन कूँ निकासि दियौ जाय तौ जीवन सूनौ-सूनौ रह जायगौ, निरर्थक अरु बेकार लगिवे लगैगौ।

जिन दिनान में आजु जैसै नाना प्रकार के खेलकूद अरु मनोरंजन के आधुनिक वैज्ञानिक साधन नाँय हते। बिन दिनान में मेले-ठेले, कुश्ती-दंगल अरु लोकगीत-संगीत सम्मेलन के आयोजन ही मन वहलाइवे के उत्तम माध्यम हे। वसंत रितु, होरी,दिवारी अरु न्यारे-न्यारे त्यौहारन के, उच्छवन के औसरन पै इनकौ आयोजन होयौ करतौ। लोकगीत सम्मेलन इन आयोजन कौ सिरमौर रहतौ। आजहू लोकगीत ख्याल, दंगल, रसिया सम्मेलन, भजन-जिकड़ी, फूलडोल, आल्हा, ढोला-राँझा गायकी,

नौटंकी खेल आदि के आयोजन देखिबे-सुनिबे कूँ मिल जाँय हैं। इन आयोजनन में ढोलक, सारंगी, बाँसुरी, इकतारा, चिकाड़ा, खरताल, डंडा, नगाड़े आदि साज-बाजन पै लोकगायक लोकगीतकार अपनी उत्तमोत्तम रचनान कौ हिलमिलकैं गायन करैं हैं, नाचकूद सौं अपनी कला कुसलता में निखार लावैं हैं। इन औसरन पै इकठौरी जनसमूह लोकगीतकार के सुमधुर स्वरन सौं आनन्द विभोर है-है जाइ। लोककवि की कही भई कहन घर-घर माँहि गहराई लौं घर करि जायौ करै है। तबई तौ लोक साहित्य के न्यारे-न्यारे रूपन में लोकगीतन कौ सबसौं ऊँचौ स्थान है।

आनंद सौं उमंगित है कैं गुनगुनाइबौ अरु गाइबौ मानव कौ सहज स्वभाव है। यासौं जाहिर होइ कै लोकगीत उतने ही प्राचीन हैं, जितनी मनुष्य जाति। या कारन लोक-मानस सुदूर अतीत माँहि जब-जब आनंदित, उल्लसित, उमंगित अरु हिलोरित भयौ होइगौ, तब-तब वाके हिरदे के लयबद्ध स्वर अनायास मुखरित भये होंइगे अरु बिन्नें लोकगीतन कौ रूप धारन कियौ होइगौ। तबई तौ लोकगीतन माँहि लोक की युग-युगीन पावन वाणी की साधना समाहित रही है। विनमें लोकरुचि, लोकरीति अरु लोकनीति की त्रिवेनी कौं अनूठौ संगम हू देखिबे कूँ मिलै है।

लोकगीतन माँहि देस की सभ्यता के विकास कौ, वाके जीवन की गतिविधीन कौ अरु सांस्कृतिक धरातल के न्यारे-न्यारे स्तरन की मनोरम झांकी मिलै है। लोकगीत अपने युग के लोक-सत्य कौ सूधौ-सच्चौ उद्घाटन करैं हैं। लोकगीतन सौं युगीन जातीय जीवन के सच्चे सुख-चैन की झलक मिलै है, हिरदे की चुभन अरु कसक कौ पतौ चलै है। लोकगीतन माँहि लोक-मनोविज्ञान के अध्ययन कौ बहौत सौ माल-मसालौ भर्यौ पर्यौ है।

पच्छिमी देसन के विद्वानन्नें भारत कूँ लोकगीतन कौ देस बतायौ है। फिर ब्रज की तौ कहनौं ही कहा! जहाँ 'डार-डार अरु पात-पात पै राधे-राधे होइ' है। यौं तौ संसार की सिगरी भाषा-बोलीन माँहि लोकगीतन की अटूट परम्परा रही है परि ब्रजभाषा सी मिठलौनी और कोऊ भाषा नाँय। जिही कारन है कै ब्रज लोकगीतन कौ अमिट प्रभाव सिगरे देस पै, सब भाषा-बोलीन पै पर्यौ है।

ब्रज लोकगीतन के स्वरन सौं वातावरन इतनौ सुन्दर, सुमधुर अरु सरस है जाय कै कछू कही नांय जाय सकै। ब्रज-लोकगीतन कौ क्षेत्र इतनौ व्यापक है कै बिनसौं कोऊ महत्वपूर्न विषय अछूतौ नाँहि रह्यौ। इन गीतन के महासागर माँहि गोता लागइबे पै नाना प्रकार के रत्नन की प्राप्ति होइ है। ब्रज लोकगीत सुख-दुख, हास-परिहास-रुदन, हर्ष-विषाद, आसा-निरासा, उत्थान-पतन, इच्छा-अनिच्छा, संजोग-वियोग, राग-विराग अरु मनन-चिन्तन के ताने-बानेन सौं बुने भये स्वरमय वितान हैं। बिनकी बनावट-बुनावट, रचना-कौशल अरु शिल्प-विधान सब कछू 'सहज' हौंते भये हू कलात्मक है। इतने पै हू ब्रज लोकगीतन पै कला सवारी नाँय तानि सकी। जौ कबौसुरन की कृपा सौं कहूँ लोकगीतन पै कला सवार है गई तौ लोकगीतन में लोकगीतपन ही नहीं रहैगौ, अकेलौ कला के ही दर्सन हैंये लगिंगे जैसौ हाल-बेहाल हमारे पक्के संगीत कौ हौंतौ जाइ रह्यौ है। कोकि [illegible]-कंठी कामिनीन के स्वर-माधुर्य में मिलिकैं लोकगीत तौ पहलैं ई संगीत के सर्वोत्तम सरूप हैं, फिरि विनपै कला थोपिबे कौ उपक्रम नहीं हौनौ चहिए।

जि वड़े परेखे की वात है कै युग विसेस की काहू विवसता के कारन जन-मन नैं लोकगीतन कौ अलिखित अरु मौखिक रहवौआवस्यक मानि लियौ। काहू युग में लोकगीतन कूँ हाथोंहाथ लिखिकैं निश्चित शब्दन में बाँधिवे की, विनकूँ स्थिर रूप दैबे की चिन्ता नाँय करी गई। या कारन लोकगीत समै-समै पै न्यारे-न्यारे व्यक्तिन सौं प्रभावित हौंत रहे हैं। विनमें कछू गंगाजल अरु कछू मेह कौ पानी मिलतौ रह्यौ है। यासौं लोकगीत मौखिक हौंते भए हू अपने रूप कौ निरन्तर परिवर्तन, परिवर्धन अरु परिशोधन करत रहे हैं। भाषा वहते नीर की तरियाँ प्रगति-पथ-गामिनी होइ। बाकौ रूप सदां एक सौ नाँय रहै। सो जन-मन की रुचि अरु युग-प्रवाह के अनुसार लोकगीतन की भाषा हू अदलती-बदलती रही है। तौऊ शैली अरु भाषा कौ भेद हौंते भए हू इन असंख्य लोकगीतन की आत्मा अभिन्न है।

लोकगीतन की परंपरा अलिखित अरु अनाम रही है। विनके सिरजनहार कौ कछू अतौ-पतौ नाँय चलै, या कारन लोकगीतन में बिनके रचवैया की निजी रुचि न हैकैं, लोकजीवन की व्यापक भावानुभूतीन कौ उद्वेलन अरु मानव के समूहगत भावन की अभिव्यक्ति मिलै है। वे लोकमंगल की भावना सौं परिपूरन होंइ, चेतन अरु जड़ सबकी हित-कामना सौं अनुप्राणित रहैं। लोकगायक याई व्यापक आत्मीयता की भावनान में तरंगायित हैकैं गाइ उठें हैं। यासौं वे लोक-समुदाय की अनुपम धरोहर हैं, लोक की अनमोल सम्पत्ति हैं, जन-जन की बेजोड़ थाती हैं, कबहूँ न छीजिबे वारे रस के निर्झर हैं। वे जन-भावनान के छलकते भए ऐसे कुल्लड़ हैं जिनके होठन पै उतरते ही जन-मन-मयूर मदमातौ हैकैं समवेत स्वरन में गाइ उठै है, सब सुधि-बुधि भूलिकैं नांचिबे लगि जाय।

लोकगीतन कूँ लोकजीवन के मंत्र कह्यौ गयौ है। लोकगीतन में संवेदनशीलता के संग-संग वेद-मंत्रन कौ सौ मन्दौ-मन्दौ सम्मोहन होइ जो अपनी सरल लय-गति सौं मन-मस्तक पै छाइबे लगै है। विनकी गेयता में शब्दन की ठौर स्वर, लय, ध्वनि, स्पन्दन, उतार-चढ़ाव अरु मूल लोकगीतन कौ मन्द, मध्दम लय-विधान याकौ प्रमान है। लोकगीतन में साहित्य,संगीत, कलात्मक सुन्दरता; जो कछू ढूँढौगे, सोई पाऔगे।

लोक-जीवन कूँ उल्लास, आनन्द अरु उत्साह वहौत भावै है। लोकगीत इनही भावन सौं ओतप्रोत होंय। लोकगीतन सौं दुख हलकौ है जाय, सुख दूनौ वढ़ि जाय अरु मेहनत की थकान महसूस ही नाँय होय। या कारन लोक-जीवन सौं लोकगीतन कूँ निकासि दियौ जाय तौ जीवन सूनौ-सूनौ रह जायगौ, निरर्थक अरु वेकार लगिवे लगैगौ।

जिन दिनान में आजु जैसै नाना प्रकार के खेलकूद अरु मनोरंजन के आधुनिक वैज्ञानिक साधन नाँय हते। विन दिनान में मेले-ठेले, कुश्ती-दंगल अरु लोकगीत-संगीत सम्मेलन के आयोजन ही मन वहलाइवे के उत्तम माध्यम हे। वसंत रितु, होरी,दिवारी अरु न्यारे-न्यारे त्यौहारन के, उच्छवन के औसरन पै इनकौ आयोजन होयौ करतौ। लोकगीत सम्मेलन इन आयोजन कौ सिरमौर रहतौ। आजहू लोकगीत ख्याल, दंगल, रसिया सम्मेलन, भजन-जिकड़ी, फूलडोल, आल्हा, ढोला-राँझा गायकी,

नौटंकी खेल आदि के आयोजन देखिबे-सुनिबे कूँ मिल जाँय हैं। इन आयोजनन में ढोलक, सारंगी, बाँसुरी, इकतारा, चिकाड़ा, खरताल, डंडा, नगाड़े आदि साज-बाजन पै लोकगायक लोकगीतकार अपनी उत्तमोत्तम रचनान कौ हिलमिलकैं गायन करैं हैं, नाचकूद सौं अपनी कला कुसलता में निखार लावैं हैं। इन औसरन पै इकठौरौ जनसमूह लोकगीतकार के सुमधुर स्वरन सौं आनन्द विभोर है-है जाइ। लोककवि की कही भई कहन घर-घर माँहि गहराई लौं घर करि जायौ करै है। तबई तौ लोक साहित्य के न्यारे-न्यारे रूपन में लोकगीतन कौ सबसौं ऊँचौ स्थान है।

आनंद सौं उमंगित है कैं गुनगुनाइबौ अरु गाइबौ मानव कौ सहज स्वभाव है। यासौं जाहिर होइ कै लोकगीत उतने ही प्राचीन हैं, जितनी मनुष्य जाति। या कारन लोक-मानस सुदूर अतीत माँहि जब-जब आनंदित, उल्लसित, उमंगित अरु हिलोरित भयौ होइगौ, तब-तब वाके हिरदे के लयबद्ध स्वर अनायास मुखरित भये होंइगे अरु बिन्नैं लोकगीतन कौ रूप धारन कियौ होइगौ। तबई तौ लोकगीतन माँहि लोक की युग-युगीन पावन वाणी की साधना समाहित रही है। बिनमें लोकरुचि, लोकरीति अरु लोकनीति की त्रिवेनी कौ अनूठौ संगम हू देखिबे कूँ मिलै है।

लोकगीतन माँहि देस की सभ्यता के विकास की, वाके जीवन की गतिविधीन की अरु सांस्कृतिक धरातल के न्यारे-न्यारे स्तरन की मनोरम झांकी मिलै है। लोकगीत अपने युग के लोक-सत्य कौ सूधौ-सच्चौ उद्घाटन करैं हैं। लोकगीतन सौं युगीन जातीय जीवन के सच्चे सुख-चैन की झलक मिलै है, हिरदे की चुभन अरु कसक कौ पतौ चलै हैं। लोकगीतन माँहि लोक-मनोविज्ञान के अध्ययन कौ बहौत सौ माल-मसालौ भर्यौ पर्यौ है।

पच्छिमी देसन के विद्वानन्नें भारत कूँ लोकगीतन कौ देस बतायौ है। फिर ब्रज कौ तौ कहनौं ही कहा! जहाँ 'डार-डार अरु पात-पात पै राधे-राधे होइ' है। यौं तौ संसार की सिगरी भाषा-बोलीन माँहि लोकगीतन की अटूट परम्परा रही है परि ब्रजभाषा सी मिठलौनी और कोऊ भाषा नाँय। जिही कारन है कै ब्रज लोकगीतन कौ अमिट प्रभाव सिगरे देस पै, सब भाषा-बोलीन पै पर्यौ है।

ब्रज लोकगीतन के स्वरन सौं वातावरन इतनौ सुन्दर, सुमधुर अरु सरस है जाय कै कछू कही नांय जाय सकै। ब्रज-लोकगीतन कौ क्षेत्र इतनौ व्यापक है कै बिनसौं कोऊ महत्वपूर्न विषय अछूतौ नांहि रह्यौ। इन गीतन के महासागर माँहि गोता लागइबे पै नाना प्रकार के रत्नन की प्राप्ति होइ है। ब्रज लोकगीत सुख-दुख, हास-परिहास-रुदन, हर्ष-विषाद, आसा-निरासा, उत्थान-पतन, इच्छा-अनिच्छा, संजोग-वियोग, राग-विराग अरु मनन-चिन्तन के ताने-बानेन सौं बुने भये स्वरमय वितान हैं। बिनकी बनावट-बुनावट, रचना-कौशल अरु शिल्प-विधान सब कछू 'सहज' हौंते भये हू कलात्मक है। इतने पै हू ब्रज लोकगीतन पै कला सवारी नाँय तानि सकी। जौ कवीसुरन की कृपा सौं कहूँ लोकगीतन पै कला सवार है गई तौ लोकगीतन में लोकगीतपन हो नहीं रहैगो, अकेली कला के ही दर्सन ह्वैबे लगिंगे जैसौ हाल-बेहाल हमारे पक्के संगीत कौ हौंतौ जाइ रह्यौ है। कोकि न-कंठी कामिनीन के स्वर-माधुर्य में मिलिकैं लोकगीत तौ पहलैं ई संगीत के सर्वोत्तम सरूप हैं, फिरि बिनपै कला थोपिबे कौ उपक्रम नहीं हौनौ चहिए।

ब्रज लोकगीतन की विविधता अरु बहुलता कौ कछू ठिकानौं नाँय। लोक-जीवन कौ ऐसौ कोऊ पहलू नाँय जो ब्रज-लोकगीतन की परिधि में न आयौ होइ। हाँ, इतनौ जरूर है कै ब्रज लोकजीवन की समग्र झाँकी करिबे वारेन कूँ ब्रजभाषा के संगमरमरी घाट पै पहौंचिकैं लोकगीतन के स्वर-सागर में गहरे गोता लगामने परिंगे। ब्रजवासी तौ ऐसे औसरन की बाट देखतेई रहैं हैं जब वे उच्छवन पै, पर्वन पै, अनुष्ठानन पै लोकगीतन के माध्यम सौं अपने सहज संगीत कौ परिचै दै सकैं। साँची पूछौ तौ सरस, सरल, मधुर अरु सहज-स्वाभाविक लोकगीत ब्रजभाषा अरु ब्रजवासीन की अनमोल निधि हैं।

ब्रज लोकगीत जीवन के सिगरे उच्छवन में, कामन में, धामन में अरु हरेक बात में इतेक घुरिमिलि गये हैं कै लोकगीतन के बिना ब्रज में कोऊ काम खूबी सौं हैई नाँय सकै। परम्परा सौं चले आये पुराने ब्रज लोकगीतन की बेलि बढ़ती ही जाइ रही है। परिवार अरु पारिवारिक भाव-सम्बन्धन सौं ब्रज लोकगीतन कौ तानौं-बानौं निरन्तर बुन्यौ जाइ रह्यौ है। अबहू नित नये लोकगीतन कौ सृजन सहज भाव सौं है रह्यौ है। याके तांई साधुवाद है हमारी मैया-बहनान कूँ,बहू-बेटीन कूँ जिन्नें लोकगीतन के माध्यम सौं हमारी सभ्यता अरु संस्कृति के पुराने मान-मूल्यन कूँ अपने कल-कंठन माँहि चिर-संचित राख्यौ है। विन्नें ही लोकगीतन कूँ एक पीढ़ी सौं दूजी पीढ़ी लौं पहौंचायौ है।

या प्रसंग में एक विपरीतता की ओर हमें ध्यान जरूर दैनौं परैगौ। पच्छिमी प्रचार-माध्यमन सौं आये पछुवा हवा के अन्धड़ सौं हमारे सूधे-साँचे भाव, हमारे लोकगीतन कौ कच्चौ माल तेजी सौं छीजतौ जाइ रह्यौ है। विदेसीपन के लदान अरु सनेमा-टी. वी.-जी.टी.वी.-स्टार टी. वी. अरु जानैं काहे-काहे के उल्टे असरन सौं हमारे लोकमानस के सहज-सनातन-समवेत भावना कौ सागर सिमटतौ जाइ रह्यौ है। आजकाल की नई नवेली बहून कूँ अरु छोरी-छापरीन कूँ बूढ़ी-बड़ीन के परम्परागत संस्कारगीत नांइ सुहामें अरु वे दूरि हटिकैं नई तर्जन के नये गीत गढ़ि कैं अपने फूहड़ आधुनिकता-प्रेम कौ परिचै दैवे लगी हैं।

हमारे लोकगीतन की सबसौं ज्यादा रेढ़ पीटिवे कौ काम करि रहे हैं सनेमा के वेतनभोगी कलाकार, जो लोकगीतन के नाम पै स्टूडियोन में कटी-छटी बानी की अपनी 'मिठास' कौ मोल माँगैं हैं, लोकगीतन की धुनन में विकार पैदा करैं हैं। सनेमा के सितारेन के अरु तारिकान के बनावटी प्रेम अरु प्रत्यारोपित 'दिल' सौं लोकजीवन की सच्चाई कैसैं प्रगट है सकै है?

जिही कारन है कै सनेमा के तथाकथित लोकगीत चाहैं कछू दिनान कूँ झूँठी लोकप्रियता भलैंई पाइलैं, वे हमारे लोकगीतन की पटतरि पै कबहू नांइ पहौंचि सकैं। बिनमें लोक-मानस की साँची झलक थोरेई मिलै है। हमें सावधान रहनौं चाहिए कै ये देसी-विदेसी विपरीत प्रभाव हमारे लोकगीतन के निर्मल निर्झरन कूँ कहूँ सुखाइ नहीं डारैं।

जैसैं लोकगीत जनमानस के प्रतिबिम्ब होंइ, वैसैं ही लोकगीतकार आम जनता के सच्चे प्रतिनिधि। लोकगीतन की विसेसतान कूँ अपनाइबे वारे रचनाकार जन-मन के पारखी कौ हू काम करैं

हैं। विनपै लोकहित कौ यहौत कछू दायित्व निर्भर रहै है। लोक की समसामयिक समस्यान कूँ सुरझाइवे के ताँई वे जन-जन कूँ जगाइवे कौ जतन करैं हैं। जो लोकगीतकार जादा सौं जादा जनता के हियें कौ हार वनि सकैं वुही साँचौ लोककवि अरु लोकगीतकार कह्यौ जाइ सकै है। लोकगीतकारन के रचे लोकगीतन कौ तानौ-वानौ काहू न काहू परम्परागत परिपाटी पै आधारित होइ। लोकगीतकार की लोकप्रियता अरु सफलता कौ सवसौं वड़ौ सवूत जिही है कै जहाँ कहूँ लोकगीतकार लोककवि पहौंचि जाय वहाँ वाके मनभावने लोकगीतन कूँ सुनिवे के ताँई मेलौ सौ लगि जाय।

जन-जीवन कूँ प्रभावित करिवे वारी परिस्थितीन के अनुसार लोकगीतन की रचना चिरकाल सौं होंती रही है। जव जन-जीवन के उतार चढ़ाव लोकगीतकार के हिरदे कूँ स्पंदित करदें तव वाकौ हिरदै भावोद्रेक सौं उद्वेलित है कैं स्वानुभूतीन कूँ शव्दन माँहि गूँथिकैं गाइ उठै अरु या तरियाँ एक नये लोकगीत कौ जनम है जाय। समसामयिक घटना एक-एक करिकैं नित नये लोकगीतन कौ रूप धारिकैं जन-जन में व्याप्त होंती रहैं। या प्रकार सौं ज्ञात रचनाकारन के लोकगीतन कूँ विकसनशील लोकगीतन की गिनती में लियौ जाइ सकै है। इन लोकगीतन में हू लोकमानस की सहज अभिव्यक्ति के अलावा न कोऊ वनावट लखाई परै, न विसेस सजावट।

गांम-गांम में ऐसे लोकगीतन के स्वनामधन्य गायक पासी, डूम, भाट, राय, चारण, जोगी, भोपा, भगत, वनजारे आदि प्रसिद्ध रहे हैं। ये समसामयिक लोकगीतन के रचनाकार माने जाँय अरु समै-समै पै न्यारी-न्यारी विधान के नये लोक साहित्य कौ सृजन करत रहैं हैं। घाघ, भड्डरी, ईसुरी, पतोला, शिवराम, इन्दरमल, चिरंजीलाल, नथाराम, घासीराम, पातीराम, खिच्चू आटेवारौ, मटोलसिंह दुलैया, कोमल सिंह आदि व्रज के ऐसे जाने-माने लोककवि भए हैं जिन्नें श्रेष्ठ लोकसाहित्य अरु उत्तमोतम लोकगीतन की रचना करी है।

'व्रज वांसुरी' माँहि व्रज लोकगीतन सौं सम्वंधित शोध परक अरु समीक्षात्मक लेखन के अलावा कछू परम्परित लोकगीतन की वानिगी के संग-संग आजु के लोकगीतकारन के रचे भये नये चल्ला के लोकगीत हू दिए जाइ रहे हैं। व्रज के इन नये लोकगीतकारन की मेधा लोकमानस सौं पूरी तरियाँ जुरी भई है। ये लोककवि लोकमानस की संवेदनान कूँ व्रजभाषा में वड़ी मनोरमता अरु ईमानदारी सौं व्यक्त करि रहे हैं। इन नये लोकगीतन में जन-मन कौ सहज-स्वाभाविक चित्र खैंच्यौ गयौ है। साँचौ पूछौ तौ इन लोकगीतन में हमारे समै की झंकार है, व्यक्ति की पुकार है, समाज सुधार की गुहार है अरु धर्म की मनुहार है। इनसौं पतौ चलै है कै लोकमानस की अनुभूति-चाहै सुख की होइ या दुख की, सदा उन्मुक्त रहै है। वामें मर्यादा कूँ कोऊ ठौर-ठिकानौ नाँइ होइ। ऐसी सूरत में इन नये लोकगीतन में मानुस-मन की सिगरी रागात्मक प्रवृत्तीन कौ खुलिकैं वर्नन भयौ है।

इन लोकगीतन कौ संगीत परम्परागत परिपाटी पै आश्रित है। लोकगीतकारन्नैं इन गीतन की रचना काहू न काहू तान या लय के आधार पै करी है। लयबद्धता इन गीतन की प्रमुख विशेषता है। इनमें न्यारी-न्यारी धुन हैं, अलग-अलग राग हैं। शैली के अटपटेपन के कारन हरेक लोकगीत अपनी विसेस पहचान बनाइवे वारौ है। नये चल्ला के इन लोकगीतन में अनेकन लोकछंद देखे जाइ सकैं हैं, जैसैं-मल्हार, लाँगुरिया, सपरी, होरी, रसिया, आल्हा, भजन आदि।

लोकगीतन कौ क्षेत्र बड़ौ व्यापक रह्यौ है। या ग्रंथ में हू भक्ति, नीति, सिंगार, हास-परिहास, वीर विषयक लोकगीतन के अलावा श्रीकृष्ण की विविध लीलान सौं लैकैं साक्षरता महिमा, पर्यावरण-सुधार अरु संरक्षण, परिवार-नियोजन; बाल विवाह, दहेजप्रथा, सट्टा,लाटरी, फैसनपरस्ती कौ विरोध, देसप्रेम, स्वदेसी में आस्था, श्रम की महत्ता, नसाबन्दी, नारी-जागृति, भ्रष्टाचार, घूसखोरी, चोरबजारी, उग्रवाद, आतंकवाद, राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव आदि विषयन के लोकगीत हैं।

लोकगीतकारन के ये लोकगीत जन-मानस कूँ प्रभावित करिवे की पूरी छमता राखैं हैं। साँची पूछौ तौ लोककवि की एक चुटकी जनता के पत्थर दिल कूँ हू पिघलाइ सकै है। हमारी आजादी की लड़ाई में देसभक्तन कूँ अपनौ सर्वस्व निछावर करिवे की प्रेरना लोककविन के रचे लोकगीतन सौं खूब मिली। आजादी मिले पाछैं हू राष्ट्र निर्माण में लोकगीतन्नैं अच्छौ सहारौ लगायौ।

आजु के हमारे राष्ट्रीय सरोकारन के ताँई जनरुचि जगाइवे की दिसा में लोकगीत वहौत सहायक है सकैं हैं। देस में चलि रहे सम्पूर्ण साक्षरता अभियान के काजैं वातावरण बनाइवे में लोकगीत सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाइ रहे हैं। नये-नये गीतन के कैसिट ठौर-ठौर बजते सुनाई देंय। लोककविन के रचे इन लोकगीतन कूँ लोकमानस अपनाइवे लग्यौ है। विना पढ़ौ लिखौ समाज इन गीतन कूँ बड़े चाव सौं सुनै है। यासौं प्रतीत होइ कै ये लोकगीत चिरजीवी हुंगे अरु परम्परित लोकगीतन की हर कसौटी पै खरे उतरिंगे।

या ग्रंथ के सम्पादन में ब्रज लोकसाहित्य अरु ब्रज लोकमंच के जाने माने सेवक श्री ब्रजेश कुलश्रेष्ठ अरु ब्रजभाषा अकादमी सचिव श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल नैं जो सहयोग दियौ है वाके ताँई विनकूँ अरु लोकगीतन के सम्बन्ध में आलेख भेजिवे वारे लेखकन कूँ, लोकगीत संकलित करकैं भेजिवे वारे विद्वानन कूँ अरु स्वरचित लोकगीत भेजिवे वारे लोकगीतकारन कूँ अकादमी की ओर सौं वहौत-वहौत आभार, वार वार नमन।

- मोहनलाल मधुकर

लोकगीतन कौ स्वरूप अरु महत्व

-प्रो. गेंदालाल शर्मा

लोक साहित्य कौ अभिप्राय जनवादी जीवनव्यापी दृष्टि सौं है । ग्रामीण जनता, आधुनिकता सौं अनभिज्ञ वन प्रान्तन में रहबे वारी आदिम जंगली जातिन अरु आदिवासी समुदाय मिलकैं लोक कौ निर्माण करैं हैं । लोक की जीवन पद्धति, उत्सव, पर्व,तीज-त्यौहार,वेशभूषा, नृत्य-संगीत अरु कला-कौशल हमारी विरासत तौ हैं ही,जे हमारी सहजीवी अरु रुहानी विश्राम-सरिता के प्रबल प्रवाहक हैं । आधुनिकता की भौतिकतावादी प्रवृति की आँधी नैं जा लोकगीत-प्रसूत जनमानसी गंगा-धारा कूं मलिन अरु मन्द करि दियौ है । फिर ऊ आज हमारे समाज में धर्म, जीवन-दर्शन, साहित्य अर कला के जो आदर्श अर मूल्य जीवित बचे हैं ये जा लोकगीतन की सांस्कृतिक धारा की दैन हैं ।

जि सत्य है कि भारत की आत्मा गाँमन में बसै है अरु जि लोक-आत्मा हमारी सहज प्राकृतिक जीवन धारा कौ निर्मल दर्पण प्रवाह है । जासौं हमारौ छोटौपन दूरि होय है । सामाजिक दायरे कौ विकास-सेतु है । परम्परा अर प्रथा जीवित रहैं हैं । आधुनिकता की विलासी जीवन पद्धति सौं प्रभावित ह्वै कैऊ लोकगीतन नैं युग युगनगौं शिथिल इन आदर्श अरु अनुभवन कौं अपने में संजोये रखौ है। लोकगीत हमारे ज्ञान अरु विज्ञान, निर्देस-उपदेस, आचार-विचार, नैतिक धार्मिक विश्वास, सामाजिक ऐतिहासिक विकास अर सांस्कृतिक दार्शनिक सिद्धांतन की अमूल्य निधि हैं । इनकी विशालता अरु गम्भीरता आज तक विद्वानन के चिंतन अरु खोज के विसै बने भये हैं। जिज्ञासु गोताखोरन कौं चिरकाल सौं संचित जा लोकगीत सागर में घुसवे पै विविध ज्ञानरतन की प्राप्ति होय है। मानव विकास की रहस्यमय पहेली अर वाके विविध स्तर की प्राचीनतम जानकारी की सबसौं अधिक प्रमाण लोकगीत ही हैं ।

जब-जब इतिहास मूक भयौ है । शिलालेख अरु ताम्रपत्र धूमिल ह्वै गये हैं । कवि की प्रतिभा कुंठित ह्वै गई है, उत्साह फीकौ परि गयौ है। सिच्छा कौ प्रभाव क्षीण ह्वै गयौ है अरु साहित्य की धारा सूखवे लगी है। तब-तब हमें लोकगीत-मानस-गंगा के अमृत-तत्वन सौं निकसौ नवीन ज्ञान दृष्टि अरु जीवन शक्ति की प्राप्ति भई है ।

संगीत अर कला जब-जब जीवन सौं कटिकैं राजमहलन अरु राज दरबारन में कैद भई है, तब-तब लोकगीत धारा कौ जि स्रोत ग्रामीण अंचलन में ग्राम वधूटिन अरु युवान के कलकण्ठ सौं मुखरित भयौ है । कला कौ, साहित्य कौ सरस्वती मीरा के घुंघरुन के स्वर में निनादित भई है । ग्राम निवासिन की दीवारन पै चित्रित भई है । अनेक वाद्यन में बजी है । अनगिनत गीतन में गूंजी है । लोकगीत प्राचीन काल सौं ही हमारे उल्लास अर आनंद कौ माध्यम बने भये हैं । ''सर्वदा सर्वभावेन भजनीयो व्रजाधिप:'' की पावन भावनान सौं अनुप्राणित, सामाजिकता सौं सुपरिचित, संगीत की सरगम सौं निर्मित लोकगीत हमारी अस्मिता की सच्ची पहचान हैं, जो हमें सदा सौं आस्थापूर्ण कर्मरत जीवन की शिक्षा दै रहे हैं । हमारौ लोक जीवन जिनमें

सरल,स्वाभाविक अरु सजीव है वैसौ ही हमारे लोकगीतन कौ स्वरूप है, जिनकौ "सबजन हिताय सबजन सुखाय" मूल मन्त्र है । आचरण कूँ यहाँ प्रमुखता दयी गई है ।

आज सामाजिक उत्थान के लए, भावात्मक जीवन दृष्टि के विकास के लए लोकगीतन की प्रासंगिकता अरु उपयोगिता सबसौं अधिक है । जे हमारे समाज, संस्कृति अरु आस्था के संरक्षक किसान मजदूर अरु कलाकारन द्वारा अभिसिंचित हैं। आज पोषित मानवीय मूल्य, श्रद्धा, सहिष्णुता, प्रकृति प्रेम ,अनेकता माँहि एकता कौ भाव इन गीतन सौं ही अधिक विकसित है सकै है । भेदभाव अरु जाति विसमता कूं समाप्त करबे में जे लोकगीत अधिक उपयोगी हैं । एक ओर इनसौं हमारौ लोकानुरंजन होय है, दूसरी ओर लोकसासन अरु लोक शिक्षण कौ उद्देश्य ऊ पूरौ होय है । लोकगीतन की सदासयता अरु आत्मीयता हमकूँ सक्ति अरु सार्थकता प्रदान करै है । आज के युगधर्म की जि महती आवस्यकता है कै हम अपनी गतिसील परम्परान कौ अभ्यास करैं । विनके अनुसार अपने आचार-विचार पोषित करैं अरु समानता, सहअस्तित्व समर्थक लोकगीतन की चिंतन धारा पै आधारित सुखद भविष्य कौ निर्माण करैं ।

या कथन कौ अभिप्राय जि कदापि नाँहिं कै हम आधुनिकता कूँ नकारि दैं, नवीन साधनन की अवहेलना करैं, वैज्ञानिक मूल्यन कूँ अस्वीकार करि दैं । किन्तु हमारौ उद्देश्य जि है कै जिन लोकगीतन में जो सार्थक अरु उपयोगी हैं उनकौ अपने आन्तरिक जीवन के संग समन्वय करैं, देस अरु समय के अनुरूप विनकौ विकास करैं ।

आज इन लोकगीतन के संचयन,सम्पोषण अरु संवर्धन की महती आवश्यकता है, जिनसौं हमारे उच्च आदर्स अरु मानवीय मूल्य निकसित है सकिंगे ।

-सोमांचल,मैरिस रोड ,
अलीगढ़ (उ.प्र.)२०२००१

सहस्रन बरसन के अनुभवन सौं संचित लोकगीत हमारे
जीवन-महासागर की अनमोल रत्न-रासि हैं।

-प्रो. गैंदालाल शर्मा

संस्कृति कूँ लोकगीतन की देंन

-डा. रामकृष्ण शर्मा

संस्कृति जीवन रूपी तरुवर कौ फल है जासौं जीवन की सार्थकता सिद्ध होय । बिना फल के विटप कौ कहा कोऊ महत्व है? ना तौ बाकी आगें बंस चलि सकै,ना वासौं कोऊ ब्यौसाय सकै । याई तरियाँ सौं बु मनुज कछू मतलब कौ नाँय होय,जो अपने पुरखान की विरासत कूं सहेजकें नाँय रखि सकै अरु आगे की पीढ़ीन कूं कछू बहुमूल्य हस्तान्तरित नाँय करि सकै । जो पसू की नाँई खाइबे कूं जीवै बु मनुज की स्रेनी में नाँय आवै । मनुज तौ बु कह्यौ जाय जो पुरानी पीढ़ी की थाती कूं सँवारिकें वामें चारि चाँद लगायकें,अगली पीढ़ी कूं सौंपिकें सिरजनहारन में अपनौऊ नाम लिखाय जाय । या लैन-दैन कूं संस्कृति कहें । ई मनुज कूं पसू सौं अलग करिकें रचनासील बनावै। मनुज की ई सिरजनकारी प्रवृत्ति ही वाकी प्रगति अरु वाके विकास के मूल में दीखै है । याही के परताप सौं पसू सम जंगली जीवन सौं ऊपर उठिकैं मनुजाई आज की विकसित दसा तानूं पहुँची है । ई सबरौ वैभव जो दुनियाँ में दीख रह्यौ है सब संस्कृति की ही दैन है ।

संस्कृति मनुज सौं रचित जीवन की एक कृत्रिम व्यवस्था है । जासौं नैसर्गिक वृत्तीन कूं संस्कारवान बनायौ जाय। संस्कार कौ मतलब सफाई करिकें ऊँचौ उठाइबे ते है । नैसर्गिक वृत्ति तौ सहज होंय। वे अनायास क्रियावान रह्यौ करैं । जिनसौं जरूरतन की पूर्ति कौ सीधौ सम्बन्ध होवै है । पर जिनमें उचित-अनुचित, करनीय-अकरनीय, सही-गलत कौ विवेक-बंधन नाँय होय । ऐसी अनायास अरु सहज क्रियान कूं विवेकसम्मत अरु करनीय बनायबे कौ सायास प्रयास ही संस्कार कह्यौ जाय । याही सौं संस्कृति सब्द व्युत्पन्न भयौ है । संस्कृति कौ रचना विधान कोऊ आकस्मिक किंवा सहसा घटित कारज नाँय होय, वरन एक दीर्घकालीन परम्परा होय, जाके आदि अरु अन्त के बारे में कछू कह्यौ नाँय जाय सकै ।

मनुज जीवन की विकासवादी व्याख्या ते इतेकई आभास होवै है कै सिस्ट की जंगली अवस्था सौं दुखन की मात्रा कूं कम करिबे की कोसिसन की परिनति ही विकास की नाना अवस्थान कूं पार करती भई संस्कृति कहाई है । नाना भाँति की धार्मिक साधना, कलात्मक प्रयास, सेवा परायनता, भक्तिभाव अरु जोग मूलक करम अरु भावनान सौं मनुज नें जा महान सोंध कूं अवगत कर्यौ है बु ई संस्कृति है । ई उपलब्धि इतेक व्यापक बनि गई है कै वर्तमान समै तानूं आंते-आंते ई कह्यौ जाय सकै कै जो कछू हम हैं बु ई हमारी संस्कृति है अरु जो कछू हमारे पास है बु ई हमारी सम्पदा है ।

अब तानूं देस विदेस के चतुर जनन नें जा क्षेत्र माँहि भारी खोज करी है। इतिहास सौं पहले कैऊ प्रमान खोजे हैं अरु इतिहास कूं तौ खूबई छानि मार्यौ है। इन प्रागैतिहासिक अरु ऐतिहासिक प्रमानन के आधार पै हमारी संस्कृति दुनियाँ की सबसौं पुरानी संस्कृति सिद्ध है गई है। याकी पृष्ठभूमि कूं देखिबे कौ एकई आधार मनोवैज्ञानिक हमारे सौंमई रह गयौ है ।

याकी इतेक भारी पुरातनता और सबई आधारन कूँ अतीत के कुहरे माँहि डारि चुकी है । मानव मनोविज्ञान के छेत्र माँहि विहंगम दृस्टि सौं निहारिबे तो ई साफ पतौ परै कै संस्कृति कौ उद्गम लोकजीवन की दुःख सुख मयी विविध अनुभूतिन सौं है । निसर्ग अरु नियति के निर्मम चक्र नें मनुज की सदाँ उपेच्छा करी है । परि मानवीय जिजीविसा नें कबहूँ हार नाँय मानीं । जैसें जैसें जीवन की विसमता बढ़ी हैं, बाई क्रम सौं मनुज नें बिनके बिकल्प के रूप में आनन्द, उल्लास अरु अभिव्यक्ति के विविध रूपन की खोज करि लई है । यू कबहूँ तौ मनुआ के बोझ कूँ हल्कौ करिबे के तांई दया द्रवित ह्वैकें गीतन की लय में रोयौ है तौ कबहूँ उल्लास की अभिव्यक्ति नाच अरु रस भरे थिरकते गूँजते गीतन में भई है :

1. मेरौ मनुआँ रोबै झार झार मेरे बलम गये परदेस जी
   गिर्‌यौ उड़ीना कागा बोल्यौ आऔ बलम निज देस जी

2. पिया रँगीले निज घर आये जिनकी जोहति बाटजी
   घर घूम्यौ छप्पर हँस्यौ मोरी खेलन लागी खाट जी

ऐसी अनगिन रागात्मक अभिव्यक्ति लोकगीतन माँहि भरी परी हैं । इनमें जीवन कौ सागर हिलोर लैंतौ दिखाई देबै है :

1. उड़ी पारि मेरौ लटुआ भीजै,पड़ी पारि मेरौ हार जी
   भर्‌यौ समन्दर चुनरी भीजै,है कोउ काढ़न हार जी
   काढ़ैगौ मेरौ बीर प्यारौ जिनें दई परदेस जी
   नौवा रे तू घर के कौवा काहे दई परदेस जी
   काह करूँ जिजमान की बेटी करम लिखे परदेस जी
   पाती होय बाय बाँचि लऊँ मोपै करम न बाँचे जाँय जी

2. अर रर नग कौ सौ नगीना गोरी धन बलमा ते बतराय रई है
   जो चुलना जोर कर्‌यौ घर धसकै नये नये रूप दिखाइ रई है

ये अनुभूतियाँ मूल रूप सौं तौ व्यक्तिपरक हैं । परि इनकौ रूप समाज में समस्टिपरक बनतौ चल्यौ गयौ है । एकाकी अभिव्यक्ति धीरें धीरें सामूहिक रूप लैंती चली गई हैं । इनके संग नाच कूद जुरते चले गए हैं । जिन्दगी के दुःख भरे थपेड़े जैसें-जैसें आदमी कूँ सताते गये हैं बाई गति सौं लोकगीतन नें बाकूँ भौत बल दीनौ है । गायकें नाचिकें आदिमी नें अपनी पीर दोही है । ये लोकगीत अरु नाचकूद, तीज-त्यौहार ,मेले ठेले नईं हौंते तौ आदमी पागल ह्वैकें कबहूँ कौ सिधार जांतौ । लोकगीतन सौं सजी सँवरी संस्कृति की काहू धरोहर अरु काहू अपनी सूझबूझ सौं बाकी बढ़ोतरी सौं इतेक बल मिलतौ गयौ है कै मानव प्रकृति के अत्याचारन कूँ अरु नियति के थपेड़ेन कूँ सींग बतायकें बढ़तौ रह्यौ है ।

लोक साहित्य विविध अनगढ़ विधान में उद्वेलित भयौ है । परि लोक साहित्य कौ प्रान तत्व लोकगीतन में ई बसै है । ये लोकगीत मानव मन की गहरी सौं गहरी थाह लैबे बारे होंय । बिसेस रूप सौं नर नारी के सम्बन्ध जो सृस्टि के मूल हैं , बे जितेक बारीकी सौं लोकगीतन में अभिव्यक्त भये हैं बैसे और काहू नाँय । नारी के उर कौ तौ सपूरौ चित्र खुलि जाय । इनमें नारी के मनुआ की अभिव्यक्ति देखौ :

1. सिर के दरद की दवाई लाई
   घर में सास हौरै घर में सुसर हौरै

सेजा सैयाँ भी लरै मेरी कदर नईं
पीहर पास नईं जामें खबरि करूं
छोटौ बीरन भी नईं जासौं रोय कें मिलूं

2. मेरी सास लरै दिन राति अट्टे पै चढ़ि चढ़ि कें
रोऊँ तौ दूखें आँखि लरूं तौ सिर धमकै
कुआ में झाँकूं जान चूनर मोरी चमकै
जिठानी लरै दिन राति अट्टे पै चढ़ि चढ़िकें
रोऊँ तौ दूखें आँखि लरूं तौ सिर धमकै

लोकगीतन माँहि नर-नारिन के हास-परिहास ,व्यंग-विनोद, अनुहार-मनुहार अर सिंगार भरे नेह-निवेदन, विरही उर की वेदना ,आहें ,आँसू ये सबई मनुज जीवन कूं पसु जीवन सौं अलग करिकें याय संस्कृति कौ इमरतपान करामें हैं ।ये लोकगीत मनुआँ के सबरे मैलमाँकर कूं निकारिकें निरमल करि दें । ये नांय होंते तौ आदमी मतवारौ हैकें पसू सौं ऊ बदतर जानें कहा करि डारतौ । जा विज्ञान की चकाचौंध के जमाने में जब मानुस जंत्रवत नेहहीन होतौ जाय रह्यौ है, चलचित्र , रेडियो अरु दूरदर्सन में जब बाकूं करमहीन साझीदारी सौं दूरि निस्क्रिय दरसक बनाय दीनों है तो जाकौ परिनाम देख लेऔ । आदमी कितेक तनाव में जी रह्यौ है, हृदय रोग कितेक बढ़ि गयौ है, परिवार कौ जीवन कितेक रसहीन है गयौ है । पति-पत्नी के बीच जो मीठे आनन्द सौं पूरित संबंध रह्यौ करते बिनको जगै अब कैसो कटुता पैदा है गई है ।ई संस्कृतिहीनता कौ परिनाम है जासौं जीवन की विकृति बढ़ती ही जाय रही है । आज हू जिन समाजन में लोकगीत गवें, नर-नारी नाचें-कूदें अरु मेले ठेलेन में जाँय, तीज त्यौहार मनावें म्हाँ जीवन की सरसता बची भई है, म्हाँ संस्कृति कौ तरवर अबई ताँनूं फलि-फूलि रह्यौ है । देखौ एक बानगी:

गोरी धन देख देख मन मलकै
मुख पै जोबन कौ रस झलकै
इमरत टपकै जोधा लपकै
तारे टूटि गये महलन के लडुआ फूटि रहे तन मन के

लोकगीतन कौ वर्गीकरण करिकें देखें तौ हाल पतौ लगि जाय कै जीवन कौ कोऊ भाग ऐसौ नाँय जाकौ चित्रन इनमें नाँय अरु जामें इमरत सरीखी सरसता जिननें नाँद घोरी ।बचपन कौ भोरौ भारौ रूप,किसोर अवस्था की निस्चिंतता अर ताजगी, जोबन कौ प्यार,सनेह कौ मिठास,प्रौढ़ता कौ अनुभव, बुढ़ापे की वेदना ये सबई लोकगीतन माँहि भरे परे हैं । बचपन कूं पुचकारिबे बारी लोरी देखौ:

सोय जा सोनवा लाल लड़ैते मैया गोद सुवावैगी
अमवा की डार पलनों लटकै सोनवारी धरकावैगी

भैन अपने बीरन कूं कितेक चाहै याकौ हिसाब लोकगीतन में ई मिल सकै :

अरी मैं चन्द्रलोक है अई भैया मों चाँद नाँय पई
भैया अरवौ रे रथ को झनकार
राज किरौरी मेरौ भईया

देवर-भाभी के रस सौं पूरित उमंग सौं भरे कैसे-कैसे लोकगीत भरे परे हैं, जिनमें जोबन की मस्ती की अनन्य अनुगंध लहरायौ करै । भाभी अपने देवर कूं बगल में लिएबे कौ न्यौतौ देय, देवर अपनी विवसता बतावै, भाभी वाकूं हिम्मत दिवावै

जा रस रंग राज भरे सांस्कृतिक जीवन कौ रस आज सूखतौ जाय रह्यौ है:-

यागन अइयौ रे लाला, यागन नारि अकेली
मैं कैसे आऊँ रे भाभी सयई जगत मेरौ यैरी
मरन न दऊँगी रे लाला संग सती है जाऊँगी
ऐसी लै चलि रे लाला दिन ऊगे या पुर में

लोकगीतन मांहि वुढ़ापे कौ कैसौ करुन चित्तर उभर्यौ है:-

यालपना सय खेल गँवायौ,
जुवा भयौ तौ होस न आयौ
वृद्ध भयौ रोय-रोय पछतायौ
चुगिगई खेत चिरैया रे ।
ना कोऊ भैंन न भैया रे ।।

इन गीतन कूँ गायकें मनुआँ कौ दरद भौत कम है जाय । हृदय कौ ऐसौ विस्तार है जाय कै कोऊ परायौ ई नाँय लगै। दुःख -दर्द हू मीठे है जाँय । घोर निरासा हू सरस यनि जाय। याही कौ नांम तौ संस्कृति है । संस्कृति मन की सरसता कौ नाम है । ई कोऊ ऊपरी तरक भरक नाँय, ई तौ मन कौ मिठास है । ई मिठास हमारे वुजुरगन नें हमकूँ दीनौं है। हम यामें यढ़ोतरी करिकें आगे की पीढ़ी कूँ सौंपि जायँ, ई ही जीवन की सार्थकता है ।

-सरस्वती सदन ,कौंड़िया मोहल्ला,भरतपुर(राज)

❑

सयसौं पहलें लोकगीत कौन नें कय रचे अरु गाये या यातै स्यात् ही कोऊ जनतौ होय, परि जि यात सही है कै लोकगीतन पै काहू एक व्यक्ति या सम्प्रदाय कौ ही अधिकार नांय। लोकगीत तौ जन-जन की थाती हैं। हमारे अतीत की स्मृति आज हू इन लोकगीतन में मूर्तिमान है। हमारे देस के हर प्रान्त के लोकगीतन में अपने प्रान्त-यिसेस की प्रधान कौ यर्नन और सहज जीवन के सजीय चित्रन कौ दर्सन मिलै है। लोकगीतन माँहि हमारी परम्परागत संस्कृति कौ इतिहास निहित है।

ब्रज-लोकगीत अरु विकास-प्रक्रिया

-श्री गजेन्द्रसिंह सोलंकी

लोकगीतन सौं तात्पर्य है ऐसी स्वर लहरियाँ जो सरल लोकभाषा माँहि सहज रूप सौं कंठन सौं निसृत हौंय अरु जन-जन कूँ आल्हादित, उद्वेलित अरु मुग्ध करैं। भारत कौ कोई सौ आँचर होय, बोली कहूँ की होय, लोक-धर्म-कर्म कैसौ हू होय, लोकगीतन माँहि अपने-अपने आंचर की प्राकृतिक सोभा, लौकिक परम्परा, जातीय स्वभाव, तीज-त्यौहार, पर्व-उच्छव, जनम-मरन-परन सबही औसरन पै कुल जाति के देवी-देवतान सौं लैकैं मानवीय सम्बन्धन, लोग-लुगाइन के निजी रिश्तेन, सामुदायिक व्यवहारन की मौखिक अभिव्यक्ति समूहन के कंठन सौं लयबद्ध फूटि परै वोई लोकगीत कहावै है।

जैसी लोक-परम्परा वैसे ही लोकगीत देखे सुने जात हैं। असल में लोकगीत बहती भई धारा की लहरियाँ हतैं जो निरन्तर सृजित-विकसित होत रहत हैं। बिनमे झरनान की कलकल, पेड़न की सनसन, पत्तान की मरमर, खेतन की सरसर, पंछीन की चहचहाहट, ढोरन की रम्हाहट अरु मानसन की चक-चक अर्थात भोर सौं लैकैं दुपहरी, संझा के कार्यन कौ सन्नाटौ अथवा कलरव, ज्योति की जगमगाहट, षटऋतुन की छटा अरु मानव जीवन पै परिवे वारे प्रभावन कूँ संवेदनशील नर-नारी-बालक गुनगुनाइबे कूँ हुलसि उठैं और लोकगीत बन जावै, जन-जन सौं जुर जावै अरु परम्परा कौ निर्माण कर देत है।

मजे की बात तौ जि है कै इन गीतकारन कूँ न तौ गढ़ी-गढ़ाई भाषा चहियै,न छन्द विधान की पढ़ाई-लिखाई अरु न शास्त्रीय ताल सुर विधान। जाकौ मतलब जि नाँय कै वे प्रज्ञाहीन हौंय । असल में लोकगीत प्रज्ञा की सहज रागात्मक अरु भावात्मक गेय मौखिक अभिव्यक्ति हतैं । संगीतात्मकता बिनकी अपनी हतै जाय लोकधुन कहत हैं यही वाकौ मूल स्रोत है अरु कंठ वाकौ उद्गम । व्यक्ति सौं लैकै समाज ताईं वाकौ पसारौ हतै । अर्थात लोकगीतन की परिधि व्यापक, बहुआयामी है अरु असीम हू है। बिनकी भावभूमि समाज की मानसिकता,परम्परा,रूढ़ि अरु इतिहास सौं जुरी होत है। अत: लोकजीवन कौ संगीतात्मक वर्नन वामें रहत है,जो श्रुत परम्परा सौं अनादिकाल सौं आज लौं चल्यौ आइ रह्यौ है अरु चलतौ रहैगौ, शिष्टजन भलेंई वासौं अपरिचित है रह्यौ है ।

युग सौं जुरिकैं लोकगीतन कौ कलेवर बहुविध अद्यतन प्रसंगन के सब्द-चित्र प्रस्तुत करत है वहीं परंपरा की पृष्ठभूमि हू आँखिन सौं ओझल नाँय हौंन देत । अत: नित्य विकासशील रहत हैं । जो जो प्रसंग, घटनाक्रम जन-जन कूँ (जन समूह कूँ) प्रेरित करबे वारौ घट जावै अरु जनश्रुति बन जावै उन उन के लोकगीत गूँजन लगत हैं । बिनमें राजनीति की घटना हू है सकत हैं । कालांतर माँहि वे परिवर्तित हू होत जात हैं अरु बिनके पाठभेद हू होत जात हैं ।

किन्तु जबसौं लोकगीतन के संकलन हौंन लगे,उनकूँ लिपिबद्ध कर लियौ गयौ है अरु उनके प्रकासन हौंन लगे, लोकगीतन कौ मूल पाठ (स्वरूप)सुरच्छित हौन लग्यौ है अरु वे शिष्ट साहित्य के अंग हू बनत जाइ रहे हैं। बिनकी धुनि हू टेप करी जाइ रही हैं ।टेप-आलयन में ये सुरच्छित हैं तथा आकासवानी अरु दूरदर्सन सौं प्रसारित-प्रदर्सित हू हौंन लगे हैं ।तब लोकगीतन

के संबंध में पूर्वधारणा हू बदलन लगी है । ये अब मौखिक,अलेखे अरु अज्ञात नहीं रह सकिंगे । अलबत्ता बिनकी सृजन-प्रक्रिया अरु स्रोत लोकजीवन सौं जुरी रहैगी अरु तब ही ये लोकगीत कहे जाइ सकिंगे।

ब्रज लोकगीत

अन्य छेत्रन की तरियाँ ब्रज माँहि लोकगीतन की भरमार हतै । जहाँ ब्रजभाषा माँहि विपुल शिष्ट काव्य भरौ परौ है अरु आज हू अद्वितीय कह्यौ जाइ सकै है, वहीं अज्ञात रचनाकारन के लोकगीत हू जन-जन के कंठन सौं सुनाई देत हैं । इन लोकगीतन माँहि ब्रज संस्कृति सुरच्छित है । बिनकी अपनी-अपनी धुन हैं । उनकौ छेत्र हू व्यापक हतै तथा ब्रजमंडल सौं बाहर हू बिनकौ पसारौ है । जो लोकगीत ब्रजवासीन के संगई देस-विदेसन में ठौर-ठौर तक पहौंचे भए हैं बिनकी गूँज आज हू सुनाई परै है ।

संस्कार गीत- संस्कृति सूचक

वैदिक जीवन भारत की आधारभूत रचना हतै तथा वर्णाश्रम धर्म सौं गुथी भई है । भलेंई आज बू व्यवस्था छिन्न-भिन्न है गई है पर वाके अवशेष हमारी जीवन-चर्या सौं लोप नाँय है सकैं अरु सबसौं मुखर लोकगीतन में भई वही जातीय एवं कुलीय संस्कार-परंपरा हू लोकगीतन सौं समझी जाइ सकैं हैं । सही रूप माँहि भारतीय लोक कूँ समझिबे कौ माध्यम लोकगीत ही हैं । शिष्टवर्ग यानी अभिजात्य वर्ग अपवाद है गये हैं जहाँ वैदिक जीवन लोप सौ ही है गयौ है अरु आधुनिक बनावटी उपभोक्ता संस्कृति की भौंड़ी नकलन के दर्सन होत हैं। या विकृति अरु विसंगतिन के चित्रन हू लोकगीतन माँहि देखे जाइ सकैं हैं,जिनके उदाहरन या आलेख के सीमित कलेवर में नांहि आइ सकैं ।

इन लोकगीतन माँहि जीवन के हर औसर की छाया देखी जाइ सकै है । बिनकी धुन संस्कार, तीज-त्यौहारन पै सुनाई देत हैं । लोकजीवन के सोलहों संस्कारन के लोकगीत उपलब्ध हतैं । जो लोकगीत सामान्य रूप सौं कंठन पै बिराजि गये हैं बिनमें अठमासे के गीत,सौर के गीत, छटी के गीत,मुंडन के गीत, बियाह के गीत बिनमें हू चकियन के गीत,रतजगे के गीत, तेल चढ़ावे के गीत, भतैया के गीत, घुड़चढ़ी के गीत, ज्यौनार के गीत, गारीन के गीत, भाँवरन के गीत गाये जावैं हैं। इन सबन की सुरुआत देवी-देवतान के आह्वान सौं होत है । छोरा अरु छोरीन के ब्याआन के गीत न्यारे-न्यारे होत हैं अरु बिनमें कुलन कौ वर्नन होत है । तीनि पीढ़ीन की नामावली गाई जावै है । गीतन कौ सिलसिला भोर सौं राति लौं चलत रहत है । सूरज ऊगवे तै सुभकामना अरु प्रार्थनान सौं पूरौ वातावरन गूँजत रहत है । जे क्रम विदाई के गीतन लौं चलत है ।

ब्रज में जितने पर्व आत हैं, जात्रा होत हैं,काँमर लाई जात हैं उन सबके जातीन के अलग-अलग गीत होत हैं । देवी मैया के गीत ठेठ मानव-उत्पत्ति के भावन सौं जुरे होत हैं । काँमर या काँवर के गीतन में ''बोल रे भाई बम कै बम भोले'' की टेर गंगाजी सौं सुरू हैकैं गाँमन तक पहुँचत रहत है । उनकी खड़ेसरी गंगा लाइवे की साधना इन गीतन सौं मधुर है जावै है । याही के संग लांगुरिया प्रेरना देत रहत है । ब्रज की संस्कृति के केंद्र बिन्दु हतैं ग्राम,गौ, गंगा, जमुना अरु राधा-कृष्ण। लोकगीत इनके चारौं ओर घूमत रहत हैं । यहीं पर्वन में होरी कौ आपनौ अनूठौ स्थान हतै। जामें गीत, गारी, चिराउनी, रंग-गुलाल, गोबर अरु लट्ठमार हुरंगा के रौंकरान गीत बिखरे परे हैं । रसिया की धूम तौ ब्रज-होरी-फाग की बिसेस पहचान हतै । ब्रजमंडल कौ हर गांम,हर अखाड़,हर मंदिर, चौपाल बसंत पंचमी सौं रंग पंचमी लौं फागमय है जाय है । होरी के दिना (धुलैंडी पै) तौ ब्रज कौ हर नर कृष्ण अरु हर नारी राधा कौ सात्विक सरूप जान परत हैं । होरी के कछु बहु प्रचलित लोकगीतन के मुखड़ा दिये जाइ रहे हैं । पूरे गीत या कारन नांय दिए, जाइ रहे कै आप गातई होइंगे । मुखड़ा हैं -

1. आजु बिरज में होरी रे रसिया, होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया ।
2. मैं होरी कैसें खेलूँ री या साँवरिया के संग?
3. होरी खेलन आयौ स्याम आज याहि रंग में बोरौ री ।

4. फगुआ दै मोहन मतवारे ।
5. ठाड़ौ रे कनुआ ब्रजवासी ।
6. बाबा नंद के द्वार मचो होरी ।
7. मति मारौ दृगन की चोट रसिया होरी में मेरे लगि जाइगो ।
8. वृंदावन में फाग मच्यौ भारी । आदि आदि

ब्रजमंडल सौं बाहर के होरी के गीतन में नर-नारीन के संबंधन कौ उल्लेख हू होत है । बिनकौ तेवर हू कछु और होवै है । एक लोकगीत या तरियों है--

मैं तौ बंसीवारे ते हारी ।
चलावत घूंघट में पिचकारी ।।
गाढ़ौ रंग बनौ मेरी सजनी ,
भर पिचकारी मेरे सनमुख मारी ।
तौ भीजि गई गुल सारी ॥ ....

एक ऐतिहासिक प्रसंग में रचो गई होरी की इन पंक्तिन सौं जान परत है कि ऐसी कछु बात जो आम दिनान में नांय कही जाइ सकैं ये या औसर पै गीतन में कही जाइ सकैं हैं । मोय जि गीत मेरी मैया सौं मिल्यौ है । सुनें जि गीत अज्ञात है गयौ है-

सखी री ब्रज कौ बसिबौ री तजौ,
अंगरेज की रीति बुरी ।
मार तरवरिया भरतपुर लूटौ ,
[illegible] कौं कैद करै ।
काऊ की तिरिया काऊ कौ पुत्र है,
[illegible] ।
सखी री जा ब्रज कौ [illegible]——

ग्रामीण छेत्रन में अधुनातन महापुरुषन कूं लैकें [illegible] उजागर करिबे अरु सुधार के हू लोकगीत प्रचलित रहे हैं अरु [illegible] रहे हैं । [illegible] है अरु आलेख कौ सीमित कलेवर हैबे ते विस्तार नांय कियौ जाइ सकै ।

—[illegible]
[illegible]

लोकगीतन की परम्परा अरु ब्रज लोकगीत

-श्री शांति स्वरूप शर्मा

लोकगीत जैसौ कि नाम ते ई ध्वनित है रह्यौ है कि जो गीत आम बोलचाल की भाषा में अनगढ़े स्थानीय कविन के द्वारा अपने आसपास के वातावरन सौं प्रेरना लैकें बनाये जांय अरु आम जनता में लोकप्रिय है जांय संगई बिनमें स्थानीय लोकजीवन की झाँकी मिलै,लोकगीतन की स्रेनी में आयौ करैं । इन गीतन में छन्द ,रीति आदि सास्त्रीय मान्यतान की एवं स्थापित रूढ़िन की उपेक्षा देखबे कूँ मिलै ।

लोकगीतन की या परिभाषा में वे ही गीत आय रहे हैं जो काऊ देवता की तारीफ में या आम मानवीय प्रेम या सामाजिक पारिवारिक समस्यान कूँ दरसावें । लोकगीतन कौ बहुत बड़ौ भाग उन गीतन कौ है,जो जन्म,मूंडन, सादी-ब्याह के मौके पै बैयरन के द्वारा सैकरान सालन ते गाये जाय रहे हैं अरु जिनके बनायबे वारेन कौ कछू अतौ-पतौ नांय, जिनकूँ बूढ़ी-बड़ी मोंहजयानी नयी भौटियान (बहुअन) कूँ धरोहर की तरियाँ सौंपती रही हैं ।

चौंकि लोकगीत स्थानीय (लोकल) कविन के द्वारा बनाये जॉय जिनकूं ज्यादा सास्त्रीय ज्ञान नांय होय पर बे रस तें भरेपूरे होयौ करैं । याही कारन सौं ये कवि छेत्र विसेस सौं,बाके परिवेस सौं ज्यादा प्रभावित होवें । याई लए लोकगीतन में रस की अधिकता के संगई मुख्य विषैवस्तु सामाजिक रीति-रिवाज, त्यौहार-उत्सव, खान-पान, रहन-सहन, घर-परिवार,स्त्री-पुरुष, बालक-बच्चे,सादी-ब्याह आदि रह्यौ करैं । यदि लोकगीतन कूँ छेत्र विसेस की लोक संस्कृति कौ दरपन कहैं तौ कछू अनुचित नांय होयगौ । इन गीतन में या छेत्र की माटी की एक अनौखी गन्ध रची बसी होय । इनमें एक अनौखौ अलमस्तपनौ देखिये कूँ मिलै,जो इनकूँ दूसरे गीतन ते अलग करै । इन गीतन में एक आम आदमी की इच्छा,आसा-निरासा,खुसी-गमी, प्रेम-घृणा, कुण्ठा-महत्वाकांछा, लाग-डॉट आदि दिखाई परै । याही कारन सौं विसेस औसरन पै, रितुन पै, गीतन के अलग-अलग नाम पाये जांय जिनके नामन में जगह-जगह तौ अन्तर मिल सकै पर बिनकी विसेषता लगभग एक जैसी रहैं । जैसें ब्रज में फागुन के महीना में फाग गायौ जाए वैसेंई दूसरी जगहन पै होरी होयौ करै ।

जहां लौं लोकगीतन के उद्‌भव कौ सवाल है, लोकगीत तबई ते बनिबौ सुरू है गये जबतें आदमी नें होस संभार्‌यौ अरु अपनी मस्ती में अपनी भावनान कूँ निकारबे लग्यौ । या विचारते तौ भारतीय परम्परा में लोकगीतन की सुरूआत वैदिक युग ते ई मानी जानी चहियै, चौं या समै वैदिक भाषा आम बोलचाल की भाषा हती अरु ऋग्वेद में ऐसे प्रसंग ऊ देखबे कूँ मिलैं जिनमें लोकगीतन कौ सहज रूप देख्यौ जाय सकै । पाछे ब्राह्मण साहित्य में ऐसे धार्मिक गीतन कौ संकेत मिलै जो जग्य (यज्ञ) के मौके गाये जायौ करते,जो आम जनता में खूब प्रचलित हते। रामायन-महाभारत तौ सुरू में लोकगीतन के रूप में ई प्रचलित हते जिननैं जगै जगै घूम-घूम कैं गाइबे वारे गायौ करते । प्राकृत भाषा में ऊ लोकगीतन कौ कोई न कोई सरूप

जरूर होयगौ,जाकौ अनुमान ई कर्यौ जाय सकै,समै के फेर के कारन उपलब्ध तौ नांय पर थोरी सी झलक आज मिलवे वारे छन्द गाथा में देखौ जाय सकै अरु जब सैकरान सालन के बाद अपभ्रंस ते ब्रजभाषा आदि छेत्रीय भाषान कौ विकास भयौ तौ लोकगीतन की परंपराऊ इनमें संगई आय गयी तौ या ब्रजभाषा में लोकगीतन की रचना हैबौ उतनौ ही पुरानौ है जितनी कि ई हमारी ब्रजभाषा । हाँ ई बात जरूर है ये सुरू के गीत आज मिलैं नॉय।

दूसरी भाषान की तरियाँ ब्रजभाषा में सैकरान सालन ते हजारन लाखन लोकगीत रचे गये और रचे जाय रहे हैं । ब्रज लोकगीतन कूँ अध्ययन की सुविधा सौं ऐसे बाँट्यौ जाय सकै :

1. लोकनायक-चरित-परक -

ऐसे लोकगीतन में वे आवैं जो इतिहास और दन्तकथान में प्रसिद्ध नायकन की तारीफ में बिनके बड़े-बड़े कामन की तारीफ मे बनाये गये हैं । ये लोकगीतन की स्रेनी में होते भयेऊ छन्द, रीति आदि की रूढ़िन में बंध गये हैं अरु प्रबन्धकाव्य कौ आनन्द दियौ करैं। आल्हा, ढोला, रांझौ, नौटंकी आदि ऐसे ई गीत हैं । इनकौ स्थापित छंद विधान इनकूं उपसास्त्रीय स्थिति तकऊ लै जाय।

2. लोक देवतान के स्तुतिपरक लोकगीत-

ये गीत या छेत्र में माने जायबे वारे लोकदेवता जैसे कूआ वारौ,जखिया पीर,जाहरवीर, कनुआभगत, देवबाबा की तारीफ में गाये जाएं । इनकी जात दैबे जाते समय लुगाई इनकूं गायौ करैं । जैसें- 'कूआवारौ बिचर गयौ बगियन में । '

3. लाँगुरिया -

है तौ येऊ स्तुतिपरक पर ये खाली देवी मइया (दुर्गा माता) की तारीफ में ई गाये जायौ करैं । इन गीतन में देवी कौ प्रमुख पार्षद लांगुरा विसैवस्तु रह्यौ करै । याते भक्तन की विनय, सिकायत, छेड़छाड़ इनमें देखी जाय-

'वारे लांगुरिया अति को लड़ाई मोते मति करै ।
वारे लांगुरिया तेरी धन खाय लई कारे नाग नें ।'

4.ऋतुपरक लोकगीत -

सिगरे भारतवर्ष की तरियाँ या ब्रज छेत्र मेंऊ रितुन कौ बदलबौ त्यौहारन के रूप में मनायौ जाय । फागुन के महीना में अरु सावन के महीना में यहाँ बड़ी धूमधाम होयौ करै,जो यहाँ के लोकगीतन में अच्छी तरह सौं स्पस्ट होय । फागुन के महीना में गाइये जावे वारे फाग तौ सिगरे भारत में मसहूर हैं । इनं फागन में लोक-आराध्य राधाकृष्ण, गोपी, ग्वाल-बालन कूँ लैकें आम आदमी की मस्ती दीख्यौ करै । गोपीन की कन्हैया सौं छेड़छाड़, विनती, शिकायत इन फागन की विसैवस्तु पायी जाय। गोपीन की कन्हैया सौं होरी नॉय खेलिबे कोअनुनय 'पॉंय लागूँ करजोरी, स्याम मोसे न खेलौ होरी।' कृष्ण सौं होरी खेलवे की इच्छा 'होरी तौ खेलूंगी हरि सौं कोई कहौ स्याम सुंदर सौं ।' मैं तो सोय रही सपने में मोपे रंग डार्यौ नन्दलाल आदि सैकरान होरीन कूँ रचिबे वारे लोकगीतकार इन फागन के कारन यहां अमर है गये हैं ।

होरी के संगई ब्रज में सावन के महीना में गायी जावे वारी मल्हारऊ खूब प्रसिद्ध हैं । इन मल्हारन में युवतीन की टीस, बिनकौ उल्लास, सिकायत पायी जाय -

सावन आयौ अम्मा मेरी सुहावनो जी,
एजी कोई सब सखि हम्बै कोई सब मिलि झूलन जांय ।
अरी बहिना आवैगो तेरौ भरतार, सपनौ तौ सांचौ होइगौ ।

लोकगीतन की परम्परा अरु ब्रज लोकगीत

-श्री शांति स्वरूप शर्मा

लोकगीत जैसौ कि नाम ते ई ध्वनित है रह्यौ है कि जो गीत आम बोलचाल की भाषा में अनगढ़े स्थानीय कविन के द्वारा अपने आसपास के वातावरन सौं प्रेरना लैकें बनाये जांय अरु आम जनता में लोकप्रिय है जांय संगई बिनमें स्थानीय लोकजीवन की झाँकी मिलै,लोकगीतन की स्रेनी में आयौ करैं । इन गीतन में छन्द ,रीति आदि सास्त्रीय मान्यतान की एवं स्थापित्त रूढ़िन की उपेक्षा देखवे कूँ मिलै ।

लोकगीतन की या परिभाषा में वे ही गीत आय रहे हैं जो काऊ देवता की तारीफ में या आम मानवीय प्रेम या सामाजिक पारिवारिक समस्यान कूँ दरसावें । लोकगीतन कौ बहुत बड़ौ भाग उन गीतन कौ है,जो जन्म,मूंडन, सादी-ब्याह के मौके पै बैयरन के द्वारा सैकरान सालन ते गाये जाय रहे हैं अरु जिनके बनायवे वारेन कौ कछू अतौ-पतौ नांय, जिनकूँ बूढ़ी-बड़ी मोंहजवानी नयी भौटियान (बहुअन) कूँ धरोहर की तरियाँ सौंपती रही हैं ।

चौंकि लोकगीत स्थानीय (लोकल) कविन के द्वारा बनाये जाँय जिनकूं ज्यादा सास्त्रीय ज्ञान नांय होय पर बे रस तें भरेपूरे होयौ करैं । याही कारन सौं ये कवि छेत्र विसेस सौं,वाके परिवेस सौं ज्यादा प्रभावित होवें । याई लए लोकगीतन में रस की अधिकता के संगई मुख्य विपैवस्तु सामाजिक रीति-रिवाज, त्यौहार-उत्सव, खान-पान, रहन-सहन, घर-परिवार,स्त्री-पुरुप, बालक-बच्चे,सादी-ब्याह आदि रह्यौ करैं । यदि लोकगीतन कूँ छेत्र विसेस की लोक संस्कृति कौ दरपन कहैं तौ कछू अनुचित नांय होयगौ । इन गीतन में या छेत्र की माटी की एक अनौखी गन्ध रची वसी होय । इनमें एक अनौखौ अलमस्तपनौ देखिवे कूं मिलै,जो इनकूँ दूसरे गीतन ते अलग करै । इन गीतन में एक आम आदमी की इच्छा,आसा-निरासा,खुसी-गमी, प्रेम-घृणा, कुण्ठा-महत्वाकांछा, लाग-डाँट आदि दिखाई परै । याही कारन सौं विसेस औसरन पै, रितुन पै, गीतन के अलग-अलग नाम पाये जांय जिनके नामन में जगह-जग्रह तौ अन्तर मिल सकै पर बिनकी विसेपता लगभग एक जैसी रहैं । जैसें ब्रज में फागुन के महीना में फाग गायौ जाए वैसेंई दूसरी जगहन पै होरी होयौ करै ।

जहां लौं लोकगीतन के उद्भव कौ सवाल है, लोकगीत तवई ते वनिवौ सुरू है गये जवतें आदमी नें होस संभार्‌यौ अरु अपनी मस्ती में अपनी भावनान कूँ निकारवे लग्यौ । या विचारते तौ भारतीय परम्परा में लोकगीतन की सुरुआत वैदिक युग ते ई मानी जानी चहियै, चौं या समै वैदिक भाषा आम बोलचाल की भाषा हती अरु ऋगवेद में ऐसे प्रसंग ऊ देखवे कूँ मिलैं जिनमें लोकगीतन कौ सहज रूप देख्यौ जाय सकै । पाछे ब्राह्मण साहित्य में ऐसे धार्मिक गीतन कौ संकेत मिलै जो जग्य (यज्ञ) के मौके गाये जायौ करते,जो आम जनता में खूब प्रचलित हते। रामायन-महाभारत तौ सुरू में लोकगीतन के रूप में ई प्रचलित हते जिननैं जगै जगै घूम-घूम कैं गाइये वारे गायौ करते । प्राकृत भाषा में ऊ लोकगीतन कौ कोई न कोई सरूप

जरूर होयगौ,जाकौ अनुमान ई कर्यौ जाय सकै,समै के फेर के कारन उपलब्ध तौ नांय पर थोरी सी झलक आज मिलवे वारे छन्द गाथा में देखी जाय सकै अरु जय सैकरान सालन के याद अपभ्रंस ते ब्रजभाषा आदि छेत्रीय भाषान कौ विकास भयौ तौ लोकगीतन की परंपराऊ इनमें संगई आय गयी तौ या ब्रजभाषा में लोकगीतन की रचना हैयौ उतनौ ही पुरानौ है जितनी कि ई हमारी ब्रजभाषा । हाँ ई यात जरूर है ये सुरू के गीत आज मिलैं नाँय।

दूसरी भाषान की तरियाँ ब्रजभाषा में सैकरान सालन ते हजारन लाखन लोकगीत रचे गये और रचे जाय रहे हैं । ब्रज लोकगीतन कूँ अध्ययन की सुविधा सौं ऐसे बाँट्यौ जाय सकै :

1. लोकनायक-चरित-परक -

ऐसे लोकगीतन में वे आवैं जो इतिहास और दन्तकथान में प्रसिद्ध नायकन की तारीफ में बिनके बड़े-बड़े कामन को तारीफ में बनाये गये हैं । ये लोकगीतन की स्रेनी में होते भयेऊ छन्द, रीति आदि की रूढ़िन में बंध गये हैं अरु प्रबन्धकाव्य कौ आनन्द दियौ करैं। आल्हा, ढोला, रांझौ, नौटंकी आदि ऐसे ई गीत हैं । इनकौ स्थापित छंद विधान इनकूं उपसास्त्रीय स्थिति तकऊ लै जाय।

2. लोक देवतान के स्तुतिपरक लोकगीत-

ये गीत या छेत्र में माने जायवे वारे लोकदेवता जैसे कूआ वारौ,जखिया पीर,जाहरवीर, कनुआभगत, देवबाबा की तारीफ में गाये जाएं । इनकी जात दैवे जाते समय लुगाई इनकूं गायौ करैं । जैसें- 'कूआवारौ बिचर गयौ बगियन में । '

3. लाँगुरिया -

है तौ येऊ स्तुतिपरक पर ये खाली देवी मइया (दुर्गा माता) की तारीफ में ई गाये जायौ करैं । इन गीतन में देवी कौ प्रमुख पार्षद लांगुरा विसैवस्तु रह्यौ करै । वाते भक्तन की विनय, सिकायत, छेड़छाड़ इनमें देखी जाय-

'वारे लांगुरिया अति की लड़ाई मोते मति करै ।
वारे लांगुरिया तेरी धन खाय लई कारे नाग नें ।'

4.ऋतुपरक लोकगीत -

सिगरे भारतवर्ष की तरियाँ या ब्रज छेत्र मेंऊ रितुन कौ बदलवौ त्यौहारन के रूप में मनायौ जाय । फागुन के महीना में अरु सावन के महीना में यहाँ बड़ी धूमधाम होयौ करै,जो यहाँ के लोकगीतन में अच्छी तरह सौं स्पस्ट होय । फागुन के महीना में गाइबे जावे वारे फाग तौ सिगरे भारत में मसहूर हैं । इन फागन में लोक-आराध्य राधाकृष्ण, गोपी, ग्वाल-बालन कूँ लैकें आम आदमी को मस्ती दीख्यौ करै । गोपीन की कन्हैया सौं छेड़छाड़, विनती, शिकायत इन फागन की विसैवस्तु पायी जाय। गोपीन की कन्हैया सौं होरी नाँय खेलिबे कीअनुनय 'पाँय लागूँ करजोरी, स्याम मोसे न खेलौ होरी।' कृष्ण सौं होरी खेलवे की इच्छा 'होरी तौ खेलूंगी हरि सौं कोई कहौ स्याम सुंदर सौं ।' मैं तो सोय रही सपने में मोपे रंग डार्यौ नन्दलाल आदि सैकरान होरीन कूँ रचिबे वारे लोकगीतकार इन फागन के कारन यहां अमर है गये हैं ।

होरी के संगई ब्रज में सावन के महीना में गायी जावे वारी मल्हारऊ खूब प्रसिद्ध हैं । इन मल्हारन में युवतीन की टीस, विनकौ उल्लास, सिकायत पायी जाय -

सावन आयौ अम्मा मेरी सुहावनो जी,
एजी कोई सब सखि हम्बै कोई सब मिलि झूलन जांय ।
अरी बहिना आवैगो तेरौ भरतार, सपनौ तौ सांचौ होइगौ ।

5. वारहमासा-

या प्रकार के गीतऊ रितु पै आधारित हैं । इन गीतन में काऊ घटना कौ या काऊ व्यक्ति कौ पूरौ वारहौ महीनान कौ वर्नन मिल्यौ करै ।

सती कौ किस्सा सुनौ, सुन लीजै चित लाई, गोवरधनके पास गाम एक सी पलसौं भाई ।

6.सादी-व्याह आदि खुसी के मौके पै गाइवे जावे वारे गीत-

वास्तव में व्रज लोक संस्कृति कौ सही स्वरूप इनई गीतन में पायौ जाए । इनमें यहां की रीति रिवाजन कौ, लोगन की भावनान कौ चित्रण पायौ जाए । इनकूं मंगल अवसर पै वैयर गायौ करैं और ये सैकरान सालन ते चले आय रहे हैं। इनके वनायवे वारे कौ कोई अतौपतौ नाँय । हर मंगल अवसर पै अलग-अलग तरह के गीत मिलैं । जन्म के समै वच्चा अरु वाकी मइया कूं लैकें जच्चा गाये जांय-' जच्चा मेरी खाइवौ न जानैं ।'

वालक के मूड़ने पै मूड़ने के गीत, सादी व्याह के मौके ते लगाय लगनु और व्याह के पीछे दई देवता पूजिवे तक अलग-अलग नामन के गीत या छेत्र में प्रचलित हैं ।

लगुन पै-' लगुन आयी हरे हरे लगुन आयी हरे हरे मेरे अंगना रघुनन्दन फूले न समाय ।'
लगुन के दो दिना वाद रतजगौ, वरना घोड़ी -

आज हरियाले वरना ने धनुष उठाय लियौ ।
धनुष उठाय राम सीता जी कूँ व्याह लियौ ।

हर मंगल मौके पै गाइवे जावे वारे वधाये जिनमें देवर जेठ सुसर सवकौ उल्लेख आय जाए -

आज दिन सोने कौ हुऔ महाराज,
सोने के सव दिन रूपे की रात,
सोने के कलस भरइयो महाराज । आज ----

वारौठी गीत -

राम रंग वरसैगौ हां हां राम रंग वरसैगौ
कौन ने कुलाई घोड़ी कौन ने सजाई
कौन के कारन आई, रंग वरसैगौ । हां हां राम रंग-----

गारी -
वरात के जेंमते वक्त गायी जावे वारी-

काहे उठ वैठे और लै लेंते काहे उठ वैठे
वाखर में राज हमारौ री वाखर में ------

ललमुनिया-

ज्यौनार के मौके पै मुड़ैली पै वैठकें लुगाइन के द्वारा गाए जावे वारौ गीत-'लै लै पनमेसरी कूकर खोइया।' लुगाइन के द्वारा व्याहवे के ताहीं वरात जाइवे वाद कर्‌यौ जावे वारौ-यामें गीतन के संगई अभिनयऊ होयौ करै ।

पत्तर बांधबौ अर खोलबौ-

ब्रज छेत्र में ब्याव के हैंबे ते पहलें बेटी वारेन की ओर ते पत्तर बांधी जात् अर बेटा वारेन की ओर ते खोली जात । या अवसर पै जो गीत गाये जांए वे विसेस प्रकार के होंवें । इनमें लड़की वारेन की ओर ते लड़का वारेन के लोगन कूँ व्यंग-चातुर्य परख्यौ जाए संगई इनमें बेटा वारेन के प्रति आदर भाव झलकै ।

भाँवर गीत- दुल्हे-दुल्हन के फेरा लेंबे सबै बैयरन के द्वारा गाए जांए-

मेरी पैली भँवरिया अबहू बेटी बाप की
मेरी सतवी भँवरिया अब बेटी ससुर की ।

दई देवता पूजिबे जाने सबै गाये जाबे वारे गीत-

बिना कुल देवतान के प्रति आदर भाव दिखाइबे अर पूजिबे टक ब्याह की रस्म पूरी नाँय मानी जाय । इनें नैके पै लुगाइन के द्वारा गीत गाने जांए। इनमें कुल देवतान कौ उल्लेख होतो करै । 'मुकुट वारी होय दे अँढुँदे जी मुकुट वारी होय दे अँढुँदे, घर में सुंदर नार ललन होय पर नाहि भावै ।'

7. लावनी -

ये लोकगीत संस्कार प्रधान होंदी करें । इनमें नायक-नायिका के सवाल जवाब रहतौ करें । टर्रे के आधार पै अनेक भेद पाये जावें । इनमें लांगुरी एवं वशीकरण लावनी ज्यादा प्रसिद्ध हैं ।

8. रसिया -

ये लोकगीत सिंगार, भक्ति, करुन रस प्रधान होंदी करें । रस की अधिकता के कारन ही ज्यादा इनकूँ रसिया कहयौ जात। ब्रज छेत्र कूँ भगवान कृष्ण एवं उनकी अभिन्न प्रियतमा राधिका जी की जन्म स्थली एवं लीला स्थली हैबे कौ गौरव प्राप्त है। ह्यां के लोकगीतन में विसेसकर रसियन में भगवान कृष्ण अर राधा खूब देखिबे कूँ मिलैं । रसियन कौ अधिकतर भाग राधा-कृष्ण की लीलान कूँ लैकें बन्यौ भयौ है । ऐसौ कौन ब्रजवासी होयगौ जानें माखन चोरी, माटी खावन, चीरहरन, पनघट, दधि, लिलिहार, रंगरेजिन, गौचारन, गोवर्धनधारन, मगाई, दुल्हन आदि लीलान ते सम्बन्धित रसिया नाँय सुने हुंगे। इन रसियान कूँ रचिवेवारे या छेत्र में मसहूर हैं। इनमें पं. घासीराम जी, बाबू खलीला, पुरुषोत्तम, मदनमोहन ब्रजवासी, प्रभुदत्त, स्वामी बाबू गांठौलो वारे, मिश्रराम, मल्लिराम, अवधबिहारी, चन्द्रसखी के बनाये भए रसिया बच्चा बच्चन की जुबान पै रच बस गये हैं -

'मैया अब मैं घर ते कबहूँ बुलावैं ग्वालिन घर में मोय ।'
'इकली घेरी बन में आय स्याम तैनें कैसी ठानी रे ।'
'मैया कर दै मेरी ब्याह मंगाय दै दुल्हन गोरी सी ।'

सिंगार प्रधान रसियान में राधाकृष्ण बिनै ते अलग रसिया अर गोरी कूँ लैकें बने भये रसिया खूब गाये जांय। इनमें रसिया सामान्य प्रेमी नायक अर गोरी सामान्य प्रेमिका नायिका होंदी करै-

'मृग नैनी तेरी यार नवल रसिया ।'
'जुरि आयौ दल रसिया गोरी को जुरि आ

5. वारहमासा-

या प्रकार के गीतऊ रितु पै आधारित हैं । इन गीतन में काऊ घटना कौ या काऊ व्यक्ति कौ पूरौ वारहौ महीनान कौ वर्नन मिल्यौ करै ।

सती कौ किस्सा सुनौ, सुन लीजै चित लाई, गोवरधनके पास गाम एक सी पलसौं भाई ।

6.सादी-व्याह आदि खुसी के मौके पै गाइबे जावे वारे गीत-

वास्तव में व्रज लोक संस्कृति कौ सही स्वरूप इनई गीतन में पायौ जाए ।इनमें यहां की रीति रिवाजन कौ, लोगन की भावनान कौ चित्रण पायौ जाए ।इनकूँ मंगल अवसर पै वैयर गायौ करैं और ये सैकरान सालन ते चले आय रहे हैं।इनके वनायवे वारे कौ कोई अतौपतौ नॉय ।हर मंगल अवसर पै अलग-अलग तरह के गीत मिलैं ।जन्म के समै बच्चा अरु वाकी मइया कूँ लैकें जच्चा गाये जांय-' जच्चा मेरी खाइबौ न जानैं ।'

वालक के मूड़ने पै मूड़ने के गीत, सादी व्याह के मौके ते लगाय लगनु और व्याह के पीछे दई देवता पूजिवे तक अलग-अलग नामन के गीत या छेत्र में प्रचलित हैं ।

लगुन पै-' लगुन आयी हरे हरे लगुन आयी हरे हरे मेरे अंगना रघुनन्दन फूले न समांय ।'
लगुन के दो दिना वाद रतजगौ, वरना घोड़ी -

आज हरियाले वरना ने धनुष उठाय लियौ ।
धनुष उठाय राम सीता जी कूँ व्याह लियौ ।

हर मंगल मौके पै गाइवे जावे वारे वधाये जिनमें देवर जेठ सुसर सवकौ उल्लेख आय जाए -

आज दिन सोने कौ हुऔ महाराज,
सोने के सव दिन रूपे की रात,
सोने के कलस भरइयो महाराज । आज ----

वारौठी गीत -

राम रंग वरसैगौ हां हां राम रंग वरसैगौ
कौन ने कुलाई घोड़ी कौन ने सजाई
कौन के कारन आई, रंग वरसैगौ । हां हां राम रंग-----

गारी -
वरात के जेंमते वख्त गायी जावे वारी-

काहे उठ वैठे और लै लेंते काहे उठ वैठे
वाखर में राज हमारौ री वाखर में ------

ललमुनिया-

ज्यौनार के मौके पै मुड़गैली पै वैठकें लुगाइन के द्वारा गाए जावे वारौ गीत-'लै लै पनमेसरी कूकर खोइया।' लुगाइन के द्वारा व्याहवे के ताईं वरात जाइवे वाद कर्यौ जावे वारौ-यामें गीतन के संगई अभिनयऊ होयौ करै ।

पत्तर बांधबौ अरु खोलबौ-

ब्रज छेत्र में बरात के जैंमे ते पहलैं बेटी वारेन की ओर ते पत्तर बांधी जाए अरु बेटा वारेन की ओर ते खोली जाए । या अवसर पै जो गीत गाये जांए वे विसेस प्रकार के होवें । इनमें लड़की वारेन की ओर ते लड़का वारेन के लोगन कौ वाक-चातुर्य परख्यौ जाए संगई इनमें बेटा वारेन के प्रति आदर भाव झलकै ।

भॉवर गीत- दुल्हे-दुल्हन के फेरा लेते समै बैयरन के द्वारा गाए जांए-

मेरी पैली भॅवरिया अबहू बेटी बाप की
मेरी संतवी भॅवरिया अब बेटी सुसर की ।

दई देवता पूजिबे जाते समै गाये जाबे वारे गीत-

बिना कुल देवतान के प्रति आदर भाव दिखाइये अरु पूजिबे तक ब्याह की रस्म पूरी नांय मानी जाएं ।ऐसे मौके पै लुगाइन के द्वारा गीत गाये जांए।इनमें कुल देवतान कौ उल्लेख होयो करै ।'मुकट याकौ हीरा ते जड़ियौ जी मुकट याकौ हीरा ते जड़ियौ, घर में सुंदर नार बलम तोय पर नारी भावै ।'

7. लावनी -

ये लोकगीत संस्कार प्रधान होयौ करैं । इनमें नायक-नायिका के सवाल जवाब रह्यौ करैं । तर्ज के आधार पै अनेक भेद पाये जावें । इनमें लंगड़ी एवं वशीकरण लावनी ज्यादा प्रसिद्ध हैं ।

8. रसिया -

ये लोकगीत सिंगार, भक्ति, करूण रस प्रधान होयौ करें । रस की अधिकता के कारन ही स्यात इनकूं रसिया कह्यौ जाय। ब्रज छेत्र कूं भगवान कृष्ण एवं उनकी अभिन्न प्रियतमा राधिका जी की जन्म स्थली एवं लीला स्थली हैबे कौ गौरव प्राप्त हतै। ह्यां के लोकगीतन में विसेसकर रसियान में भगवान कृष्ण अरु राधा खूब देखिबे कूं मिलैं । रसियान कौ अधिकतर भाग राधा-कृष्ण की लीलान कूं लैकें बन्यौ भयौ है । ऐसौ कौन ब्रजवासी होयगौ जानें माखन चोरी, माटी खावन, चीरहरन, नागदमन, दधि ,लिलहार, रंगरेजिन, गौचारन, गोवर्धनधारन , सगाई, दुल्हन आदि लीलान ते सम्बन्धित रसिया नांय सुने हुंगे। इन रसियान कूं रचिबेवारे या छेत्र में मसहूर हैं। इनमें पं.घासीराम जी, बाबू खलीफा, पुरूषोत्तम ,मदनमोहन ब्रजवासी, प्रभुदास, स्यामबाबू गांठौली वारे, सिवराम, सालिगराम, अवधबिहारी, चन्द्रसखी के बनाये भए रसिया बच्चा बच्चान कीजुबान पै रच बस गये हैं -

'मैया जब मैं घर ते चलूँ बुलावें ग्वालिन घर में मोय ।'
'इकली घेरी बन में आय स्याम तैनें कैसी ठानी रे ।'
'मैया कर दै मेरौ ब्याह मंगाय दै दुल्हन गोरी सी ।'

सिंगार प्रधान रसियान में राधाकृष्ण बिसै ते अलग रसिया अरु गोरी कूं लैकें बने भये रसियाऊ खूब पाये जांय। इनमें रसिया सामान्य प्रेमी नायक अरु गोरी सामान्य प्रेमिका नायिका होयौ करै-

'मृग नैनी तेरौ यार नवल रसिया ।'
'जुरि आयौ दल रसिया गोरी कौ जुरि आयौ रे ।'

9. अन्य रसिया -

या वर्ग में वे लोकगीत आवें जो ऊपर के काऊ वर्ग में नाँय गिने जांय । ऐसे गीतन में प्रमुख विसै वस्तु कोई तात्कालिक घटना ,कोई समस्या, पारिवारिक सामाजिक मुद्दौ रह्यौ करै जैसे सास बहू कौ झगरौ - 'सास तेरे बोलन पै बावाजिन है जाऊंगी ।'

पति सौं न्यारौ हैवे की मांग -

'मोपै बोल सहे नांय जांय बलम बनवाय दै घर न्यारौ ।'

पति ते हुक्का पीबौ छोड़िबे की गुजारिस-

'बलम तुम हुक्का छोड़ौ ,कैसे कटैगी सिगरी रात ।'

वैसे आजकल दहेज, परिवार नियोजन, राष्ट्रीय एकता, साक्षरता, सांप्रदायिक सौहार्द जैसे विसैन कूँ लैकें बनिवे वारे गीत खूब चल रहे हैं ।

ऊपर दिये गये वर्गीकरन सौं लोकगीतन कौ परिचय आसानी सौं दियौ जाय सकै याई लिए कियौ गयौ है। ई कोई पूरौ या अन्तिम नाँय । इनमें एक वर्ग के गीत दूसरे में आसानी ते आय सकें ।

लोकगीत लोकसंस्कृति कौ दरपन होयौ करै । जैसौ आसपास में घटित होय,जैसौ आम जनता सोचै बू सब लोकगीत में झलक्यौ करै । लोकसंस्कृति कौ सही प्रकार ते अध्ययन करिवे के ताईं लोकगीतन कौ जानिवौ अरु अध्ययन करिबौ बहुत जरुरी है । आज जब सबई जगै समै की कमी महसूस करी जाय रही है, सादी-ब्याहन कौ समै बहुत कम है गयौ । ऐसी स्थिति में इन गीतन के खास करके सादी ब्याह के मौके पै गाइबे जाबे वारे गीतन के लुप्त हैवे कौ खतरा पैदा है गयौ है । आज की नई पीढ़ी की उदासीनताऊ याकौ एक कारन नजर परै । पढ़ेलिखे समाज में इनकौ गाइबौ और जानबौ पिछड़ौपन कौ प्रतीक मान्यौ जाए । या दिसा में जागरुकता लाइबौ जरुरी है । संगई इन लोकगीतन कौ संकलन करौ जाय । जो बहुतई जरुरी है । या छेत्र में लोकगीतन ते संबंधित गीतन के संकलन फुटपाथन पै बिकते भये मिल जाएं,पर ये सब बहुत थोरे अरु छोटे हैं । ब्रज अकादमी कूं या दिसा में गम्भीरता सौं सोचनौ चइयै । आकासवाणी मथुरा अपने केन्द्र ते लोकगीतन कूँ प्रसारित करबे महत्वपूर्न काम कर रही है पर ब्रज लोकगीतन के संरच्छन के ताईं ये सब नाकाफी है। संगठित प्रयास जरूरी हैं।

-ग्राम गाँठौली, पो.जतीपुरा, जिला.मथुरा

☐

लोकगीत विसेस औसरन सौं और विसेस भौगोलिक और ऋतु आदि परिस्थितीन सौं जुरे भए होंय हैं। सामन की धुनि सामन में ही सुहामें हैं, फूस-माह के जाड़ेन में नहीं। ब्याह के गीत चैती सौं न्यारे हैं। जेई कारन है कि हर एक आँचर में अपने ही लोकगीतन कौ विकास होय। पहाड़ी क्षेत्रन की धुनि ब्रज की धुनन सौं अलगई पहचनी जांय।

ब्रजनारी लोकगीतन कौ सांस्कृतिक अरु साहित्यिक महत्व

-डा. [illegible]

आदिकाल ते ही कोमलता की अवस्था में पली नारी जाति के प्रतीक गीत अरु संगीत कूँ [illegible] रहे है । [illegible] भावनान की कोमलता, कंठ की मधुरता अरु ह्दय की सुकुमारता में [illegible] देख्यौ अरु अपने सुमधुर कंठ ते संगीत कूँ [illegible] लियौ । जाय पुरुष वर्ग विसेस परिसम के पस्चातऊ उतनौ सुमधुर बनायवे में [illegible] नाँय है सकौ है । [illegible] संगीत मधुर है तौ नारी सुमधुर, संगीत रस की अधिष्ठात्री अरु भावनान की प्रतीक है । याई कारन ते अनादि काल सौं नारी अरु संगीत द्वै भिन्न रूप नाँय हैकें एक समझे जाँय हैं । याऊ में ब्रज बनितान कौ संगीत, बस्त्री ई बहु [illegible] रह्यौ।

ब्रज कौ नाम लेतई एक अनुपम अरु विसिस्ट छेत्र कौ आभास होन लगै । [illegible] श्री कृष्ण की [illegible] वौ हर दिना ई आनंद ,उमंग अरु उल्लास में डूबौ रहबै । यहाँ नित नवीन पर्व अरु त्यौहार [illegible] । [illegible] के [illegible] परिवेस, आचार-विचार, रहन-सहन,खान-पान अरु रीति-रिवाज के अनुरूप जीवन के [illegible] होत हैं अरु [illegible] सौं संस्कृति कौ निर्मान होय है। ब्रज के सांस्कृतिक जीवन कौ सबसौ रंगीलौ अरु [illegible] रूप हूयाँ के [illegible] देखिबे कूँ मिलै है अरु याऊ में ब्रज की कोकिलकंठी नारीन के गीतन कूँ सुनिकै मनुस्य कौ [illegible] सुधिबुधि खो बैठै । ब्रज में स्त्री गीतन के द्वै रूप देखिबे में आमें। एक अनुष्ठानिक अरु दूसरौ मांगलिक । अनुष्ठानिक गीत [illegible] की कार्य करैं अरु मांगलिक गीत अवसर की सुंदरता बढ़ामें साथई जे लोकरंजन करिबे में [illegible] होय हैं। [illegible] त्यौहार, पर्व अरु उच्छवन पै गाये जायबे वारे नारी गीतन में सांस्कृतिक रूप की [illegible] देख रहे हैं ।

यों तौ त्यौहार, पर्व अरु उत्सव तौ सब जगै ई मनाये जामें हैं । पर ब्रज मे इनकूं [illegible] महत्व मिल्यौ भयौ है । [illegible] नें ठीक ई कही है कै इनपै सात वार में नौ त्यौहार की उक्ति चरितार्थ होबै । ब्रज के सांस्कृतिक जीवन में जे ऐसे रचे बसे है कै इनकूँ अलग नाँय कियौ जाय सकै । ब्रज के इन पर्व अरु त्यौहारन पै ब्रज ललनान के कोमल कंठ ते निकरबे वारे सुरीलौ, रंगीली अर रसीली तान सुनबैवान के कानन में ऐसौ अमृत घोर देय है कै बे अनिर्वचनीय आनन्द की अनुभूति करबे लगे हैं । जे त्यौहार अरु पर्व कहूँ तौ धर्म कौ सहारौ लए हैं तौ कहुं सामाजिकतान अर कहूँ छेत्रीय परंपरान कौ निर्वाह करते भये देस की मुख्यधारा ते निरंतर जुरे भये हैं । धार्मिक पर्वन में दसहरा, सकरात, सोमौती मावस, कातिक न्हायवौ, ग्रहन अर दुर्गास्टमी आदि प्रमुख माने जायें । इन पर्वन पै गंगा-जमुना, ताल-तलैया, कूआ-बावरी आदि में न्हायकें [illegible] पुन्य प्राप्त करें । कातिक मास में भोर ते ई इनमें न्हायबे के लै बैयरन की भीर [illegible] उमड़ परै। न्हायकें बैयर मंदिर में [illegible] अर राई दामोदर की कथा सुनकें पूजा करैं अर भजन गामें । पूजा में कछु [illegible] की [illegible] अपने [illegible] कूँ पैलेई दै दैमें ।

राधा बूझै बात किसन सौं किसविध कातिक न्हाइयै राम
नौन मिरच कौ नेंम राधा प्यारी फीकेई भोजन करियै राम ।

*　　　　*　　　　*

अपने पति कौ नेंम राधा प्यारी धरती में सेज बिछइयौ राम
दामोदर के मंदिर जइयो हरिगुन गइयौ राम ।

*　　　　*　　　　*

मकर सकरात कौ पर्व भूमरे चार बजे तेंई सुरू है जावै है। या दिना दान पुन्य कौ विसेस महत्व मानौ जाय। कछु लोग गुप्त दानऊ करैं । कोऊ बैयर तौ या दिना ते सुरू करिकैं बारह महीना की हर चौदह तारीख कूँ भजन गवावै ।

माह महीना आई सकरात भजन करौ हर की प्यारी
भजन करौ अरु गीत गवाऔ तिल कौ दान करौ हर की प्यारी ।

इन पर्वन में चंदा अरु सूरज ग्रहन कौऊ विसेस महत्व मान्यौ जाय है । आस परोस की बैयरबानी इकठौर हैकै नांई गीत गामें अरु भजन कीर्तन करें । ब्रजलोक में याके पीछे एक विसेस मान्यता है । एक बेर मेहतरन ते चन्द्रमा नें एक समा की बार उधार लै लीनी । पर वू काऊ कारन ते लौटाय नाय पायौ । तब मेहतरन नें वापै चढ़ाई कर दीनी। या विपदा ते चन्द्रमा कूँ छुड़ायवे के काजें भगवान के भजन गाइकै विनते फरियाद करी जाय अरु मेहतरन कूँ दान दियौ जाय । बैयर जो गीत गामें वाकी कछु पंक्ति या तरियाँ हैं -

चन्दाऊ सुखिया सूरजऊ सुखिया रामा
गहन परे तौ जब वोऊ दुखिया रामा ।

या गीत में जीवन में अनुभूत सास्वत सत्य कौ उद्‌घाटन कियौ गयौ है कै या संसार में कोऊ सुखी नॉय रह सकै । जाते दुख कौ समै हँसि बोल कै काटनौ चइयै । जी जीवन दर्सन जा गीत में कैसी स्वाभाविकता के संग दर्सायौ गयौ है ।

वर्स के विभिन्न महीनान में परिवे वारे त्यौहार, व्रत, उत्सव अरु मेलान पैऊ नारीन के गीतन कौ बड़ौ अनूठौ रूप देखबे कूँ मिलै । जे गीत यहां की संस्कृति की सजीवता अरु समृद्धि कौ द्योतन करवे वारे हैं । ग्रीस्म रितु में छीनहीन भई प्रकृति जब सावन मास में हरित वस्त्र धारन करकैं उत्फुल्ल दीसवे लगै तब भैया भैन कौ लोकोत्सव झूलनौ आवै। या औसर पै भैन भइया कैं राखी बाँधै अरु भाई वाकूँ उपहार देवें । सांझ के समै भैन अपनी सखियन के संग झूला झूलती भई भइया भैन के नेह भरे गीत गामें -

कच्चे नीम की निबोरी सावन बेगि अइयोजी
भइया दूर मति दीजो हमनें कौन बुलावैगौ,
भैना पास ही तोय दिंगे तोकूँ हम ही बुलामिंगे ।

नन्ही मुन्नी बालिकान के ही मन में नहीं,सुसरार में बैठी भैन के मनन मेंऊ भैया के लैवे आयवे की आस लगी रहै-

उड़ि उड़ि कागा मेरे पीहर जाओ, लाऔ खबर माई बाप की,
जौ तक तो कागा मेरौ उड़न न पायौ वीर लिवउआ वे आ गये,
चंदन की चौकी मेरे भैया जो बैठे बात सजन से करि रये ।
भेजो रे भेजो जीजा भैन हमारी, संग की सहेली झूलै बागमें ।

अरु जीजा जब भैन कूँ नाँय भेजै तौ भैन कौ मन हाहाकार कर उठै–

मिलते तो जइयो मेरे माँ के रे जाये
छतिया हिलोरे लै रई,
मत रोओ भैना मेरी मत रोओ माँ की जाई
छतिया से पाथर बाँधिये ।

इन गीतन के अतिरिक्त अनेक प्रबन्धात्मक गीतऊ गाये जामें जिनमें चंदना, बिजैरानी, लहरिया, पनिहारी अरु चन्द्रावली मुख्य हैं । इन गीतन में प्रियतम के विरह में दग्ध नायिकान कौ चित्रन अधिक मिलै है । परंतु अधिकांस में गीतन के अंत में वू अपने प्रिय की आगोस में खोयकें अपने सिगरे दुख दर्द भूलि जाय है । उदाहरन के लै हम लहरिया गीत कूँ लै सकैं–

पाँच टका दुंगी गांठ के
है कोई लस्कर जाय लहरिया
सब रंग भीजे धन कौ डोरिया ।

मोरा अरु चन्द्रावली गीत ऐसे हैं जिनकौ अंत दुखांत है । याकौ कारन है कै इनके अंत में प्रियतमा अपने प्रियतम ते हमेसा-हमेसा के लै बिछुर जावै । मोरा गीत में प्राकृतिक अरु मानवीय भावनान को बड़ौ रम्य गुम्फन भयौ है–

भर भादों की रे मोरा रैन अँधेरी
राजा की रानी पानी नीकरी जी ।
*　　　*　　　*
जोई जोई खेंचू रे मोरा देय लुड़काय पंख पसारै मोरा जल पिये जी ।
हट हट हटरे मोरा भरने दे नीर मो घर सास रिसाइये जी
तुमरी तो सासुल रनियों हमरी है माय आज बसेरौ हरियल बाग में जी ।

अंत में रानी कौ पति मोर कूँ मारिकै लै आवै अरु अपनी रानी ते बाय बाँधिबे के तांईं कहै । पर रानी के मन में तौ फेरऊ बाकी कौहक बसी रहवै । या गीत में मोर एक आदर्स प्रेमी कौ प्रतीक बनिकें आयौ है । मोरा की तरियों ई चन्द्रावली में एक ऐसी ब्रज युवती की कथा है जो परिस्थिति में परिकें एक आताताई के चंगुल में फसि जाय है । बानें हर तरियों प्रयत्न करलियौ कै बू कैसैऊ बचि जाय पर सफल नाँय भई । अंत मे बानें आत्मदाह करिकें अपने सतीत्व की रच्छा करी । या गीत में भारतीय नारी की वीरता अरु अपनी आन की रच्छा के लै मर मिटबे कौ बड़ौई अदभुत रूप बर्नित कियौ गयौ है–

जाऔ सुसर घर अपने जाऔ बाबुल घर आपने
पानी न पीऊँ पठान कौ प्यासी मर जाऊँ
सेज न सोऊँ पठान की ओंधन मर जाऊँ
मुगला नें फेरी है पीठ तमुअन दै लई आग
ठाड़ी तो जरै चन्द्रावली जाके माई न बाप ।

इनके अतिरिक्त कछु ऐसे फुटकर गीतऊ मिलें जिनमें प्रकृति कौ बड़ौई मनोहारी चित्रन भयौ है । सामन ते पीछे भादों के महीना में जनमाठें कौ लोकोत्सव आवै जा दिना कृस्न नें मथुरा मे कंस की जेल में जनम लियौ। या औसर पै कृस्न की झाँकी सजाई जावै अरु याके जन्म संबंधी गीत गाये जामें–

सिरी कृस्न नें जनम लियौ मामा की जेलन में ।
या
हुए देवकी के लाल जसोदा जच्चा बनी ।

राधा बूझै बात किसन सौं किसविध कातिक न्हाइयै राम
नौन मिरच कौ नेंम राधा प्यारी फीकेई भोजन करियै राम ।

*   *   *

अपने पति कौ नेंम राधा प्यारी धरती में सेज बिछइयौ राम
दामोदर के मंदिर जइयो हरिगुन गइयौ राम ।

*   *   *

मकर सकरात कौ पर्व भूमरे चार बजे तेंई सुरू है जावै है। या दिना दान पुन्य कौ विसेस महत्व मानौ जाय। कछु लोग गुप्त दानऊ करैं । कोऊ बैयर तौ या दिना ते सुरू करिकैं बारह महीना की हर चौदह तारीख कूँ भजन गवाबै ।

माह महीना आई सकरात भजन करौ हर की प्यारी
भजन करौ अरु गीत गवाऔ तिल कौ दान करौ हर की प्यारी ।

इन पर्वन में चंदा अरु सूरज ग्रहन कौऊ बिसेस महत्व मान्यौ जाय है । आस परोस की बैयरबानी इकठौर हैकै नांई गीत गामें अरु भजन कीर्तन करें । ब्रजलोक में याके पीछे एक विसेस मान्यता है । एक बेर मेहतरन ते चन्द्रमा नें एक समा की यार उधार लै लीनी । पर वू काऊ कारन ते लौटाय नाय पायौ । तब मेहतरन नें बापै चढ़ाई कर दीनी। या विपदा ते चन्द्रमा कूँ छुड़ायवे के काजें भगवान के भजन गाइकै विनते फरियाद करी जाय अरु मेहतरन कूँ दान दियौ जाय । बैयर जो गीत गामें वाकी कछु पंक्ति या तरियाँ हैं -

चन्दाऊ सुखिया सूरजऊ सुखिया रामा
गहन परे तौ जब वोऊ दुखिया रामा ।

या गीत में जीवन में अनुभूत सास्वत सत्य कौ उद्‌घाटन कियौ गयौ है कै या संसार में कोऊ सुखी नाँय रह सकै । जाते दुख कौ समै हँसि वोल कै काटनौ चइयै । जी जीवन दर्सन जा गीत में कैसी स्वाभाविकता के संग दर्सायौ गयौ है ।

वर्स के विभिन्न महीनान में परिवे वारे त्यौहार, व्रत, उत्सव अरु मेलान पैऊ नारीन के गीतन कौ बड़ौ अनूठौ रूप देखबे कूँ मिलै । जे गीत यहां की संस्कृति की सजीवता अरु समृद्धि कौ द्योतन करवे वारे हैं । ग्रीस्म रितु में छीनहीन भई प्रकृति जब सामन मास में हरित वस्त्र धारन करकैं उत्फुल्ल दीसवे लगै तब भैया भैन कौ लोकोत्सव झूलनौ आवै। या औसर पै भैन भइया कैं राखी बाँधै अरु भाई वाकूँ उपहार देवें । सांझ के समै भैन अपनी सखियन के संग झूला झूलती भई भइया भैन के नेह भरे गीत गामें -

कच्चे नीम की निबोरी सामन वेगि अइयोजी
भइया दूर मति दीजो हमनें कौन बुलावेगौ,
भैना पास ही तोय दिंगे तोकूँ हम ही बुलामिंगे ।

नन्ही मुन्नी बालिकान के ही मन में नहीं,सुसरार में वैठी भैंन के मनन मेंऊ भैया के लैवे आयवे की आस लगी रहै-

उड़ि उड़ि कागा मेरे पीहर जाओ, लाऔ खबर माई बाप की,
जौ तक तो कागा मेरौ उड़न न पायौ वीर लिवउआ वे आ गये,
चंदन की चौकी मेरे भैया जो बैठे बात सजन से करि रये ।
भेजो रे भेजो जीजा भैन हमारी, संग की सहेली झूलै बागमें ।

अरु जीजा जब भैन कूँ नॉय भेजै तौ भैन कौ मन हाहाकार कर उठै-

मिलते तो जइयो मेरे माँ के रे जाये
छतिया हिलोरे लै रई,
मत रोओ भैना मेरी मत रोओ माँ की जाई
छतिया से पाथर बाँधिये ।

इन गीतन के अतिरिक्त अनेक प्रबन्धात्मक गीतऊ गाये जामें जिनमें चंदना, विजैरानी, लहरिया, पनिहारी अरु चन्द्रावली मुख्य हैं । इन गीतन में प्रियतम के विरह में दग्ध नायिकान कौ चित्रन अधिक मिलै है । परंतु अधिकांस मे गीतन के अंत में वू अपने प्रिय की आगोस में खोयकैं अपने सिगरे दुख दर्द भूलि जाय है । उदाहरन के लै हम लहरिया गीत कूं लै सकें-

पाँच टका दुंगी गांठ के
है कोई लस्कर जाय लहरिया
सब रंग भीजे धन कौ डोरिया ।

मोरा अरु चन्द्रावली गीत ऐसे हैं जिनकौ अंत दुखांत है । याकौ कारन है कै इनके अंत में प्रियतमा अपने प्रियतम ते हमेसा-हमेसा के लै बिछुर जावै । मोरा गीत में प्राकृतिक अरु मानवीय भावनान को बड़ौ रम्य गुम्फन भयौ है-

भर भादों की रे मोरा रैन अँधेरी
राजा की रानी पानी नीकरी जी ।
*   *   *
जोई जोई खेंचू रे मोरा देय लुड़काय पंख पसारै मोरा जल पिये जी ।
हट हट हटरे मोरा भरने दे नीर मो घर सास रिसाइये जो
तुमरी तो सासुल रनियाँ हमरो है माय आज बसेरौ हरियल बाग में जी ।

अंत में रानी कौ पति मोर कूँ मारिकै लै आवै अरु अपनी रानी ते बाय बाँधिबे के ताँई कहै । पर रानी के मन में तौ फेरऊ बाकी कौहक बसी रहवै । या गीत में मोर एक आदर्स प्रेमी कौ प्रतीक बनिकैं आयौ है । मोरा को तरियाँ ई चन्द्रावली में एक ऐसी ब्रज युवती की कथा है जो परिस्थिति मे परिकें एक आताताई के चंगुल में फसि जाय है । वानें हर तरियाँ प्रयत्न करलियौ कै वू कैसैऊ बचि जाय पर सफल नॉय भई । अंत में वानें आत्मदाह करिकैं अपने सतीत्व की रच्छा करी । या गीत में भारतीय नारी की वीरता अरु अपनी आन की रच्छा के लै मर मिटबे कौ बड़ौई अद्भुत रूप बर्नित कियौ गयौ है-

जाऔ सुसर घर अपने जाऔ बाबुल घर आपने
पानी न पीऊँ पठान कौ प्यासी मर जाऊँ
सेज न सोऊँ पठान की औंधन मर जाऊँ
मुगला नें फेरी है पीठ तमुअन दै लई आग
टाड़ी तो जरै चन्द्रावली जाके माई न बाप ।

इनके अतिरिक्त कछु ऐसे फुटकर गीतऊ मिलें जिनमें प्रकृति कौ बड़ौई मनोहारी चित्रन भयौ है । सावन ते पीछे भादों के महीना में जनमाठें कौ लोकोत्सव आवै जा दिना कृष्ण नें मथुरा में कंस की जेल में जनम लियौ। या औसर पै कृष्ण की झाँकी सजाई जावै अरु वाके जन्म संबंधी गीत गाये जामें-

सिरी कृष्ण नें जनम लियौ मामा की जेलन में ।
या
हाॅ देवकी के लाल जसोदा जच्चा बनी ।

क्वार के महीना में दसहरा कौ लोकोत्सव आवै । ब्रजनारी नव दुर्गा की स्थापना करें । छई छापरी नौ दिना तोंनू नौरता खेलैं अरु देवी के गीत या लांगुरिया गामें । लांगुरिया ब्रज नारीन कौ अति प्रिय गीत है । एक दो गीतन की झलक ह्यां दिखाय रहे हैं -

कैला मैया के भमन में घुटवन खेलै लांगुरिया ।
कैला मैया कौ जुरौ है दरवार लांगुरिया चलौ तो दर्सन करि आमें ।

दिवारी हमारौ प्राचीन धार्मिक सांस्कृतिक समारोह अरु लोक प्रसिद्ध उच्छव है । या औसर पै तीन पर्वन कूँ इकठौर कर दियौ गयौ है -दिवारी, गोर्द्धन अरु यमद्वितीया । दिवारी के दिना तौ लक्ष्मी पूजा ही होय है, गीत ना के बराबर सुनिवे में आमें पर गोर्द्धन के दिना बैयरबानी गोर्द्धन की पूजा करती भई निरे गीत गामें । एक गीत ह्यां प्रस्तुत है-

मैं तो गोवरधन कूँ जाऊँ मेरे वीर
नाँय मानें मेरौ मनवा ।
पान चढ़ाऊँ तोपै फूल चढ़ाऊँ
दूध की धार चढ़ाऊँ मेरे वीर । नाँय--------

यम द्वितीया व दौज के दिना के गीतन में भैन की प्रसन्नता अरु भाई की मंगल कामना कौ उल्लेख रहवै-

मेरे भैया की आव अहो,
नैंक वेगि जुरि जइयो ।

दिवारी ते पीछे रंग गुलाल के वादर उड़ामतौ भयौ होरी कौ महान पर्व आवै। फगनोटे की मस्ती में मस्त ब्रजनारी-गीतन में ब्रज वनितान के संग राधा कृस्न प्रेम कौ, उनकी अनौखी लीलान कौ, हास -परिहास कौ, हिंडोरा फाग कौ ऐसौ अजब अरु मनोमुग्धकारी रूप मिलै कै आजहु ब्रजनारी गीत साहित्य सिगरे भारत कूँ भावात्मक एकता की प्रेम डोर में वाँधिवे में समर्थ है। वसंत तेई बैयरन कौ जुट इकठौर हैकै नांई फाग उड़ायौ करै। होरी के दिना होरी पूजते समै विनके मुख ते ई गीत फूट परै-

राजा नल के द्वार मची होरी राजा नल के ।
या
वरसाने स्याम मची होरी वरसाने ।
कौन के हाथ में झांझ रे मजीरा
तौ कौन के हाथ ढपल होरी ।

इतनौई नाँय जब वनितायें इक दूसरी के घर होरी खेलवे जामें तब वू होरी की मस्ती में ऐसी मस्त है जांय कै विनके मुख ते ई बोल वरबस ई निकस परें-

आज विरज में होरी रे रसिया
होरी रे रसिया वरजोरी रे रसिया ।

अब हम संस्कार गीतनै लैहैं । हमारे सास्त्रन में सोलह संस्कारन कौ उल्लेख आयौ है, पर आज इनमें ते केवल तीन संस्कारई दीस परें । जन्म, ब्याह अरु मृत्यु । जन्मगीतन में सिसु के गर्भ में आमते ई माता के सुभाव में जो वदलाव या परिवर्तन आवै वाकौ चित्रन इन गीतन में रहवै है । जन्म हैवे के वखत जो गीत गायौ जावै वामें वड़ी गूढ़ वात वताई गई है । वच्चा कूँ सम्बोधित करिकैं -

ये नौ दे दस मास गरभ के
सुनिर साहिब कौ नाम जिनें तोय जनम दियौ हो,
लगि कलजुग की ब्यारि हरिनाम बिसर गयौ हो ।

छटी के दिना (छै दिना पाछैं) सास चरुआ धरै । ननद सांतिया अरु जिठानी, देवरानी, देवर आदि सब अपनी-अपनी कर्तव्य करें । याकौ इनकूँ बच्चा की ओर ते नेग मिलै है । जा दिना के गीतन में [illegible] कौ उल्लेख रहवै। [illegible] अतिरिक्त बच्चा कूं जो कछु खायबे कूँ दियौ जाय वाऊ कौ उल्लेख गीतन में होय है । जैसें-

तेरौ ललना भाभी तेरौ ललना
आंगन में खेलै भाभी तेरौ ललना ।
सासुल आमें चरुआ चढ़ामें
जिठानी आमें सोंठ कुटामें
ननदी आमे सतिए रखामें
बू हरया भाभी बूही कंगना
सासुल कूं दीजौ भाभी बू ही ककना ।

दस दिना बाद बच्चा कौ नामकरन संस्कार होय है। तब जच्चा के पीहर ते [illegible] आवै । [illegible] अपने पति पैते ऊ उपहार की उम्मीद करै तौ बू कहवै-

पीयरौ बिरन पैते मांग
हम्मै रातौं मागीए।

इनके अलावा ननद-भावज के नौंकझौंक भरे गीतऊ सुनिवे में आमें -

ककनया मांगें ननदी लाल की बधाई
ये ककनया मेरे सुसर की कमाई
स्यैया लै जा ननदी लाल की बधाई ।

जा दिना कछु प्रबंधात्मक गीतऊ गाये जामें जिनमें [illegible] । [illegible] ननद की उदारता कौ बरनन कियौ गयौ है । अंत में भाभी कूँ [illegible] । [illegible] गामती भई कूआ पुजाये लै जामें -

अरे चंदा तेरी निरमल [illegible]
राज्य की रानी पानी [illegible]।
अरे कुअरा तेरे ऊंचे [illegible],
यापै रे धोवै छोरा [illegible] ।

ब्याह के औसर पै गाये जायवे वारे गीतन में ऐसो [illegible] धोरौ है । लरिका की सगाई ते लैकें लगुन तानूँ के गीतन में [illegible] ।
जब कै कन्यापच्छ में गीत करुन रस प्रधान होमें -

लेऔ ना रे बाबा मेरे हियरा लगाई,
अब कैसै लाड़ो मेरौ हियरा लगाई ,
कौरे से कागद बेटी भई ऐ पराई ।

क्वार के महीना में दसहरा कौ लोकोत्सव आवै । ब्रजनारी नव दुर्गा की स्थापना करें । छई छापरी नौ दिना तॉनू नौरता खेलैं अरु देवी के गीत या लांगुरिया गामें । लांगुरिया ब्रज नारीन कौ अति प्रिय गीत है । एक दो गीतन की झलक ह्यां दिखाय रहे हैं -

कैला मैया के भमन में घुटवन खेलै लांगुरिया ।
कैला मैया कौ जुरौ है दरबार लांगुरिया चलौ तो दर्सन करि आमें ।

दिवारी हमारौ प्राचीन धार्मिक सांस्कृतिक समारोह अरु लोक प्रसिद्ध उच्छव है । या औसर पै तीन पर्वन कूँ इकठौर कर दियौ गयौ है -दिवारी, गोर्द्धन अरु यमद्वितीया । दिवारी के दिना तौ लक्ष्मी पूजा ही होय है, गीत ना के बराबर सुनिबे में आमें पर गोर्द्धन के दिना बैयरबानी गोर्द्धन की पूजा करती भई निरे गीत गामें । एक गीत ह्यां प्रस्तुत है-

मैं तो गोवरधन कूँ जाऊँ मेरे वीर
नॉय मानें मेरौ मनवा ।
पान चढ़ाऊँ तोपै फूल चढ़ाऊँ
दूध की धार चढ़ाऊँ मेरे वीर । नॉय--------

यम द्वितीया य दौज के दिना के गीतन में भैन की प्रसन्नता अरु भाई की मंगल कामना कौ उल्लेख रहवै-

मेरे भैया की आव अहो,
नैंक वेगि जुरि जइयो ।

दिवारी ते पीछे रंग गुलाल के बादर उड़ामतौ भयौ होरी कौ महान पर्व आवै। फगनोटे की मस्ती में मस्त ब्रजनारी-गीतन में ब्रज वनितान के संग राधा कृस्न प्रेम कौ, उनकी अनौखी लीलान कौ, हास -परिहास कौ, हिंडोरा फाग कौ ऐसौ अजब अरु मनोमुग्धकारी रूप मिलै कै आजहु ब्रजनारी गीत साहित्य सिगरे भारत कूँ भावात्मक एकता की प्रेम डोर में बाँधिबे में समर्थ है। बसंत तेई बैयरन कौ जुट इकठौर हैकै नांई फाग उड़ायौ करै। होरी के दिना होरी पूजते समै बिनके मुख ते ई गीत फूट परै-

राजा नल के द्वार मची होरी राजा नल के ।
या
बरसाने स्याम मची होरी बरसाने ।
कौन के हाथ में झांझ रे मजीरा
तौ कौन के हाथ ढपल होरी ।

इतनौई नॉय जब वनितायें इक दूसरी के घर होरी खेलबे जामें तब वू होरी की मस्ती में ऐसी मस्त है जांय कै बिनके मुख ते ई बोल बरबस ई निकस परै-

आज बिरज में होरी रे रसिया
होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया ।

अब हम संस्कार गीतनै लैहैं । हमारे सास्त्रन में सोलह संस्कारन कौ उल्लेख आयौ है, पर आज इनमें ते केवल तीन संस्कारई दीस परैं । जन्म, ब्याह अरु मृत्यु । जन्मगीतन में सिसु के गर्भ में आमते ई माता के सुभाव में जो बदलाव या परिवर्तन आवै याकौ चित्रन इन गीतन में रहवै है । जन्म हैबे के वखत जो गीत गायौ जावै वामें बड़ी गूढ़ बात बताई गई है । बच्चा कूँ सम्बोधित करिकैं -

ये नौ ये दस मास गरब के
सुमिर साहिब कौ नाम जिनें तोय जनम दियौ हो,
लगि कलजुग की ब्यारि हरिनाम विसर गयौ हो ।

छटी के दिना (छै दिना पाछैं) सास चरूआ धरै । ननद सांतिया अरु जिठानी, देवरानी, देवर आदि सब अपनौ-अपनौ कर्तव्य करें । याकौ इनकूं जच्चा की ओर ते नेग मिलै है । जा दिना के गीतन में इनई बातन कौ उल्लेख रहवै। याके अतिरिक्त जच्चा कूं जो कछु खायवे कूं दियौ जाय वाऊ कौ उल्लेख गीतन में होय है । जैसें-

तेरौ ललना भाभी तेरौ ललना
आंगन में खेलै भाभी तेरौ ललना ।
सासुल आमें चरूआ चढ़ामें
जिठानी आमें सोंठ कुटामें
ननदी आमें सतिए रखामें
बू हरवा भाभी बूही कंगना
सासुल कूँ दीजौ भाभी बू ही ककना ।

दस दिना बाद बच्चा कौ नामकरन संस्कार होय है। तब जच्चा के पीहर ते छोछक आवै । यायै देख जब जच्चा अपने पति पैते ऊ उपहार की उम्मीद करै तौ बू कहवै-

पीयरौ बिरन पैते मांग
हम्पै रातों मागीए।

इनके अलावा ननद-भावज के नौंकझौंक भरे गीतऊ सुनिवे में आमें -

ककनवा मांगें ननदी लाल की बधाई
ये ककनवा मेरे सुसर की कमाई
रुपैया लै जा ननदी लाल को बधाई ।

जा दिना कछु प्रबंधात्मक गीतऊ गाये जामें जिनमें कौमरो, जगमोहन, लुगरा प्रमुख हैं । इनमें भाभी की संकीर्णता अरु ननद को उदारता कौ बरनन कियौ गयौ है । अंत में भाभी कूं अपनी गलती कौ अहसास है जावै । अंत में जच्चा कूं ढोला गामती भई कूआ पुजावे लै जामें -

अरे चंदा तेरी निरमल कहिए चांदनी
राज्य की रानी पानी नीकरी।
अरे कुअरा तेरे ऊँचे नीचे घाट रे,
यापै रे धोवै छोरा धोवती ।

ब्याह के औसर पै गाये जायबे बारे गीतन में ऐसी विविधता है, ऐसी मार्मिकता है कै याकौ जितनौ बरनन कियौ जाय थोरौ है । लरिका की सगाई ते लैकें लगुन तानूं के गीतन में नई-नई तैयारीन कौ, घरवारेन के उछाह कौ बरनन रहवै है । जब कै कन्यापच्छ में गीत करुन रस प्रधान होमें -

लेऔ ना रे बाबा मेरे हियरा लगाई,
अब कैसै लाड़ो मेरी हियरा लगाई ,
कोरे से कागद बेटी भई ऐ पराई ।

एक अन्य गीत में समाज में नारी की हीन दसा कौ कैसौ चित्रन भयौ है-

जा दिन लाड़ो मेरी तुमरे भई ओ भइए वजुर की रात,
टूटे झटोला त्यारी माइल सोवै वाबुल वसै खिरान हो ।

लगुन के पस्चात भैन अपने भइया के घर भात नौंतवे जावै तौ अपने वड़ेन ते कहै-
ऐ वू अथई वैठन्तेओ सुत्तर मेरे
अचरा तो लिख देओ मेरे भातई ।

और जब भाई के आयवे कौ समाचार वांकू मिलै तौ-

आज तौ गोड़ौ मेरो रंग भरौ जी
गोड़ेन हरी हरी दूब तौ करिहा चरावै मेरौ भातई ।

इन गीतन में कहूँ तौ पैलें घर के वड़ेन कूँ भातई ते सम्मान दिवायौ गयौ है अरु कहूँ याकी उदारता ते द्रवित हैकें भैन अपने कुटम्वीन ते कहवै-

उनैरे उनैरे वरसै मेह इत मेरौ वरसै रे भातई ,
उसरौ उसरौ रे देवर जेठ पियारे भौत लुटौ मेरौ भातई ।

रतजगे के दिना कई प्रकार के अनुष्ठान किये जामें जिन्हें वैयर अपने गीतन ते पूरौ करैं । एक गीत में वैयर सिगरे ग्राम देवतन कूँ नौंत-नौंत कै वुलामें अरु विन्हें एक हड़िया में वंद करि देमें । याकूँ वायवंद कह्यौ जाय । व्याहते पीछें जायै नदी या पोखर में घर की लुगाई वहा आमें । व्रज के इन टौना टोटकान में हमारी संस्कृति के लौकिक तत्व विद्यमान हैं, जिनकूँ लौकिक भूतात्मवाद कह्यौ जाय सकै। ऐसौ लोक विस्वास है कै या तरियाँ इन्हें मूँदिवे ते जे व्याह में काऊ प्रकार कौ विघ्न नॉय कर सकें । ई टोटका व्रज में वुढ़िया पुरान के नामते प्रसिद्ध है । ई धर्म के आदि रूप अरु धार्मिक आधार के आदिम चरन कहे जाय सकें । गीत या प्रकार है -

ऑधी मेह तुम वड़े हौ आज हमारे नौंते ।

याके अतिरिक्त पुरान प्रसिद्ध देवतान के ऊ गीत गाये जामें, जिनमें गनेश, हनुमान, महादेव व देवी प्रसिद्ध हैं। व्याह ते पैलें वरना-वनो के रूप सौंदर्य में वृद्धि करवे के तांईं जिन प्रसाधनन कौ उपयोग कियौ जाय वाई कौ उल्लेख तेल, उवटन, मेंहदी आदि के गीतन में होय । व्याह ते पैलै घूरौ पुजवायवे की विसेस रीतिऊ व्रज लोक जीवन में मानी जाय । घूरे पैते वरना-वरनी नैंक मद्टी लैकें आमें अरु लाइकें पार्स में धर देमें । ऐसौ लोक विस्वास है कै पार्स (भंडारघर) में दिन दूनी रात चौगुनी वरकत वनी रहै । या समै व्रज की लुगाई ये गीत गामें-

फिरंगी नल मत लगवावै रे
नल कौ पानी भौत वुरौ मेरौ जियरा घवरावै ।

वरात जाइवे ते पैलें जोजा दूल्हा की पहरामनी करै । घोड़ी पै वैठकें दूल्हा दुल्हन कूँ लैवे जाय । या दूल्हा की मैया अपने वेटा की वलैया लेंती भई कहै-

दुनियाँ कहै दूल्है कारौ ही कारौ,
माय कहै मेरौ जगत उजारौ ।

अंत में मैया कूआ में पैर फांसिकें वैठ जावै अरु अपने वेटा ते अपनी सेवा करवायवे कूँ वहू लाइवे कौ वचन लेवै तब

घर कूँ जाय । जब बरात बेटी बारे के दरवजे पै पोंहचै तब बैयर दूल्हा की अगवानी करती भई बाते हँसी ठिठोली करैं-

सारौ घोड़ी न लायौ नचायवे कूँ साजन के द्वार ।
सारौ इकलौ ही आयौ लजायवे कूँ साजन के द्वार ।

ब्रज नारी गीतन कौ एक सलौनौ रूप हमें ब्याह के औसर पै बरात जैमे के वखत उनके मनोरंजन के ताईं गाई जायवे वारी गारीन में मिलै, जिनके सामई हमारे वेदऊ फीके परि जाँय । ब्रज की बरात अरु म्हों की नारीन की गारी बरातीन कूँ कैसौ उन्माद प्रदान करैं जाय वूई जान सकै जानें कबहुँ ब्रज की बरात करी होंय । इन गारीन में यदि कहुँ विभिन्न पकवानन कौ उल्लेख है तौ कहुँ समधी ते हँसी ठट्टा,जीजा साली कौ मधुर हास तौ कहु समधी ते निवेदन-

हाँ हाँ राम रंग बरसगौ
रंग बरसै कछु इमरत बरसै और बरसै कस्तूरी ।
समधी जेंऔ जौनार जुगत सौं हरे-हरे जुगतसौं पाय लीजौ जी ।

या गीत में समधी कूं बड़े रतन जतन सौं खानौ खवायौ जाय रह्यौ है पर अगले ही गीत में-

तुझे रखूंगी नौकर बनाय सारे समधी मेरी हवेली अइयौ ।

अरु जब पांत उठिये लगै-

काहे उठ बैठे और लै लेंते ।

बरात जब लड़की कूं विदा करायकें लै जावै तौ बिदा के गीत गाये जामें ।जे गीत करुन रस प्रधान होय हैं। इन गीतनें सुनिकें सायदई कोई पत्थर दिल होयगौ जाकी आँखन में आँसू नाँय आ जामें ।

काहे कूं ब्याही बिदेस रे सुन बाबुल मोरे ।
हमतौ बाबुल तोरे अंगना की चिड़िया ।
चुग्गा चुगत उड़ जांय रे सुन बाबुल मोरे ।

विदा के एक अन्य गीत में आध्यात्मिक प्रभाव लक्छित है रह्यौ है -

ओरे रे कोरे गुड़िया ऊ छोड़ी रोमत छोड़ी सहेलरी
अब चौं बोलै द्वारी सोन चिरैया छोड़ौ बाबुल कौ देस,
अपने पुरिख के संग चली लेऔ बाबुल घर आपनौ
अपनौ कुटुम्ब लै उतरूंगी बाबुल त्यारौ नगर सू बस बसै ।

या गीत में आत्मा सारे बन्धनन ते मुक्त हैकै नांई अपने प्रियतम के संग लग लेय ।कोऊ भौतिक वैभव अब बायै आकर्सित नाँय कर सकै ।बरात लौटवे पै दूल्हा दुल्हन कुल देवी की पूजा करैं तब बैयरबानी याये गामें-

सालू सरस रेसमी लंहगा,चादर के बीच किसन प्यारी,
दूल्है बन्यौ नंद कौ लाल दुल्हन राधा प्यारी ।

ऐसौ प्रतीत होय कै कृस्न-राधा के रंग में रंगी लुगाई अपने दूल्हा दुल्हन में नंद कौ लाला अरु वृषभानलली के ही दर्सन करैं। रातके समै सुहाग टोना गाये जामें ।एक उदाहरन दियौ जाय रह्यौ है-

सरकतु नाँय बटुआ डोरी बिना । डोरी बिना वू तौ गोरी बिना ।

या

लहरै लैंते आमें सुंदर मोतियन के हार
बन्ने के बाबा चिरजियौ दादी रानी कौ अमर सुहाग ।

जनम अरु ब्याह, उल्लास और आल्हाद के औसर माने जामें । याही कारन ते इनके गीतऊ खूब मिलैं । पर मृत्यु,दुख अरु विसाद कौ अवसर होय है। याते या समै गीत नाँय गाये जामें अरु गायेऊ जामें तौ भौतई कम। वैसे ब्रज में मृतक के गुनन्नै गाय गाय कै रोवे की प्रथा आजहू विद्यमान है । मृत्यु गीतन में संसार की निस्सारता अरु जीवन की छनभंगुरता कौ ई उल्लेख रहै और मनख कूँ अच्छौ कर्म करवे कौ संदेस छिपौ रहै-

पाँच पेड़ गंगाजी में लगाये तौ बिन बिरछन कछु करि रे
कछु करि रे धरम जाते तिर रे ।

ई गीत मीरा के या पद की याद दिवावै जामें यानें कह्यौ है-

नाँहि ऐसौ जनम बारम्बार
बिरछ के ज्यौं पात टूटे बहुरि ना लागें डार ।

उपर्युक्त संस्कार त्यौहार अरु पर्वन के अतिरिक्त दो पर्व ऐसे ऊ हैं जिन्हे राष्ट्रीय पर्व के नाम ते जान्यौ जाय । स्त्रीन में ऊ जा दिना राष्ट्रीय चेतना देखिवे कूं मिलै । प्रभात फेरी लगामते समें उनके हृदय माँहि देसभक्ति की भावना उभरि परै-

रे लांगुरिया दिन पन्द्रह अगस्त कौ आय गयौ
जा दिन देस भयौ आजाद । लांगुरिया -------

छव्वीस जनवरी कूं जो चेतना नारी मानस में देखिवे कूँ मिलै वाकी एक झलक प्रस्तुत है -

मैं तौ जाऊगी देखिवे आज छव्वीस जनवरी दिल्ली की ।

या तरियाँ उपर्युक्त बरनन ते ई स्पस्ट है जाय कै ब्रजनारी गीतन में हमारी संस्कृति के सभी रूपन के संग बाके सुभासुभ पच्छ कौ दिग्दर्सनऊ भली भाँति होय है । अब हम इन गीतन के साहित्यिक महत्व के बारे में ऊ कछु चर्चा कर लेंय -

साहित्यकारन की दृष्टि ते देख्यौ जाय तौ लोकगीत मात्र मनोरंजन की वस्तु समझी जाइवे वारी अभिव्यक्ति है। लोकगीतन के बारे में साहित्यकार बात तौ भौत बनामते रहें ह्यां तक कै कछु एक विद्वानन नें लोकगीतन माँहि सास्त्रीयता अरु साहित्यिकता की बातऊ कही हैं अरु बिन्नै सिद्ध करिबे कौ प्रयासऊ कियौ है । पर सामान्य रूप ते साहित्यकारन्नै ऐसौ साहस नाँय कियौ जामें सकारात्मकता दृष्टिगोचर होय । या संदर्भ में इन ब्रजनारी गीतन कौ उपयोग का सम्बन्धित भासा (हिन्दी भाषा) के विकास में सहायक बनि सकै है? वास्तव में इनते न केवल भाषा कूँ सरल, सुबोध अरु ग्राह्य बनायौ जाय सकै बरन जे राष्ट्रभाषा के रूप कूँ प्रतिष्ठित करिवे में एक सफल प्रयास सिद्ध होयगौ ।

जब हम छात्रन कूँ भासा-व्याकरन या काव्यसिल्प कौ अध्ययन करामें हैं तौ वूई घिसेपिटे उदाहरन प्रस्तुत करि देंय हैं- 'कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।' मैं ई बताइबे कौ प्रयास करी रई हूं कै का रस, का अलंकार, का मुहावरे -लोकोक्ति, का सब्दसक्ति कौ अर्थगौरव अथवा व्याकरन सौं ऐसौ कोऊ तत्व नॉय जो लोकगीतन की भासा में न पायौ जातो होय । या सम्बन्ध में मेरौ अपनो सोध प्रबन्ध "भरतपुर तहसील के लोकगीतों का लोकशास्त्रीय अध्ययन" (1977, आगरा विश्वविद्यालय) अपने आप में प्रमान है ।

भासा के तीनोंई गुन ओज,माधुर्य अरु प्रसाद प्रसंगानुसार इन गीतन में मिलें । दूसरी विसेसता चित्रोपमता होय। या गुन

के कारन भासा स्रोता के सांमई एक चित्र सौ खड़ौ कर देय है । निम्न गीत में भ्रातविहीन भैन के रूप में करना की साकार मूर्ति ई ठाड़ी है जाय है -

> सासुलिया रानी मत बोलै गरब के बोल
> मेरौ जियरा लरजै नैनन बरसै जलकी धार
> मेरौ नाँये भतीजौ नाँये मैया कौ जायौ बीर
> मेरौ बाबुल जोगी जोगी पै नायें हत भात ।

अलंकारन की दृष्टि ते यदि इन गीतन पै दृष्टिपात करौ जाय तौ हम पामिंगे कै सब्दालंकार अरु अर्थालंकार दोनूं स्थान-स्थान पै इन गीतन में आए हैं । सब्दालंकार अनुप्रास, श्लेस, यमक आदि इन गीतन में अधिकांस मिलैं । अनुप्रास कौ एक उदाहरन प्रस्तुत है-

'झारे झमकन बरसैगौ मेह' अथवा 'चंदन चौकी मेरे भैया जो बैठे ।' ह्यां पै "झ" अरु "च" वर्न की एक ते अधिक बार आवृति भई है सो अनुप्रास अलंकार है । अर्थालंकार की दृष्टि ते इन गीतन में रूपक, उपमा, विनोक्ति, स्मरन, तुल्योगिता, उदाहरन, अतिसयोक्ति व अन्योक्ति मिलै है । उपमा कौ एक उदाहरन प्रस्तुत है-

> हाड़ जरैं जैसें लाकड़ी केस जरैं जैसे घास,
> ठाड़ी तौ जरे चन्द्रावली जाके माई न बाप ।

इनके अतिरिक्त असंगत, विसम, व्याजोक्ति व लोकोक्ति इन गीतन में मिलैं । सब्दन कौ अर्थ गौरव बढ़ायवे में ऊ लोकगीतन कौ कोऊ सानी नाँय । मन की भावनान के अनुसारई सब्दन कौ अर्थ बदल जावै है । ब्रज के द्वार जब सुआगतकूं खुले तौ बिन्नै "झंझन किवार" अरु जब मन में मैल होय तौ बिन्नै "बजुर किवार" कह्यौ जाय । सब्दन कूं मिलाय कै नयौ भाव भरिबे में तौ ब्रज की बैयरन कूं कमाल हासिल है । जैसे "चकर पैद ने घेरी पर घेरी मेर गजा ।" जैसे रानी से रानियाँ, रास से रसिया आदि । वास्तव मे भासा कौ विकास पंडित विद्वान नाँय कर सकौ । वाकौ झंडा तौ जनपदीय हाथनमें ई रहैगौ जो खास तौर ते पुराने सब्द कौ विकास करै अरु नये सब्दन्नैं गढ़ै है।

काव्य-सिल्प के बाद लोकगीतन कूं सिच्छा के अन्य पहलून की दृष्टि तेऊ देख सकें । प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर में सिच्छा कौ एक प्रमुख उद्देश्य बालक कौ मानसिक अरु बौद्धिक विकास करियौ है । हम या बात कूं भली प्रकार ते जानें कै या उद्देश्य की पूर्ति तबई है सकै जब बालक की मनोवैज्ञानिक आवस्यकता की पूर्ति होय । लोकगीतन की लोकप्रियता ते ई प्रमानित है चुकौ है कै वे इन आवस्यकतान की पूर्ति करिवे में सख्छम हैं । इन गीतन में मानव मन की संवेदनान कौ चित्रन मिलै है । याके आधार पै बालक की मूलप्रवृत्ति कूं पहचानकें वाके मानसिक अरु बौद्धिक विकास में सहायता करी जा सकै । छात्रन में नैतिक एवं चारित्रिक विकास हू इन गीतन ते कियौ जाय सकै । सामाजिक विकास के गुनन कूं पनपायबे में जे लोकगीत रामबान कौ काम करे । रसिया, ढोला, होरी आदि ऐसे गीत हैं जो समूह की भावनान कूं प्रेरित करै हैं । इतनो ई नहीं जे गीत सारीरिक विकास जैसे सिच्छा के उद्देश्य की पूर्ति मेंऊ सहायक की भूमिका निभामें । अब आप ई सोचौ कै हिन्दी पाठ्यपुस्तक में या विधा कूं क्यो नाँय अपनायौ जाय ? पाठ्यक्रम में सम्मिलित करिवे ते ई लाभ होयगौ कै साहित्यकारन कूं एक नई दिसा मिलैगी, हिन्दी कौ विकास होयगौ । हिन्दी की सब्दावली बढ़ैगी, हिन्दी कूं सरल एवं अवबोधीय बनायबे में, हिन्दी सिच्छन में नवीनता लाइबे में छात्र अपनी संस्कृति कूं भली प्रकार समझ सकिंगे । ऐतिहासिक तथ्य मूल रूप मे उजागर है सकिंगे । या प्रकार के हिन्दी सिच्छन सौ भासा कौ विकास है सकैगौ । हमारी जो संस्कृति अरु सभ्यता लुप्त हैती जा रही है वू जीवित रखी जाय सकैगी । छात्र जो दोहा कवितान के रूप में रटते रहमें उनते मुक्ति मिल सकैगी ।

ललितकला साहित्य की दृष्टि तेऊ इन गीतन कौ महत्त्व नेकऊ कम नाँय । इन लोकगीतनी गायबे के सबै अनेकानेक ऐसे औसर आमें जब इनकौ सम्बन्ध काऊ न काऊ मूर्तिकला या चित्रकला सौं जुरौ रहवै । संस्कारगीत अथवा त्यौहार...

औसर पै कोऊ न कोऊ मूर्ति, अल्पना, रंगोली अथवा भित्ति चित्र अवस्य बनायौ जाय । जैसे करवा चौथ पै दीवार पै लोककला कौ चित्रन, देवठान अरु होरी पै बनाई जायबे वारी अल्पना अरु रंगोली । याही प्रकार सांझी गीतन में चौदह दिना तानूं जिन भावनान कौ उल्लेख रहवै उनई भावन कूँ भित्ति चित्र में दर्सायौ जाय है । कहवे कौ तात्पर्य ई है कै कलाके छेत्र में इन गीतन सौं नये भाव अरु नये आयाम स्थापित किये जाय सकैं ।

संगीत साहित्य की दृष्टि ते देखें तौ इन गीतन्नें संगीत की लयन के विकास में अपनौ महत्वपूर्न योग दियौ है । जा संदर्भ में जी कहयौ अनुचित न होयगौ कै कितनी ऊ फिल्मी धुन आइबे के बादऊ लोकगीतन पै उनकी लयन पै कोऊ प्रभाव नॉय भयौ है । अस्तु फिल्म यारे लोगीतन की धुनन कूं अपनाइबे कूं बाध्य है रहे हैं । ब्रजभूमि फिल्म में ''झूला तौ परि गये अमवा की डार पै जी ''तथा''सामन का महीना पवन करे सोर ''जैसे गीतन्नें या बात कूँ सिद्ध करि दियौ है । संगीत की स्वर साधना सास्त्रीय मानसिकता ते जैसे आक्रान्त रहवै वैसे लोकगीत की नॉय रहवै । लोकगीतन की ताल अरु लय, आरोह-अवरोह सिगरे बन्धन स्वाभाविक मानवावेगन के अनुकूल रहमें । एक उदाहरन प्रस्तुत है-

लाला नन्द कौरी जोगनिया बनाय गयौ री ।

-1 एल.5 न्यू हाउसिंग बोर्ड
एस.टी.सी. स्कूल, भरतपुर

❑

नारीन नैं ही चाहें वे बूढ़ी होंय, ज्वान होंय, चाहें छोरी-छापरी होंय, लोकगीतन कूँ अपने कंठन में बसायौ है। याकौ कारन नारी-स्वभाव की भावुकता, मन के मूलभावन की सम्पन्नता है सकै है जाकी पुरुषन में कमी होय। लोकगीत मन के गंभीर धरातल कूँ स्पर्श नांय करैं, वे तौ जीवन के अति समीप होंय। नारी कौ मन जीवन के समीप रहबे के कारन लोकगीत वाही की दैंन बनि गए हैं। नारी कौ सुरचेर हू याकौ एक कारन है सकै है।

ब्रज लोकगीत : विहंगम झाँकी

- श्रीमती राज चतुर्वेदी

प्रत्येक देस के लोकगीत व लोक संगीत में बाकी आत्मा प्रतिध्वनित होय है । वे जा काऊ अंचर के होय हैं बाकी सांस्कृतिक सौष्ठव अरु वैशिष्ट्य बामें बिराजै है । बे बा परिवेस को झाँकी प्रस्तुत करैं हैं । एक प्रकार सौं जीवन के समस्त क्रिया-कलापन सौं इनकौ संबंध होय है । मर्यादान सौं अनुरंजित ये लोकगीत केवल व्यक्ति के मनोरंजन करबे के साधन ई नहीं बल्कि ये बामें चेतना व स्फूर्ति भरकें बाके जीवन कूं अनुप्राणित ऊ करैं हैं । बारहमासे, मल्हार, लांगुरिया, ख्याल, रसिया ये सब लोक संगीत के विविध प्रकार हैं । इनमें भक्ति, सिंगार, लोकमर्यादा सब भाव भरे पड़े हैं । भक्ति भाव सौं परिपूर्न लाँगुरिया के गाबे की अदा कछु ऐसी मनमोहक छटा उत्पन्न करै है जासौं गाते समै गाबे अरु सुनबे बारे दोनों ई रसविभोर होकैं आत्मलीन हो जाएँ हैं । मन व आत्मा कूं जुरा दैबे बारौ देवी के प्रति श्रद्धाभाव सौं परिपूर्न ये लाँगुरिया दृष्टव्य है- ''कुलड़ फूट गयौ मोटर में, प्यासी मर गई लाँगुरिया । सास हमारी चढ़ी अटरिया, सुसरा जोड़े हाथ, उतर-उतर परमेसरी मैंने तोपे बोलो जात । '' एक दृष्टि भक्ति भाव सौं ओत -प्रोत या लाँगुरिया पैऊ डार लैं- ''ऊपर चढ़कै देख लाँगुरिया कैला कितेक दूर । दो-दो जोगिनी के बीच अकेलौ लाँगुरिया । छोटी जोगिन यो कहैं मोहे टीका ला देरे, बड़ी जोगिन यों कहे मोहे नथनी ला देरे । दो-दो जोगिनी के बीच अकेलौ लाँगुरिया ।'' भक्ति रस के संग हास्य -सिंगार रस कौ संजोग इनकी एक अद्भुत विसेसता है । गाते समै जहाँ एक मांऊ भक्त जनसमूह भक्ति भाव सौं भरकैं कैला देवी की भक्ति में गावैं है । म्हां दूसरी मांऊ गाते समै मीठे हास परिहास की रसमाधुरीऊ बिखरते जाए हैं । ''लाँगुरिया'' ब्रज में देवी के भक्तन कूं कह्यौ जाय है ।

गोवर्द्धन पर्वत कौ ब्रज संस्कृति माँहि वरेण्य स्थान है । जाकी परकम्मा बहुत पवित्र मानी जाय है । जाय पूरी करबौ ब्रजवासी अपने जीवन कौ परम काम मानैं हैं । आखिर गोवर्द्धन महाराज बिनकी कामनान की पूर्ति ऊ करैं हैं । जाई कारण मनौतीऊ मानी जाँय हैं । एक भैन अपने भईया ते यों कहै है-

> मैं तो गोवर्धन कूं जाऊं मेरे वीर
> ना मानै मेरौ मनवा ।

गोवर्द्धन महाराज की स्तुति में कोई कह रह्यौ है-

> श्री गोवर्धन महाराज तेरे माथे मुकुट विराजै ।
> तेरे गले वैजन्ती माल ।
> तोपै हार चढ़ै तोपै फूल चढ़ै ।
> तोपै चढ़ै दूध की धार । श्री गोवर्धन --------

गोवर्धन महाराज की कृपा ते कहूँ कोई कमी नाँय । दूध दही की नदिया वह रही है अरु वाकी धार श्री गिर्राज जी महाराज पै पड़ रही है । वाई ते विनकौ सिंगार ऊ है रह्यौ है । ब्रजभूमि की लीला अनुपम है, भक्ति अरु प्यार ते आप्लावित मनोहारी रसियान के कार्जे प्रसिद्ध है । प्रेम अरु रस में पगे जे रसिया जब गाये जाँय हैं तौ अपनी अनौखी छटा बिखेरें हैं । होरी के एक रसिया पै दृष्टिपात करें । होरी के रस के संगई संग सब्दन तथा स्वर,लय, ताल में जाकी रस माधुरी व्यास है -

आज बिरज में होरी रे रसिया,
होरी है रे रसिया बरजोरी है रे रसिया
अपने अपने घर सौं निकसीं
तौ कोई गोरी तौ कोई कारी रे रसिया ।
नौ मन रंग घुरौ मथुरा में
तौ दस मन केसर घोरी रे रसिया ।

रसिया कौ मतलब है रस की खान। इन विभिन्न रंगन के रसियान में रस माधुरी लबालब भरी पड़ी है । ब्रज लोक साहित्य के सिरमौर रसियान में मनुहार ते लैकैं प्रेम की प्रतीती तॉनूं सबई कछु विद्यमान है ।

कान्हा बरसाने में आ जइयौ,
बुलाय गई राधा प्यारी ।
उड़द की दार, गेंहून के फुलका,
तोय भूख लगे तौ खा जइयौ । बुलाय गई ----
सौने की थारी में भोजन परोसौ,
तेरी गरज परै तौ खा जइयौ । बुलाय गई -----

इन रसियान ते इतरऊ कछु औंर है जाकी मधुर लय व तान पै ब्रजवासीन के पाम थिरकैं हैं । हाँसी- मजाक,मनोविनोद तौ ब्रजवासीन के जीवन कौ अहम हिस्सा है । जाके अभाव में हम विनके जीवन की पूर्णता की कल्पनाऊ नाँय कर सकैं। जा राग रंग भरे माहौल में नाच के समै गाये जाये वारे ख्यालन कौ अपनो अप्रतिम स्थान है । माधुर्य रस में पगे जे गीत पति अथवा प्रियतम के प्रति सतरंगी भावनान ते तरंगित हैं-

कारौ री बलम मेरौ कारौ री ।
सास गई दिल्ली , ससुर गयौ बम्बई ।
मेरौ कारौ गयौ री कलकत्ता की सैर कूँ ।
सास लाई लड्डू ,बिखर गए पेड़ा ।
खूब खायौ री कारौ गाजर कौ हलुआ ।

एक अन्य ख्याल कौ जायका देखौ-

ढोलक मंदी पड़ गई रे ।
मेरो पाम उठे ना देवरिया ।
जैसी बुसमर्ट राजा पहरैं ।
वैसो पहनैं देवरिया ।
राजा के भरोसे मैंने ।
जाय जगायौ देवरिया । ढोलक मंदी -------

हर औसर पै हास्य की फुहार छूटती ही रहें हैं । खुसी कौ कोऊ औसर च्यौं ना हो । फिर ब्याह सादी जैसे महत्वपूर्न समारोह भला हँसी मजाक सौं कैसें अछूते रह सकैं है । ब्याह के अलग-अलग औसरन पै गाये जावे वारे जे गीत या समै

की माधुरी कूं औरऊ ज्यादा बढ़ाय कैं रसकी अनौखी छटा बिखेरें हैं । हास्यरस के रंगारंग वर्णक्रमन में ब्रज की नारीऊ है कदम आगे ई है । हँसी-हँसी में यू भौत कछु कह जाय है-

चिड़ी तोय चामरिया भावै,
घर की नारी छोड़ पिया जी
कूँ पर नारी भावै।
सहर के सोय गये हलवाई ।
अब तौ मुखड़ा खोल कलाकन्द ,
लायौ हूं प्यारी ।

केवल कटाक्ष ई नाँय पति अरु प्रियतम के प्रति समर्पन अरु प्यार कौ भावऊ दीख परै है । जैसें-

भरौ कटोरा दूध कौ,
पिया बिन पियौ न जाय ।
मैया बाप की लाड़ली जी,
कोई पिया बिन रह्यौ न जाय ।
ओटा पै जी कोई ओटरी जी,
कोई सोना घड़ै सुनार ।
ऐसे बिछुआ गढ़ दै,
धमक सुनै कोई यार ।

ब्रज की नारी केवल अल्हड़ अरु भोरी ई नाँय है,सम सामयिक परिवर्तनन के बारे मेंऊ बाकी सोच है ,विनके प्रतिऊ वो सचेत है । अंगरेजन कूँ जिनकूँ फिरंगी हू कह्यौ जाय है, विनकूँ अपने कटाक्ष ते नांय बख्सौ । जब यहां नल लगवाये गये हे, फिरंगीन कूँ विन्नै जा तरियां ते तानौ दियौ-

फिरंगी नल मत लगवावै,
नल कौ पानी भौत बुरौ,
मेरी तबीयत घबरावै ।

मन की सरलता ,परिवारजनन के प्रति अटूट प्रेम, ब्रजभूमि की, म्हाँ के नर नारिन कूं अनुपम दैन है । प्रकृति, छोटे-बड़े , स्त्री-पुरुष सबन कूं समान रूप ते उत्फुल्ल करै है । हर रितु कौ विनके जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है । सिगरे त्यौहार म्हाँ की नारिन के प्रियजन अरु सगे संबंधीन ते जुड़े रहे हैं । समै-समै पै विनकी सुधि विनै झकझोर देय है । सावन के महीना में जब बादर उमड़-घुमड़ कैं आसमान पै घिर आवैं हैं । रिमझिम -रिमझिम सावन की फुहारें पड़वे लगैं हैं । माटी में ते सौंधी-सौंधी गंध आयवे लगै है । ऐसे में भला कौनसी नारी होयगी जो सतरंगी चूनर,लहरिया अरु चुनरी की कामना नाँय करती होगी । क्वारी कन्या ते लैकें नव सुहागन,वधुन ते लैकें प्रौढ़ान के मनऊ भींगे-भींगे मौसम में डूबवे लगैं । नारी काऊ न काऊ रूप में पुरुष ते यू चाहै पिता हो, भईया, पति अरु पुत्र ही क्यों न होय भावनात्मक रूप सौं जुड़ी रहे है अरु हर्ष व विसाद दोनू ई औसरन पै वाय पुकार उठै है । धरती नै हरित परिधान धारन कर लिए होंय ,मयूर पंख पसारे नाच रहे होंय ऐसे माहौल में कोऊ कन्या जब ससुरार में होय तौ पीहर की माटी की भीनी सुगंध वाय आकुल-व्याकुल कर देत है । ऐसे में वाय माँ कौ जायौ वीर याद आ जाय है । अपने बाबुल कौ अंगना याद आवे लगै है जहाँ बाके बचपन की विशेष स्मृतियाँ जुड़ी भई हैं । कोयल अरु पपीहा की आवाज में वाकूं अपने भईया की आवाज गूंजती सुनाई देय है अरु मन बरबस पुकार उठै है-

बिच्छू मार पंगायत जी ।
जच्चा मेरी झींगुर ते,
डर गई रे ।
सास ननद की धोती फारै,
आये गये की चादर जी ।
जच्चा मेरी लड़नी ना जानै री ।

लोकगीत अरु लोकपर्वन के रूप में ब्रज की संस्कृति आजऊ जीवित है । कृष्ण-राधा की पवित्र भूमि आधुनिक युग की विकृतीन ते अपने आप कूँ बचाये की भरपूर चेस्टा कर रही है । मनीषीन अरु साहित्यकारन कौ ये दायित्व,पुनीत कर्तव्य है कै ये जाय धूमिल अरु नस्ट नांय होन दें । आज जरूरत है ऐसे पारखी गोताखोरन की जो लोक के बहुमूल्य रत्न कूँ खोज कैं निकार सकैं । काऊ देस की आंचलिक धरोहर ई वा देस की वास्तविक निधि व वाकी वास्तविक संपदा है । आधुनिकता के मोह अरु आपाधापी में कहूँ हम अपने अनमोल रत्न ते वंचित न रह जाँय,अपनी जमीन ते ना कट जाँय ।

-23, चन्द्रपथ, सूरज नगर (पश्चिम)
सिविल लाइन्स ,जयपुर

□

लोकगीत लोकमानस की पूरी-पूरी, सहज और बेरोकटोक अभिव्यक्ति होंय। जो सहज होय वुही सरल होय। याही कारन सौं लोकगीत वाद्य, नृत्त, नृत्य आदि तत्वन सौं अलग नांय होंय। लोकगीतन की लय के संग नृत्त-नृत्य-वाद्य हू चलैं हैं।

ब्रज में विविध औसरन पै गाये जाबे वारे लोकगीत

-डॉ. विष्णुदत्त शर्मा

ब्रज में विविध औसरन पै गोविबे वारे मधुर ब्रज लोकगीत मिलैं हैं । ब्रज की सामाजिक अरु सांस्कृतिक रीति-रिवाजन मांहिं ,ब्रज के लोकोत्सवन मांहिं अरु ब्रज के लोकपर्वन के औसर पै व विसेस रूप ते होरी एवं सामन के औसरन पै , वाल पर्व डंडा चौथ अरु वालक्रीड़ा के औसरन पै, ब्रज माहिं ब्रज लोकगीतन की छटा यत्र तत्र भरपूर मात्रा में देखिवे कूं मिलै । ब्रज के इन लोकगीतन के मधुर रस ते ब्रज संस्कृति भरपूर मात्रा मांहिं सरावोर है रही है । ब्रज मांहिं विसेस औसर पै वाके अनुकूलई गीत गाये जाँय। जनम ते लैकें मृत्यु तक के सिगरे सोलह संस्कारन मांहिं अरु विविध औसरन पै ब्रज के लोकगीत गाये जावें। या तरियाँ ते एक एक औसर पै अनेकन गीत गाये जाँय । ब्रज मांहिं विविध औसरन पै गाये जावे वारे गीतन की कछु वानगी नीचे दई जा रही है -

1. वच्चा के जनम के औसर पै गाये जावे वारे गीत :-

ब्रज लोक संस्कृति में सिसु के माता के गर्भ में आते ही वाके दोहन अवस्था कौ चित्रन ब्रज लोकगीतन में खूब आकर्सक ढंग ते कियौ गयौ है । जा तरियाँ ते फल ते पहलैं फूल आवै वाई तरियाँ ते मैया के गर्भ में वच्चा फूल की तरह आवे लगै है । मैया के गर्भ में सिसु जैसे-जैसे वढ़िवे लगै वैसे-वैसे मैया कौ मन अलग-अलग चीजन नैं खाइवे कूं करै । याकौ ग्यान नीचे लिखे ब्रज लोकगीत ते होय :-

पहलौ महीना लागिये वाकौ फूल गह्यौ फल लागिये,
ए वाई दूजौ महीना जव लागिए,
राजे तीजौ महीना जव लागिए वाको खीर खांड़ मन लाइयौ ।

* * *

जव राजे चौथौ महीना जव लागिए,
ए वाई पांचौ महीना जव लागिए,
ए याकू कौल के आम मगाइए ।

* * *

राजे छट्यौ महीना जव लागिए,
ए वाइ सतयौ महीना जव लागिए,
ए अपविस अपविस साधु पुजाउ,

राजे आठ्यौ महीना जब लागिए,
ए मैं अपविस अपविस महल ढराऊ
ए बाई नौऔ महीना जब लागिए,
ए मैं अपविस अपविस दाइ बुलाऊ
तो होरल जानऊ ।

छठी के औसर पै लोकगीतन के बोलन ते संस्कारन के विधि-विधान कौ पूरौ पतौ लगि जाय । जनम के छटये दिना बच्चा की छटी पूजी जाय । या औसर पै भूआ नए जन्मे भतीजे की आँखिन माँहिं काजर आँजि कैं नेग लेय –

लैकें भतीजे कूँ बैठी सहोदरो,
अब कछू देउ भौजाई ।
सौ लाख गउअर सवा लाख भैंसिया,
तौ हम करैं अँजाई ।

बच्चा की छठी पूजते समय मैया नवजात सिसु कूँ गोदी में लैकें देवी देवतान ते धन-सम्पत्ति की कामना करैं। लोकगीतन में सीता अरु उर्मिला कौ स्मरन करैं :-

छठी पुजन्तर बहू आई सीता,
छठी पुजन्तर बहू आई उर्मिला,
छठी पुजन्तर कहा फल मांगे ,
अनु मांगे धनु मांगे ,अपने पुरखन कौ राज मांगे ।
बारौ झडूला गोद मांगै ।

छठी के औसर पैइ देवर ते पछौ सधायौ जाय । चरूऔ धराई,साँतियो धराई सबके नेग दैबे परैं तौ नवजात सिसु की मैया अपने देवर, ननद अरु सास कूँ नेग न दैकें पति सौं अपने भईया,भैन अरु मैया कूँ नेग दिवानौ चाहै:-

हम तौ अकेली सैंया सब न लुटाइ दीजौ ।
सासू जो आमैं सैंया द्वारे ते लौटाइ दीजौ ।
सासू कौ नेग मेरी अम्मा पै कराइ लीजौ ।
ननदो जो आमै सैंया उनहूं कूं लौटाइ दीजौ।
ननदो कौ नेग मेरी बहना पै कराइ लीजौ।
दिवरा जो आमै सैंया उनहूं कूं लौटाइ दीजौ।
दिवरा कौ नेग मेरे भइया पै कराइ लीजौ ।

सिसु के नामकरन संस्कार के दिना जच्चा के मैया-बाप अरु भैया 'छोछक' दैहैं । या छोछक मे आये उपहारनै देखि कैं जच्चा अपने पति तेऊ उपहार लायबे कूं कहै है तौ पति या तरियाँ उत्तर देय:-

ए धन पियरो विरन पैते मांगि,हम पै मति माँगिए ,
खिचरी भवज पैउ मांगि, लडुअरे माय पै ते माँगिए ।

पति की बातै सुनिकै मैया-भावज अरु मैया-बाप या तरियाँ ते कहैं :-

बेटी नित ठठि जनमौगी पूत,कहां ते लाऊं लाडुए ,
बी बी नित ठठि जनमौगी पूत,कहां ते लाऊं पीअरी
बेटी नित ठठि जनमोगी पूत,कहां ते लाऊं खींचरी,
भैना नित ठठि जनमौगी पूत,कहां ते लाऊं पीयरी ।'

2.व्याह के औसर पै गाये जावे वारे ब्रज लोकगीत

व्याह के औसर पै समय-समय पै विविध लोकगीत गाये जाँए। तिलक-सगाई, पीरी चिट्ठी , देहरी पूजन, घूरौ पूजन, बूढ़ौ बाबू पूजन, माढ्यो गाढ़िवे, मगौरी तोरिवे, भात पहरायवे, चाक बास पूजिवे, घुड़चढ़ी, खोरिया, बरोठी, भामर परायवे, पलकाचार, कुंवर कलेऊ, दूधावाती, बढ़ार, गारी, बंदनवार, म्हौ मड़ई, विदा, दई देवता और चूल्हौ पूजन के न्यारे न्यारे ब्रज लोकगीत गाये जात हैं। इन गीतन कौं जब यथा औसरन पै गायौ जाए तौ व्याह में रंग अरु समा बँध जाए । ब्याह कौ निस्चै अरु तैयारी सुरू हैदेई सबन ते पैलें भैन अपने भइया के घर भात नौतबे जाय । भात नौतबे के औसर पै नीचे लिखौ गीत गायौ जाय-

वीर बहन चली ए वीर के
भैलिनु बरध लदाइ,
राजो भातई ।
जबरे बहिन तालन गई,
और सूखे ताल हिलोरे लेइ,
जबरे बहिन सीमन गई,
हरी हरी दूब हर्‍याय
राजा भातई ।------

व्याह की तिथि हौले-हौले पास आय जाय अरु भैया भैन के घर लाला-लाली के व्याह के एक दिना पैलें भात लैकें पौंचै । भैया कूं भात में ससुरारियान कूं चीजन नै लुटाते देखिकें भैन अपने ससुरार बारेन कूं ठलाहनौ देती भई कहै-

ठसरौ रे ठसरौ,
देवर जेठ,
भीत लुट्यौ ए मेरौ भातई ।

भैया के भात पहरावे के बाद भैन अपने भैया ते बांह पसार कैं मिलै । वा औसर पैऊ गीत गायौ जाय । यू गीत या प्रकार है -

"और भैना नैं बैया पसारिये,
और बीरन गये एँ समाय ,
भैया धौर जिठानी बोलै बोलने,
सोति भतु पहारायौ तोय भात ।"

व्याह ते पैलें लाड़ो कूँ ठबटन ते न्हवायौ जाय । या औसर पै ब्रज लोकगीत गायौ जाय जो या तरियाँ है-

काये बेला ठबटनौ ? काये कौ तेल फुलेल,

करहु लड़लड़ी कौ उबटनौ,
कांसे कौ बेला उबटनौ,सरसौं कौ तेल फुलेल। करहु.....
बोलौ लड़लड़ी के ताउए, बाबाए,
जिआ सुख देखें हो आइ । करहुं ......

उबटन के पाछैं लाड़ी कूं जल सौं स्नान करायौ जाय । या औसर पै गाये जावे वारौ गीत या प्रकार ते है –

बाबा नें सागर खुदायौ ,पार बँधाई ए ताऊ,
सागर कौ तौ पार बँधाई ऐ ।
बाकी दादी के भरत कहार
कुमारि अन्हवाइयै।

बरात के रवाना होवे ते पैलै दूल्हा घोड़ी पै चढ़िकैं जाय है। बाय निकासी कहैं हैं । या औसर पै दूल्हौ चाँय कारौ होय या गोरौ बू मैयूया के तांईं तौ जगत कौ उजारौ लगै-

ठाड़ौ रह दूल्हा,तेरी माइल बोलै
खोलौ खाई देउ बधाई
दूल्हा ऐ देखन आई लुगाई ।
धनियौ उम्हायौ दूल्हा बागन मोरे,
हासुलौ मेरो चाल सुहाई,
लोग कहैं दूल्ह कारौई कारौ,
माइ कहै मेरौ जगत उजारौ ।

ब्रज मोंहिं बरात जीमते समै लाड़ी के घर को बैयरबानी या औसर पै रसभरी गारी गावैं । इन गारीन के बिना बरात जीमवे मे रंग अरु रस नाँय आवै । सबते पैलैं मीठी धुनवारी गारी या तरियाँ ते गाई जाय हैं-

दारी समधिन न्हाइवे कूं चाली,
संग लिये गिरधारी..... रंग बरसैगौ ।
हाँ हाँ राम रंग बरसैगौ ।
रंग बरसै कछु इमरत बरसै। हाँ हाँ....
हारि उतारि तीर पै धरि दियौ,रखि दई हंसुली सारी ।
रंग बरसैगौ ....
चीर उतारि घाट पै धरि दिये ,जल बिच निपट उघारी ।
रंग बरसैगौ-----
ताक लगाय कुंज बिच बैठे,लै भागे गिरधारी
रंग बरसैगौ-----
हमरौ चीर हमें देऔ कान्हा,मरीं लाज की मारी ।
रंग बरसैगौ-----
तुम्हरौ चीर जबई देंय प्यारी, जल सौं है जाऔ न्यारी
रंग बरसैगौ----
जल सौं जब हम न्यारे हुंगे ,आप हंसौगे दै तारी

रंग बरसैगौ-----
आप हँसौगे सब ग्वाल हँसिंगे अरु हसेंगीं ब्रजनारी
रंग बरसैगौ । हों हों राम रंग बरसैगौ ।

ब्रज की इन लोकगारीन मांहिं सबते ज्यादा लच्छ समधिन कूँ ई रख्यौ जाय -

समधिन है मोरी प्यारी,गोदी में खेलै भोला जती ।
सखियन के म्हारे प्राणपति ।
फूट्यौ नगाड़ौ,डूंडौं नदिया, बैठौ क्यों नहीं भोला जती ।
रूंड मुंड की माला बनाई,पैरौ क्यों नहीं भोला जती ?
* * *

दारी समधिन निकरी दधि बेचन ,डोलै सौत सब गली गली ।
आगै मिल गये किसन कन्हैया,हाथ पकरि कै खेंची लली ।
छोड़ौ साजन बइयां मोरी ,मौरै हमारी चूरिया हरी ।
अब नाँय छोडूँ सजनी प्यारी,अब तू बस छैला के परी ।

जब बराती चलबे लगि जाँय तौ ब्रज की बनितान के तेवर देखतेई बनैं-

काहे उठि बैठे और लै लेंते ।
लड्डू लै लेंते कचौरी लै लेंते
त्यारी भैना कूँ घैने धरि देंते ।
गोरी गोरी भुआ तिहारी
हमरे सजन के नाम करि देंते ।

ब्रज मांहिं फेरान के पाछे दुल्हन की भौजाई के हाथन ते दूधावाती कराई जाय। या औसर पै दूल्हा के म्हों में बतासौ दैकै बैयरबानी या लोकगीतै गामें-

खा मेरे दूल्हा दूधा बाती
भूकी कौ जायौ है लपलप खाय गयौ ।
अघाई की जाई जानैं चौंच न बोरी ।
छिनरी कौ जायौ है लपलप खाय गयौ ।....

ब्रज लोकगीतन में ब्याह के पाछें दुल्हनै बैयर नचामें हैं तौ वा औसर पै हू गीत गायौ जाए-
कहा नाचै कहा नाचै
जीउ चंग नाँय है,
जसरथ जोई नचामते चौं नाय ।
जीउ चंग नाय मेरौ मन चंग नाय ,
दिल्ली ते बैद बुलामते चौं नाओं ,
रानी की नारी दिखावते चौं नाओं ।

ब्याह के पाछे बधाये में दूल्हा-दुल्हन के सुखी सम्पन्न जीवन की कामना या औसर पै करी जाय-

आज दिन सौने कौ दूजौ महाराज ।
सौने कौ सब दिन रूपे की राति ,
सौने के कलस दीजौ धराइ । आज दिन....
पैलौ बधायौ ससुर घर आयौ,
सासुल नें लियौ करि गोद महाराज ।आज दिन.....

3. लोकोत्सवन पै गाये जाये वारे ब्रज लोकगीत -

ब्रज मांहिं लोकोत्सवन की धूम मची रहै है । रितुन के छ प्रकारन के अनुसार ब्रज में लोकोत्सवन व्यवस्थित रूप ते मनाये जाँय ।''बरसा रितु'' के त्यौहारन मांहि झूलोत्सव,हरियाली मावस,हरियाली तीज,बलदेव जन्मोत्सव, पंचतीर्थ,नाग पांचै,जन्म आठैं, गणेश चौथ,राखी आदि प्रमुख माने जाँय ।''ग्रीस्म रितु'' के उत्सवन में आखा तृतीया,जानकी नौमी,नृसिंह चतुर्दसी,बैशाख पूनौ,वनविहार ,जल विहार,गंगा दशहरा,निर्जला ग्यारस,वटपूजन, शीतला की मेला,रथ यात्रा,भड़रिया नौमी,देवसयनी ग्यारस,व्यास पूनौ आदि प्रमुख हैं ।''शरदोत्सव''में सांझी,टेसू,नवरात्र, दसहरा,रामलीला, देवोत्थान(देवउठनी ग्यारस) आदि प्रमुख उत्सव माने जाँय । ''बसंत रितु'' में बसन्तोत्सव,होरी,फूलडोल,सीतलामाता पूजन,गणगौर देवीपूजन(कैलादेवी आदि) उत्सव प्रमुख हैं ।इन लोकोत्सवन पै ब्रज में लोकगीत अलग-अलग गाये जाँय हैं ।इन उत्सवन के औसर पै गाये जाये वारे कछु ब्रज लोकगीत नीचे दिये गये हैं जो देखवे जोग हैं-

बरसा रितु के गीत - सामन ब्रज के नर-नारी अरु बालक-बालिकान के लये परमानन्द कौ लोकोत्सव है । झूला झूलती भई ब्रजनारी जा गत ते सामन कौ आह्वान करैं -

'कच्चे नीम की निबौरी सामन जल्दी अइयौरे ।
उलै पार मेरौ बटुआ भींजै चले पार मेरी बाँह जी ।'

सामन की रिमझिम फुहारन में बागन में झूला डारिकें ब्रज की नारी झूलन पै पैंग बढ़ाती भई सुरीले कंठ ते गावैं हैं -

सामन आयौ,सुघड़ सुहावनौ जी एजी कोई आई है अजब बहार । सामन आयौ..
झूला तौ झूलें सखियाँ बाग में जी, एजी कोई गावैं गीत मल्हार । सामन आयौ.. .
नैन्ही नैन्ही बुंदियाँ देखौ झर लाग्यौ जी, एजी कोई बादल घुमड़घुमड़ । सामन आयौ. .
पटुली पकड़ झोटा दैरहे जी, एजी कोई झुकि झुकि झूमाझूमा । सामन आयौ .
पिहु पिहु पपीहा देखौ करि रह्यौ जी, एजी कोई नाचै कलियल मोर । सामन आयौ

सामन की हरियाली तीज के औसर पै ये लोकगीत गायौ जावै है-

'सामन आयौ री अम्मा मेरी सुहावनौ जी,
एजी कोई आयौ हरियाली तीज......'

रिमझिम फुहारन के उछाह में झूला झूलती ब्रजनारी गावें है-

अरी मैया ,घटा तौ उठी है घनघोर,सामन में बरसैं [illegible] जी ।
काली बदरिया री बरसा झूमि रहे,अरी मैया [illegible] [illegible] बड़ जोर । सामन में
झूला झूलती री मैया हम सखी, अरी मैया [illegible] [illegible] [illegible] । सामन में

ब्रज में सामन की उछाह [illegible] ([illegible]) और [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है -

" भादौं चौथ चांदनी सोय । गणनायक की पूजा होय ।
माता री तू खोल किवार । पंडित आये तेरे द्वार ।
इन पंडित कौं आदर देउ। चंदन चौकी आसन देउ ।
रहसी फूली माता फिरै । सहस व्रधाई मंगल करै ।"

चट्टा जब भौत देर तक गाते रहैं अरु तौऊ घर वारे छात्रन कूँ मिठाई नाँय बांटें तौ वे फिर गायवे लगें-

उठ उठरी मोहन की माँ.। भीतर ते तू बाहर आ ।
गढ़े गढ़ाये रुपया ला । पंडित जी कूँ बागो ला ।
मिसरानी कूँ तीहर ला। चट्टन कूँ मिठाई ला ।
चट्टा दिंगे बड़े असीस । बेटा होंगे नौसै तीस ।
आयौ बसंत कै सुन चकपैया । अब का देखौ लाऔ रुपइया ।

शरद रितु के उत्सवन के गीत-सरद रितु के उत्सवन में सांझी,टेसू ,दिवारी,देवोठान,मकरसंक्रान्ति के उत्सव प्रमुख हैं। इन उत्सवन में अलग-अलग लोकगीत गाये जाँय । सांझी कूँ नन्हीं कुमारी गोबर ते बनावें । वा औसर पै सुरीले कंठ ते गामें-

सांझी भैना री,का ओढ़ैगी,का पहिरैगी
काहे कौ सीस गुंथावैगी ?
मैं तौ सालू ओढूँगी,मिसरू पहिरूंगी
मोतियन की मांग भराऊंगी ।

टेसू की रचनाऊ ब्रज बालक याई समै करैं अरु बाय लैकें घर-घर जायें अरु ई गीत गामें-

टेसूरा टेसूरा घंटार बजइयौ,
दस नगरी दस गांम बसइयौ,
बस गये तीतर बस गये मोर,
सड़ी डुकरियाय लै गये चोर,
चोरनके घर खेती भई,
अब चोरन के आगि लगी,
वामें डुकरिया पजर मरी ।

दिवारी के औसर पै गोवर्द्धन पूजा होय । वा दिना बैयर या गीतै गावें-

सिरी गोवर्धन महाराज त्यारे माथे मुकुट विराज रयौ ।
तोपै पान चढ़ै तोपै फूल चढ़ै, तोपै चढ़ै दूध की धार 1 त्यारे माथे.....

देवोठान ग्यारस कूँ ब्रजनारी बड़ी पवित्र भावना ते अपने घरन में गेरू अरु सफेदी ते चौक पूरैं। वा औसर पै देवतान कूँ उठाते भये ब्रजनारी या गीतै गावैं -

"उठौ देवा ,बैठौ देवा ।अंगुरिया चटकाऔ रे देवा "

मकर संक्रान्ति कौ उत्सवऊ सरद रितु में मनायौ जाय । या दिन दान दैवे कौ महात्म है । या औसर पै गाये जावे वारौ गीत है-

सब कोऊ दानी करि रहे दान । तुम कैसें बैठे जिजमान । हर गंगा---
मकर परब आवै इक बार। बरस दिना में ये त्यौहार । हर गंगा ---
देस दिवस अरु पात्र विचार । दीजै दान होय उद्धार । हर गंगा---

बसंत रितु एवं ग्रीस्म रितु के लोकोत्सवन के ब्रजगीत-बसंत रितु एवं ग्रीस्म रितु के त्यौहारन में होरी,देवी पूजन अरु गनगौर के उत्सव मुख्य हैं । बसंतोत्सव के बाद में होरी कौ त्यौहार मनायौ जाय । ब्रज की होरी सिगरे भारत में जानी जाय। नंदगाम अरु बरसाने की लठामार होरी देखिवे लायक होय । जा औसर पै साखी गाई जाय जाकौ नमूना या तरियाँ ते है-

चूंदरिया रंग बोर गयौ,बो कान्हा बंसी बारौ ।
भरि पिचकारी मुख मारी, मोपे केसर गागर ढोरि गयौ । बो कान्हा....
वृंदावन की कुंज गलिन में, नथ दुलरीए तोरि गयौ । बो कान्हा.....
गहवर वन और खोर सांकरी,दधि की मटकी फोर गयौ । बो कान्हा......
चंद सखी भजि बाल कृष्ण छवि चितवन में चित चोर गयौ । बो कान्हा.....

ब्रज के होरी के गीतन में कृष्ण अरु गोपिन कौ हास, परिहास देखते ई बनै । होरी के औसर पै ब्रज के लोग-लुगाई ऐसें गावैं हैं-

होरी खेलन आयौ स्याम आज याय रंग में बोरौ री ।
कोरे कोरे कलस मंगाऔ रंग केसर घोरौ री ।
रंग बिरंगौ करौ आज ,कारे ते गोरौ री ।
हरे बांस की बंसुरिया,जाहि तोर मरोरौ री ।
चन्द्र सखी की यही बीनती,करै निहोरौ री ।
हा हा खाय परै जब पैंया ,तब याह छोरौ री ।

होरी के औसर पै गली-गली में जेई आवाज सुनाई देय है-

आज बिरज में होरी रे रसिया
होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया । आज बिरज में...

होरी की भइया दोज के औसर पै दौज पूजती भई ब्रज नारी सुर में सुर मिलाय कैं इकठौरी हैकें गावें -

दौजरिया भल पूजियौ
दौज पूजत मेरौ मन हंसै,मन हंसै हियरा हंसै । दौजरिया भल.....

नौ रात्रन में ब्रजके नर-नारी कैलादेवी(करौली) के दर्सनन कूं उमड़ि पड़ैं । या औसर पै वे देवी की भक्तिभावना के गीतन के संग लांगुरिया जरूर गावें -

1. देवी मैया के भवन में घुटरन खेलै लांगुरिया ।
2. दो दो जोगनी के बीच अकेलौ लांगुरिया ।
3. कैला मैय्या के जुड़ौ है दरबार लांगुरिया,चलौ तौ दर्सन कर आमें।
4. मैं मरूंगी जहर विस खाय रे लंगुरिया मति फंसि जइयो काउ और ते ।
5. नसे में लांगुर आवेगौ,नेकु ड्यौढ़ी ड्यौढ़ी रहियौ ।

" भादों चौथ चांदनी सोय । गणनायक की पूजा होय ।
माता री तू खोल किवार । पंडित आये तेरे द्वार ।
इन पंडित कों आदर देउ। चंदन चौकी आसन देउ ।
रहसी फूली माता फिरै । सहस बधाई मंगल करै ।"

चट्टा जब भौत देर तक गाते रहैं अरु तौऊ घर वारे छात्रन कूँ मिठाई नाँय बांटें तौ वे फिर गायवे लगें-

उठ उठरी मोहन की माँ.। भीतर ते तू बाहर आ ।
गढ़े गढ़ाये रुपया ला । पंडित जी कूँ बागो ला ।
मिसरानी कूँ तीहर ला। चट्टन कूँ मिठाई ला ।
चट्टा दिंगे वड़े असीस । बेटा होंगे नौसै तीस ।
आयौ बसंत कै सुन चकपैया । अब का देखौ लाऔ रुपइया ।

शरद रितु के उत्सवन के गीत–सरद रितु के उत्सवन में सांझी,टेसू ,दिवारी,देवोठान,मकरसंक्रान्ति के उत्सव प्रमुख हैं। इन उत्सवन में अलग-अलग लोकगीत गाये जाँय । सांझी कूँ नन्हीं कुमारी गोवर ते बनावें । वा औसर पै सुरीले कंठ ते गामें-

सांझी भैना री,का ओढ़ैगी,का पहिरैगी
काहे कौ सीस गुंथावैगी ?
मैं तौ सालू ओढूँगी,मिसरू पहिरूंगी
मोतियन की मांग भराऊंगी ।

टेसू की रचनाऊ ब्रज वालक याई समै करैं अरु वाय लैकैं घर-घर जायें अरु ई गीत गामें-

टेसूरा टेसूरा घंटार बजइयौ,
दस नगरी दस गांम बसइयौ,
बस गये तीतर बस गये मोर,
सड़ी डुकरियाय लै गये चोर,
चोरनके घर खेती भई,
अब चोरन के आगि लगी,
वामें डुकरिया पजर मरी ।

दिवारी के औसर पै गोवर्द्धन पूजा होय । वा दिना वैयर या गीतै गावें-

सिरी गोवर्धन महाराज त्यारे माथे मुकुट विराज रयौ ।
तोपै पान चढ़ै तोपै फूल चढ़ै, तोपै चढ़ै दूध की धार 1 त्यारे माथे.....

देवोठान ग्यारस कूँ ब्रजनारी वड़ी पवित्र भावना ते अपने घरन में गेरू अरु सफेदी ते चौक पूरैं। वा औसर पै देवतान कूँ उठाते भये ब्रजनारी या गीतै गावैं -

"उठौ देवा ,वैठौ देवा ।अंगुरिया चटकाऔ रे देवा "

मकर संक्रान्ति कौ उत्सवऊ सरद रितु में मनायौ जाय । या दिन दान दैवे कौ महात्म है । या औसर पै गाये जाबे वारौ गीत है-

सब कोऊ दानी करि रहे दान । तुम कैसें बैठे जिजमान । हर गंगा---
मकर परव आवै इक बार। बरस दिना में ये त्यौहार । हर गंगा ---
देस दिवस अरु पात्र विचार । दीजै दान होय उद्धार । हर गंगा---

बसंत रितु एवं ग्रीस्म रितु के लोकोत्सवन के ब्रजगीत-बसंत रितु एवं ग्रीस्म रितु के त्यौहारन में होरी,देवी पूजन अरु गनगौर के उत्सव मुख्य हैं । बसंतोत्सव के बाद में होरी कौ त्यौहार मनायौ जाय । ब्रज की होरी सिगरे भारत में जानी जाय। नंदगाम अरु बरसाने की लठामार होरी देखिवे लायक होय । जा औसर पै साखी गाई जाय जाकी नमूना या तरियाँ ते है-

चूदरिया रंग बोर गयौ,यो कान्हा बंसी बारौ ।
भरि पिचकारी मुख मारी, मोपै केसर गागर ढोरि गयौ । यो कान्हा....
वृंदावन की कुंज गलिन में, नथ दुलरीए तोरि गयौ । यो कान्हा....
गहवर बन और खोर सांकरी,दधि की मटकी फोर गयौ । यो कान्हा......
चंद सखी भजि बाल कृष्ण छवि चितवन में चित चोर गयौ । यो कान्हा....

ब्रज के होरी के गीतन में कृष्ण अरु गोपिन कौ हास, परिहास देखते ई बनै । होरी के औसर पै ब्रज के लोग-लुगाई ऐसें गावैं हैं-

होरी खेलन आयौ स्याम आज याय रंग में बोरौ री ।
कोरे कोरे कलस मंगाऔ रंग केसर घोरौ री ।
रंग बिरंगौ करौ आजु ,कारे ते गोरौ री ।
हरे बांस की बंसुरिया,जाहि तोर मरोरौ री ।
चन्द्र सखी की यही बीनती,करै निहोरौ री ।
हा हा खाय परै जब पैंया ,तब याह छोरौ री ।

होरी के औसर पै गली-गली में जेई आवाज सुनाई देय है-

आज बिरज में होरी रे रसिया
होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया । आज बिरज में...

होरी की भइया दोज के औसर पै दौज पूजती भई ब्रज नारी सुर में सुर मिलाय कैं इकठौरी हैकें गावैं -

दौजरिया भल पूजियौ
दौज पूजत मेरौ मन हंसै,मन हंसै हियरा हंसै । दौजरिया भल.....

नौ रात्रन में ब्रजके नर-नारी कैलादेवी(करौली) के दर्सनन कूं उमड़ि पड़ैं । या औसर पै वे देवी की भक्तिभावना के गीतन के संग लांगुरिया जरूर गावें -

1. देवी मैया के भवन में घुटरन खेलै लांगुरिया ।
2. दो दो जोगनी के बीच अकेलौ लांगुरिया ।
3. कैला मैय्या के जुड़ौ है दरबार लांगुरिया,चलौ तौ दर्सन कर आमें।
4. मैं मरूंगी जहर विस खाय रे लंगुरिया मति फंसि जइयो काउ और ते ।
5. नसे में लांगुर आवेगौ,नेकु ड्यौढ़ी ड्यौढ़ी रहियौ ।

गनगौर कौ उत्सव ऊ ब्रज में धूम-धाम ते मनायौ जावै । गौरा पूजन के औसर पै ब्रज कुमारियाँ पूजन करती भई या तरियाँ ते गीत गावैं-

1. गौर ए गनगौर माता,खोल किवारी ,बाहर ठाड़ी तिहारी पूजन हारी,
   पूजा पुजेंतर बेटी का माँगै,अनु माँगै,धनु माँगै, भैया भतीजे माँगै ।
2. गाढ़ि लाई म्हारी गौर, छोटी सौ खेलना ।
4. राष्ट्रीय उत्सवन के औसर पै गाये जावे वारे ब्रज लोकगीत –

ब्रज गीतन में 26 जनवरी अरु 15 अगस्त के राष्ट्रीय उत्सवन के औसर पै देशभक्ति की चेतना देखवे कूँ मिलै –

रे लांगुरिया दिन पन्द्रह अगस्त कौ आय गयौ,जा दिन देस भयौ आजाद ।
रे लांगुरिया सरदार भगतसिंह ,आजाद और गाँधी,सुभाष लाजपत नें है दिये अपने प्रान ।
लांगुरिया....

26 जनवरी कूँ जो चेतना ब्रजवासिन में मिलै है वू या गीत में है-

" मैं तौ झाँकी देखवे जाउ,छब्बीस जनवरी दिल्ली कूँ। "

या प्रकार ते विविध औसरन पै गाये जावे वारे लोकगीतन की ब्रज में भरमार है । इन ब्रज लोकगीतन कौ ब्रज में इतेक अथाह भंडार है कि याकौ कोई लेखा नाँय । हरेक औसर पै सुरीले अरु मधुर लोकगीत ब्रज में गाये जावैं । ब्रज में इन लोकगीतन कौ आनंद लैकें ब्रज नर नारी परमानंद कौ अनुभव करते भये अपनौ जीवन बितामें । याई कारन ब्रजवासीन के जीवन के सम्बन्ध में यही कहनौ उचित है –

ईं तौ न्यारौ है ब्रजधाम ,यहाँ की न्यारी हैं ब्रज नार ।
यहाँ पै होंमें न्यारे पर्व,जिनमें गामें न्यारे गीत ॥

– 'विनायक' 438 बरकत नगर,टोंक फाटक,जयपुर

❑

लोकगीतन में न्यारे-न्यारे औसरन के अनुरूप अपनौ विशेष स्वर-विधान अरु स्वर-विस्तार होय। विशेष लय, ध्वनि अरु आरोह-अवरोह होय।

लोक-जीवन में संस्कार-गीतन कौ महत्व

-श्री भगवानदास मकरंद

लोकगीत सौं आशय लोकजीवन ते गहराई तक जुड़े भये उन गीतन सौं लगायौ जावै जो या जीवन कौ हरेक साँस के साच्छी अरु हमसफर कहे जावैं ।इन्हीं लोकगीतन के माध्यम सौं हम वा समाज मे प्रचलित मान्यता,विश्वास,परंपरा अरु संस्कृति कौ ज्ञान कर सकैं हैं ।लोकगीत समाज के इतने अभिन्न अंग होयें कि वा समाज की संस्कृति कूं बिना लोकगीतन के समझयौ असम्भव नाँय तौ दुरूह अवश्य है ।लोकगीत एक पीढ़ी सौं दूसरी पीढ़ी कूं स्थानान्तरित होते भये अपने गरभ में लोकसंस्कृति की अमूल्य धरोहर ऐ संजोये भये निरन्तर चलते रहैं ।

इन्हीं लोकगीतन कौ एक रूप है-संस्कार गीत।षोड़श संस्कारन के समै मंगल उत्सवन पै गाये जावे वारे गीत संस्कार गीत कहलामें ।व्रज अंचल के समूचे जीवन में छोटे ते छोटे उत्सवन में हू महिलान द्वारा जे संस्कार गीत गाये जामैं ।जे संस्कार गीत अपने संग समाज कूं दियौ जावे वारौ अमोलक उपदेस हू राखैं ।जिन समाजोपयोगी बातन कूं बड़े-बड़े धार्मिक ग्रंथ अरु वैरागी हू नाँय समझा सकैं वाई संदेस कूं जे गीत बड़े ही सहज भाव सौं कह जाँय -

सुमर साहिब कौ नाम जिन्नें तोय जनम दियौ ,
अन्ध गोप दस मास गर्भ में राख लियौ ।
साहिब मेरी बन्ध छुड़ाय दै मैं तेरौ भजन करूं ,
आयौ है मुट्‌ठी बाँध,हाथ पसार दियौ ।
लागी है कलियुग ब्यार हरिनाम बिसार दियौ ,
सुमर साहिब कौ नाम जिन्नें तोय जनम दियौ ।

जि संस्कार गीत हरेक उत्सव कौ पहलौ गीत मानौ जावै ।समाज के सामाजिक मूल्य अरु मान्यतान कौ आभास हू इन संस्कार गीतन में पायौ जावै है।संस्कारगीतन द्वारा दिये जावे वारे संदेस की एक और झलक देखौ -

जे घर कन्या होय अछूतौ नाँय खइयौ।
जे घर लक्ष्मी होय उधारौ नाँय लइयौ।
जे घर दीपक होय अंधेरौ नाँय रहियौ।
जे घर गोरस होय तौ रूखौ नाँय खइयौ।
जे घर घोड़ी होय तौ पैदल नाँय जइयौ।
जे घर भैया होय अकेलौ नाँय चलियौ।

जिन संस्कार गीतन कौ अपने आप में मनोरंजनात्मक महत्व कम नाँय ।मंगल समै पै समयानुकूल शिष्ट ठिठोली कौ

रूप इन गीतन में खूब देखबे कूँ मिलै है । एक स्थान पै महिला गा उठैं -

राजा तुम चढ़ जइयों अटरिया सिगरौ इंसाफ करूंगी
तुम्हारी दाई आवैगी,वोआके होरल जनावैगी
तुम्हारी माई आवैगी वो आके चरूए चढ़ावैगी
वो अपनौ नेग माँगैगी मैं उनके हाथ जोडूँगी
राजा इतनौ न मानें मेरौ कहनौ मैं डण्डान सौं बात करूंगी।

सच पूछौ तो नीरस समाज में सरसता पैदा करबे कौ काज जे संस्कारगीत ई करैं हैं। मंगल औसर पै स्वस्थ मजाकन की परंपरा हू इन्हीं संस्कारगीतन में पाई जावै । भोजन के समै गाई जाबे वारी मनुहार कौ अपनौ अलग ई स्थान है-

काहे उठ बैठे और लै लेंते
लड्डू लै लैंते कचौड़ी लै लैंते
अपनी मैया कौ मोल कर दैंते
अपनी बहिना कौ मोल कर दैंते
काहे उठ बैठे और लै लैंते।

ब्याह के समै पक्ष प्रतिपक्ष की बैयरन द्वारा अपने यहाँ आबे वारे रिस्तेदारन कूँ,बरातीन कूँ दई जाबे वारी गारी हू सरसता की पराकाष्टा तानूं पौंहच जावैं । बैयरबानीन के मौंहड़ेन सौं सरस गारीन्नें सुनकैं सिगरौ वातावरन रससिक्त है जावै। हरेक आदमी बिना बुरौ माने जिन गारीन कूँ बड़े चाव ते सुनतौ पायौ जावै है । गारीन के गाये बिना ब्याह बिरौंद सूनौ-सूनौ सौ लगबे लग जावै है । प्रायः एक झुण्ड में औरतैं रिस्तेदारन कौ नाम लै लैकें गारी गायबे लग जावैं हैं -

'रमेश की मैया नें खसम करौ ऐ भुल्लन राम हमारौ रंग बरसैगौ।'

इन्हीं ठिठोलिन्ने लाला कन्हैया सौं जोर कै हू कहौ जावै-

मुकुट धर सांवरे रे लाला दो बापन कौ जायौ
एक बाप मथुरा बसै दूजौ गोकुल गाम
बहन तुम्हारी सुभद्रा कहियै अर्जुन संग सिधारी, रंग बरसैगौ
भुआ तुम्हारी कुन्ती कहिए क्वारी नें लाला जायौ, रंग बरसैगौ।

संस्कार गीतन कौ सम्बन्ध अधिकतर धार्मिक भावनान ते जुड़ौ भयौ पायौ जावै है। मंगल समै पै अपने आराध्य देव कौ नाम लैबौ मंगल कौ प्रतीक समझौ जावै है। जन्म के समै मन्त्रोच्चारण अरु देवतान की स्तुति अरु नाम स्मरण के समान ई संस्कार गीतन द्वारा या कमी की सहज भाव में पूर्ति है जावै-

गोरे गोरे गाल हैं घूघर वारे बाल हैं
तारकसी कौ झगुला पहरै ऐसे नन्दलाल हैं
अरे राम आए अयोध्या आनन्द भये माई
राजा दशरथ के चारों बेटा, चारौ बैठो अथाई-

यही नहीं सभी प्रकार के देवी देवतान कौ पूजन-वन्दन हू इन संस्कार गीतन के माध्यम ते ई सम्भव है। लुप्त प्रायः देवी-देवतान कौ वन्दन अरु अस्तित्व पुराने समै ते ई संस्कार गीतन के माध्यम ते ई सम्भव है सकै है। दई-देवतान की कृपा-पात्रता लगातार पायबे की आस्था छिपी रहवै-

1. सुमर साहिब कौ नाम जिन्नें तोय जनम दियौ।
2. ए मैं ठाड़ी चन्दन तेरी ओट जामें प्रेतराज रम रह्यौ।

3. ऊँचे से खेरे भुमिया बसैरे।
4. कौन तेरी डार नवाइये चन्दुन्डा मार।
5. कीकरियां झक झलरीं वहां सैयद को थान।
6. अउतम को इतनौ लै मुकुट निकरौ।
7. भैरों के पामन घूघरा कौई रन झुन रन झुन होय।

इन संस्कार गीतन कौ अपनौ सामाजिक महत्व हू भुलायौ नाँय जा सकै। परिवार कूँ प्रत्येक औसर पै समाज सौं जोड़े रखवौ इनकौ मूल उद्देश्य है। जीवन के हरेक औसर पै समाज की भागीदारी वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना कूँ प्रदर्शित करै है। काऊ के हू घर पै मंगलकार्य की सूचना लगते ई समवेत स्वर में औरतन कौ संगीत प्रारम्भ है जावै। इन संस्कार गीतन के माध्यम सौं समाज कूँ अपने आप सौं जोड़े रखवे कौ अभूतपूर्व कार्य सिद्ध है जावै है।

गर्भावस्था में शिशु हैमे पै ई अठमासा पूजवे के नाम पै पुत्र जन्म की पूर्व सूचना समाज कूँ दै दई जावै है। या तरह समाज परिवार की हरेक धड़कन कौ साच्छी बन जावै है। ब्रजांचल में अधिकतर अठमासौई पूजौ जावै है। याकूँ सीमन्तोन्नयन हू कह्यौ जावै।

अन्त में जिई कहनौ परैगौ कै लोकजीवन में संस्कार-गीतन कौ महत्व बतानौ सूरज कूँ दीपक दिखाने के समान है। ऐसौ कौन सौ कौनौ है जहाँ पै संस्कार गीत कौ पैठ नाँय?

पर आज के पाश्चात्य सभ्यता के अन्धानुकरण के आ युग में नई लेडीज इन संस्कार गीतन कूँ भूलती जाय रही हैं। आज फिल्मी गीतन के हा हुल्लड़ अरु डिस्को की धूम धड़क में संस्कार गीतन कूँ गावे अरु सुनवे वारी मुश्किल है मिलै। ब्रज अंचल में जरूर इन गीतन कौ अस्तित्व जीवित है।

आज इन संस्कारगीतन के संरक्षण अरु संवर्धन की परम आवश्यकता है वरना आ आपाधापी के युग में हमारे लोक-रंजन के बहुआयामी परिदृश्य की जि धरोहर धीरे-धीरे समूल नष्ट है जावैगी।

-[illegible]
गोविन्द मोहल्ला, [illegible]
([illegible])

आदान-प्रदान बड़ी दूर-दूर तक चल्यौ करै। गीतन में माधुर्य, वाक्चातुरी, चुटीलो व्यंग अरु चलती धुन होय तौ वहू की नगरी कौ गीत ससुराल को नगरी में प्रचलित है जाय। इन गीतन माँय क्षेपक कौ आक्षेप नाँय लग सकै-इनके रचयिता तौ लोक है।

लोकगीतन की विसैवस्तु अनगिनत हैं। मानव के सवई कार्यकलाप, धरती पै पाई जायें वारी सवई वस्तुन सौं लोकगीत सरोकार राखें। इनमें पुरानन के सन्दर्भ के देवी देवतान के गीत जैसे दुर्गा के अनेक सरूप सिवजी, गनेस, राम, कृस्न की स्तुति, लीलान कौ वरनन कियौ जाय। मानव के जनम सौं लैकें अन्तिम समै तक सोरह संस्कारन कों भी लोकगीत समेटे भये हैं।

मनोरंजन के गीत हूँ अनेक रूपन मायँ सुनिवे कूँ मिलैं। समसामयिक समस्यान की ओर हू लोकगीत वड़े सजग रहे हैं। गुलामी विरोधी देस भक्ति गीत, स्वदेसी कौ समर्थन, दंगा, महँगाई, दहेज, राजनीति सवन पै विना लाग लपेट समर्थन अथवा कटाक्ष कियौ जाय। तदनुसार अनेक रसन की अनुभूति अनायास है जाय। जैसे भजनन माँय सान्त रस, राम-कृष्ण की वाल लीलान में वात्सल्य रस, पुत्र जन्म, छठी, कठुला, पालना, मुंडन, छेदन आदि औसर गीतन में वात्सल्य मिश्रित गर्व की अभिव्यक्ति दिखाई परै। याही तरियाँ रासलीला, पनघट लीला, मनिहारी, लिलहारी लीला मे सिंगार रस कौ संजोग रूप तथा राम सीता की फुलवारी लीला माँय अति सुन्दर संयत सिंगार रस देखिवे कूँ मिलै। कृस्न के मथुरा गमन माँय वियोग सिंगार के दरसन होंय। खेल गीत गारी, गीतन में व्यंग तथा हास्य रस कौ आनन्द मिलै। व्याह गीतन में हास्य-व्यंग, सिंगार तथा विदागीतन माँय करुन रस कौ विसेस रूप सौं अनुभव होय।

इन गीतन में उपमा आदि अलंकार भी अनायास ही आ जायें।

यहाँ मैं विवाह गीतन की चर्चा करनौ चाहूँ हूँ-विसेस रूप सौं बेटी के व्याह के। जनम संस्कार के पाछे व्याह संस्कार ई सवसूँ ज्यादा महत्व राखै। व्याह के गीतन में लगन, सगाई, पीरी चिट्ठी, देहरी पूजन, चौक, भात नौतिवो, तेल, रतजगा, बन्नी, चाक पूजन, मढ़ा, भात पहिरवो, गारी, जौनार, भामर, विदा आदि खास हैं।

पुत्री के व्याह के गीत वर ढूँढ़िवे के प्रयासन सूँ सुरू होंयँ। वर के रूप-सरूप, सामाजिक प्रतिष्ठा, सम्पन्नता के मानदंड हू समयानुसार वदलते जाय रए हैं। कछु वानगी आगें प्रस्तुत है।

व्याह की हर संगीत सभा की सुरुआत देवी देवतान के कम सूँ कम पाँच गीतन सौं होय। पैलौ गीत गनेसजी कौ होय, पाछे देवी अरु देवतान के।

वर ढूढ़न के एक पुराने गीत कौ नमूनौ देखौ। कुँआ सौं पानी खींचिवे कों लोटा-डोर अरु खाइवे कों नमक अरु सतू लैकें चारों दिसान में बेटी के वावा, ताऊ, पिता, भाई आदि जायँ तव कहूँ सत्तोस लायक, बेटी के जोग वर मिलै-

1. संभर सतुआ वाँधि कै झारी लीनी है हाथ वर ढूंढन वावा चले(ताऊ, वावुल, भइया, जीजा आदि)
   अगिम ढूंढी पच्छिम ढूंढी, तौ ढूंढी है धुर गुजरात लाड़ो सरीखे वर ना मिले
   जाइ दिल्ली के वीच लालजी सरीखे वर पाइयो।
2. वर की सामाजिक हैसियत ऊँची होनी चइये-
   मेरे दादाजी ऐसो वर ढूंढ़िये जहँ सोनो तराजू में तौलिये
   कोयलिया वोलै वाग में, गजहस्ती झूमैं द्वार पै।
3. वर चतुर औ सुघर होय या लाड़ली बेटी की कामना (ताऊ, चाचा, भइया आदि)
   मड़ये के वीच लाड़ो नें केस सुखाये
   अरे वावा चतुर वर ढूंढ़ौ सुघर वर ढूंढौ
   दादी, चाची, ताई, अम्मा आदि, लेगो कन्यादान॥ लाड़ो नें......
4. आधुनिक मानदंडन के अनुसार वर बंगले कार वारौ होनौ चहिये

ब्रज लोकगीत (विशेष सन्दर्भ -विवाह गीत)

-श्रीमती इन्दिरा त्रिपाठी

शीरी जुवान के गर्व सौं गर्वित्र फारसी कौ गरूर चूर करबै वारी , ५ .. गलीन में सुनी जायवे वारी बोली "माय री माय गैल सांकरी पगन मै कांकरी गड़तु हैं" की मधुराई नें हिन्दू, मुसलमान, विद्वान अरु साधारन जनता कौ मन समान रूप सौं मोह्यौ है।

ब्रज भाषा के परस सौं, सरस भई कवि वानी ।
बोलन में मुखसुख अमित, सकल गुननि की खानि ।।

जी ब्रज भाषा उत्तरी भारत के अनेक प्रान्तन में पढ़ी समझी जाय अरु ब्रज अंचल तथा आसपास के छेत्रन में बोली जाय तथा जाकौ साहित्य अति समृद्ध है जासौं हमारौ पुरानौ सम्बन्ध है, यापै हमें गर्व है। अवधी अंचल में पले बढ़े राम के अनन्य भक्त संत तुलसीदास पैऊ ब्रजभाषा नें ऐसौ जादू डारौ कि कवितावली, विनयपत्रिका, कृष्ण गीतावली की रचना जाई भासा में कीनी।

भक्तिकाल सौं आज तांई साहित्यकारन माँय ब्रजभाषा काव्य कौ सूरज चमकि रह्यौ है । भक्ति अरु रीति काल में तौ याकौ तेज अति प्रखर हो । भरतेन्दु काल अरु आधुनिक काल में ऊँ उत्तम कविता के दर्सन हॉय, पै प्रेस की सुविधा सौं खड़ी बोली नाना विधान सूँ ऐसी छाय गई कि जाके तेज पै एक परत सी परि गई ।

कृष्णाराधना तथा ब्रजभाषा साहित्य सौं हमारे प्रान्त कौ पुरानौ सम्बन्ध है । मीरा, पदमाकार. विहारी के राजस्थान में ब्रजभाषा की कुम्हलाई वल्लरी कौं सीचिबे कौ प्रंससनीय जतन राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी दस बरसन सौं कर रही है। साहित्यिक काव्यधारा के समानान्तर लोकगीत की सरिताऊ लहराती इठलाती प्रवाहित है रई है। इन गीतन में जनमानस की सहज भावना अभिव्यक्त होय, देसकाल के प्रति प्रतिक्रिया दिखाई परै याते इनमें ठहराव नॉय आवै, ताजगी बनी रहै।

साहित्य समाज कौ दरपन कह्यौ गयौ है। ऊँचे साहित्य की रचना तौ सायास होय है। पै लोकगीतन के दर्पन में समाज कौ जो रूप उजागर होय यामें ईमानदारी होय। लोकगीत की परिभाषा कछु जा प्रकार करी जाय सकै - ' लोकगीत उन लोगन के जीवन की अनायास प्रवाहात्मक (Spontaneous) अभिव्यक्ति है जो औपचारिक सिच्छा औ उच्च वर्ग की सभ्यता सौं दूर हैं। जे गीत मौखिक परम्परा की अमूल्य धरोहर हैं। इनके रचनाकार एक या अनेक है सकैं तथा ग्यात औ अग्यात हूँ है सकें। काऊ सामाजिक औसर या सामूहिक औसर या सामूहिक कामकाज पै समय अनुसार, मन के भावन के हिसाब सूँ पाँत दर पाँत जे गीत धुन ताल लय में बँधे भये जुरते चले जायँ ।

लोकगीतन की भासा पै अंचल विसेस की भासा सो आधार रूप सौं होय-यानी कोई मानक भासा नांय होय। परौसी नगर प्रान्तन की बोलीन कौ भी प्रभाव होय। ब्याह के बाद नारियाँ अपनी ससुराल की नगरी में जायँ जा तारियाँ गीतन कौ

आदान-प्रदान बड़ी दूर-दूर तक चल्यौ करै। गीतन में माधुर्य, पाक् चातुरी, चुटीलो व्यंग अरु चलती धुन होय तौ यहू की नगरी कौ गीत ससुराल की नगरी में प्रचलित है जाय। इन गीतन माँय क्षेपक को आक्षेप नॉय लग सकै-इनके रचयिता तौ लोक हैं।

लोकगीतन की विसैबस्तु अनगिनत हैं। मानव के सबई कार्यकलाप, धरती पै पाई जाये वारी सबई वस्तुन सौं लोकगीत सरोकार राखैं। इनमें पुरानन के सन्दर्भ के देवी देवतान के गीत जैसे दुर्गा के अनेक सरूप सिवजी, गनेस, राम, कृस्न की स्तुति, लीलान कौ बरनन कियौ जाय। मानव के जनम सौं लैकैं अन्तिम समै तक सोरह संस्कारन कों भी लोकगीत समेटे भये हैं।

मनोरंजन के गीत हू अनेक रूपन मायँ सुनिवे कूँ मिलैं। समसामयिक समस्यान की ओर हू लोकगीत बड़े सजग रहे हैं। गुलामी विरोधी देस भक्ति गीत, स्वदेसी कौ समर्थन, दंगा, महँगाई, दहेज, राजनीति सबन पै बिना लाग लपेट समर्थन अथवा कटाक्ष कियौ जाय। तदनुसार अनेक रसन की अनुभूति अनायास है जाय। जैसे भजनन माँय सान्त रस, राम-कृष्ण की बाल लीलान में वात्सल्य रस, पुत्र जन्म, छठी, कठुला, पालना, मुंडन, छेदन आदि औसर गीतन में वात्सल्य मिश्रित गर्व की अभिव्यक्ति दिखाई परै। याही तरियाँ रासलीला, पनघट लीला, मनिहारी, लिलहारी लीला मे सिंगार रस कौ संजोग रूप तथा *राम सीता की फुलवारी लीला माँय अति सुन्दर संयत सिंगार* रस देखिबे कूँ मिलै। कृस्न के मथुरा गमन माँय वियोग सिंगार के दरसन होंय। खेल गीत गारी, गीतन में व्यंग तथा हास्य रस कौ आनन्द मिलै। ब्याह गीतन में हास्य-व्यंग, सिंगार तथा बिदागीतन माँय करुन रस कौ बिसेस रूप सौं अनुभव होय।

इन गीतन में उपमा आदि अलंकार भी अनायास हो आ जायें।

यहाँ मैं विबाह गीतन की चर्चा करनौ चाहूँ हूँ-विसेस रूप सौं बेटी के ब्याह के। जनम संस्कार के पाछे ब्याह संस्कार ई सबसूँ ज्यादा महत्त्व राखै। ब्याह के गीतन में लगन, सगाई, पीरी चिट्ठी, देहरी पूजन, चौक, भात नौतिबो, तेल, रतजगा, बन्नी, चाक पूजन, मढ़ा, भात पहिरबो, गारी, जौनार, भामर, विदा आदि खास हैं।

पुत्री के ब्याह के गीत वर ढूँढ़िये के प्रयासन सूँ सुरू होंयँ। बर के रूप-सरूप, सामाजिक प्रतिष्ठा, सम्पन्नता के मानदंड हू समयानुसार बदलते जाय रए हैं। कछु बानगी आगें प्रस्तुत है।

ब्याह की हर संगीत सभा की सुरूआत देवी देवतान के कम सूँ कम पाँच गीतन सौं होय। पैलौ गीत गनेसजी कौ होय, पाछे देवी अरु देवतान के।

बर ढूढ़न के एक पुराने गीत कौ नमूनौ देखौ। कुँआ सौं पानी खींचिवे कों लोटा-डोर अरु खाइवे कों नमक अरु सतू लैकें चारों दिसान में बेटी के बाबा, ताऊ, पिता, भाई आदि जायँ तब कहूँ सन्तोस लायक, बेटी के जोग बर मिलै-

1. संभर सतुआ बाँध कै झारी लीनी है हाथ बर ढूंढ़न बाबा चले(ताऊ, बाबुल, भइया, जीजा आदि)
   अगिम ढूंढ़ी पच्छिम ढूंढ़ी, तौ ढूंढ़ी है धुर गुजरात लाड़ो सरीखे बर ना मिले
   जाइ दिल्ली के बीच लालजी सरीखे बर पाइयो।
2. बर की सामाजिक हैसियत ऊँची होनी चइये-
   मेरे दादाजी ऐसो बर ढूंढ़िये जहँ सोनो तराजू में तौलिये
   कोयलिया बोलै बाग में, गजहस्ती झूमैं द्वार पै।
3. बर चतुर औ सुघर होय या लाड़ली बेटी की कामना (ताऊ, चाचा, भइया आदि)
   मड़ये के बीच लाड़ो नें केस सुखाये
   अरे बाबा चतुर बर ढूंढ़ो सुघर बर ढूंढो
   दादी, चाची, ताई, अम्मा आदि, लेंगी कन्यादान॥ लाड़ो नें.......
4. आधुनिक मानदंडन के अनुसार बर बंगले कार वारौ होनौ चाहिये

मेरी रुनक झुनक लाड़ो खेलौ गुड़िया
बाबा ऐसौ वर ढूंढ़ौ, ताऊ ऐसौ वर ढूंढ़ो, ऊँची डिग्री वारौ होय
ऊँची डिग्री वारौ होय बंगला मोटर वारौ होय। मेरी रुनक.......

इन गीतन के साथ-साथ रुकमनी औ सीता के स्वयंवर बारे गीत भी गाये जायँ-जहाँ कन्या नें ई वर पसन्द करि राखे हैं-

देखन हित बाग बहार फुलबगिया राम पधारे
इत गये लखन रघुराई उत सिया सखिन संग आई
अरे छवि दोनों ओर अपार-फुलबगिया.........
इत सिया विरह की मारी गिरजा के भवन पधारी
सिर दियो चरन में डार.....फुलबगिया...........

सुहाग मांगन काजें गौरी मंदिर जानों अत्यंत महत्वपूरन है-

सिसुपाल कौ नौतो दीयो आय गये दल बाँधि
रुकमिन चाली गौरी पूजन पूजन म्हा मिलगे भगवान॥
(और बहीं भगवान नें रुकमन कौ हरन करि लीनो)
''गौरा पार्वती के आगे सुहाग मांगन जइये''

सीता जी नें सूरज की उपासना भी कीनी है- सूरज देवता प्रसन्न हैं तथा वर मांगबे कूँ कह दियो है तौ सीता कहै है-

मैंनें मांगी कौसल्या सी सास ससुर राजा दसरथ से।
मैंनें वर मांगे सिरीराम दिवर छोटे लछिमन से।

याई बीच बेटी की माँ अपने पीहर भात नौंतबे जाय हैं जहां भाई बहन कौं सब प्रकार से सहायता कौ वचन देय पै भौजाई तौ बैठिबे कौ ऊ नायँ पूछै-

'भतैयन बहुत संकोच करी
ना मेरे मचिया ना मेरे पिढ़िया
तौ खूँटे पै बैठो लली।'

अब कुम्हार सौं बर्तन लानौं (चाक पूजन), मंडपारोपण तथा तेल की रसम होय। प्रश्नोत्तरी जैसे गीत मांय सात सुहागिन के पति के साथ नाम गाये जाँय और बे तेल चढ़ामें-

काहे कौ तेल फुलेल काहे की दो कलियाँ
कौन तो तेल चढ़ावै तो कौन की बेलिनिया
चम्पा कौ तेल फुलेल चमेली की दो कलियाँ
यह प्रेमा तेल चढ़ावैं प्रेमचंद बेलिनियाँ।

मंडप के नीचे सब सम्बन्धी जुरैं अरु भातई भात पैरामें। बेटी कौ मामा सामर्थ्य भर गहनों, वस्त्र, उपहार आदि लामें अरु सबकौ सत्कार करैं। या औसर के गीतन में भाई की बढ़ि चढ़ि प्रसंसा कीनी जाय-

भतैया रेल, मोटर या हवाई जहाज में चढ़ि कैं आयो है।
कपड़ा इत्तै लायौ है जैसे बजाज कौ पूत है
गहनौ इत्तौ लायौ है जैसे सुनार कौ पूत है

बेटी कौ सिंगार कियो जाय उबटन, स्नान, काजर, मेंहदी आदि औ सिंगार के गीत गाये जायें। अब बरात द्वारे पै आइ गई ए।

"सखि गाऔ मंगलाचार सजन द्वारे आये।"

जा पाछे बराती जीमन बैठें तौ मधुर सुर वारी विनोद भरी गारी गाई जायें। ज्यौनार माँय व्यंजनन कौ बरनन अर परोसिबे वारे पुरुषन की प्रसंसा कीनी जाय। षटरस व्यंजन सौं स्वादेन्द्रिय कों सुख मिलै, गारीन सूँ स्त्रवनेन्द्रियन कूँ आनंद प्राप्त होय। हास्य अरु व्यंग मधुर ताल धुन लय में परोसौ जाय- आनंद कौ पार नायँ रहै तबई तौ तुलसी दास नें रामचरित मानस माँय लिख्यौ है-

गारी मधुर सुर देहिं सुन्दरि व्यंग बचन सुनावहीं
भोजन करत सुर अति विलम्ब विनोद सुनि सुख पावहीं
जेंवत जो बढ्यो अनंद सो मुख कोटि हूँ न परै कह्यो
अँचवाई दीन्हें पान गमने बास जँह जाकौ रह्यो।

गारी कौ नमूनौ देखौ-

गारी गावैं जनकपुर की नारी सुनिये सिरी रामजी लला
तुम्हरी माता कोसल्या सुनिये लला
जिन खीर खाय पूत जाये सुनौ सिरी रामजी लला
तुम्हरी बहना सुभद्रा सुनिये लला
जे अर्जुन संग सिधारी सुनौ सिरी रामजी लला
तुम्हरी भूआ कुन्ती सुनिये लला
जिन क्वारे करन सुत जाये सुनो सिरी रामजी लला।

जा गारी रचिबे वारी स्त्रियन नें बड़ी चतुराई सौं रामकृष्ण औतारन कौं एकमएक करि दीनौ है।

व्रज में एक अति प्रचलित गारी कौ उल्लेख डा. रामकृष्ण शर्मा नें कीनों है जामें चीरहरण लीला कौ उपयोग समधिन के प्रसंग में कियौ गयौ है। जाई तरियाँ समधिन कौ दधि बेचन कूँ निकरियौ अरु कन्हैया (या कन्या पक्ष के लोगों के नाम) द्वारा छेड़्यौ गायौ जाय। जे गारी भिन्न-भिन्न रूपन में उत्तर प्रदेस में ऊ गाई जाये। जैसे-

"दधि बेचन निकरी हो, फिरै छिनरी गलिन गलिन।"

ज्यौनार-

हौलें हौलें परसौ(कन्या पक्ष का पुरुष) मैलो न होय दुपट्टा रंग बरसैगौ-

याकौ उत्तर प्रदेश कौ रूप-

निहुरे निहुरे परसै, (कन्या पक्ष का व्यक्ति-लक्ष्मीदत्त)
"धोतिया मइलि जनि होय"

ज्योंनार पाछें मुख्य बराती अर्थात् वर के सगे सम्बन्धी रह जायें अरु पाणिग्रहण संस्कार तथा भामरें होयँ। पैली सूँ छठी भामर तक तौ बेटी बापई की-

औ-"सतई भामर हो, बेटी भई है पराई।"
-सीता सिरीपति फिरत भभरियाँ सखियन मंगल गाये। आजु मेरी सीतायै रघुबर ब्याहन आये।

ब्याह के सबई काम-काजन बीच विदाई की संभावना कौ करुण अन्तर्प्रवाह जो दब्यौ रहै वू विदाई के समै तेज धार बनि कै फूटि परै-

काहे कों ब्याहीं विदेस रे सुन बाबुल मेरे
हम तो बबुल तेरे अंगना की चिरियां चुगत-चुगत उड़ि जायँ रे सुन
हम तो बबुल तेरे खूंटा की गइयाँ जित हाँकौ तित जायँ रें सुन.....
भइया को दीने हैं महल दुमहला हमको दियौ परदेस रे.......

जा औसर पै करुन रस कौ ऐसौ परिपाक होय कि सिगरेइ जनन की आखिन में आंसू आय जायँ।

इन विवाह गीतन की बड़ी विसेसता जे है कि संयुक्त परिवार औ कुटुम्ब के सबई सदस्यन कूँ महत्व दियो जाय-विनके नाम गिनाये जायें-नये तौर तरीकन में यह सब विलुप्त है रयो है।

ब्रज के इन ब्याह के लोक गीतन माँय जो बात ध्यान दैबे जोग है कि इनमें राम सीता कूँ आदर्स जोड़ी मानी गई है। जाको कारन मर्यादा पुरुषोत्तम कौ आदर्स वैवाहिक जीवन है। श्री कृष्णा जी कूँ एक पत्नी व्रत नायँ बतायो है, सो जा मामले में ब्रजनारी बड़ी सजग जान परैं। पुत्र के ब्याह में ऊँ बारम्बार रघुवर बन्ने के गीत गाये जायें।

डी-90, कृष्णा मार्ग सिवाड़ एरिया,
बापू नगर, जयपुर
-302015

❑

विवाह-संस्कार के औसर पै गाये जावे वारे ब्रज-लोकगीत

-श्री सर्वोत्तम त्रिवेदी 'लघु'

भारतीय हिन्दू जीवन पद्धति में मनुष्य के सोलह संस्कार किये जावें हैं। जन्म के पहले ते मरन के बाद तानू पुंसवन, पाणिग्रहन अरु उत्तरकर्म आदि संस्कारन मांहि, पानिग्रहन अर्थात् विवाह-संस्कार सबते बड़ौ अरु महत्वपूर्न संस्कार मानौ जाय है।

भौतिकवादी संसार भले ही याऐ 'अनिवार्य बुराई' मात्र कहे पन हमारे यहाँ तौ याए 'पितृ-ऋण' उतारिबे (पिताश्री नें जो हमकूँ जन्म दियौ है वाकौ कर्ज चुकायवे) कौ साधन मानौ जाय है। इतनौ ही नायँ तौ याए 'अम्बर पै रचौ भयौ स्वयंवर' अरु द्वै आत्मान कौ मेल मानौ जाय है।

ब्रज प्रदेस में तौ बिसेसत: कामा अंचल मे तौ याए साक्षात कन्हैया जी कौ राधा-रुकमनी ते ब्याह ही मानौ जाय है।

यामें सगाई(तिलक) ते फेरा, चढ़ार अरु विदायी तानूं बैसरयानो सैकरान लोकगीतन नें गामे हैं कि जिनते या मंगलमय संस्कार कौ आनंद दुगुनौ-तिगुनौ है जायै है।

सगाई होयकें छोरी की गोद भरैं तौ चौकी पै बैठये कौ गीत, आरते कौ गीत अरु बन्ना-बन्नी गवें।

चौकी कौ गीत ऐसे गामें-

> बोलो री या खाती के लड़के कूँ, चौकी तौ लावै मेरे लाल कूँ।
> चौकी तौ लावै मेरे चन्द्र बदन सिंह कूँ, गढ़ मथुरा के कारने।
> बोलो री या कुम्हरा के लड़के कूँ, कुंभकरस तौ लावै मेरे लाल कूँ।

ऐसे बोलौ री, बोलौ री कहि कहि के पंडित के लड़का कूँ लगन सुनायवे/लिखायवे के तांई, बजाज के लड़का कूँ कपड़ा लायवे के तांई, सुनरा के कूँ गूंठी, हलवाई के कूँ लड़ुआ, कहार के कूँ डोला, पँसारी के कूँ मेहँदी लायवे के तांई कहि कहि कें ये गीत आगे बढ़ायौ जावै। यामैं समधी के लड़का कूँ, बेटी तौ ब्याहवै मेरे लाल कूँ अरु कै बारात लावै मेरी लाली कूँ हू गायौ जावै।

गोद भरते समै चन्द्र बदनियाँ कह्यो जावै। यामें मथुरा कूँ बड़ौ गढ़ कह्यौ जावै है अरु वहां ते चौकी बनवायवे की मांग करैं हैं।

सगाई हैवे कैं गोद भरिवे के पीछे बहन बेटी आरतौ करैं तब ऐसें गामें-

> झरे झमकेन बरसैगौ मेह, तुम लाड़ा/लाड़ी चौक
> त्ह्यारी भुआ बहन करैंगी आरतौ।

व्याह के सवई काम-काजन वीच विदाई की संभावना कौ करुण अन्तर्प्रवाह जो दव्यौ रहै वू विदाई के समै तेज धार यनि कै फूटि परै-

> काहे कों व्याहीं विदेस रे सुन वावुल मेरे
> हम तो ववुल तेरे अंगना की चिरियां चुगत-चुगत उड़ि जायँ रे सुन
> हम तो ववुल तेरे खूंटा की गइयाँ जित हाँकौ तित जायँ रें सुन.....
> भइया को दीने हैं महल दुमहला हमको दियौ परदेस रे.......

जा औसर पै करुन रस कौ ऐसौ परिपाक होय कि सिगरेइ जनन की आखिन में आंसू आय जायॅ।

इन विवाह गीतन को यड़ी विसेसता जे है कि संयुक्त परिवार औ कुटुम्व के सवई सदस्यन कूँ महत्व दियो जाय-विनके नाम गिनाये जायें-नये तौर तरीकन में यह सव विलुप्त है रयो है।

व्रज के इन व्याह के लोक गीतन माँय जो वात ध्यान दैवे जोग है कि इनमें राम सीता कूँ आदर्स जोड़ी मानी गई है। जाको कारन मर्यादा पुरुषोत्तम कौ आदर्स वैवाहिक जीवन है। श्री कृष्णा जी कूँ एक पत्नी व्रत नायँ वतायो है, सो जा मामले में व्रजनारी यड़ी सजग जान परैं। पुत्र के व्याह में ऊँ वारम्वार रघुवर वन्ने के गीत गाये जायें।

डी-90, कृष्णा मार्ग सिवाड़ एरिया,
वापू नगर, जयपुर
-302015

❑

या गीत में बाबा अरु ताऊ की जगह अन्य अन्य भाई बंध रिस्तेदारन के नाम जोड़ जोड़ कै गीत ऐ मुकतेरौ लंबौ कर लेमें हैं।

बरनी ऐसे हूँ गामें लगन चढ़ै तब-

फूलों से सजाया है बरना पर बरनी काली आयी है।
बरनी के चाचा यूँ पूछै बेटा बरनी कैसी आयी है।
बरने ने हँस के फरमाया, बरनी मेरे पसंद नहीं आई है।

या गीत में चाचा के स्थान पै पापा, ताऊ, बाबा, मामा, फूफा आदि कौ नाम हू लियौ जावै। आजकल फिल्मी धुनन पै ब्हौत सारे लोकगीत अपने आपई बनते जाय रहे हैं।

लगन लिखे जावे कै लगन आवे ते हू पहले देहरी सिरावैं। देहरी सिरावे कौ मतलब है ब्याहहात लैनौ। अर्थात् ब्याह कौ कार्य प्रारम्भ करनौ। या समै पै हू क्रमशः बन्नी कै बन्ना गाये जार्में। ऐसे ही लगन लिखिबे/लैबे के बाद हरदात होय। हरदात कै तेल कै अन्य कछु के घोड़ी बन्ना बन्नी ख्याल भजन रसिया आदि गायकै जब घर ते लुगाई बाहर जावे लगैं तौ रसिया आदि गाय कै जब घर ते लुगाई बाहर जावे लागे तो ढोला गामैं।

ढोला की एक बानगी में भाभी-देवर की बातचीत देखौ-

कौन कौ भेजौ ढोला लैवे कूँ आयौ।
कौन कौ सिखायौ ढोला रातौ बतरायौ
भैया कौ भेजौ गोरी लैवे कूँ आयौ।
भाभी कौ सिखायौ ढोला रातौ बतरायौ॥
सामन कौ महीना मैंने हँस कै निकारौ।
फागुन कौ महीना मैंने पीहर मे बितायौ॥ कौन कौ.... ॥

तब घर के दरवज्जे पै ये गीत हू गायौ जावै-

मेरे ससुर लगायौ हरियल बाग, पंजापन डेरा दै रही॥
ह्याँ ते हटजा पंजापन दारी सौत, तेने तौ मोहे साहिबा॥
ह्याँ ते नायँ हटैगी नर की नार, समझालै अपने साहिबा॥
मैंने कस-कस कै बाँधी ल्हौरी सौत, पाटी ते बांधे साहिबा॥
मैंने आधी पै खोली ल्हौरी सौत, सवेरे खोले साहिबा॥

हरदात के बाद रात कूँ रतजगौ होवै। यामैं मेहँदी, अरु रजना गाये जामैं। रजना में दोहा बोले जामैं। रत जगे में दैदेवता विनायक गनेस, हनुमान , गंगा, जमना, प्रेत, देवी अरु महादेव जी आदि के गीत गाये जामैं। अपने इष्टदेवतान के गीत गामैं।

रतजगे में मेहँदी कौ गीत-

देवर के पिछवाड़े बारी लाल मेहँदी तो बोवन धन चली।
वो धन कैसी मलूक बारीलाल उनके बिछुआ बाजने॥ मेरे लाल....
वो धन जड़ये पोसाक बारी लाल बिछुआ तौ गये हैं सुनार कै।
लै लेऔ घोड़ा असवार बारी लाल, भाभी के लिवउआ देवर चल दिये॥

थैयाँ तौ पूछिंगे वात, वहना कहारे लादे औ आरतौ
लादी लादी एं मौहर पचास, रुपैया लादे डेड़ सौ ॥
दीयौ दीयौ री जगदीस के पूत भलौ लादौ आरतौ ॥

यामें थैया कौ अर्थ वहन भुआ के सुसरारियान ते है अरु जगदीस वर/कन्या के पिता कौ प्रतीक नाम है।

वन्ना ऐसे हू गामें-

व्याहन जनकपुर आये। राम वरना वन आये॥
अपनी अयोध्या में सेरौ वँधामें सेरे की सोभा जनकपुर छाई राम, वरना....

या गीत में आगे सेहरे की जगह कुण्डल, माला, मुकुट, झामा आदि पहरवे धरायवे की अरु सोभा छायवे की बात जोरि- जोरि कें गीत कूँ आगे वढ़ामें। झामा लम्वी वण्डी जैसौ अरु सूथन, पजामा जैसौ होय है ॥

वन्नी की वानगी देखौ-

वन्नी वावा जी वाग लगाइयौ। वन्नी ताऊजी वाग लगाइयौ॥
वन्नी तुम विन सींचैगौ कौन, म्हारी हरियल वन की कोयली.
वावा हमते तौ छोटी हमरी वहन जी।
ई तो चकल्या चकल्या सींचैगीं वाग॥ म्हारी हरियल..................
ऊ तो आम पके नींवू रस रमे।
वावुल कासीफल कौ करौ नाँ साग॥ म्हारी हरियल..........

या लोकगीत में वाव ताऊ की जगह ताऊ चाचा, चाचा फूफा आदि नाम लै लै कै अरु फल-सव्जीन के नाम वदल वदल कै गीत कूँ आगै वढ़ायौ जावै है॥

छोरी के व्याह में लगन लिखी जाय तौ वन्नी/लाड़ी गवें। छोरा के व्याह में लगन आवै तौ घोड़ी-वन्ना गवें/दोनोंन में चौकी गवै। लगन लिखें तव ऐसे गामें-

एजी मेरे वावाजी लगन लिखाइयों। मेरे ताऊ जी लगन लिखाइयौं॥
मैं तोय पूछूँ रुकमनि लाड़ली, तेरे किस विध लम्वे-लम्वे केस
सुहागिन रुकमनि लाड़ली।
मेरी माता तौ केस पँछारियो। मेरे इस विध लम्वे-लम्वे केस॥ रुकमनि...
मैं तोय पूछूँ रुकमनि लाड़ली, तेरे किस विध मोटे मोटे नैन। सुहागन......
माँ मेरी कजरा सारियो
माँ मेरी कजरा सारियो, मेरे इस विध मोटे-मोटे नैन॥ रुकमनि..........
मैं तोय पूछूँ रुकमनि लाड़ली। तेरौ किस विध गोरौ-गोरौ अंग। सुहा. .....
माँ मेरी उवट नहवाइयो। मेरौ इस विध गोरौ गोरौ अंग॥ रुकमनि.... ॥

लगन आवै तव ये गीत तौ सव जातीन में गवै कि-

लगन आई हरे-हरे लगन आई हरे-हरे। मेरे अंगना।
रघुनंदन फूले ना समायँ।
वावा सज गए, ताऊ सज गए, सज गई सगरी वरात।
रघुनंदन तौ ऐसे सज गए जैसे सिरी भगमान॥ लगन आई.......

या गीत में बाबा अरु ताऊ की जगह अन्य अन्य भाई बंध रिस्तेदारन के नाम जोड़ जोड़ कै गीत ऐ मुकतेरौ लंबौ कर लेमें हैं।

बरनी ऐसे हूँ गामें लगन चढ़ै तब-

फूलों से सजाया है बरना पर बरनी काली आयी है।
बरनी के चाचा यूँ पूछै बेटा बरनी कैसी आयी है।
बरने ने हँस के फरमाया, बरनी मेरे पसंद नहीं आई है।

या गीत में चाचा के स्थान पै पापा, ताऊ, बाबा, मामा, फूफा आदि कौ नाम हू लियौ जावै। आजकल फिल्मी धुनन पै ब्हौत सारे लोकगीत अपने आपई बनते जाय रहे हैं।

लगन लिखे जावे कै लगन आवे ते हू पहले देहरी सिरावैं। देहरी सिरावे कौ मतलब है ब्याहहात लैनौ। अर्थात् ब्याह कौ कार्य प्रारम्भ करनौ। या समै पै हू क्रमशः बन्नी कै बन्ना गाये जामें। ऐसे ही लगन लिखिबे/लैबे के बाद हरदात होय। हरदात कै तेल कै अन्य कछु के घोड़ी बन्ना बन्नी ख्याल भजन रसिया आदि गायकै जब घर ते लुगाई बाहर जावे लगैं तौ रसिया आदि गाय कै जब घर ते लुगाई बाहर जावे लागे तो ढोला गामें।

ढोला कौ एक बानगी में भाभी-देवर की बातचीत देखौ-

कौन कौ भेजौ ढोला लैवे कूँ आयौ।
कौन कौ सिखायौ ढोला रातौ बतरायौ
भैया कौ भेजौ गोरी लैवे कूँ आयौ।
भाभी कौ सिखायौ ढोला रातौ बतरायौ॥
सामन कौ महीना मैंने हँस कै निकारौ।
फागुन कौ महीना मैंने पीहर में बितायौ॥ कौन कौ.... ॥

तब घर के दरवज्जे पै ये गीत हू गायौ जावै-

मेरे ससुर लगायौ हरियल बाग, पंजापन डेरा दै रही॥
ह्याँ ते हटजा मंजापन दारी सौत, तेने तौ मोहे साहिबा॥
ह्याँ ते नायँ हटैगी नर की नार, समझालै अपने साहिबा॥
मैंने कस-कस कै बाँधी ल्हौरी सौत, पाटी ते बांधे साहिबा॥
मैंने आधी पै खोली ल्हौरी सौत, सवेरे खोले साहिबा॥

हरदात के बाद रात कूँ रतजगौ होवै। यामें मेहँदी, अरु रजना गाये जामें। रजना में दोहा बोले जामें। रत जगे में दैदेवता विनायक गनेस, हनुमान , गंगा, जमना, प्रेत, देवी अरु महादेव जी आदि के गीत गाये जामें। अपने इष्टदेवतान के गीत गामें।

रतजगे में मेहँदी कौ गीत-

देवर के पिछवाड़े बारी लाल मेहँदी तो बोवन धन चली।
वो धन कैसी मलूक बारीलाल उनके बिछुआ बाजने॥ मेरे लाल....
वो धन जइये पोसाक बारी लाल बिछुआ तौ गये हैं सुनार कै।
लै लेऔ घोड़ा असवार बारी लाल, भाभी के लिवउआ देवर चल दिये॥

रतजगे मैं रजना या प्रकार ते गवै-

मंदर पै सुन्दर खड़ी जी कोई, खड़ी सुखावै केस।
कृष्ण मिठाई दै गए जी कोई धर जोगी कौ भेस॥
कोठे अंदर कोठरी जी कोई यामैं कारौ नाग।
खाई होती बच गई जी या छैला पति के भाग॥
पत्ता टूटौ डार ते जी कोई लै गई पवन उड़ाय।
अब के बिछुरे कब मिलैं जी कोई दूर परे हैं आय॥
साइकिल कौ तो बैठिबौ जी कोई धोती कौ सत्यानास।
ऐसे गिरियौं साहिबा सो कोई टूटैं हाथ और पाग॥
हाथी ते हाथी लड़ै जी कोई लड़ै सूर ते सूर।
देवर ते भाभी लड़ै सो कोई करैं गजब के टूक॥

रतजगे मैं यह भजन माली समाज मैं ज्यौत गवै-

सुमरि साहिब जी कौ नाम जिन तोय जनम दियौ।
एक पानी की बूँद, मिनका जनम लियौ॥
आयौ मुठरी बाँध, हाथ पसार दियौ॥
जिन घर कन्या होय, अछूतौ ना खइये।
जिन घर दीपक होय, अँधेरे मैं ना रहिये॥
देख पराई नार हर-हर ना हँसिगे।
देख हरीलौ खेत मन ना हुलाइये॥

या भजन मैं पहलै कन्या कूँ खवाय के पीछे खावे कौ नीति विचार अरु घर के दीपक जरिवे को इतिहास दिखाई परै है।

रतजगे के दूसरे दिना छोरा/छोरी अर्थात् बन्ना/बन्नी के तेल चढ़ै। उबटन लगै। उबटने मैं आटे में हल्दी अरु तेल मिलायकैं शरीर पै लगायौ जावै। तेल चढ़ायवे के तांई कहूँ चार अरु सात बहन बेटी कैं बहू निश्चित करी जामैं।

तेल चढ़ै तब ऐसे गामैं-

तेली रे तेली तेल। मेरौ राय चमेली कौ तेल॥
भरई मनोहरी बलैया बहू विमला तेल चढ़ाईयौ॥

या तरह मनोहरी अरु विमला की जगह अन्य छः और पति पत्नीन कौ नाम लै लै कै तेल लगामैं।

उबटने कौ गीत ऐसे है-

गेहूँ चना कौ उबटनौ, राय चमेली कौ तेल
हत लाड़ा बेटी उबटनौ।
आ दादी देखलै, तोय मनैगौ चाव, हत लाड़ा हतलाड़ा बेटी उबटनौ॥
देखे कौ कहा देखियौ, जैसे पूनौ कौ चाँद, हतलाड़ा बेटी उबटनौ॥

उबटने में काऊ घर में वेसन कौ हू प्रयोग कियौ जावै है अर या गीत में दादी की जगह चाची, भाभी, मामी, भुआ कह-कह कै या गीतें आगे बढ़ाती जामें अरु सालौ जनौं उबटनौं लगामें हैं।

ब्याह में जब सब समाजन कौं साथ लियौ जावै तौ फिर बिना चाक पूजे, काम कैसै चल सकै है। पुराने फ्रिज (मटका) तौ बहीं ते आमें अरु चौंरी बाँधवे कूँ हू मटका मटकी चाक ते ई चलैं।

चाक पूजिवे जामें तब कौ गीत-

> झुक जा रे मरए तो में महक आवै ॥
> जब मोए टीका को याद आवै ॥
> तब रे हमारौ ढोला याद आवै ॥ झुक जा रे...... ॥

या गीत में टीका की जगह हरवा, बिछुवा, तगड़ी, बिंदिया अरु चूरिन आदि की याद आवै कहिकै गीत बढ़ायौ जावै।

चाक पूजते समय ये हू हँसिकैं गामें-

> तौ जी राँड़ कारे! कुम्हार का रे!! बासन गढ़वौ छोड़।
> हमनें खिंदायो माँटी लेवे लै आयौ फूटौ कूलड़ौ रे॥ राँड़ कारे...
> हमनें खिंदायौ दुड़ी लेवे कू, लै आयौ फूटौ सकोरो रे॥ राँड़ कारे...

जब चाक पूजिकै, जेयड़ रखिकै माथे पै, वापिस आवे लगैं, तब रूढ़ी गामें-

> रूढ़ी रँगरेज की जी, हलवाई घर मोह्यो री राज॥
> राम नाम को कोठरी जी, चन्दन जड़े किवाड़।
> ताले लागे प्रेम के जी खोलें कृष्ण मुरार॥ रूढ़ी रँगरेज की जी.. ॥

ऐसे यामें कैई दोहा लगाय कै गीत बढ़ावे घर आमें हैं॥

चाक पूजिकै आकै कथटू बैठ ह जामें तौ ये बारहमासी हू गायौ जावै है-

> सिरी कृष्ण के बिना राधिका ठाड़ी गस खावै।
> बरसन लाग्यौ असाढ़ पपैया कैसौ चिल्लावै॥
> सखी मेरे मन में मन भायौ।
> जाय बसे मथुरा में श्याम कुब्जा नें भरमायौ॥
> भयौ अब वृन्दावन सूनौ।
> बिना पति मद मोय सतावै दिन पै दिन दूनौ॥
> भभक रही स्याम बिना छाती।
> लल्लू भजना कहै नायँ घर में दीया बाती॥

चाक के बाद भात नौंतिये कौ नंबर आवै। जौ भतैया भात लैकै न आवै तौ फिर तौ बन्ना/बन्नो की माँ कौ म्हौड़ौ ही उतर जावै।

भात नौंतिबे कौ एक गीत ये है-

> मेरे बाबुल को गाड़ा रे लुढ़कनौ,
> रड़कै रड़कै रे ऊँचाई दरबार, सिदौसी आइयो भातई।

रतजगे में रजना या प्रकार ते गवै-

मंदर पै सुन्दर खड़ी जी कोई, खड़ी सुखावै केस।
कृष्ण मिठाई दै गए जी कोई धर जोगी कौ भेस॥
कोठे अंदर कोठरी जी कोई यामैं कारौ नाग।
खाई होती वच गई जी वा छैला पति के भाग॥
पत्ता टूटौ डार ते जी कोई लै गई पवन उड़ाय।
अब के विछुरे कब मिलैं जी कोई दूर परे हैं आय॥
साइकिल कौ तो वैठिवौ जी कोई धोती कौ सत्यानास।
ऐसे गिरियौं साहिवा सो कोई टूटैं हाथ और पाम॥
हाथी ते हाथी लड़ै जी कोई लड़ै सूर ते सूर।
देवर ते भाभी लड़ै सो कोई करै गजव के टूक॥

रतजगे में यह भजन माली समाज में व्हौंत गवै-

सुमरि साहिव जी कौ नाम जिन तोय जनम दियौ।
एक पानी की वूँद, मिनका जनम लियौ॥
आयौ मुठरी वाँध, हाथ पसार दियौ॥
जिन घर कन्या होय, अछूतौ ना खइये।
जिन घर दीपक होय, अँधेरे में ना रहिये॥
देख पराई नार हर-हर ना हँसिये।
देख हरीलौ खेत मन ना डुलाइये॥

या भजन में पहलें कन्या कूँ खवाय के पीछे खावे कौ नीति विचार अरु घर के दीपक जरिवे को इतिहास दिखाई परै है।

रतजगे के दूसरे दिना छोरा/छोरी अर्थात् बन्ना/बन्नी के तेल चढ़ै। उबटन लगै। उबटने में आटे में हल्दी अरु तेल मिलायकै शरीर पै लगायौ जावै। तेल चढ़ायवे के तांई कहूँ चार अरु सात बहन वेटी कै वहू निश्चित करी जामैं।

तेल चढ़ै तब ऐसे गामैं-

तेली रे तेली तेल। मेरौ राय चमेली कौ तेल॥
घरई मनोहरी बलैया बहू विमला तेल चढ़ाईयौ॥

या तरह मनोहरी अरु विमला की जगह अन्य छ: और पति पत्नीन कौ नाम लै लै कै तेल लगामैं।

उबटने कौ गीत ऐसे है-

गेहूँ चना कौ उबटनौ, राय चमेली कौ तेल
हत लाड़ा वेटी उबटनौ।
आ दादी देखलै, तोय घनेरौ चाव, हत लाड़ा हतलाड़ा वेटी उबटनौ॥
देखे कौ कहा देखियौ, जैसे पूनौ कौ चाँद, हतलाड़ा वेटी उबटनौ॥

उबटने में काऊ घर में वेसन कौ हू प्रयोग कियौ जावै है अरु या गीत में दादी की जगह चाची, भाभी, मामी, भुआ कह-कह कै या गीतै आगे बढ़ाती जामें अरु सातौ जनीं उबटनौ लगामें हैं।

ब्याह में जब सब समाजन कों साथ लियौ जावै तौ फिर बिना चाक पूजे, काम कैसे चल सकै है। पुराने फ्रिज (मटका) तौ यहीं ते आमें अरु चौंरी बाँधवे कूँ हू मटका मटकी चाक ते ई बनें।

चाक पूजिवे जामै तब कौ गीत–

झुक जा रे मरए तो में महक आवै॥
जब मोए टीका की याद आवै॥
तब रे हमारौ ढोला याद आवै॥ झुक जा रे...... ॥

या गीत में टीका की जगह हरवा, बिछुवा, तगड़ी, बिंदिया अरु चूरिन आदि की याद आवै कहिकै गीत बढ़ायौ जावै।

चाक पूजते समय ये हू हँसिकैं गामैं–

तौ जी राँड़ कारे। कुम्हार का रे!! बासन गढ़वौ छोड़।
हमनें खिंदायौ माँटी लैवे लै आयौ फूटौ कूलड़ौ रे॥ राँड़ कारे..
हमनें खिंदायौ टूड़ी लेवे कू, लै आयौ फूटौ सकोरो रे॥ राँड़ कारे....

जब चाक पूजिकै, जेघड़ रखिकै माथे पै, वापिस आवे लगें, तब रूढ़ी गामैं–

रूढ़ी रँगरेज की जी, हलवाई घर मोह्यो री राज॥
राम नाम की कोठरी जी, चन्दन जड़े किवाड़।
ताले लागे प्रेम के जी खोलें कृष्ण मुरार॥ रूढ़ी रँगरेज की जी.. ॥

ऐसे यामें कैई दोहा लगाय कै गीत बढ़ाते घर आमें हैं॥

चाक पूजिकै आकै कबहू बैठ इ जामें तौ ये बारहमासी हू गायी जावै है–

सिरी कृष्ण के बिना राधिका ठाड़ी गस खावै।
बरसन लग्यौ असाढ़ पपैया कैसौ चिल्लावै॥
सखी मेरे मन में मन भायौ।
जाय बसे मथुरा में श्याम कुब्जा नें भरमायौ॥
भयौ अब वृन्दाबन सूनौ।
बिना पति मद मोय सतावै दिन पै दिन दूनौ॥
भभक रही स्याम बिना छाती।
लल्लू भजना कहै नायँ घर में दीया बाती॥

चाक के बाद भात नौंतिवे कौ नंबर आवै। जौ भतैया भात लैकै न आवै तौ फिर तौ बन्ना/बन्नी की माँ कौ म्हौंड़ौ ही उतर जावै।

भात नौंतिबे कौ एक गीत ये है–

मेरे बाबुल को गाढ़ा रे लुढ़कनौ,
रड़कै रड़कै रे जँवाई दरबार, सिंदौसो आइयो भातई।

मेरे वीरन कौ घुड़ला/हाथी हींसनौ।
हींसै हींसै रे जीजा जी दरबार, सिदौसी अइयौ भातई॥
मेरी भाभी कौ घुड़ला रे चमकनौ।
चमकै-चमकै रे नन्देऊ दरबार, सिदौसी अइयौ भातई॥
मेरे भतीजे कौ टोपी चमकीली।
चमकै-चमकै रे फूफाजी दरबार, सिदौसी अइयौ भातई॥

भात नौंतिवे जावे कौ एक पुरानौ बहुप्रचलित गीत है-

मेरे काए ते नौंतूँ बाबुल राजा, काए ते कागला?
मेरौ काए ते नौंतूँ हजारी बीरा, जिनके अहोलने॥
मेरे भेली ते नौंतूँ बाबुल राजा, डेलीन कागला।
मेरौ मिसरी कौ कुंजा हजारी राजा, जिन के अहोलने॥
कहा तौ लावै मेरौ बाबुल राजा, कहा तो लावै कागला?
कहा तौ लावै हजारी बीरा, जिनके अहोलने?
पीरौ तौ लावै बाबुल राजा, चवन्नी डारै कागला।
मेरौ साड़ी तौ लावै हजारी बीरा, जिनके अहोलने।
रुपिया तो डारै बाबुल राजा, चवन्नी डारै कागला।
गिन्नी तौ गेरै हजारी बीरा जिनके अहोलने॥

या गीत में भतीजे कौ हूँ नाम लैकै या गीतै दोहरा लेवैं। या गीत में कागला कौ मतलब काका आदि संगी साथान ते। अरु जिनके अहोलने कौ भाव जिनते मेरौ प्रेम भाव है वे ऐसे हैं।

भात पहनैं तब ये गावैं-

मेरे बागन में रंग बरसे॥
हो पौरी पै बरसे भात, मत बरसै इन्दर राजा॥
ओ मेरौ भीजै लछिमन वीर, मत बरसै इन्दर राजा॥
मेरी साड़ी पै रंग बरसै, मेरे जम्फर पै रंग बरसै, ओ मेरौ भीजै......

बामें चूरीन पै-घड़ियन पै, गूँठिन पै, हरवा पै, सैंड़ल पै, भोजन पै कहि कहि के गीतै आगै बढ़ाते जावैं हैं।

माली समाज में भात पहनैं तब याऐ गावैं-

पहर रे तू पहर सर्वोत्तम, लैंग थैंग तेरी मैया कातन जानै।
दारी कातन जानै, रेतन जानै, कोरी सूँ बतरावै।
कोरी राज ठोक बुनैगौ, धोबी रा धो देगौ।
कच्चौ सूत, अलौनौ माढ़ौ, पहरैगी का लाड़ो?

यामें दारी शब्द, भात पहरबे वारे की पत्नी के तांई आयौ है। जो भात पहरै बाई कौ नाम सर्वोत्तम की जगह बोल्यौ जा कैं गीत बढ़ायौ जाय।

गूजर समाज में भात पहनें तब ऐसे गामें हैं-

> देख बहन कौ जलसौ, ऊपर चढ़ी बीरो भातइया।
> झुमकी हू लायौ भैया, कालर हू लायौ।
> मैंडल रतन जड़ायौ रे नीचे उतरिया भातइया॥ देख बहन.....

यामें गहने, कपड़ान के नये नये नाम लैकें गीत बढ़ामें।

कोली समाज में भात के टैम पै याऐ गामें-

> सासू जी के आये बीर, मोती जड़ लाये मूँदरी।
> ओढूँ तौ हीरा मोती धर परै, धर देउ तौ जिया ललचाय॥

यामै जिठानी, देरानी, सौकन(सौतन) अरु पारौसन आदि के बीर को कहि कहि कै लोकगीत पूं बढ़ी गई।

भात पहनवे के बाद घूड़ी नौतिवे जामें। जाते समय गायवे को गीत-

> चिड़ी तोय चावड़िया भावै।
> घर में सुंदर नार बलम तोय परनारी भावै॥
> छः छल्ला छः आरसी जी कोई छल्लन भरी परात।
> एक छल्ला के कारने जी कोई छोड़ौ माई बाप॥ चिड़ी तोय ..
> भरौ कटौरा दूध कौ जी कोई बूरे बिन पियौ न जाय।
> मैया बाप की लाड़ली जी कोई पिया बिन रह्यौ न जाय॥ चिड़ी तोय...
> पता पै पता धरौ जि कोई पता पै गुलकंद। भँवर जी पता पै गुलकंद॥
> बड़े बलम कौ का कहूँ जि कोई छोटौ अक्कलमंद ॥ चिड़ी तोय॥

या गीत में ऐसे ही बने बनाये कै हाथों हाथ बनायकें दोहा जोड़ जोड़ के गीत कूं आगे बढ़ामें। ब्याह में लगनों ते गूड़ी तक कौ, अर्थात् बड़े ते छोटे तक कौ सम्मान करवे के विचार ते घूड़ी ही नौती जावे है। या गयी पै, पानी में आग लगावें लुगाई की कहावतै चरितार्थ करती भई, बैंयरबानी बकने गीत हूँ गामें जिनकी गिनती ठीक नायें।

ब्याहवे जावें तब निकासी के समय कोली समाज में ऐसे गामें-

> हथिया पै चढ़ि कै दुल्हा चले री ससुराल।
> दुनिया कहै छोरा कारौ री कारौ, मेरौ [illegible]॥
> अधयौची बाग लगाऔ, ए [illegible] मेंहदी॥

यामें हथिया की जगह घोड़ा आदि समाज के [illegible] बदलें।

और-

> बन्ना के दादा [illegible] बाग के [illegible]।
> आम [illegible] पालकी [illegible]॥
> बन्ना की बन्नी पूछे बात।
> [illegible] तौ देखे बड़ौ [illegible]॥

मेरे वीरन कौ घुड़ला/हाथी हँसनौ।
हँसै हँसै रे जीजा जी दरवार, सिदौसी अइयौ भातई॥
मेरी भाभी कौ चुड़ला रे चमकनौ।
चमकै-चमकै रे नन्देऊ दरवार, सिदौसी अइयौ भातई॥
मेरे भतीजे की टोपी चमकीली।
चमकै-चमकै रे फूफाजी दरवार, सिदौसी अइयौ भातई॥

भात नौतिवे जावे कौ एक पुरानौ वहुप्रचलित गीत है-

मेरे काए ते नोंतूँ वावुल राजा, काए ते कागला?
मेरौ काए ते नोंतूँ हजारी वीरा, जिनके अहोलने॥
मेरे भेली ते नोंतूँ वावुल राजा, डेलीन कागला।
मेरौ मिसरी कौ कुंजा हजारी राजा, जिन के अहोलने॥
कहा तौ लावै मेरौ वावुल राजा, कहा तो लावै कागला?
कहा तौ लावै हजारी वीरा, जिनके अहोलने?
पीरौ तौ लावै वावुल राजा, चवन्नी डारै कागला।
मेरौ साड़ी तौ लावै हजारी वीरा, जिनके अहोलने।
रुपिया तो डारै वावुल राजा, चवन्नी डारै कागला।
गिन्नी तौ गेरै हजारी वीरा जिनके अहोलने॥

या गीत में भतीजे कौ हूँ नाम लैकै या गीतै दोहरा लेवें। या गीत में कागला कौ मतलव काका आदि संगी साथान ते होवे अरु जिनके अहोलने कौ भाव जिनते मेरौ प्रेम भाव है वे ऐसे हैं।

भात पहनैं तव ये गामैं-

मेरे वागन में रँग वरसे॥
हो पौरी पै वरसे भात, मत वरसै इन्दर राजा॥
ओ मेरौ भीजै लछिमन वीर, मत वरसै इन्दर राजा॥
मेरी साड़ी पै रंग वरसै, मेरे जम्फर पै रंग वरसै, ओ मेरौ भीजै......

यामैं चूरीन पै-घड़ियन पै, गूँठिन पै, हरवा पै, सैंड़ल पै, भोजन पै कहि कहि के गीतै आगै बढ़ाते जामैं हैं।

माली समाज में भात पहनैं तव याऐ गामैं-

पहर रे तू पहर सर्वोत्तम, लैंग थैंग तेरी मैया कातन जानै।
दारी कातन जानै, रेतन जानै, कोरी सूँ वतरावै।
कोरी राज ठोक वुनैगौ, धोवी रा धो देगौ।
कच्चौ सूत, अलौनौ माढ़ौ, पहरैगी का लाड़ो?

यामें दारी शब्द, भात पहरवे वारे की पत्नी के तांई आयौ है। जो भात पहरै वाई कौ नाम सर्वोत्तम की जगह बोल्यौ जाय-कैं गीत बढ़ायौ जाय।

गूजर समाज में भात पहनें तब ऐसे गामें हैं-

देख बहन कौ जलसौ, ऊपर चढ़ी बौरी भातइया।
झुमकी हू लायौ भैया, कालर हू लायौ।
पैंडल रतन जड़ायौ रे नीचै उतरिया भातइया॥ देख बहन.....

यामें गहने, कपड़न के नये नये नाम लैकें गीते बढ़ामें।

कोली समाज में भात के टैम पै याऐ गामें-

सासू जी के आये वीर, मोती जड़ लाये चूंदरी।
ओढूँ तौ हीरा मोती थर परै, धर देउ तौ जिया ललचाय॥

यामै जिठानी, देरानी, सौकन(सौतन) अरु पारौसन आदि के वीर को कहि कहि कै लोकगीत कूं बड़ी करैं।

भात पहनवे के बाद घूड़ौ नौतिवे जामें। जाते समय गायबे कौ गीत-

चिड़ी तोय चावड़िया भावै।
घर में सुंदर नार बलम तोय परनारी भावै॥
छः छल्ला छः आरसी जी कोई छल्लन भरी परात।
एक छल्ला के कारने जी कोई छोड़ौ माई बाप॥ चिड़ी तोय ..
भरौ कटौरा दूध कौ जो कोई बूरे बिन पियौ न जाय।
मैया बाप की लाड़ली जी कोई पिया बिन रह्यौ न जाय॥ चिड़ी तोय...
पत्ता पै पत्ता धरौ जि कोई पत्ता पै गुलकंद। भँवर जी पत्ता पै गुलकंद॥
बड़े बलम कौ का करूं जि कोई छोटौ अक्कलमंद ॥ चिड़ी तोय।।

या गीत में ऐसे ही बने बनाये कै हार्यों हाय बनायकैं दोहा जोड़ जोड के गीत कूं आगे बढ़ामें। ब्याह में तरवारि ते सुई तक कौ, अर्थात् बड़े ते छोटे तक कौ सम्मान करबे के विचार ते घूड़ौ ही नौतौ जावै है। या समै पै,पानी में आग लगामें लुगाई को कहावतै चरितार्थ करती भई, बैयरबानी बकने गीत हूँ गामें जिनकौ लिखनौ ठीक नायँ।

ब्याहबे जावें तब निकासी के समय कोली समाज में ऐसे गामें-

हथिया पै चढ़ि कै दुल्हा चले री ससुराल।
दुनिया कहै छोरा कारौ री कारौ, मेरौ जगत उजारौ॥
अधबीची बाग लगाऔ, ए रतनारौ सेहरौ॥

यामें हथिया जी जगह घोड़ा आदि लगाय कै गीत बढ़ामें।

औरु-

बरना के दादा सजे बरात कै ताऊ सजे बरात।
आप सजे पालकी जी महाराज॥
बरना कौ बरनी पूछे बात ।
इतनी तौ देरी कहाँ लगाई महाराज॥

मेरे वीरन कौ घुड़ला/हाथी हाँसनौ।
हाँसै हाँसै रे जीजा जी दरवार, सिदौसी अइयौ भातई॥
मेरी भाभी कौ चुड़ला रे चमकनौ।
चमकै-चमकै रे नन्देऊ दरवार, सिदौसी अइयौ भातई॥
मेरे भतीजे की टोपी चमकीली।
चमकै-चमकै रे फूफाजी दरवार, सिदौसी अइयौ भातई॥

भात नौंतिवे जावे कौ एक पुरानौ वहुप्रचलित गीत है-

मेरे काए ते नोंतूँ वावुल राजा, काए ते कागला?
मेरौ काए ते नोंतूँ हजारी वीरा, जिनके अहोलने॥
मेरे भेली ते नोंतूँ वावुल राजा, डेलीन कागला।
मेरौ मिसरी कौ कुंजा हजारी राजा, जिन के अहोलने॥
कहा तौ लावै मेरौ वावुल राजा, कहा तो लावै कागला?
कहा तौ लावै हजारी वीरा, जिनके अहोलने?
पीरौ तौ लावै वावुल राजा, चवन्नी डारै कागला।
मेरौ साड़ी तौ लावै हजारी वीरा, जिनके अहोलने।
रुपिया तो डारै वावुल राजा, चवन्नी डारै कागला।
गिन्नी तौ गेरै हजारी वीरा जिनके अहोलने॥

या गीत में भतीजे कौ हूँ नाम लैकै या गीतै दोहरा लेवैं। या गीत मैं कागला कौ मतलव काका आदि संगी साथान ते होवे अरु जिनके अहोलने कौ भाव जिनते मेरौ प्रेम भाव है वे ऐसे हैं।

भात पहनें तव ये गामें-

मेरे वागन में रँग वरसे॥
हो पौरी पै वरसे भात, मत वरसै इन्दर राजा॥
ओ मेरौ भीजै लछिमन वीर, मत वरसै इन्दर राजा॥
मेरी साड़ी पै रंग वरसै, मेरे जम्फर पै रंग वरसै, ओ मेरौ भीजै......

यामें चूरीन पै-घड़ियन पै, गूँठिन पै, हरवा पै, सैंड़ल पै, भोजन पै कहि कहि के गीतै आगै बढ़ाते जामें हैं।

माली समाज में भात पहनें तव याऐ गामें-

पहर रे तू पहर सर्वोत्तम, लँग थँग तेरी मैया कातन जानै।
दारी कातन जानै, रेतन जानै, कोरी सूँ वतरावै।
कोरी राज ठोक वुनैगौ, धोवी रा धो देगौ।
कच्चौ सूत, अलौनौ माढ़ौ, पहरैगी का लाड़ो?

यामें दारी शव्द, भात पहरवे वारे की पत्नी के तांई आयौ है। जो भात पहरै वाई कौ नाम सर्वोत्तम की जगह बोल्यौ जाय-कैं गीत बढ़ायौ जाय।

गूजर समाज में भात पहनें तब ऐसे गामें हैं-

देख बहन कौ जलसौ, ऊपर चढ़ी बीरी भातइया।
झुमकी हू लायौ भैया, कालर हू लायौ।
पैंडल रतन जड़ायौ रे नीचै उतरिया भातइया॥ देख बहन.....

यामें गहने, कपड़ान के नये नये नाम लैकें गीते बढ़ामें।

कोली समाज में भात के टैम पै याऐ गामें-

सासू जी के आये बीर, मोती जड़ लाये चूँदरी।
ओढ़ूँ तौ हीरा मोती धर परै, धर देउ तौ जिया ललचाय॥

यामै जिठानी, देरानी, सौकन(सौतन) अरु पारौसन आदि के बीर की कहि कहि कै लोकगीत कूं बड़ौ करैं।

भात पहनवे के बाद घूड़ौ नौतिवे जामें। जाते समय गायबे कौ गीत-

चिड़ी तोय चावड़िया भावै।
घर में सुंदर नार बलम तोय परनारी भावै॥
छ: छल्ला छ: आरसी जी कोई छल्लन भरी परात।
एक छल्ला के कारने जी कोई छोड़ौ माई बाप॥ चिड़ी तोय...
भरौ कटौरा दूध कौ जी कोई बूरे बिन पियौ न जाय।
मैया बाप की लाड़ली जी कोई पिया बिन रह्यौ न जाय॥ चिड़ी तोय...
पत्ता पै पत्ता धरौ जि कोई पत्ता पै गुलकंद। भँवर जी पत्ता पै गुलकंद॥
बड़े बलम कौ का करूँ जि कोई छोटौ अक्कलमंद ॥ चिड़ी तोय।।

या गीत में ऐसे ही बने बनाये कै हाथौं हाथ बनायकैं दोहा जोड़ जोड के गीत कूं आगे बढ़ामें। ब्याह में तरवारि ते सुई तक कौ, अर्थात् बड़े ते छोटे तक कौ सम्मान करवे के विचार ते घूड़ौ ही नौतौ जावै है। या समै पै,पानी में आग लगामें लुगाई की कहावतै चरितार्थ करती भई, बैयरबानी बकने गीत हूँ गामें जिनकौ लिखनौ ठीक नायँ।

ब्याहवे जावें तब निकासी के समय कोली समाज में ऐसे गामें-

हथिया पै चढ़ि कै दुल्हा चले री ससुराल।
दुनिया कहै छोरा कारौ री कारौ, मेरौ जगत उजारौ॥
अधबीची बाग लगाऔ, ए रतनारौ सेहरौ॥

यामें हथिया की जगह घोड़ा आदि लगाय कै गीत बढ़ामें।

और-

बरना के दादा सजे बरात कै ताऊ सजे बरात।
आप सजे पालकी जी महाराज॥
बरना की बरनी पूछे बात ।
इतनी तौ देरी कहाँ लगाई महाराज॥

मेरे वीरन कौ घुड़ला/हाथी हाँसनौ।
हाँसै हाँसै रे जीजा जी दरबार, सिदौसी अइयौ भातई॥
मेरी भाभी कौ चुड़ला रे चमकनौ।
चमकै-चमकै रे नन्देऊ दरबार, सिदौसी अइयौ भातई॥
मेरे भतीजे की टोपी चमकीली।
चमकै-चमकै रे फूफाजी दरबार, सिदौसी अइयौ भातई॥

भात नौंतिवे जावे कौ एक पुरानौ बहुप्रचलित गीत है-

मेरे काए ते नोंतूँ बाबुल राजा, काए ते कागला?
मेरौ काए ते नोंतूँ हजारी बीरा, जिनके अहोलने॥
मेरे भेली ते नोंतूँ बाबुल राजा, डेलीन कागला।
मेरौ मिसरी कौ कुंजा हजारी राजा, जिन के अहोलने॥
कहा तौ लावै मेरौ बाबुल राजा, कहा तो लावै कागला?
कहा तौ लावै हजारी बीरा, जिनके अहोलने?
पीरौ तौ लावै बाबुल राजा, चवन्नी डारै कागला।
मेरौ साड़ी तौ लावै हजारो बीरा, जिनके अहोलने।
रुपिया तो डारै बाबुल राजा, चवन्नी डारै कागला।
गिन्नी तौ गैरै हजारी बीरा जिनके अहोलने॥

या गीत में भतीजे कौ हूँ नाम लैकै या गीतै दोहरा लेवैं। या गीत में कागला कौ मतलब काका आदि संगी साथान ते होवे अरु जिनके अहोलने कौ भाव जिनते मेरौ प्रेम भाव है वे ऐसे हैं।

भात पहनें तब ये गामें-

मेरे बागन में रँग बरसे॥
हो पौरी पै बरसे भात, मत बरसै इन्दर राजा॥
ओ मेरौ भीजै लछिमन बीर, मत बरसै इन्दर राजा॥
मेरी साड़ी पै रंग बरसै, मेरे जम्फर पै रंग बरसै, ओ मेरौ भीजै......

यामें चूरीन पै-घड़ियन पै, गूँठिन पै, हरवा पै, सैंड़ल पै, भोजन पै कहि कहि के गीतै आगै बढ़ाते जामें हैं।

माली समाज में भात पहनें तब याऐ गामें-

पहर रे तू पहर सर्वोत्तम, लँग थँग तेरी मैया कातन जानै।
दारी कातन जानै, रेतन जानै, कोरी सूँ बतरावै।
कोरी राज ठोक बुनैगौ, धोबी रा धो देगौ।
कच्चौ सूत, अलौनौ माढ़ौ, पहरैगी का लाड़ो?

यामें दारी शब्द, भात पहरवे वारे की पत्नी के तांई आयौ है। जो भात पहरै वाई कौ नाम सर्वोत्तम की जगह बोल्यौ जाय-कैं गीत बढ़ायौ जाय।

गूजर समाज में भात पहनें तब ऐसे गामें हैं-

देख बहन कौ जलसौ, ऊपर चढ़ी वीरी भातइया।
झुमकी हू लायौ भैया, कालर हू लायौ।
पैंडल रतन जड़ायौ रे नीचै उतरिया भातइया॥ देख बहन.....

यामें गहने, कपड़ान के नये नये नाम लैकें गीते बढ़ामें।

कोली समाज में भात के टैम पै याऐ गामें-

सासू जी के आये वीर, मोती जड़ लाये चूँदरी।
ओढ़ूँ तौ हीरा मोती धर परै, धर देउ तौ जिया ललचाय॥

यामै जिठानी, देरानी, सौकन(सौतन) अरु पारौसन आदि के वीर को कहि कहि कै लोकगीत कूं बड़ौ करैं।

भात पहनवे के बाद घूड़ौ नौतिवे जामें। जाते समय गायवे कौ गीत-

चिड़ी तोय चावड़िया भावै।
घर में सुंदर नार बलम तोय परनारी भावै॥
छ: छल्ला छ: आरसी जी कोई छल्लन भरी परात।
एक छल्ला के कारने जी कोई छोड़ौ माई बाप॥ चिड़ी तोय...
भरौ कटौरा दूध कौ जो कोई बूरे बिन पियौ न जाय।
मैया बाप की लाड़ली जी कोई पिया बिन रह्यौ न जाय॥ चिड़ी तोय...
पत्ता पै पत्ता धरौ जि कोई पत्ता पै गुलकंद। भँवर जी पत्ता पै गुलकंद॥
बड़े बलम कौ का करूँ जि कोई छोटौ अक्कलमंद ॥ चिड़ी तोय।।

या गीत में ऐसे ही बने बनाये कै हाथों हाथ बनायकें दोहा जोड़ जोड के गीत कूं आगे बढ़ामें। ब्याह में तरवारि ते सुई तक कौ, अर्थात् बड़े ते छोटे तक कौ सम्मान करवे के विचार ते घूड़ौ हो नौतौ जावै है। या समै पै,पानी में आग लगामें लुगाई की कहावतै चरितार्थ करती भई, बैयरबानी बकने गीत हूँ गामें जिनकौ लिखनौ ठीक नायें।

ब्याहवे जावैं तब निकासी के समय कोली समाज में ऐसे गामें-

हथिया पै चढ़ि कै दुल्हा चले री ससुराल।
दुनिया कहै छोरा कारौ री कारौ, मेरौ जगत उजारौ॥
अधबीचौ बाग लगाऔ, ए रतनारौ सेहरौ॥

यामें हथिया जी जगह घोड़ा आदि लगाय कै गीत बढ़ामें।

औरु-

बरना के दादा सजे बरात कै ताऊ सजे बरात।
आप सजे पालकी जी महाराज॥
बरना की बरनी पूछे बात ।
इतनी तौ देरी कहाँ लगाई महाराज॥

वरनी मेरौ कुटुम कवीलौ परिवार॥
सचत संजा है गई जी महाराज॥

यामें दादा ताऊ की जगह काका जीजा फूफा आदि लगायकै गीतै आगै वढ़ामैं।

निकासी कूँ घुड़चढ़ी हू कहमैं। याते एक दिन पहले यान हूँ निकसै। ये हू एक तरह की घुड़चढ़ी सी ही होवै जो वहन भुआन की तरफ ते निकसै अरु दुल्हा लौटि कैं घर पै ई आ जावै। इनमें घोड़ी कौ गीत जो सब समाजन में वहु प्रचलित है वो है-

ले चल वजारई वजार घोड़ी॥ ले चल सजन के द्वार-घोड़ी॥
आगे घोड़ी तुम चलौगी, पीछै वावा हुशियार-घोड़ी ॥ ले चल...
त्याहरे वजारन मैं क्या क्या विकत है? नींवू, नारंगी, अनार घोड़ी॥

या गीत मैं वावा की जगह चाचा, ताऊ, मामा, नाना, फूफा, जीजा आदि लगामें अरु नींवू,नारंगी, अनार की जगै साड़ी, रुमाल, चिप्पस, पापड़, अचार अरु थारी, लोटा, गिलास आदि लगामैं।

जव दूल्हा वारौठी पै मतलव तोरन पै पहुँचै तव गूजरन मैं यह गामैं-

दूलह आयौ कमल कौ सौ फूल, वलइया मैया ढँग ते लीजौ॥
ठिक्का- ऊँची हवेली पर्वत झीना। वापै वैठौ विरन नगीना॥
ठिक्का- पाँच मोर पचमनिया हो तो। भलई वलमा वावरिया हो तो रे प्यारे
रसिया- छोरा तेरे गऊआ घूर के फेरा, अभारी कैसै आयौ रे।
हंसन की मोटर सजी-सजाई ठाड़ी रे॥
ठिक्का- ओ ई रे काच काच मेरे वूटा।
समधी ऐ देखि कै हलै मेरौ गूँठा रे -हूँ प्यारे ॥

पन तोरन पै ये गीत सवन मैं जरूर गवै-

हाँ हाँ राम रंग वरसैगौ। रँग वरसै कछु इमरत वरसै, और वरसै कस्तूरी
आगे या गीत में कछु गारी सी गवै।

तोरन पै यानी दरवज्जे पै या तरियाँ हूँ गारी देमैं-

समधी न आयौ मेरी खातिर मैं।
जाके डेरा तौ लगायदेऔ पल्ली वाखर मैं॥
समधी अपनी वहना न लायौ नचायवे कूँ।
सिरदारन की पौर। नम्वरदारन की पौर॥

इन दोनोन मैं सिगरे समधीन कौ, छोरा के जीजा अरु फूफान कौ नाम लिये जाय है।

फेरान पै गाये जावे वारे गीतन की कछु वानगी प्रस्तुत है-

वावाजी री ऊँची ऊँची देहरी, पना फूलाँ छा रही जी।

लाल औ थार भर मोती, पसैं भर लाड़ली जी।
देऔ याऐ समधी के हाथ, छोड़ै म्हारौ आँगनों जी॥
नायँ चाहिये थाल पर मोती पसै भर लाड़ली जी।
ब्याहूँगौ राजकुमार तयह छोड़ूँ आँगनों जी।

या वर अरु कन्या पक्ष के संवाद जैसे गीत में बाबा के स्थान पै चाचा-ताऊ कह-कह कै गीत कूँ आग बढ़ायौ जावै है।

वरस दिना की भई गौरा, पलना में झूलै। शिवजी महादेव जी॥
दोय वरस की भई गौरा, आँगन में गुड़िया खेलै। शिवजी महादेव जी॥
तीन वरस की भई मेरी गौरा संग सहेलिन में खेलै। शिवजी महादेव जी॥
चार वरस की भई मेरी गौरा, बारू कौ महादेव बनावै। शिवजी महादेव जी॥
पाँच वरस की भई गौरा, ब्रह्मा कहै याकूँ वर ढूँढौ। शिवजी महादेव॥
ढूँढ-ढूँढ मर जाऔ मेरे बिरमा, तोकूँ वर नायँ पावै। शिवजी महादेव जी ॥
भटक भटक मर जाऔ मेरे बिरमा, मेरौ वर तोय मैं ही बताऊँ। शिवजी महादेव जी॥
अर्र ततैया, बर्र ततैया, वन बन के भौंरा लटकैं। शिवजी महादेव जी॥
अंग भभूत बगल मृग छाला, सर्पन की पहने माला। शिवजी महादेव जी॥
सर्प देखि कैं डर मत जइयो।
बाऐ देखि बिदक मत जइयो॥ वाकैतौ टीकौ काढ़ौ। शिवजी महादेव जी॥

गूजर समाज में फेरान पै बन्ना बन्नी के पाछैं ख्याल अरु जिकरी हू गवैं। "पति अपनी पत्नी कूँ लिवायवे जावै पन वाय पहचानै नायँ।"- याकी कहानी "भरती कुआ पै नीर। आयौ एक रस्तागीर। छोरी मनें नीर पिलाय। भैया तू घर यूँ चल।" ये गायौ जावै।

बढ़ार (बिदाई को जौनार) में पत्तर बाँधवे अरु पत्तर खोलवे के हू गीत पहले गवते पन अब इनकौ प्रचलन बन्द सौ है गयौ है। कोली समाज में याकौ गीत कुँवर के जन्म की घटना तेंई प्रारम्भ करिकैं गवैं-

जबरे कुंवर जी कौ पहलौ महीनौ, धुक-धुक आमन जाय॥ अस्तोबचन
जबरे कुंवर जी कौ दूजौ तीजौ महीनौ, खीर खाँड मन जाय॥ अस्तोबचन
जबरे कुँवर जी कौ सतवौ नौवों महीनौं कोने में खाट बिछाय॥ अस्तोबचन
जब समधन के दर्द जो मारै। दाई ऐ जल्द बुलवाय॥ अस्तोबचन
जब साजन ब्याहवै पौरी आये सासू तिलक सजाय॥ अस्तोबचन
आक ढाक की पातर बाँधू। कुल्ला और सकौरी बाँधू
और नीम की सींक ॥ अस्तोबचन
खोलन हारे के म्हौड़े ए बाँधू और दाँत बत्तीस॥ अस्तोबचन॥

या गीत में अलग अलग महीना की अलग अलग घटना कही जामें। पत्तर खोलवे वारे हूँ इतनौ 'सासू तिलक सजाय, तक कहै कै फिर या तरह कहमें-

लाऔ कुल्हाड़ो काटूँ ढाक। वाकी ऐसी तैसी करैं मैं अरु मेरौ बाप॥
जेंऔ बराती यूरौ भात॥

बढ़ार में सवन में ये जरूर गामैं-

एक अरज सुनियौ समधी, बरनी ऐ दुःख मत दीजौ-रंग बरसैगौ॥
ई तो बरनी बड़ी ए लाड़ली, लाड़, लड़ायकै पारी-रंग बरसैगौ॥
ई तौ बरनी की मैया मर गई, त्याहरे ऊपर छोड़ी -रंग बरसैगौ॥
कोरी कलसिया सीरौ सौ पानी, पीवै दारी समधिन-रंग बरसैगौ॥
या लाड़ो कूँ दुःख मत दीजौ, बुरौ नतीजौ भोगै-रंग बरसैगौ॥
ऊँची अटरिया, लालो किवड़िया, सोवै दारी समधिन-रंग बरसैगौ॥
या लाड़ो के लाड़ लड़ैयौ, परिवार तौ सुखी रहैगौ-रंग बरसैगौ॥
हरो हरो टोपी फूलन की माला डार गरे में आये-रंग बरसैगौ॥

विदाई के समै कोली समाज में ये गीत गायौ जावै-

ओरे कोरैं गुड़िया छोड़ी रोमत छोड़ीं सहेली।
अपने पिया के संग चालीं, लेऔ बाबुल अपनौ देस।
तू क्यौं बोलै कारी कोहलिया, सोने में मढ़ाऊ तेरी चोंच।
पांमन ने मड़ देऊँ तेरे चांदी में ।
हमतौ अपने पिया के संग चालीं। लेऔ अपनौ देस॥

गूजरन में विदाई के टैम पै ऐसे गामैं-

खिँदादै मैया काए कूँ करै मन भारौ॥
मनभारौ देखियौ दिल कौ प्यारौ-ओ खिँदादै...
मनभारौ हाँ हँसनी सी बत्ती चौंपन वारौ ओ खिँदादै......
मनभारौ धौरे कुरता वारौ ओ खिंदादै...
लम्बी नार, तोरा वारौ-खिँदादे.....। मनभारौ धौरी धोती वारौ-खिंदादे..
दिल कौ प्यारौ कारे जूतन वारौ-खिंदादे मैया.....।।

जब छोरी डोला में बैठे तब ऐसे हू गामें-

औड़े तौ कौड़े गुड़िया क छोड़ी रोमत छोड़ी सहेलनी।
अपने ससुर के संग चाली, लेऔ बाबुल त्याहरौ देस जी॥
अपने साजन के संग चाली, लेऔ विरन तैरौ देस जी॥

जब बना ब्याहबे जावै ताके पाछै अरु ब्याहकै दुल्हन कूँ लैकै आवै तब बधाई या तरियौं गवै-

आई आई नंद जी की पौर बधाई लाई मालनियाँ।
छजन चूरी मोतिन के गजरे मालनिया॥
जा चौक बैठे रानी कौ लाला, मालनियाँ॥
संग सजन की जाई बधाई लाई मालनियाँ।
बहन जो भुआ करै आरतौ मालनियाँ॥
झगड़ें अपनौ नेग सुगढ़ पत मालनियाँ॥

यहन जो भुआन नैं देओ पहराय सुगढ़ पत मालनियाँ।
पहर ओढ़ के गई ब्रिज मत कूँ मालनियाँ॥
मुड़-तुड़ देत असीस सुगढ़ पत मालनियाँ॥
जियै मेरौ माँ कौ जायौ सुगढ़ पत मालनियाँ॥
जियै मेरौ कुँयर कन्हाई सुगढ़ पत मालनियाँ॥

या गीत में लाला की जगह लाली कहिकें, बैठे रानी कौ लड़का हू कह्यौ गायौ जावै। छजन चुरी चांदी सोने अर मोती के छन हू कहे जामें। ये दो चूड़ी की मोटाई के होमें। यामें सजन कौ अर्थ समधी ते लगामें।

ऐसे सगाई ते प्रारम्भ पे ब्याह-संस्कार कौ उत्सव कहूँ चार अर कहूँ सात फेरन पाछैं पूर्ण होय है । इनमें गीतन कौ आनंद तौ, या उत्सव के आनंद कूँ दुगनौ चौगुनौ कर देय है। विदाई के समय कौ दुःख हू गीतन के संग संग बह जाय है।

या लेख के लिखिवे में लोकगीत उपलब्ध करायवे में श्रीमती शारदा कटारा, श्री मनोहरलाल नक्शानवीस जी की माननीया माताजी, श्रीमती घंटे शंटे जी, श्रीरामजीलाल जी गुर्जर की श्रीमती अर सारो जी, देहली दरवाजे की भता बुढ़ोजी, कुयें मौहल्ला की सैनी समाज में ते द्वै माताजी पन्नो अरु पं.भग्गो, श्री बालीराम जी कौ सहयोग मिल्यौ है। जिन गीतन के संग, विसेस समाज कौ उल्लेख न भयो है वो गीत बामन-बनिया अरु लगभग अन्य सब समाजन में हू गाये जानें हैं।

-''चतुर्भुज-प्रसाद'', कुयें मौहल्ला,

कामा-321022, जिला-भरतपुर,

❑

रतजगे के लोकगीत

– श्रीरामदत्त शर्मा

हमारे ब्रज अरु आसपास के अंचल मांहि माँगलिक औसरन पै लोकगीत गायवे की परम्परा कवते प्रारम्भ हतै जाकौ पतौ लगायवौ बड़ी टेढ़ी खीर है। जब मैं पाँच-छै बरस कौ बालक हतौ तौ हमारी दादी कहै ही कै मेरी दादी जिन गीतन कूँ गावै ही बिनमें ते मोकूँ आधे ऊ गीत याद नाँय रहे। मैंनें मेरी अम्माँ ते ऊ कछू गीत सीखे हते। बिनमें ते मोकूं भौत से गीत तौ याद हतें पर कैऊ गीत भूल गई हतूँ। जा ई बात कूँ मेरी माताजी कहतीं। बिनकूं माँगलिक औसरन पै गायवे वारे गीत अनेकन याद हते । आस पड़ौस अरु नाँते रिस्तेदारन के यहाँ ते जब काऊ के छोरी-छोरा कौ जनम होतौ तौ बिनकूँ बड़े मनुहार ते बुलायौ जातौ। बेऊ ऐसे औसरन पै गीत गावे जायवे की बाट देखती रहतीं। बिनकूं गीत गायवे कौ बड़ौ चाव हतौ। जनम के औसर पै छटी के गीत, जच्चा के गीत, पलना के गीत अरु बधाये के अनेकन गीत बिनकूँ याद हते।

छोरी-छोरा के ब्याह के औसर पै तौ लगन ते ई गीत गायवे कूं बुलायेन कौ ताँतौ लग जातौ। घोड़ी, बन्ना, माँगर, तेल, पूरी, रतजगौ, बूढ़े बाबू के गीत गायवे कूँ बिनकूँ रोजीना ई जानौ पड़तौ। ब्याह के औसर पै तौ परभाती के गीत गायवे कूँ बिनकूँ जरूर ई बुलायौ जातौ। मेरी माताजी की परम्परा मेरी चाचीजी नें निभाई। मेरी बड़ी बहने जी नें बामें चार चाँद लगाय दीने। बरात के लिये गारी, पत्तर बाँधवौ, ललमनियाँ इनके गीतन कूँ गायवे में वे बड़ी सिद्धहस्त हतीं। बड़े चाव ते इन गीतन कूं गातीं। मेरी माताजी कौ देहावसान सन् 1938 में है गयौ परन्तु मेरी बहन जी नें जे परम्परा सन् 1989 तक पूरी तरियाँ निभाई। मेरौ ब्याह सन् 1944 में भयौ। मेरी पत्नी कूं बिननें अनेकन गीत सिखाये। वैसे मेरी पत्नी कूँ ऊ मांगलिक औसरन के लोकगीत गायवे कौ बड़ौ चाव है। अपने पास-पड़ौस में जा काई के छोरी-छोरा कौ जनम होय, सालगिरह होय, ब्याह होय तौ बिन-कूं जरूर बुलायौ जाय। खास तौर ते ब्याह के औसर पै रतजगे के दई-देवतान के गीत गायवे कूँ बिनकूँ जरूर बुलावौ आवै।

इन मांगलिक औसरन पै लोकगीत गायवे की परम्परा अब धीरे-धीरे क्षीण है रही है। नई पढ़ी लिखी छोरी-छापरीन नें फिल्मन की तर्ज पै नए गीत गढ़ लीने हैं। घोड़ी बन्नाऊ नई तर्ज पै गढ़ लिए गए हतें। इनमें ब्रजभासा की जगह खड़ी बोली नें लै लई हतै। फिर ऊ जच्चा, माँगर, तेल, बूढ़ौ बाबू अरु रतजगे के औसर पै लोकगीत गायवे की परम्परा अबई ज्यौं की त्यौं हतै। बिसेस रूप ते ग्रामीण अंचल में जा परम्परा कौ निर्वाह निर्बाध रूप ते है रह्यौ हतै। रतजगे के गीत छोरा के ब्याह में दो बेर गाये जाँय अरु छोरी के ब्याह में एकई बेर गवैं। जा औसर पै महादेव, ठाकुर, हनुमान, देवी, गनेस, कान्हा बिहारी, के अलावा रैयारी, सैयद, पठान, पाँच पीर, चामड़, भौमिया के गीत ऊ गाये जाँय।

इनमें ते कछू लोकगीत बानगी के रूप में नीचे दिये जा रहे हैं:-

रैवारी कौ गीत

रैयारी बाबा लाड़ लौरे, लाड़ लौरे मेरी माय।
डेरे में कहियै तेरौ थान, मन्दर में कहियै तेरौ थान।

परचै तौ दैदै बाँव बहुगने रे बाबा बहुगने
नगारे बाजें चारों खूंट, ऊंटन की लंगवार।
सोयौ, सोयौ करतौ आवै, करतौ आवै मेरी माग रैवारी बाबा लाड़ लौरे....
चाँमर तौ राँधू बाबा ऊजरे, हरी ऐ मँगौड़ी धोवादा
पुरियाँ तौ पोऊ बाबा लवझवी, पापड़ सेकूँगी चार
झवक परोसूँगी थार, जैंवत निरखूंगी तिहारी आँगुरी
बोलत सुगनी सी जीभ, जेंयौ तौ जूठ्यौ बाबा रसभर्यौ
कोई पौदन ठौर बताय,
बारह तौ खन की बाबा रावरी, जामें पलँग पर्यौ ऐ दरयाव
दिवल बलै सारी रात,
परिचै तौ देऔ बाबा बहुघने, नँगारे की ज्योत चढ़ाऊं।
रैवारी बाबा लाड़ लौरे लाड़ लौरे मेरी माय।

सैयद कौ गीत

सैयद तौ सोये खूंटो तान कें रे बाँकू कौन जगायवे जाय।
कै तौ जगावै बीबी फातमा कै कुलवन्ती नार
गूँटा तौ मोड़ जगाइयौ रे जगाइयौ छछहारी फिर फिर जाँय
सैयद उठे ललकार कें, फटकार कें, टूटे पलंग चारों साल
सूदे तौ भये हैं विलोमना, छछिहारी भर-भर जाय
सैयद तौ सोये खूंटो तान कें।

पाँच पीर

पाहर ते उतरे पाँचों पीर चार सरैया कोरी कोरी आईं
दोइ हलुआ दो माँढ़ी
चार करसिया कोरी कोरी आईं, दो इमरत दो पानी
चार भरोटा हरे-हरे आये, दो आले दो सूखे
चर गये दूब पी गए पानी कर गए लीद मसानी,
तुम देखौ लाल जा साहब की बानी
आगें तौ जोजा कपड़ा न देतौ, अबर लुटावै गुलसारी
सारे देख कमल ज्यों विकसत भैया ऐ देखि लड़ाई
आगें तौ बनियाँ गुड़ नई दैतौ, अबर लुटावै गुड़ की भेली,
जा कलजुग में रीत चली है, सास भरै बहू कौ पानी,
जा कलजुग में रीत चली है, हँसे खाय जिठानी
तुम देखौ लाल जा साहब की बानी
पतरा बाँच मिस्सर घूमै, घर घूमें मिसरानी
हाट-हाट पै बनियाँ घूमै, घर घर घूमें बनैनी
तुम देखौ लालजा साहिब की बानी।

चामड़, भौंमिया कौ गीत

दादी वरजै भौंमिया तिहारी मैय्या वरजै ऐ
वा चामड़ के लारे भौंमियाँ मत जा
नहीं मानूं दादी, नहीं मानूं मैया वा चामड़ कौ संग मोकूं प्यारौ लागै
वाके बजते नगारे मोय प्यारे लागें।
दिन के नगारे चारों कूट बाजें, जीजी भुआ मैं नहीं मानूं एक
जीजी वरजै भौंमियाँ, तिहारी भुआ वरजै ऐ
वा चामड़ के लारे भौंमियाँ मत जा,
नहीं मानूं जीजी नहीं मानूं भुआ, वा चामड़ कौ संग मोकूं प्यारौ लागै
मैं तौ वाकौ भगती करूं अपार।

महादेव जी कौ गीत

तू बैठौ आसन माँढ़ महादेव रे ओ जोगी के
तू बैठौ भुजा पसार, महादेव रे ओ जोगी के
तू राजा कौ रछपाल महादेव रे
तू रानी कौ आँचर मार महादेव रे ओ जोगी के
तू दूल्हा कौ रछपाल, महादेव रे ओ जोगी के
तू लाड़ी कौ आँचर मार महादेव रे।

ठाकुर कौ गीत

राजा मानसिंह नें ठाकुर नौतियो
रानी के घर सेवा होय, बड़ी ग्यौनार गुलगुले होंय
पपड़िया होय, लपसिया होय, आवें बड़े ठाकुर देवता
तुम ठाकुर मेरे ऊ घर अइयों मैऊ तुम्हें जिमाऊँ ग्यौनार
जा दुलहा कूं आसिस दीजों, लाड़ी कूं दीजों पुत्तर चार
मैं ऊ तुमकूँ नौतौ दूंगी मेरे नौते पै अइयो ठाकुर देवता

बाँकेबिहारी औ हनुमान जी कौ गीत

कहाँ ते आये बाँके बिहारी	कहाँ ते आये हनुमान
वृन्दावन तेआये बाँकेबिहारी	लंका ते आये हनुमान
काए में आमें बाँकेबिहारी	काए में आमें हनुमान
गाड़ी में आमें बाँकेबिहारी	रथ में आमें हनुमान
काँहर उतरें बाँके बिहारी	काँहर उतरें हनुमान
मन्दिर पै उतरें बाँकेबिहारी	सिंहासन पै उतरें हनुमान
का कपड़ा पहरें बाँकेबिहारी	का पहरें हनुमान
पीरी कछौरी बाँकेबिहारी	लाल लँगोटा हनुमान
काहर जीमें बाँकेबिहारी	काहर जीमें हनुमान

लडुआ जोमें याँकेयिहारी	घूरमा तौ जोमें हनुमान
काहर पीमें याँकेविहारी	मसर मलीदा हनुमान
पानी पोमें याँकेविहारी	काहर पीवें हनुमान
काहर दिंगे याँके विहारी	सरयत पोमें हनुमान
अन धन दिंगे याँकेविहारी	काहर दिंगे हनुमान
काहर तोरें याँकेविहारी	पुत्तर दिंगे हनुमान
तारे तोरें याँकेविहारी।	काहर तो रें हनुमान
	लँकाए तोरें हनुमान
	याँके विहारी ते कम नाँयें हनुमान।

रतजगे के इन गीतन ते पतौ लगै कै हमारा संस्कति समन्वयवादी रहो हतै। ब्याह जैसे माँगलिक औसर पै रैवारी, सैयद, पीर, पठान के गीत गाये जांए। जाते प्रगट होय कै जा देस में भौत काल तानूं मुसलमान शासकन कौ राज रह्यौ। याके प्रभाव ते सैयद, पठानऊ पुजवे लग गए। विवाह जैसे माँगलिक कार्य की निर्विघ्न पूर्ती है जाय याके लिये अपने दई देवतान के संग इनकूं ऊ मनायौ जाय। जा परम्परा कूं अंधविश्वास ऊ कह्यौ जा सकै। हमारे जा अन्धविश्वासी हिन्दू समाज में सैयद की मान्यता आजऊ देखी जाय। सैय्यद के थान पै ढोक दैवे मनौती मनायवे अनेकन पुरस और स्त्री आजऊ जाते भए देखे जाय सकें।

रैवारी के गीत ते प्रकट होय कै राजस्थान ते लगे भए जा ब्रज आँचर में कोऊ ऊंट की सवारी करवे वारौ आयौ अरु यो यहाँ के समाज में ऐसौ घुलमिल गयौ कै यानैं यहाँ ते लौटकें जायवे कौ नाम ऊ नाँय लीनौं। वो एक सिद्ध पुरुष मन गयौ। मानसन की मनौतीन नें पूरी करवे लग गयौ अरु जा आँचल में ई मृत्यु कूं प्राप्त है गयौ। याके थान कूं आजऊ पूजौ अरु मानौ जाय। जाईते विवाह जैसे माँगलिक औसर पै रतजगे (रात्रि जागरण) के समै पै याकौ ऊ स्मरण कियौ जाय।

चामड़ अरु भौमिया के सम्मिलित गीत ते प्रगट होय कै भौमिया चामड़ कौ बड़ौ ऊँचौ भगत हौ। भौमिया कूँ चामड के संग जायवे ते याके घरवारे रोकते पर वो विनकी एक नाँय सुनतौ। खरौ उत्तर देतौ कै चामड़ मैय्या के बजते नगाड़े मोकूं ऐसे प्यारे लगैं कै मैं उनकी धुन सुनकें विनके दरसन कूं तत्काल जायवे ते अपने आपकूं रोक ई नायँ पाऊं। ब्याह के माँगलिक औसर पै चामड़ के संग भौमिया के स्मरण ते पतौ लगै कै हमारी संस्कृति में देवी-देवतान के पूजन अर्चन के संग विनके मन-वचन कूं स्मरन करवे की परम्परा रही है।

याँकेविहारी अरु हनुमान जी के युगल गीत ते ऊ प्रकट होय कै भगवान ते ज्यादा हमारी संस्कृति माँहीं भक्त कौ स्थान मानौ गयौ है। ऐसौ जा कारन है कै स्वयं भगवान नें भक्त कूं ऊंचौ बतायौ है। याँके विहारी तौ अन्न और धन दिंगे परन्तु हनुमान जी तौ पुत्र दिंगे जाते बंस परम्परा आगें चलैगी। ऐसौ भाव जा लोकगीत में दरसायौ गयौ है।

माँगलिक औसर पै लोकगीतन की परम्परा शहरी क्षेत्र मे धीरे-धीरे लुप्त हौंतो जाय रही हतै क्योकि हमारी नई पीढी की युवतियाँ सिनेमा के गीतन ते बहुत प्रभावित हतैं। विनने घोड़ी, बन्ना, बधाये फिल्मी तर्ज पै गायवौ प्रारम्भ कर दीनौ है। इन गीतन में हमारी साँस्कृतिक परम्परा की झाँकी नाँय मिलै। जाते ई ब्याह के औसर पै 'महिला संगीत' नयौ नामकरण भयौ है। जामै फिल्मी तर्ज के कछु गीत ब्रजभासा अरु खड़ी बोली में मिले जुले गाये जाँए। ग्रामीण आँचल में जे प्रभाव अबई नाँय दीखै। जाते ई लोकगीतन की परम्परा हमारे जा ब्रज आँचल में अबऊ जीवन्त है। रतजगे हमारे गाँवन में अबऊ निर्बाध रूप ते होंय और विन में रतजगे के गीत गाये जांयें। जाते जे गीत आज सुरक्षित हतें।

-सी-९१, रणजीत नगर,
भरतपुर

❑

ब्रज लोकगीतन में पर्व

-डॉ. रामप्रकाश कुलश्रेष्ठ

माह महीना में वसंत पंचमी मनायी जाए। याही दिना ते वसंत रितु कौ आरम्भ मानौ जाय अरु होरी के गीतन कौ गायन सुरू होइ। फागुन के महीना में फुलैरा दौज होइ। फुलेरा दौज कूं घरगुली बनाई जाइ अरु होरी के दिना तक संझा समै टिकुलियाँ रखी जांय। गोवर की गूलरियाँ, ढाल, तलवार आदि बनिवौ आज सूँ सुरू होइ। रंगभरनी एकादसी कूं ब्रज के मंदिरन माँहि अबीर-गुलाल उड़ै। होरी के रसियाऊ गाये जांए। होरी तौ फागुन की पूनौं कूँ मनाई जाय वामें आगि लगाई जाय अरु होरी मँगरने पै घर कौ एक आदमी आगि लाइकें घर की घरगुली पै रखी गुलरियन में लगाइदे। दूसरे दिना होइ धुलैंड़ी, आजु के दिना खूब होली खेली जाइ। आदमी अरु वैयरवानी दहनावर निकारें। दूसरे दिना होइ भैया दूज। जा भैया दूज कूं कछु मनावैं, कछु नांय मनावैं।

घरगुली खोदी जाइ वा औसर पै गीतु गायौ जाइ-

रामा बलि के द्वारा चढ़ी ए होरी
कौन के हाथ रंगीलौ ढ़प सोहै।
कौन के हाथ रंगीलौ ढप सोहै।
कौन के हाथ गुलाब की छड़ी।

होरी मंगरिवे ते पैलें पूजी जाइ। गीत गाये जांयें। वैयरबानी सिकायत करै कै होरी पूजिवे कैसें जाऊँ मोपै पहरिवे कूं गैहने नांय। पति अपनी पत्नी कूं समझावै, अबकै तौ ऐसे ही पूजि लेउ, अगली बरस खूब गैहने बनावाइ दुंगो। जाकौ सीधौ मतलब ए कै फसल अच्छी है जायगी तौ गैहने अपने आपु दुगने बनि जायिंगे। होरी में आगि लगिवे पै बालि भूनी जांय अरु गीतु कछु ऐसे गायौ जाय-

बालि बलूलरियाँ
जौ की लामनियाँ
कृष्णा जी भैनि बुलाई कै जौ की लामनियां
सहद्रा दौरी दौरी आवै, कै जौ की लामनियां
भैना गूंजा खाइबे आउ, कै जौ की लामनियां
कै हिस्से खाइबे आउ, कै जौ की लामनियां

होरी मंगरि जाइ, लौटते बखत वैयरवानी जा तरियाँ गीत गावति चलें-

होरी के हुरिहारे आये राम चना रे,
कोरे दतार आये राम चना रे,

कृष्ण जी दतार आये राम चना रे
होरी मंगरि घर दाऊजी आये राम चना रे
पइदै मइया रोटी राम चना रे
ईंधन नाँय बाँधन नाँय ,
कैसे पैइं बेटा रोटी राम चना रे।

मथुरा के कलेक्टर साहब एफ.एस. ग्राउस (1882) नैं अपने संस्मरनन माँहि जि लिखौ है कै ब्रज माँहि होरी की अजीयो गरीब प्रथाऐं हैं, जाके बारे में बाहर के लोगन कूं पतौ नांय। ब्रज में तौ होरी चालीस दिना चलै, अरु जि कही जाय कै 'जग होली, ब्रज होला।'

ब्रज की होरी द्वै तरियाँ होय-एक तौ सलौनी होरी जामें नाचगानौ, संगीत अरु नाट्य होय, जाकौ केन्द्र होय वृन्दावन। जाय कहें है होरी लीला ए। राधा जू अरु किसन जी फूलनि की पंखुरीन ते होली खेलैं। जा तरियां की होरी मैं मनन फूल लग जांय।

दूसरी तरियाँ की होरी होय मनोरंजक। जाइ गांमनि में देखि सकैं। दाऊजी में जो 'हुरंगा' होइ वाए दूसरी तरियाँ की होली मानौ जाइ।

दाऊजी कौ दूसरौ नाम ए बलराम। ब्रज क्षेत्र मांहि बलराम की पूजा करिबे की परम्परा भौत पुरानी मानी जाय। मथुरा सूं 14 मील दूरी पै रीढ़ा गाँव के कुण्ड मांहि बलराम-रेवती की मूर्तियां 16 वीं सदी की मिली एं और मिलौ ए दाऊजी कौ मंदिर। ता दिना सूं रीढ़ा गाँव है गयौ बलदेव गाँव।

धुलेण्डी के दूसरे दिना चैत कृष्णा द्वितीया कूं जा मंदिर में होली मनायी जाइ। जा दिना घूँघट वारी वैयरवानी आदमीन कपड़ान कूं फाड़ैं और वासूं बनावैं कोड़ा और कोड़ननि सूं मर्दन की करैं पिटाई। लोग तौ दूरि सूं ई रंग डारि सकैं। जाय, बठैन, जतीपुरा, आन्यौर मांहि लोग लुगाईनु में लीला- युद्ध होय जामें लठिया चलैं। लीला युद्ध लगै तो उग्र परि है बड़ौ मनोरंजक। लोग पिटैं, लुगाई पीटैं जिय है ब्रज की होरी।

ब्रज के फालैन गांम में फागुन की पूनौ कूं होली उत्सव प्रह्लाद मंदिर के औरे मनायौ जाइ। प्रह्लाद मंदिर कौ पंडा प्रह्लाद कुंड में न्हाइकैं जा आगि में हैकें निकरै। जाइ सब अपनी आँखिन सूं देखें।

फागुन कौ महिना आवत ही सबनि की चाल बदलि जाइ। रंग-ढंग बदल जाइ। आदमी तौ आदमी प्रकृतिऊ बदल जाय। ब्याह के बाद नई नवेली अपनी ससुराल वारेनु सूँ कहि रही ए कै होली आइ गई। आपु तौ बिना गौने के लै आउ। होली खेलिबे कूँ ससुराल में होइबौ जरूरी ए-

कच्ची अम्बली गदराई रे फागुन में
रांड लुगाई मस्ताई फागुन में
कहियो रे उस ससुर भले से
चाल्ला लेकर आ फागुन कौ
बिना मुकलाई लेजा फागुन में
कच्ची कली..........
कहियो री उस बहू भली से

रत्ती भर घटला(घटेगा तो) माशा भर देऊंगी।
देऊंगी काट के तोल।

ब्रजभासा कौ जि होली गीत गढ़वाल-कुंमायूं इलाके में बड़े चावसूं गायौ जावै।

होली कौ पखवाड़ा तौ मौज-मस्ती कौ पखवाड़ौ ए। राधा-किसन तौ हर गीत में मिल जावे। ब्रज के नर-नारीन के हाथनु में गुलाल होय, मौज-मस्ती होय, हास-परिहास होय, हाथन में पिचकारी होय ब्रज के लोग लुगाई हाथन में अबीर गुलाल लैकें बिखेरते भए होलनि के टोल एक मुहल्ला सूं दूसरे मांहि जांइ, गीत गाएं, गले मिलैं और फिर सब मिलिकैं गावैं-

आज बिरज में होरी रे रसिया,
होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया।
कौन के हाथ कनक पिचकारी,
कौन के हाथ कमोरी रे रसिया। आज बिरज.....
कृष्ण के हाथ कनक पिचकारी
राधा के हाथ कमोरी रे रसिया॥ आज बिरज.....
उड़त गुलाल लाल भये बादर, केसर रंग में बोरी रे रसिया।
बाजत ताल मृदंग झांझ ढप और मंजीरन जोरी रे रसिया।
फेंट गुलाल हाथ पिचकारी, मारत भर-भर झोरी रे रसिया।
इत सौं आये कुंवर कन्हैया, उत सौं कुंवरि किसोरी रे रसिया।
नंद गाँव में जुरे हैं सखा सब बरसाने की गोरी रे रसिया।
दोऊ मिल फाग परस्पर खेलें, कहि-कहि होरी रे होरी रे रसिया।

जब एक दूजे सूं गले मिलैं सबके दिल एक दूसरे से मिलैं। तब वे अपनी पुरानी सब भूलि जांय। बिनकी मन स्थिति बड़ी विचित्र है जाय, फिरि सब मिलिके गावें।

ब्रज की होरी कौ आनन्द तौ अलग ई ए। बसंत पांचें पै होरी कौ डाँडों गढ़तई खेम ब्रज के लोकजीवन में एकदम नई उमंग आ जाइ। कह्यौ करैं ए-'आई माह पांचै, बूढ़ी डुकरिया नांचे।' इतनौ ई नांय लुगाई ऊ खसम सूं कहै फूफाजी अरु फागन में जेठ कहन लागे भाभी। फागुन कौ महीना ब्रज में सबसे ज्यादा महत्ता कौ मानौ जाय-

पौरी आगे घिरा उड़ै उड़ उड़ परै गुलाल
भैया होरी आइयें, ए होरी आइए
भैया खेलो गैदोंली, याको भैना खैलै गुलाल। भैया होरी....

इतै भैयादूज की बात भई अरु एक सखी कहि रई ए-

फागुन आयो ए सखि गयो गाम को नींद।
आँखिन में सौदा भए होटन करी रसीद॥

जैसलमैर माहि ब्रज की गोरी कन्हैया सूं कहै-

मत मारो पिचकारी मैं तो सगरी भींज गई,
मत मारो पिचकारी मारो तो सनमुख मारो,
नहीं तो देऊंगी मैं गारी हो गारी

परि स्याम काहे कूं मानैं, चौंकि वे जानत हैं कै-

कहा करूं कित जाऊं मेरी सजनी
लाज रही कछु थोड़ी
मन भायो सो कियौ मनमोहन,
ऐ मैं सब ही सहोरी।

जैसलमेर में होरी पैं 'जिन्दा-जिन्दी' स्वांग तौ होय परि जि होरी खूब गाई जाय-

छबीली बन गयौ छैल बिहारी
आज सखी सोलह वर्ष की नार
सोलह वर्ष की नार पहन फूलन गजरा सार
कर गयो वस में आज छैल श्री वृन्दावन वारौ।
ले गयो अपने लार, यार श्री राधे को प्यारो..।
मत छेड़ स्याम मैं आज ब्याह कर आई
कछु करो शरम नहीं खुले भरम चतुराई।

भदावर के हुरियारे सुखैया पौरानिक कथानक पै होरी गायौ करते। महाभारत के कथानक पै आधारित जा होरी नें अभिमन्यु की मैया चक्करवूह(चक्रव्यूह) तोरिबे जाबे सूँ पैलें कहि रई ए-

उमर नादान है बेटा दूध के दांत हू ना टूटे।
पिता तेरे घर नांहि करम सब भांति सौं फूटे।
बारह बरस बिरत रह मां दुखिया के सूरज कौ टेकौ है।
तब तू आंखिन ते देखौ है।

सुखैया के मरे पै बिनकी सिस्य मंडली नें जि होरी गाई-

दुनियाँ में गितारी बहुत भये,
सुखलाल की ध्वनि कछु न्यारी।
पूरब-पश्चिम, उत्तर-दक्खन,
चारों पटिया मथि डारी।
जेठ लगत शनिवार सातें को सुरपुर पहुँच गये,
तेरी कुदरत की बलिहारी है भगवान।
विधि सौं न बसियाय गति जानी न जाय,
दुख भयौ है अथाय, दुनिया पछिताय।
तैंने बिलखत छोड़े चेला तैरो उड़ि गयौ हंस अकेला।।

पतोला(पातीराम) के पटु सिस्य मोहन सिंघ प्रसिद्ध हुरियारे तथा गितारी माने जायँ। 'परदेसी की प्रीति' होरी ह्यां दई जार रई ए-

परदेसी की प्रीति कौ है झौंल कौ सौ तापनौ
दियौ करेजा काढ़ि तऊ भयौ नहीं आपनौ।

कोऊ मति करियौ, प्रीति करै तौ ऐसी करियौ
नित उठि है जाय मैली, नहीं सबते भली अकेली।।

गामन में मंदिरन में गाम के रहवैया मस्ती मे गाइ उठैं-

रंग लूटें रे आज मंदिर में रंग लूटें
कौन सिखर पै गौरी विराजै, कौन सिखर पै मन भोले।
रंग लूटें रे आज मंदिर में रंग लूटें।

ब्रज की विसेस धुनि-डंडेशाही होरी कौ एक नमूना ह्यां दियौ जा रह्यौ है-

फकीर यार फागुन में फेरी कूं आमें,
फागुन में आमें संग टोली कूं लामें।
फकीर यार फागुन में फेरी कूं आमें,
नई रंगत के रसिया सुनाय जामें।
भंग के नशा में, हरिगंग कूं मनामें,
बजरंग कूं सुमिर के आ दंगल में गामें। फकीर.....
द्वार द्वार जामें औ सब कूँ रिझामें,
कर चित कूं प्रसन्न रंग-रंगत रमामें। फकीर......
डंडे बजामें कडंगे मिलामें,
बेढ़ंगे खिलाड़ी आय देख दहलामें। फकीर.........
रंगहूं उड़ामें, हुड़दंग हू मचामें,
करवे दरस कूं प्यारी हम स्वांग लैके आमें। फकीर.....
'किशोरी लाल' गामें, गा सबकूंई सुनामें
करिबे कूं रिस्तौ पक्कौ हम साल भर में आमें। फकीर.....

करौली मांहि होली गायन बसंत पंचमी ते सुरू होय अरु चैत की पांचै तक चलै। मदन मोहन जू की नगरी करौली मांहि गायन ब्रज की तरियाँ होइ। राजा महाराजा नु के आसय मे रहिये वारे मथुरा सूं पधारे चतुर्वेदी समुदाय के लोगन नैं जा विद्या कूं बढ़ायौ। करौली के महाराजा भ्रमरपाल अरु भूमिपाल नें अनेक कवीन कूं प्रस्रय दीनौं ओ तबई ते होली गायन के राग, धमार, ध्रुपद, रसिया, ख्याल अरु पैंचहटा प्रचलित है गए हैं। ब्रज की भांति करौली मांहि धूलण्डी के दिना ढप, ढोल, नगाड़े, झांझ, मंजीरा, हारमोनियम बजाइके होरी गावैं, नाचैं, नये जच्चा, बच्चा के संग नाचैं। कन्हैया अर राधा सब हमजोलीन के संग होली खेलिबे निकरते गावें-

आज होरी खेलन चलौ बरसाने को

हां, मिल जाओ सब बूढ़े बारे
लाल हुए नंदलाल सखी, ऐसौ ब्रज में उड़ौ गुलाल।
लाल हो गई धार यमुना की लाल भये गोपी ग्वाल।
लाल वसन तन राधिका के चन्दन कर मेंहदी लाल।
लाल मुकुट माथे पर कृष्ण के लाल हिये मुक्तन माल।
लाल जरतारी वस्त्र पहिने कान्हा नाचे दे दे ताल
लाल लिए संग सखा सब चले लाल मतवाली चाल

परि स्याम काहे कूं मानें, चोंकि वे जानत हैं कै-

कहा करूं कित जाऊँ मेरी सजनी
लाज रही कछु थोड़ी
मन भायो सो कियौ मनमोहन,
ऐ में सब ही सहोरी।

जैसलमेर में होरी पै 'जिन्दा-जिन्दी' स्वांग तौ होय परि जि होरी खूब गाई जाय-

छबीली बन गयौ छैल बिहारी
आज सखी सोलह वर्ष की नार
सोलह वर्ष की नार पहन फूलन गजरा सार
कर गयो वस में आज छैल श्री वृन्दावन वारौ।
ले गयो अपने लार, यार श्री राधे को प्यारो..।
मत छेड़ श्याम मैं आज व्याह कर आई
कछु करो शरम नहीं खुले भरम यदुराई।

भदावर के हुरियारे सुखैया पौरानिक कथानक पै होरी गायौ करते। महाभारत के कथानक पै आधारित जा होरी में अभिमन्यु की मैया चक्करवूह(चक्रव्यूह) तोरिवे जावे सूँ पैलें कहि रई ए-

उमर नादान है बेटा दूध के दांत हूं ना टूटे।
पिता तेरे घर नांहि करम सब भांति सौं फूटे।
बारह बरस विरत रह मां दुखिया के सूरज कौ टेकौ है।
तब तू आंखिन ते देखौ है।

सुखैया के मरे पै विनकी सिस्य मंडली नें जि होरी गाई-

दुनियाँ में गितारी बहुत भये,
सुखलाल की ध्वनि कछु न्यारी।
पूरब-परिचम, उत्तर-दक्खन,
चारों पटिया मथि डारी।
जेठ लगत शनिवार सातें को सुरपुर पहुँच गये,
तेरी कुदरत की बलिहारी है भगवान।
विधि सौं न बसियाय गति जानी न जाय,
दुख भयौ है अथाय, दुनिया पछिताय।
तैंने बिलखत छोड़े चेला तैरो उडि गयौ हंस अकेला।।

पतोला(पातीराम) के पट्ट सिस्य मोहन सिंघ प्रसिद्ध हुरियारे तथा गितारी माने जायँ। 'परदेसी की प्रीति' होरी ह्यां दई जाइ रई ए-

परदेसी की प्रीति कौ है झौल कौ सौ तापनौ
दियौ करेजा काढ़ि तऊ भयौ नहीं आपनौ।

कोऊ मति करियौ, प्रीति करौ तौ ऐसी करियौ
नित उठि है जाय मैली, नहीं सबते भलो अकेलो।।

गामन में मंदिरन में गाम के रहवैया मस्ती में गाइ उठैं-

रंग लूटें रे आज मंदिर में रंग लूटें
कौन सिखर पै गौरी विराजै, कौन सिखर पै मन भोले।
रंग लूटें रे आज मंदिर में रंग लूटें।

ब्रज की विसेस धुनि-डंडेशाही होरी कौ एक नमूना ह्यां दियौ जा रह्यौ है-

फकीर यार फागुन में फेरी कूं आमें,
फागुन में आमें संग टोली कूं लामें।
फकीर यार फागुन में फेरी कूं आमें,
नई रंगत के रसिया सुनाय जामें।
भंग के नशा में, हरिगंग कूं मनामें,
बजरंग कूं सुमिर के आ दंगल में गामे। फकीर.....
द्वार द्वार जामें औ सब कूँ रिझामें,
कर चित कूं प्रसन्न रंग-रंगत रमामें। फकीर......
डंडे बजामें कडंगे मिलामें,
बेढ़ंगे खिलाड़ी जाय देख दहलामें। फकीर.........
रंगहूं उड़ामें, हुड़दंग हू मचामें,
करवे दरस कूं प्यारी हम स्वांग लैके आमें। फकीर.....
'किशोरी लाल' गामें, गा सबकूई सुनामें
करिबे कूं रिस्तौ पक्कौ हम साल भर में आमें। फकीर.....

करौली मांहि होली गायन बसंत पंचमी ते सुरू होय अरु चैत की पांचै तक चलै। मदन मोहन जू की नगरी करौली मांहि गायन ब्रज की तरियाँ होइ। राजा महाराजा नु के आसरय में रहिये वारे मथुरा सूं पधारे चतुर्वेदी समुदाय के लोगन नैं जा विद्या कूं बढ़ायौ। करौली के महाराजा भ्रमरपाल अरु भूमिपाल नें अनेक कवीन कूं प्रसरय दीनौं ओ तबई ते होली गायन के राग, धमार, ध्रुपद, रसिया, ख्याल अरु पैचहटा प्रचलित है गए हैं। ब्रज की भांति करौली मांहि धूलण्डी के दिना ढप, ढोल, नगाड़े, झांझ, मंजीरा, हारमोनियम बजाइके होरी गावैं, नाचैं, भये जच्चा, बच्चा के संग नाचैं। कन्हैया अरु राधा सब हमजोलीन के संग होली खेलिबे निकरते गावें-

आज होरी खेलन चलौ बरसाने को

हां, मिल जाओ सब बूढ़े बारे
लाल हुए नंदलाल सखी, ऐसौ ब्रज में उड़ौ गुलाल।
लाल हो गई धार यमुना की लाल भये गोपी ग्वाल।
लाल बसन तन राधिका के चन्दन कर मेंहदी लाल।
लाल मुकुट माथे पर कृष्ण के लाल हिये मुक्तन माल।
लाल जरतरी वस्त्र पहिने कान्हा नाचे दे दे ताल
लाल लिए संग सखा सब चले लाल मतवाली चाल

इतनौ ई नांय। ख्याल गायक गिरधर नें होरी कौ बखान जा तरियां करौ ए कै जासों बारहखड़ी समझि जांय-

करत कान्ह कौतुक निशंक भर अंक छिड़कते रंग।
खिलखिलाय खेलते हैं खेल कान्हा राधा के संग।
गोरी-गोरी ग्वालन खड़ी है गोल बाँध इक लंग।
घूर-घूर घूरत घट औघट रास्ता कर रही तंग।
चलत चाल चंचला चपल चतुराई करु चौरंग।
छक छक छकाइ दई बृजनारी जय जय जहँ मारे पिचकारी।
झूम झपट झट जाए लिपट झकझोरे गोरे अंग।
टपके रंग सरंग झपटझट पटकत रंग दबंग।
ठाठ बाट ठाड़ा ठगिया ठग ठठा करत निहंग।
डटै नहीं डाटे सो पकड़ कर कर रयो रंग बिरंग।
ढूंढ ढूंढ ढूंढ़त सखियन ढप ढोल बजे मोचंग।
लिखा ख्याल गिरधर नें बज रहे चौताले चंग।

होरी कन्हैया की नेह लीलान कौ सलौनौ रूप मानौ जाय। गोपीन कौ टौल होइ चाहे अकेली होए-एकली गोपी बिनके रसाभास के लिये कोऊ अंतर नांय। संकरी कुंज गली मांहि-इकली गोपी अरु इकलौ छैल-फगनौटे कौ रसीलौ रूप देखिवे लाइकै-

सखी री बंसी बारौ,
सखी री दैया बारौ, मोय लिवाइ लिए जाय।
मृग के नैन जाकी दाड़िम सी बत्तीसी,
पट घूँघट की ओट रही जाय।
सकरी गली गली में ठाड़ौ हां करूँ तौ हाँसी आवै,
ना करूँ तौ मेरौ जिया जाय।
नैना कजरारे जाकी भौंह हैं कटीली,
दिया जिया मेरौ छलनी बनाय।
आगि लगै या होरी के माथे-जानै चौरे में दई लुटवाय।

मन मोहन कन्हैया सूं होरी खेलिवे की मंशा आजु पूरी है जाएगी ताई सूं गोपी सजि रई ए, संवरि रई ए चौंकि मनमोहन आइवे बारे ए-

होरी खेलूंगी मनमोहन आवनहार।
उबटन मज्जन करि लियौ सजनी तन, सज सांज सिंगार।
हाथन मेहँदी पाँव महावर काजर लियौ लगाय।
बेसर कौ मोती अति सुन्दर, सौंधे भीने बार।

होरी के दिना या गोपी की साध पूरी होय ए। संजोए भए रंगीन सपनेन कूं पूरौ होत देखि रई ए।

राधा-कन्हाई अकेले होरी के विसय नांय। समय के संग जायँ अनेक विसय अपने आपु जुड़ि जाएं। रास्ट्रीय भावना

ऊ जुड़ि जांय। ये हुरियारे तरै-तरै के विसयन कूं समैट लैं। शिवाजी अर राना प्रताप सूं लैकें भगत सिंह, गांधी जी तक सबई नैं देसप्रेम की होरी खेली ए। सुतंत्रता के तांई त्याग भावनान की मटकी में संगठन को रंगरासि उंड़ेली ए-

खेलौ री देसप्रेम की होरी।
रंग संगठन कौ मिलि-त्याग गगरिया कोरी।
तीन रंग की लै पिचकारी, निर्भय है कैं यद्दौ अगारो।
देखौ अपनी-अपनी बारी खूब करौ बरजोरी।
राणा शिवा सहज ही खेले, तन पै कस्ट अनेकन झेले।
खेले भगतसिंह अति प्यारे, राजगुरू सुखदेव सितारे।
बापू खेले हरि के आगे, हम खेलत रह गए अभागे।
डटे रहे सब ममता त्यागे, प्रीत राष्ट्र सौं जोरी।

जा तरियाँ होरी के हुरियारेन नैं देस कूं सुतंत्र कियौ। देस के विकास कौ बीड़ा इननें ई उठायौ। चाए स्वेत क्रांति होइ, चाए हरित क्रांति, चाए परिवार नियोजन होय, चाए सहकारिता कौ संदेस, ऐसे हुरियारेन नैं होरी कौ दर्सन क्रांति किसोरी के रूप में कर्यौ ए-

ठाड़ी क्रान्ति किशोरी।
खेलौरी इनसौं मिल जुरि करि कै होरी।
हरित क्रांति कौ हर सौं खेलौ-नव उपकरण बटोरी।
स्वेत क्रांति कौ दूधन खेलौ, बात करौ मत कोरी।
खान कारखाने में खेलौ, रोकौ रिस्वत खोरी।
ठाड़ी है क्रान्ति किशोरी।

जिय मानौ जावै कै मथुरा तीन लोक सूं न्यारी ए। जब मथुरा तीन लोक सूं न्यारी है तौ ब्रज की होरी ऊ सबनि की होरी सूं न्यारी होय। सब जगै तौ होरी होय परि ब्रज मांहि होय-होरा!

ब्रज में 'होरा' च्यों है वाकौ कारन बतावति भई एक गोपी कहि रई ए-

देखो है ई देस निगोरा, जगत होरी ब्रज में होरा
लाज रहै चाहे जाऔरी सजनी नाहै सरम कौ ओरा
कहा वृद्ध कहा तरुन छोहरे,एक ते एक ठठोरा
न काऊ कौ काऊ सौं जोरा।

ब्रज कौ हर घर होरी के रंग सूं चमकै-चहकै। या होरी कौ रंग बरसाने में जैसौ बरसै वैसौ तीन लोकनि मांहि नांय मिलै। गोपिनि के सुर में सुर मिलायकें ब्रज की नारि, ब्रज की ललना होरी कौ नौंतो दै रई ए-

खेलुंगी तोतें रंग होरी बरसाने में अइयो राधेश्याम
अरु
कान्हा बरसाने में आ जइयो, बुलाइ गई राधा प्यारी।

परि दूसरी ओर ऐ-

ए लंगुरिया हँसि मति अइयो काऊ और ते
मैं मरूंगी जहर विस खाइ।

चैत महीना के धुलैंड़ी अरु भैया दूज की चर्चा तौ करि चुके एं। अब बचि गयौ ऐ-बासौरौ, नौ दुर्गा,गणगौर, देवी आठैं और रामनौमी। बासौरा सीतला सातैं कूं होइ अरु कछु सीतला आठैं कूं मनावैं। बासी सामान सूं सीतला माता पूजी जाय। जा दिना बासौ खानौं खायौ जाइ। ठंडौ खायौ जाइ।

चैत महीना कौ (सुक्ल पाख) पैले पखवारे की पड़वा सूं नयौ संमत सुरू होइ। जाई दिना सूं सरू होइ नौ दुर्गा। ब्रज की बैयरबानी आठ दिनान तक व्रत रखैं फिर नौवें दिना बाय खोलें। कछुं तौ आठैं कूं देवी कौ पूजन करें अरु कछु नौमी कूं करें अरु कन्या लांगुराऊन कूं जिमामें । नौ दुर्गनि में जागनु होइ। भगत आवै, जागनु में माता की भेंट, मोहन दे, सुआ सेवरा, मोरंग दाने कौ जुग्नु, पलंका चढ़ाई, जगदेव अरु देवी के साहिले, अहिरामन लीला गावैं। तीज कूं गनगौरि कौ मेला भरै, पूजा होइ।

देवी के गीत द्वै तरियां गाये जांय। फुटकर गीतनि में देवी की प्रार्थना, स्तुति, पराक्रम कौ उल्लेख, स्थान तथा शोभा कौ बर्नन, जात की तैयारी अरु जात्रीयनि को कठिनाई गाई जाऐ।

इक जनानी अपने पति सूं कहै कै 'चालि पीया दोऊ मिलि जाये, परसें देवी जालिपा ओ माय।' पति जात कूं न जा पाइबे पै अपनी दिक्कत बतावै। पत्नी नें सब दिक्कतन कूं दूरि करिबे कौ समाधान बताइ दीयौ। चैत महीना में पंडित कूं बुलाइ कै पोथी देखि कै सनीचर की सातैं कूं चालिबौ तै है गयौ। पत्नी आंगन लीपि रई ए, मां चौक पूरि रई ए और भैन टीके की तैयारी करि रई है परि 'घर ही में बाबुल बरजन लागे कठिन पंथ देवी कौ देवी कौ।'

भैया सिंह टहाइ कजरी कौ,
बारह कोस बनहि बन कहिये सिंह टहाइ कजरी को।

तबई बेटा कहै 'सिहैं मारि जालिपा परसों, तौ बालुक जननी कौ' जाती कूं तौ मां के जौरे जानो होइ चौंकि मांऊ बाट जोइ रही ए-

मैया लेजु कसनि कसु डारि जियरा मेरौ तोई सों लगौ
परबत चढ़ि कै देखे मोरी माय जाती मेरौ कहाँ बिलमौ।

सब दिक्कतन लांघि कै जात्री मैया के मंदिर के जौरे पहुँच गयौ ए। मंदिर कैसौ ए जा बारे में जात्री कहि रह्यौ ए-

दुखहरनी मैया मेरौ दुख तुम न हरो,
काहे कौ मन्दिर मैया कौ ए दुखहरनी मैया
काहे के लागे चारों खम्भ,
सौने कौ मन्दिर मैया कौ, ए दुखहरनी मैया चंदन चारों खम्भ।
तोइ सुमरि मैया तेरौ छंद गाऊँ, दुखहरनी, मैया जज्ञ में होउ सहाई।

मां कूं लौंग भौत अच्छी लगै। जात्री मां के भवन में पौंच गयौ ए परि माँ नांय मिली। वू प्रार्थना करि रह्यौ ए, माँ भवनि मांहि आऔ मैं तो तोरी आसा सूँ आयौ हूँ-

एक बनु कहियत फूलनि कौ फूल रहे मेहकाय देवी जी विराजि रही बाई बन में।
एक बनु कहियत लोंगनि कौ लोंग रहीं मेहकाय देवी जी विराजि रही बाई बन में।

माँ लौंग के बन मांहि लकड़ी बीननु कूँ गई तासूं मंदिर मांहि नांय हति। एक-एक लकड़ी बीनि कै बानैं जूने सूं गठरी बाँधी, ताई बखत एक असुर आइ गयौ बानैं मां की सिगरी लकड़िया बिखेरि दीनीं। जाइ देखि कै मां नें अपने लांगुर बीर कूं आज्ञा दई-

नौ-नौ ठौंको कील दरदु नैंको मति करिओ।

असुर की चतुर नारि नैं अपने असुर कूं समझाइ कै मां के चरनतु में भेज दयो। असुर नें मां के चरन पलोटे, इक इक लकड़ी बीनि कै मां को गठरी बांधि दई। तब माँ पिघलि गई याकी सेवा सूं और कहिवे लगी-

सुनि रे लांगुरिया बीर असुर मेरे चरननु आयौ,
नौ नौ खैंची कील कसरि नैंको मति राखियो।

मां 'फूलनि की लोभिनियां ए जाई सूं नन्दन वन चली जाइ। याके दुआर पै खड़ौ अंधौ आँखि मांगि रह्यौ ए, कोढ़ी ठाड़ौ काया मांगि रह्यौ ए, बाँझ खड़ी है कै पूत मांगि रई ए अरु निरधनु धनु को पुकारि करि रह्यौ ए। मां अपने भवन में नांइ, लांगुर इतै-उतै देखि रह्यौ ए-

ना तेरी मैया सोइ गई है परि ना गयी धरती समाइ।
कनहिं जाती कैं होम रच्यौ ऐ परि मांह रि जगी सिव राति।
धुजा औ नारियल लौंग सुपारी जे मोपै दए ऐं चढ़ाइ
सौनें कौ दिवला कपूर की बाती परि आरति लइ है उतारि।

मां अपने भवन मांहि लौटि आई। सिगरे जात्री मंदिर के कपाट खुलिवे की कहि रहे ए। किवाड़ खुलि गए, जात्री देखि रह्यौ ए-

भमन में लटकि रहे फुंदना,
हरौ हरौ गुबरा पियरी सी मांटी तो रोजु लिपाऊँ अँगना,
नंगेउ पाइनि आमैं जाती अरे हाथ जगड़ा
नंगेउ पाइनि आमैं तिरआ तौ हात लऐ गड़ुआ
अरु लट छुटकामें मैया आमै गोद लऐ ललना।
कर दे जोरि के ठाड़े जती अरे देत गउंनि की दच्छिना।
तोइ सुमरि मैया तेरौ छंदु गाऊँ औखा मैं होउ सहाई।

जात्री नैं देवी कौ कन्या रूपु ऊ देखौ ए-'कन्या रूप भमानो मैंने आजु देखो', 'इस देवी के घर अगवारे, घर पिछवारे पीपर धर्म द्वारे' है।

देवी की पूजा के काजैं जात्री तरै-तरै की तैयारी करै। भक्त इस्त्री कहै कैं 'लेउ मैया मोरा, मैं कब की ठाड़ी।' अर 'ध्वजा-नारियल' अपने राजा सूं चढ़वावैं लाल, हीराउ संग मे चढ़वावै। मैया वर माँगिवे की कहि रई ए, इस्त्री कहि रई ए 'राज पाटु मैया तेरौ दऔ ऐ रजवै अमर करि दीओ, मैया कहै, 'जा धरती पै रानी कोई ना अमर है, रजवा अमर कैसे हुइ है।'

'अमर जलफदे की चुंदरी कहिए, अमर लंगुरिया की पगिया।'

जात करिकै जाती जब लौटें तौ वु बतावैं माँ का होय-

अंधेनु नेत्तर दै रही, कोढ़िन काया दै रही,
बाँझन पुत्तर दै रही, सुरति थाई देश की।

कैला देवी के दरबार में 'जोगिनी' अर 'लांगुरिया' बनि कै जाय। खुले भये केश, भूरौ भक्क, धौरौ व कै, हरी चूड़िन सूं हाथ भरे भये। नदी मांहि नहाय कै नारियल अरु पुजापा धाइके, देवी मैया के दर्सन व

चैत महीना के धुलेंड़ी अरु भैया दूज की चर्चा तौ करि चुके एं। अब बचि गयौ ऐ-बासौरौ, नौ दुर्गा,गणगौर, देवी आठें और रामनौमी। बासौरा सीतला सातैं कूं होइ अरु कछु सीतला आठैं कूं मनावैं। बासी सामान सूं सीतला माता पूजी जाय। जा दिना बासौ खानौं खायौ जाइ। ठंडौ खायौ जाइ।

चैत महीना की (सुक्ल पाख) पैले पखवारे की पड़वा सूं नयौ संमत सुरू होइ। जाई दिना सूं सरू होइ नौ दुर्गा। ब्रज की वैयरबानी आठ दिनान तक व्रत रखें फिर नौवें दिंना बाय खोलें। कछु तौ आठैं कूं देवी कौ पूजन करें अरु कछु नौमी कूं करें अरु कन्या लांगुराऊन कूं जिमामें । नौ दुर्गनि में जागन्नु होइ। भगत आवै, जागन्नु में माता की भेंट, मोहन दे, सुआ सेवरा, मोरंग दाने कौ जुज्झु, पलंका चढ़ाई, जगदेव अरु देवी के साहिले, अहिरामन लीला गावैं। तीज कूं गनगौरि कौ मेला भरै, पूजा होइ।

देवी के गीत द्वै तरियां गाये जांय। फुटकर गीतनि में देवी की प्रार्थना, स्तुति, पराक्रम कौ उल्लेख, स्थान तथा शोभा कौ वर्नन, जात की तैयारी अरु जात्रीयनि की कठिनाई गाई जाऐ।

इक जनानी अपने पति सूं कहै कै 'चालि पीया दोऊ मिलि जाये, परसें देवी जालिपा ओ माय।' पति जात कूं न जा पाइवे पै अपनी दिक्कत बतावै। पत्नी नें सब दिक्कतन कूं दूरि करिबे कौ समाधान बताइ दीयौ। चैत महीना में पंडित कूं बुलाइ कै पोथी देखि कै सनीचर की सातैं कूं चालिवौ तै है गयौ। पत्नी आंगन लीपि रई ए, मां चौक पूरि रई ए और भैन टीके की तैयारी करि रई है परि 'घर ही में बाबुल बरजन लागे कठिन पंथ देवी कौ देवी कौ।'

भैया सिंह टहाइ कजरी कौ,
बारह कोस बनहि बन कहिये सिंह टहाइ कजरी को।

तबई बेटा कहै 'सिहैं मारि जालिपा परसों, तौ बालुक जननी कौ' जाती कूं तौ मां के जौरे जानो होइ चोंकि मांऊ बाट जोइ रही ए-

मैया लेजु कसनि कसु डारि जियरा मेरौ तोई सों लगौ
परबत चढ़ि कै देखे मोरी माय जाती मेरौ कहाँ बिलमौ।

सब दिक्कतन लांघि कै जात्री मैया के मंदिर के जौरे पहुँच गयौ ए। मंदिर कैसौ ए जा बारे में जात्री कहि रह्यौ ए-

दुखहरनी मैया मेरी दुख तुम न हरो,
काहे कौ मन्दिर मैया कौ ए दुखहरनी मैया
काहे के लागे चारों खम्भ,
सौने कौ मन्दिर मैया कौ, ए दुखहरनी मैया चंदन चारों खम्भ।
तोइ सुमरि मैया तेरौ छंद गाऊँ, दुखहरनी, मैया जज्ञ में होउ सहाई।

मां कूं लोंग भौत अच्छी लगै। जात्री मां के भवन में पौंच गयौ ए परि माँ नांय मिली। वू प्रार्थना करि रह्यौ ए, माँ भवनि मांहि आऔ मैं तो तोरी आसा सूँ आयौ हूँ-

एक बनु कहियत फूलनि कौ फूल रहे मेहकाय देवी जी बिराजि रही बाई बन में।
एक बनु कहियत लोंगनि कौ लोंग रहीं मेहकाय देवी जी बिराजि रही बाई बन में।

माँ लौंग के बन मांहि लकड़ी बीननु कूँ गई तासूं मंदिर मांहि नांय हति। एक-एक लकड़ी बीनि कै बानें जूने सूं गठरी बाँधी, ताई बखत एक असुर आइ गयौ बानें मां की सिगरी लकड़िया बिखेरि दीनीं। जाइ देखि कै मां नें अपने लांगुर वीर कूं आज्ञा दई-

नौ-नौ ठौंकौ कोल दरदु नैंको मति करिओ।

असुर की चतुर नारि नैं अपने असुर कूं समझाइ कैं मां के चरननु में भेज दयो। असुर नें मां के चरन पलोटे, इक इक लकड़ी वीनि कैं मां की गठरी बांधि दई। तब माँ पिघलि गई याकी सेवा सूं औरु कहिवे लगी-

सुनि रे लांगुरिया वीरु असुर मेरे चरननु आयौ,
नौ नौ खैंचो कील कसरि नैको मति राखियो।

मां 'फूलनि की लोभिनियां ए जाई सूं नन्दन वन चली जाइ। याके दुआर पै खड़ौ अंधौ आँखि मांगि रह्यौ ए, कोढ़ी ठाड़ौ काया मांगि रह्यौ ए, बाँझ खड़ी है कैं पूत मांगि रई ए अरु निरधनु धनु को पुकारि करि रह्यौ ए। मां अपने भवन में नांइ, लांगुर इतै-उतै देखि रह्यौ ए-

ना तेरी मैया सोइ गई है परि ना गयी धरती समाइ।
कनहिं जाती कैं होम रच्यौ ऐ परि मांह रि जगी सिव राति।
धुजा औ नारियल लौंग सुपारी जे मोपै दए ऐं चढ़ाइ
सौने कौ दिवला कपूर की वाती परि आरति लइ है उतारि।

मां अपने भवन मांहि लौटि आई। सिगरे जात्री मंदिर के कपाट खुलिये को कहि रहे ए। किवाड़ खुलि गए, जात्री देखि रह्यौ ए-

भमन में लटकि रहे फुंदना,
हरौ हरौ गुवरा पियरी सी मांटी तो रोजु लिपाऊँ अँगना,
नंगेउ पाइनि आमैं जाती अरे हाथ जगड़ा
नंगेउ पाइनि आमैं तिरआ तौ हात लऔ गडुआ
अरु लट छुटकामें मैया आमै गोद लऔ ललना।
कर दे जोरि के ठाड़े जती अरे देत गउनि की दच्छिना।
तोइ सुमरि मैया तेरौ छंदु गाऊँ औखा मैं होउ सहाई।

जात्री नैं देवी कौ कन्या रूपु ऊ देखौ ए-'कन्या रूप भमानी मैंनै आजु देखी', 'इस देवी के वरु अगवारे, वरु पिछवारे पीपर धर्म द्वारे ' है।

देवी की पूजा के काजैं जात्री तरै-तरै की तैयारी करै। भक्त इस्त्री कहै कै 'लेउ मैया वीरा, मैं कब की ठाड़ी।' अरु 'ध्वजा-नारियल' अपने राजा सूं चढ़वावैं लाल, हीराउ संग में चढ़वावै। मैया वरु माँगिवे को कहि रई ए, इस्त्री कहि रई ए 'राज पाटु *मैया तेरौ दऔ ऐ रजवै अमर करि दीओ, मैया कहै, 'जा धरती पै रानी कोई ना अमर है, रजवा अमरु कैसे हुइ है।'*

'अमर जलफदे की चुंदरी कहिए, अमरु लंगुरिया की पगिया।'

जात करिकै जाती जब लौटे तौ वु बतावैं वाँ का होय-

अंधेनु नेत्तर दै रहो, कोढ़िन काया दै रहो,
बाँझन पुत्तर दै रहो, सुरति याई देश की।

कैला देवी के दरबार में 'जोगिनी' अरु 'लांगुरिया' बनि कैं जाय। खुले भये केश, भूरो भक्क, धौरो कोरो धोवती पहिन कै, हरो चूड़िन सूं हाथ भरे भये। नदी मांहि नहाय कै नारियल अरु पुजापा चाढ़इके, देवी मैया के दर्सन करिके बाल संवारै,

ये है जोगिनीयाँ। सिर पै लाल टोपी, हाथ मैं लाल धुजा, ये है लांगुरिया। भक्ति भाव सूँ परिपूरन कैला मैया के दरबार मैं पहुँचि कै गावे लगै-

दुनियाँ में रोशन का नाम करौली वाली कैला का,
दूर दूर से जात्री आए, सुनि-सुनि तेरो नाम, करोली वाली कैला का।
पीकर मद का प्याला भवानी मैया सिंह चढ़ी।
कैला रानी सिंह चढ़ी पीकर मद का प्याला,
खड़्ग, खप्पर, कृपाण हाथ में और सम्भाले भाला।
भवानी मैया सिंह चढ़ी पीकर मद का प्याला,
वामन, भैरौ, छप्पन, कलुआ हनुमत है मतवाला
भवानी मैया सिंह चढ़ी रखिया बन में दानव मारे,
वहे रक्त का नाला,
भवानी मैया सिंह चढ़ी राजा नल की भई सहाई
कर दिया बोल वाला, भवानी मैया सिंह चढ़ी।

कैला मैया करौली राजवंस की कुल देवी ए। विनकौ जस चारों ओर फैलि रह्यौ ए। राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, दिल्ली अरु महाराष्ट्र तक के लोग लुगाई जोगिनी अरु लांगुरिया वनि कै मां के दरबार में आवैं। दरबार में आवे के बखत वे सुधवुध खोइ कै मतवाले बनि जाएं, लोकलाज कूं त्याग कै चंग अरु नगाड़ेनु पैं फिरकनी सी फिरी उठैं, सास ससुर की लाज नांय, मैया-याप सूं दुराव नायं, अपने पराये कौ भान नांय। मैया कौ भक्ति भाव कछु ऐसे ए-

जोगिन चलै मरोड़ा चाल, दिखाई रंग जवानी को,
मूर्ख सोसनी मन नहीं भावे रंग बसन्ती उड़ता जावे
जात करन को चली ओढ़ि, दुपट्टा रंगधानी को
जोगिन चलै मरोड़ा चाल, जोगिन में चढ़ रही जवानी
जात करन को दीवानी, रूप सह्यौ नहीं जाए दीवानी को।
जोगिन चले मरोड़ा चाल।

जव दुर्गा मैया की यात ब्रज में करैं तौ 'लांगुरिया' अपने ई आपु आ जाइ। म्हौं पै सिन्दूर, सरीर पै लाल कपड़ा, पैरनु में पंसरी अरु कमरि में गलगला अरु घूँघरा ऐसौ ए जि लांगुरिया। राति कौ जागन्नु होइ, जात होइ लांगुरिया सबसूं आगे।

लांगुरिया सूं जव जाति पूछी तौ कहिवे लगौ, 'वम्मन के हम बालका, उपजे तुलसी पेड़, 'लांगुर की मैया सोचति ऐ के यू कछु नांय खाइ परि यू' वारा वाल्टी मदु पियै सौ रे वोकरा खाइ।' लांगुर मैया कौ बड़ौ प्यारौ ए, विनकौ सहायक ए, अरु आज्ञाकारीउ ए। देवी मैया कौ पूत हैवे के कारन भक्त वाकी सेवा करिवौ करै। एक भक्त तौ सारे दिना गांजौं पिलावै, 'मेरो चिलम भरत दिन जाइ लांगुरिया बड़ौ पिवैया गाँजे कौ।' 'जोगिन-भक्तिन तरै तरै सूं लांगुरिया कूं रिझावे- 'कबऊँ कारी चुंदरिया में दाग न लगइयो लांगुरिया'। कहके सावधान करै। कवऊँ मक्कर वनाइ जाइ-

ए लांगुरिया तेरी धन खाइ लई कारे नाग नें,
अरे ए लाँगुरिया कछु खाई, कछु डसि लई, और कछु मारी फुसकारि
अरु
'मोय भयौ ऐ पीरिया रोग लांगुरिया नारी तौ दिखाइयो काऊ वैद कूँ।'

याखर माँहि घूमते देखि जोगिनि पूछिवे लगीं 'काहे आयौ मेरी याखर में वताय दे लांगुर मोय।' अरु रस्ता में देखि न्यौतो दियो कै- 'चरखी चल रही वर के नीचे रस पी जा लांगुरिया'। जव लांगुरिया नें जोगिनी सूं पूछौ तो जवाव मिलौ-'कैला मइया ने वुलाई जय आई लांगुरिया।' जय प्रेम जादा दिखै तव कहिवे लागी 'हम लुटिया तुम डोर सरक चलौ जाई वन में।' परि रूसिवे पै यै-

करि लीए दूसरौ ब्याउ लांगुरिया मेरे भरोसे मति रहियो।
मोइ लीपि न आवै लीपनौ और काढ़ि न आवै चूंट
मोइ पीसि न आवै पीसिनौ और डारि न आवै कौरू
मोइ राँधि न आवै राँधनौ और मोइ परसि न आवै थारू।

मालिनी सूं पूछी कै जि मूँदरा किन नै गढ़वायौ ए, लांगुर नैं गढ़वायौ ए, हाथनु की मैहँदी लांगुर नै रचाई ए, तेरी गोद के लला की छवि लांगुर पै जाय। तब मालिनी अपनौं भावु नांय छिपाय सकौ और कहिबे लगी-

ना काऊ के घर गई ना मैनें लीयौ बुलाइ। अनौखी मालनियां
रस कौ बोध्यौ लांगुरा, आइ गयौ मेरी सेज। अनौखी मालनियां

लांगुरिया जोगिनीनि के बीच में कूदतो-फांदतो मिलैगो जा तरियां-

दो दो जोगिनी के बीच अकेलौ लांगुरिया
एक जोगिनी यों कहे तू चूड़ला ला दे मोय
दूजी जोगनी यों कहै तू नथ गढ़वा दे मोय।

समसामयिक चीज अरु भाउ लांगुरिया के माध्यम सूं सबके सामने आ जाए, उजागर होय। सिंगार के संग कछु और ऊ ऐ-

लांगुर दसमी फेल बिचारौ जोगन भई एम. ए. पास।
कपड़ा छोटे तंग पहरती गिटपिट गिटपिट करे है

सुन्दर बड़ी बू मन में बनती, भोरो बलम बनाय लियो वाने पल में अपनो दास
डीजल फिर फिर मेंहगौ होय
फसल कैसे होयगी लांगुरिया।

जात करिवे वारी दीवानी अरु मतवाली जोगिनीनि कौ सबई भावनायें मैया के दरबार मांहि सिमट कै समुद्र की तरियाँ हिलोरें लैं, जगै कम पड़ि जाये, नाचु और गानेनि के बीच मौंकौ आंगन चौक थोड़ौ परि जाय। तब सबई लोगन के मन में जि विचार आवै-

दे दे लम्बौ चौक लांगुरिया, बरस दिना में आमेंगे
अबकी तो हम इकले आये, अबकी जोड़े से आयेंगे।
दे दे लम्बौ चौक लांगुरिया, अबकी तो हम जोड़े ते आये,
अबकी लला ऐ लावेंगे दे दे लम्बो चौक लांगुरिया
अबकी तो लाला ऐ लाए, अबकी बहुवै लावेंगे
दे दे लम्बौ चौक लांगुरिया

आखिर जि लांगुर या लांगुरिया को ए। डा. विद्यानिवास मिश्र कैला मैया के संग लांगुरिया कौ सम्बन्ध वैदिक इन्द्रानी अरु रिसा के सम्बन्ध की याद कौ स्मरन दिवाइबे वारौ मानैं। डॉ. मनोहर शर्मा कौ मानिबौ ए कै राजस्थान में 'माता' के सेवक भैरव कूं 'लूकड़ियौ' कह्यो जाय, जो हिमाचल प्रदेस के 'लौकड़ा' सूं मिलतौ जुलतौ ए। जिय नांउ ब्रज में 'लांगुर' के रूप में प्रचलित ए। डॉ. सत्येन्द्र मानैं कै कैलादेवी के मन्दिर के सामनैं लांगुर कौ मन्दिर ऐ। लांगुर की मूर्ति वास्तव में हनुमान जी की ऐ। लांगुर ज्यौं कौ त्यौं हनुमान ऐ। अब संका के लिए कोई गुंजायस नांय कै लांगुर की व्युत्पत्ति 'लांगुल' सब्द सौं भई है।

-भगवती निलयम्
1 त 2, जवाहर नगर, जयपुर

❑

ये है जोगिनीयाँ। सिर पै लाल टोपी, हाथ मैं लाल धुजा, ये है लांगुरिया। भक्ति भाव सूँ परिपूरन कैला मैया के दरबार मैं पहुँचि कै गावे लगै-

दुनियाँ में रोशन का नाम करौली वाली कैला का,
दूर दूर से जात्री आए, सुनि-सुनि तेरो नाम, करोली वाली कैला का।
पीकर मद का प्याला भवानी मैया सिंह चढ़ी।
कैला रानी सिंह चढ़ी पीकर मद का प्याला,
खड़ग, खप्पर, कृपाण हाथ में और सम्भाले भाला।
भवानी मैया सिंह चढ़ी पीकर मद का प्याला,
बामन, भैरौ, छप्पन, कलुआ हनुमत है मतवाला
भवानी मैया सिंह चढ़ी रखिया वन में दानव मारे,
वहे रक्त का नाला,
भवानी मैया सिंह चढ़ी राजा नल की भई सहाई
कर दिया बोल बाला, भवानी मैया सिंह चढ़ी।

कैला मैया करौली राजवंस की कुल देवी ए। विनकौ जस चारों ओर फैलि रह्यौ ए। राजस्थान, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, दिल्ली अरु महाराष्ट्र तक के लोग लुगाई जोगिनी अरु लांगुरिया वनि कै मां के दरबार में आवैं। दरबार में आवे के बखत वे सुधबुध खोइ कै मतवाले वनि जाएं, लोकलाज कूं त्याग कै चंग अरु नगाड़ेनु पैं फिरकनी सी फिरी उठैं, सास ससुर की लाज नांय, मैया-वाप सूं दुराव नायं, अपने पराये कौ भान नांय। मैया कौ भक्ति भाव कछु ऐसे ए-

जोगिन चलै मरोड़ा चाल, दिखाई रंग जवानी को,
मूर्ख सोसनी मन नहीं भावे रंग बसन्ती उड़ता जावे
जात करन को चली ओढ़ि, दुपट्टा रंगधानी को
जोगिन चलै मरोड़ा चाल, जोगिन में चढ़ रही जवानी
जात करन को दीवानी, रूप सह्यौ नहीं जाए दीवानी को।
जोगिन चले मरोड़ा चाल।

जब दुर्गा मैया की बात ब्रज में करैं तौ 'लांगुरिया' अपने ई आपु आ जाइ। म्हौं पै सिन्दूर, सरीर पै लाल कपड़ा, पैरनु में पंसरी अरु कमरि में गलगला अरु घूँघरा ऐसौ ए जि लांगुरिया। राति कौ जागन्नु होइ, जात होइ लांगुरिया सबसूं आगे।

लांगुरिया सूं जब जाति पूछी तौ कहिवे लगौ, 'वम्मन के हम वालका, उपजे तुलसी पेड़, 'लांगुर की मैया सोचति ऐ के यू कछु नांय खाइ परि यू' वारा वाल्टी मदु पियै सौ रे वोकरा खाइ।' लांगुर मैया कौ बड़ौ प्यारौ ए, विनकौ सहायक ए, अरु आज्ञाकारीउ ए। देवी मैया कौ पूत हैवे के कारन भक्त वाकी सेवा करिवौ करै। एक भक्त तौ सारे दिना गांजौ पिलावै, 'मेरो चिलम भरत दिन जाइ लांगुरिया वड़ौ पिवैया गाँजे कौ।' 'जोगिन-भक्तिन तरैं तरैं सूं लांगुरिया कूं रिझावे- 'कबऊँ कारी चुंदरिया में दाग न लगइयो लांगुरिया'। कहके सावधान करै। कवऊँ मक्कर वनाइ जाइ-

ए लांगुरिया तेरी धन खाइ लई कारे नाग नें,
अरे ए लाँगुरिया कछु खाई, कछु डसि लई, और कछु मारी फुसकारि
अरु
'मोय भयौ ऐ पीरिया रोग लांगुरिया नारी तौ दिखाइयो काऊ वैद कूँ।'

वाखर मांहि घूमते देखि जोगिनि पूछिवे लगीं 'काहे आयौ मेरी वाखर में वताय दे लांगुर मोय।' अरु रस्ता में देखि न्यौतो दियो कै- 'चरखी चल रही वर के नीचे रस पी जा लांगुरिया'। जब लांगुरिया नें जोगिनी सूं पूछौ तो जवाव मिलौ-'कैला मइया ने बुलाई जब आई लांगुरिया।' जब प्रेम जादा दिखै तब कहिवे लागी 'हम लुटिया तुम डोर सरक चलौ जाई वन में।' परि रूसिवे पै यै-

करि लीए दूसरौ ब्याउ लांगुरिया मेरे भरोसे मति रहियो।
मोइ लीपि न आवै लीपनौ और काढ़ि न आवै घूंट
मोइ पीसि न आवै पीसिनौ और डारि न आवै कौरू
मोइ रांधि न आवै रांधनौ और मोइ परसि न आवै धारू।

मालिनीं सूं पूछी कै जि मूंदरा किन नै गढ़वायौ ए, लांगुर नैं गढ़वायौ ए, हाथनु की मैहंदी लांगुर नै रचाई ए, तेरी गोद के लला की छवि लांगुर पै जाय। तब मालिनी अपनौं भावु नांय छिपाय सकी और कहिवे लगी-

ना काऊ के घर गई ना मैनें लीयौ बुलाइ। अनौखी मालनियां
रस कौ बीध्यौं लांगुरा, आइ गयौ मेरी सेज। अनौखी मालनियां

लांगुरिया जोगिनींनि के बीच में कूदतो-फांदतो मिलैगो जा तरियां-

दो दो जोगिनी के बीच अकेलौ लांगुरिया
एक जोगिनी यों कहे तू चूड़ला ला दे मोय
दूजो जोगनी यों कहै तू नथ गढ़वा दे मोय।

समसामयिक चीज अरु भाउ लांगुरिया के माध्यम सूं सबके सामने आ जाए, उजागर होय। सिंगार के संग कछु और ऊ ऐ-

लांगुर दसमी फेल विचारौ जोगन भई एम. ए. पास।
कपड़ा छोटे तंग पहरती गिटपिट गिटपिट करे है

सुन्दर बड़ी बू मन में बनती, भोरो बलम बनाय लियो वाने पल में अपनो दास
डीजल फिर फिर मेंहगौ होय
फसल कैसे होयगी लांगुरिया।

जात करिवे वारी दीवानी अरु मतवाली जोगिनींनि की सबई भावनायें मैया के दरबार माहि सिमट कै समुद्र की तरियाँ हिलोरे लैं, जगै कम पड़ि जाये, नाचु और गानेंनि के बीच मॉकौ आंगन चौक थोड़ौ परि जाय। तब सबई लोगन के मन में जि विचार आवै-

दे दे लम्बौ चौक लांगुरिया, बरस दिना में आमेंगे
अबकी तो हम इकले आये, अबकी जोड़े से आयेंगे।
दे दे लम्बौ चौक लांगुरिया, अबकी तो हम जोड़े ते आये,
अबकी लला ऐ लावेंगे दे दे लम्बो चौक लांगुरिया
अबकी तो लाला ऐ लाए, अबकी बहुवै लावेंगे
दे दे लम्बौ चौक लांगुरिया

आखिर जि लांगुर या लांगुरिया को ए। डा. विद्यानिवास मिश्र कैला मैया के संग लांगुरिया कौ सम्बन्ध वैदिक इन्द्रानी अरु रिसा के सम्बन्ध की याद कौ स्मरन दिवाइवे वारौ मानैं। डॉ. मनोहर शर्मा को मानिवौ ए कै राजस्थान में 'माता' के सेवक भैरव कूं 'लूकड़ियौ' कहो जाय, जो हिमाचल प्रदेस के 'लौकड़ा' सूं मिलतौ जुलतौ ए। जिय नांउ ब्रज में 'लांगुर' के रूप में प्रचलित ए। डॉ. सत्येन्द्र मानैं कै कैलादेवी के मन्दिर के सामनै लांगुर कौ मन्दिर ऐ। लांगुर की मूर्ति वास्तव में हनुमान जी की ऐ। लांगुर ज्यौं कौ त्यौं हनुमान ऐ। अब संका के लिए कोई गुंजायस नांय कै लांगुर की व्युत्पत्ति 'लांगुल' सब्द सौं भई है।

-भगवती निलयम्
1 व 2, जवाहर नगर, जयपुर

ब्रज-लोकगीत अरु बरसाने की होरी

-श्रीमती सन्तोष महे

भारतीय संस्कृति की अनुपम भेंट है हमारौ प्यारौ ब्रज प्रदेश। या प्रदेश में अनुराग भक्ति की सरिता निरंतर प्रवाहित है रई ए। जे कारन है कि यहां की भूमि कूं ब्रह्मा, विष्णु, महेश ऊ शत शत नमन करैं और ऐसी ही महान है यहां की ब्रज भाषा। जे ऐसी भाषा है कि यामें साहित्य व लोकजीवन कौ चित्रन अत्यन्त रस सौं परिपूर्ण है।

ब्रज-लोकगीत अपनी मधुरता के कारन सबई कूं आकर्षित करकें अपनी मधुरता के रस में डुबोइलें हैं। प्रचलित लोक-गीतन में रसिया, लांगुरिया, हिंडोला, सावन और होरी आदि प्रमुख हैं। अधिकांस गीतन में श्री राधिका जी और श्री कृष्ण महाराज की भिन्न भिन्न रोचक लीलान कौ वर्णन है जैसे बाल लीला, किसोर लीला आदि। नन्दलाल दही-दूध और माखन के बड़े प्रेमी हैं और राह चलती गोपीन सूं या तरियाँ कहें हैं-

ग्वालन दै मोल दही कौ
मोकूं माखन तनिक चखाय
आज मान लै बात हमारी
मटकी के दर्सन करवाय दे
च्यों राखी दुबकाय।

कन्हैया जी दधि माखन तो चाखें ही हैं संग में मटकाऊ ए फोड़ देय हैं। बेचारी ग्वालिन केवल यशोदा मैया कूँ उलाहनौ भर ही दै पावें-

जसोदा तेरे लाला नें
मेरी दई ए मटकिया फोर
दधिका मटका सिर पर रख कर
उठि धाई बड़े भोर
लूट लूट दधि मेरौ खायौ
मटकी दीनी फोर।

लाड़ली श्री राधा अपनी भोरी चंचलता में कह उठै-

जमुना किनारे मेरौ गांव
सांवरे आ जइयो
जमुना किनारे मेरी ऊंची हवेली

मैं ब्रज की गोपिका नवेली
राधा रंगीली मेरो नाम
कि बंसी बजाय जइयो।

ब्रज प्रदेस में गिर्राज महाराज की परिक्रमा की अधिक मान्यता है तबई तौ भक्तन नें इनकी महिमा या तरियां गाई ए-

तेरौ जनम सफल है जाए
लगाय लै रज ब्रज धाम की
काट दें पाप तेरे ब्रज राज
लगाय ले परिकम्मा गिरिराज की
बनें तेरे बिगरे सब काज।

करौली वारी कैला देवी की आराधना में लांगुरिया लोकगीतन कौ महत्व और प्रचलन भी कम नांऐं। भक्तिभाव की एक छटा या गीत में दिखाई पड़े-

करि लै दर्सन कैला मां के लांगुर
जनम सुफल है जाए
अपने भगत की मात भगवती
हरदम करै सहाय
दीनन के दुख हरती मैया कारज
देय बनाय॥ करि लै.....

प्रकृति नें वर्षा ऋतु कूं आमंत्रित कर लीयो है। घनघोर वर्षा है रही है और श्यामा प्यारी राधिका जी झूला पै झूल रही है-

झूले पे झूलें प्यारी राधिका जी
ए जी कोई गावत गीत मल्हार
नन्ही नन्ही बुंदिया मेहा बरस रह्यो जी,
एजी कोई बरसत मूसरधार
झूले पे झूलें प्यारी राधिका जी।

ब्रज प्रदेस की होरी को अपनी विशिष्ट परम्परा है। समूचे भारत सौं भक्तगन या पावन भूमि पै आध्यात्मिक मूल्य पै आधरित कृष्ण व राधा की प्रेम रंग भरी, लौकिक भावन सौं जुरी होरी कूं मनावे कूं मथुरा, वृन्दावन, नन्दगाम और बरसाने में इकट्ठे होवें हैं। मुझ सी अधम अज्ञान कूऊं वहां होरी मनायवे कौ दुर्लभ औसर प्राप्त है चुकौ ए। कछु भौतई प्रचलित होरी गीत है-

मेरे जोरें आ स्याम तोपे रंग डारूं
रंग तोपे डारूं गुलाल तोपे डारूं
अरे तेरे गोरे गोरे गाल गुलचा मारूं। मेरे जोरें....
उड़त गुलाल लाल भये बादर
अरे बरसाने आज मची होरी। मेरे जोरें.....
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि

ब्रज-लोकगीत अरु बरसाने की होरी

-श्रीमती सन्तोष महे

भारतीय संस्कृति की अनुपम भेंट है हमारौ प्यारौ ब्रज प्रदेश। या प्रदेश में अनुराग भक्ति की सरिता निरंतर प्रवाहित है रई ए। जे कारन है कि यहां की भूमि कूं ब्रह्मा, विष्णु, महेश ऊ शत शत नमन करैं और ऐसी ही महान है यहां की ब्रज भाषा। जे ऐसी भाषा है कि यामें साहित्य व लोकजीवन कौ चित्रन अत्यन्त रस सौं परिपूर्ण है।

ब्रज-लोकगीत अपनी मधुरता के कारन सबई कूं आकर्षित करकें अपनी मधुरता के रस में डुबोइलें हैं। प्रचलित लोक-गीतन में रसिया, लांगुरिया, हिंडोला, सावन और होरी आदि प्रमुख हैं। अधिकांस गीतन में श्री राधिका जी और श्री कृष्ण महाराज की भिन्न भिन्न रोचक लीलान कौ वर्णन है जैसे बाल लीला, किसोर लीला आदि। नन्दलाल दही-दूध और माखन के बड़े प्रेमी हैं और राह चलती गोपीन सूं या तरियाँ कहें हैं-

ग्वालन दै मोल दही कौ
मोकूं माखन तनिक चखाय
आज मान लै बात हमारी
मटकी के दर्सन करवाय दे
च्यों राखी दुबकाय।

कन्हैया जी दधि माखन तो चाखें ही हैं संग में मटकाऊ ए फोड़ देय हैं। बेचारी ग्वालिन केवल यशोदा मैया कूँ उलाहनौ भर ही दै पावें-

जसोदा तेरे लाला नें
मेरी दई ए मटकिया फोर
दधिका मटका सिर पर रख कर
उठि धाई बड़े भोर
लूट लूट दधि मेरौ खायौ
मटकी दीनी फोर।

लाड़ली श्री राधा अपनी भोरी चंचलता में कह उठै-

जमुना किनारे मेरौ गांव
सांवरे आ जइयो
जमुना किनारे मेरी ऊंची हवेली

मैं ब्रज की गोपिका नवेली
राधा रंगीली मेरो नाम
कि बंसी बजाय जइयो।

ब्रज प्रदेस में गिर्राज महाराज की परिक्रमा की अधिक मान्यता है तबई तौ भक्तन नें इनकी महिमा या तरियां गाई ए-

तेरौ जनम सफल है जाए
लगाय लै रज ब्रज धाम की
काट दें पाप तेरे ब्रज राज
लगाय ले परिकम्मा गिरिराज की
बनें तेरे बिगरे सब काज।

करौली वारी कैला दैवी की आराधना में लांगुरिया लोकगीतन कौ महत्व और प्रचलन भी कम नांऐं। भक्तिभाव की एक छटा या गीत में दिखाई पड़े-

करि लै दर्सन कैला मां के लांगुर
जनम सुफल है जाए
अपने भगत की मात भगवती
हरदम करै सहाय
दीनन के दुख हरती मैया कारज
देय बनाय॥ करि लै.....

प्रकृति नें वर्षा ऋतु कूँ आमंत्रित कर लीयो है। घनघोर वर्षा है रही है और श्यामा प्यारी राधिका जी झूला पै झूल रही है-

झूले पे झूले प्यारी राधिका जी
ए जी कोई गावत गीत मल्हार
नन्नी नन्नी बुंदिया मेहा बरस रह्यो जी,
एजी कोई बरसत मूसरधार
झूले पे झूले प्यारी राधिका जी।

ब्रज प्रदेस की होरी की अपनी विशिष्ट परम्परा है। समूचे भारत सौं भक्तगन या पावन भूमि पै आध्यात्मिक मूल्य पै आधरित कृष्ण व राधा को प्रेम रंग भरी, लौकिक भावन सौं जुरी होरी कूँ मनावे कूँ मथुरा, वृन्दावन, नन्दगाम और बरसाने में इकट्ठे होवें हैं। मुझ सी अधम अज्ञान कूऊं वहां होरी मनायवे कौ दुर्लभ औसर प्राप्त है चुकौ ए। कछु भौतई प्रचलित होरी गीत है-

मेरे जोरें आ स्याम तोपे रंग डारूं
रंग तोपे डारूँ गुलाल तोपे डारूँ
अरे तेरे गोरे गोरे गाल गुलचा मारूं। मेरे जोरें....
उड़त गुलाल लाल भये बादर
अरे बरसाने आज मची होरी। मेरे जोरें.....
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि

ब्रज-लोकगीत अरु बरसाने की होरी

-श्रीमती सन्तोष महे

भारतीय संस्कृति की अनुपम भेंट है हमारौ प्यारौ ब्रज प्रदेश। या प्रदेश में अनुराग भक्ति की सरिता निरंतर प्रवाहित है रई ए। जे कारन है कि यहां की भूमि कूं ब्रह्मा, विष्णु, महेश ऊ शत शत नमन करैं और ऐसी ही महान है यहां को ब्रज भाषा। जे ऐसी भाषा है कि यामें साहित्य व लोकजीवन कौ चित्रन अत्यन्त रस सौं परिपूर्ण है।

ब्रज-लोकगीत अपनी मधुरता के कारन सबई कूं आकर्षित करकें अपनी मधुरता के रस में डुबोइलें हैं। प्रचलित लोक-गीतन में रसिया, लांगुरिया, हिंडोला, सावन और होरी आदि प्रमुख हैं। अधिकांस गीतन में श्री राधिका जी और श्री कृष्ण महाराज की भिन्न भिन्न रोचक लीलान कौ वर्णन है जैसे बाल लीला, किसोर लीला आदि। नन्दलाल दही-दूध और माखन के बड़े प्रेमी हैं और राह चलती गोपीन सूं या तरियौं कहें हैं-

ग्वालन दै मोल दही कौ
मोकूं माखन तनिक चखाय
आज मान लै बात हमारी
मटकी के दर्सन करवाय दे
च्यों राखी दुबकाय।

कन्हैया जी दधि माखन तो चाखें ही हैं संग में मटकाऊ ए फोड़ देय हैं। बेचारी ग्वालिन केवल यशोदा मैया कूँ उलाहनौ भर ही दै पावें-

जसोदा तेरे लाला नें
मेरी दई ए मटकिया फोर
दधिका मटका सिर पर रख कर
उठि धाई बड़े भोर
लूट लूट दधि मेरौ खायौ
मटकी दीनी फोर।

लाड़ली श्री राधा अपनी भोरी चंचलता में कह उठै-

जमुना किनारे मेरौ गांव
सांवरे आ जइयो
जमुना किनारे मेरी ऊंची हवेली

मैं ब्रज की गोपिका नवेली
राधा रंगीली मेरी नाम
कि बंसी बजाय जइयो।

ब्रज प्रदेस में गिर्राज महाराज की परिक्रमा की अधिक मान्यता है तबई तौ भक्तन नें इनकी महिमा या तरियां गाई ए-

तेरौ जनम सफल है जाए
लगाय लै रज ब्रज धाम की
काट दें पाप तेरे ब्रज राज
लगाय ले परिकम्मा गिरिराज की
बनें तेरे बिगरे सब काज।

करौली बारी कैला देवी की आराधना में लांगुरिया लोकगीतन कौ महत्व और प्रचलन भी कम नांएें। भक्तिभाव की एक छटा या गीत में दिखाई पड़े-

करि लै दर्सन कैला मां के लांगुर
जनम सुफल है जाए
अपने भगत की मात भगवती
हरदम करै सहाय
दीनन के दुख हरती मैया कारज
देय बनाय॥ करि लै.....

प्रकृति नें वर्षा ऋतु कूँ आमंत्रित कर लीयो है। घनघोर वर्षा है रही है और श्यामा प्यारी राधिका जी झूला पै झूल रही है-

झूले पे झूले प्यारी राधिका जी
ए जी कोई गावत गीत मल्हार
नन्नी नन्नी बुंदिया मेहा बरस रह्यो जी,
एजी कोई बरसत मूसरधार
झूले पे झूले प्यारी राधिका जी।

ब्रज प्रदेस की होरी की अपनी विशिष्ट परम्परा है। समूचे भारत सौं भक्तगन या पावन भूमि पै आध्यात्मिक मूल्य पै आधरित कृष्ण व राधा की प्रेम रंग भरी, लौकिक भावन सौं जुरी होरी कूँ मनावे कूँ मथुरा, वृन्दावन, नन्दगाम और बरसाने में इकट्ठे होवें हैं। मुझ सी अधम अज्ञान कूऊं वहां होरी मनायवे कौ दुर्लभ औसर प्राप्त है चुकौ ए। कछु भौतई प्रचलित होरी गीत है-

मेरे जोरें आ स्याम तोपे रंग डारूं
रंग तोपे डारूँ गुलाल तोपे डारूं
अरे तेरे गोरे गोरे गाल गुलचा मारूं। मेरे जोरें....
उड़त गुलाल लाल भये बादर
अरे बरसाने आज मची होरी। मेरे जोरें.....
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि

ब्रज-लोकगीत अरु बरसाने की होरी

-श्रीमती सन्तोष महे

भारतीय संस्कृति की अनुपम भेंट है हमारौ प्यारौ ब्रज प्रदेश। या प्रदेश में अनुराग भक्ति की सरिता निरंतर प्रवाहित है रई ए। जे कारन है कि यहां की भूमि कूं ब्रह्मा, विष्णु, महेश ऊ शत शत नमन करैं और ऐसी ही महान है यहां की ब्रज भाषा। जे ऐसी भाषा है कि यामें साहित्य व लोकजीवन कौ चित्रन अत्यन्त रस सौं परिपूर्ण है।

ब्रज-लोकगीत अपनी मधुरता के कारन सबई कूं आकर्षित करकें अपनी मधुरता के रस में डुबोइलें हैं। प्रचलित लोक-गीतन में रसिया, लांगुरिया, हिंडोला, सावन और होरी आदि प्रमुख हैं। अधिकांस गीतन में श्री राधिका जी और श्री कृष्ण महाराज की भिन्न भिन्न रोचक लीलान कौ वर्णन है जैसे बाल लीला, किसोर लीला आदि। नन्दलाल दही-दूध और माखन के बड़े प्रेमी हैं और राह चलती गोपीन सूं या तरियाँ कहें हैं-

ग्वालन दै मोल दही कौ
मोकूं माखन तनिक चखाय
आज मान लै बात हमारी
मटकी के दर्सन करवाय दे
च्यों राखी दुबकाय।

कन्हैया जी दधि माखन तो चाखें ही हैं संग में मटकाऊ ए फोड़ देय हैं। बेचारी ग्वालिन केवल यशोदा मैया कूँ उलाहनौ भर ही दै पावें-

जसोदा तेरे लाला नें
मेरी दई ए मटकिया फोर
दधिका मटका सिर पर रख कर
उठि धाई बड़े भोर
लूट लूट दधि मेरौ खायौ
मटकी दीनी फोर।

लाड़ली श्री राधा अपनी भोरी चंचलता में कह उठै-

जमुना किनारे मेरौ गांव
सांवरे आ जइयो
जमुना किनारे मेरी ऊंची हवेली

मैं ब्रज की गोपिका नवेली
राधा रंगीली मेरो नाम
कि बंसी बजाय जइयो।

ब्रज प्रदेस में गिर्राज महाराज की परिक्रमा की अधिक मान्यता है तबई तौ भक्तन नें इनकी महिमा या तरियां गाई ए-

तेरौ जनम सफल है जाए
लगाय लै रज ब्रज धाम की
काट दें पाप तेरे ब्रज राज
लगाय ले परिकम्मा गिरिराज की
बनें तेरे बिगरे सब काज।

करौली वारी कैला दैवी की आराधना में लांगुरिया लोकगीतन कौ महत्व और प्रचलन भी कम नांऐं। भक्तिभाव की एक छटा या गीत में दिखाई पड़ै-

करि लै दर्सन कैला मां के लांगुर
जनम सुफल है जाए
अपने भगत की मात भगवती
हरदम करै सहाय
दीनन के दुख हरती मैया कारज
देय बनाय॥ करि लै.....

प्रकृति नें वर्षा ऋतु कूं आमंत्रित कर लीयो है। घनघोर वर्षा है रही है और श्यामा प्यारी राधिका जी झूला पै झूल रही है-

झूले पे झूले प्यारी राधिका जी
ए जी कोई गावत गीत मल्हार
नन्ही नन्ही बुंदिया मेहा बरस रह्यो जी,
एजी कोई बरसत मूसरधार
झूले पे झूले प्यारी राधिका जी।

ब्रज प्रदेस की होरी की अपनी विशिष्ट परम्परा है। समूचे भारत सौं भक्तगन या पावन भूमि पै आध्यात्मिक मूल्य पै आधरित कृष्ण व राधा की प्रेम रंग भरी, लौकिक भावन सौं जुरी होरी कूं मनावे कूं मथुरा, वृन्दावन, नन्दगाम और बरसाने में इकट्ठे होवें हैं। मुझ सौ अधम अज्ञान कूऊं बहां होरी मनायवे कौ दुर्लभ औसर प्राप्त है चुकौ ए। कछु भौतई प्रचलित होरी गीत है-

मेरे जोरें आ स्याम तोपे रंग डारूं
रंग तोपे डारूं गुलाल तोपे डारूं
अरे तेरे गोरे गोरे गाल गुलचा मारूं। मेरे जोरें....
उड़त गुलाल लाल भये बादर
अरे बरसाने आज मची होरी। मेरे जोरें.....
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि

ब्रज-लोकगीत अरु बरसाने की होरी

-श्रीमती सन्तोष महे

भारतीय संस्कृति की अनुपम भेंट है हमारौ प्यारौ ब्रज प्रदेश। या प्रदेश में अनुराग भक्ति की सरिता निरंतर प्रवाहित है रई ए। जे कारन है कि यहां की भूमि कूं ब्रह्मा, विष्णु, महेश ऊ शत शत नमन करैं और ऐसी ही महान है यहां की ब्रज भाषा। जे ऐसी भाषा है कि यामें साहित्य व लोकजीवन कौ चित्रन अत्यन्त रस सौं परिपूर्ण है।

ब्रज-लोकगीत अपनी मधुरता के कारन सबई कूं आकर्षित करकें अपनी मधुरता के रस में डुबोइलें हैं। प्रचलित लोक-गीतन में रसिया, लांगुरिया, हिंडोला, सावन और होरी आदि प्रमुख हैं। अधिकांस गीतन में श्री राधिका जी और श्री कृष्ण महाराज की भिन्न भिन्न रोचक लीलान कौ वर्णन है जैसे बाल लीला, किसोर लीला आदि। नन्दलाल दही-दूध और माखन के बड़े प्रेमी हैं और राह चलती गोपीन सूं या तरियाँ कहें हैं-

ग्वालन दै मोल दही कौ
मोकूं माखन तनिक चखाय
आज मान लै बात हमारी
मटकी के दर्सन करवाय दे
च्यों राखी दुबकाय।

कन्हैया जी दधि माखन तो चाखें ही हैं संग में मटकाऊ ए फोड़ देय हैं। बेचारी ग्वालिन केवल यशोदा मैया कूँ उलाहनौ भर ही दै पावें-

जसोदा तेरे लाला नें
मेरी दई ए मटकिया फोर
दधिका मटका सिर पर रख कर
उठि धाई बड़े भोर
लूट लूट दधि मेरौ खायौ
मटकी दीनी फोर।

लाड़ली श्री राधा अपनी भोरी चंचलता में कह उठै-

जमुना किनारे मेरौ गांव
सांवरे आ जइयो
जमुना किनारे मेरी ऊंची हवेली

मैं ब्रज की गोपिका नवेली
राधा रंगीली मेरो नाम
कि बंसी बजाय जइयो।

ब्रज प्रदेस में गिर्राज महाराज की परिक्रमा की अधिक मान्यता है तबई तौ भक्तन नें इनकी महिमा या तरियां गाई ए-

तेरौ जनम सफल है जाए
लगाय लै रज ब्रज धाम की
काट दें पाप तेरे ब्रज राज
लगाय ले परिकम्मा गिरिराज की
बनें तेरे बिगरे सब काज।

करौली वारी कैला दैवी की आराधना में लांगुरिया लोकगीतन कौ महत्व और प्रचलन भी कम नांऐं। भक्तिभाव की एक छटा या गीत में दिखाई पड़ै-

करि लै दर्सन कैला मां के लांगुर
जनम सुफल है जाए
अपने भगत की मात भगवती
हरदम करै सहाय
दीनन के दुख हरती मैया कारज
देय बनाय॥ करि लै.....

प्रकृति नें वर्षा ऋतु कूं आमंत्रित कर लीयो है। घनघोर वर्षा है रही है और श्यामा प्यारी राधिका जी झूला पै झूल रही है-

झूले पे झूले प्यारी राधिका जी
ए जी कोई गावत गीत मल्हार
नन्नी नन्नी बुंदिया मेहा बरस रह्यो जी,
एजी कोई बरसत मूसरधार
झूले पे झूले प्यारी राधिका जी।

ब्रज प्रदेस को होरी की अपनी विशिष्ट परम्परा है। समूचे भारत सौं भक्तगन या पावन भूमि पै आध्यात्मिक मूल्य पै आधरित कृष्ण व राधा की प्रेम रंग भरी, लौकिक भावन सौं जुरी होरी कूं मनावे कूं मथुरा, वृन्दावन, नन्दगाम और बरसाने में इकट्ठे होवें हैं। मुझ सी अधम अज्ञान कूऊं वहां होरी मनायवे कौ दुर्लभ औसर प्राप्त है चुकौ ए। कछु भौतई प्रचलित होरी गीत है-

मेरे जोरें आ स्याम तोपे रंग डारूं
रंग तोपे डारूं गुलाल तोपे डारूं
अरे तेरे गोरे गोरे गाल गुलचा मारूं। मेरे जोरें....
उड़त गुलाल लाल भये बादर
अरे बरसाने आज मची होरी। मेरे जोरें.....
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छवि

तन मन धन सब तोपे वारूं
राधे संग श्याम खेलें होरी राधे संग।
इत अगनित सखियन सगं राधे
उतऊ सखन श्यामऊ जोरी।
फाग समर आंगन वृन्दावन
मिले दोऊ दल झकझोरी
उड़त गुलाल लाल भये बादर
लाल लाल भई ब्रज खोरी। राधे संग.....

परम्परानुसार शिवरात्रि के दिना सौं बरसाने में होरी चौंपई राधा रानी मंदिर सौं प्रारम्भ हैकें अन्य स्थान कूं प्रस्थान करैं हैं। गहवर वन परिक्रमा, प्रियाकुंड पै स्नान के संगई होरी उत्सव कौ कार्यक्रम प्रारम्भ है जाए।

सप्तमी के दिना बरसाने सों एक सखी गुलाल की हंड़िया लैकें नन्दगांम श्री कृष्ण कूं होरी खेलवे कौ न्यौतो दैवे जाए है। दूसरे दिना अर्थात् अष्टमी कूँ श्री कृष्णा अपने एक सखा कूं बरसाने में होरी खेलवे की सूचना दैवे कूं भेजें हैं। जे सखा बरसाने की गलीन में कूदतौ नाचतौ होरी खेलतौ, और पकवान खातौ, लाड़ली जी के मंदिर में पहुंच जाए। वहां गोस्वामी परिवार के सांमई नाचै है। वा औसर पै जे पद गायो जाए–

नन्दगांव को पाण्डे ब्रज बरसाने आयौ
भरी होरी के बीच सजन समध्याने आयौ
अरे हां....हां......हो..................
पांडे जी के पांयन कूं हंस हंस सीस नवायो
अति उदार वृषभानुराय सम्मान करायौ
अरे हां.....हा...

समाज में प्रथा चली आ रही है कि लड्डू पेड़ान कौ भोग लगायो जाए है। जे लीला अति दुर्लभ दर्शनीय है। वृषभानुराय द्वारा श्री कृष्ण जी के दूत के सम्मान में गारी दैवे को प्रथा वहां के लोकजीवन व संस्कृति कौ परिचायक है। कवि नजीर-कृत गारी प्रस्तुत है–

नवरंग माय तिहारी लला नवरंग
समधिन समध्याने आये ये तो कीरती न्यौंति बुलाई लला
याकी चोटी लटके बाहर, छवि स्यौंपिन सी सटकारी लला
ये बड़े-बड़े महाराज, करजोर रहे ढिंग-ठाड़े लला।
ये मीर मुगल महाराज, याने छोड्यो नाहिं कोई लला।

या तरियां अत्यन्त उल्लास और प्रेमानन्द के बीच या अष्टमी की होरी कौ उत्सव सम्पन्न होवै है। नौमी कौ उत्सव सबसौं अधिक भाव-भक्ति पूर्ण अलौकिक सौ है। श्री राधा रानी की नगरी बरसाने के गोस्वामी जी कूँ राधा रानी की सखी भाव सूं भावोत्पन्न होय है।

चौंपई गाते भये, होरी गाते भये, ढप-ढोल, मृदंग, नगाड़ा, झांझ, झालरी, चंग, उचंग बजाते भये नाचते गाते गुलाल उड़ाते रंग सौं भरी पिचकारी चलाते नन्दगांव के गोस्वामीन की अगवानी व मोंह मुड़ाया करिवै प्रियाकुंड तक जावै है। वितकूं नन्दगांव के गोस्वामी ढाल पिचकारी लै गुलाल की फैंट कस कै श्री जी के मंदिर में आवे कूं आतुर होय हैं। प्रिया कुंड पै आकैं और भांग घोटते भये या गीत कूं गावें–

गहरे कर यार अमल पानी गहरे कर
ले चली है बरसाने तोको
होय मानपर अगवानी। गहरे कर.....
उड़द की दार गैंहुन के फुलका
ऊपर खांड खुरासानी। गहरे कर.....
पुरषोत्तम भृगु कुंवर लाड़लौ
तेरे मन की हम जानी। गहरे कर.....

फिर प्रथा पूरी कर कै आपस में गुलाल लगावैं। फिर कहें हैं आज रंग होरी है। 'कोई बुरो भलो मत मानो आज रंग ब्रज होरी है' कहते भये भीतर आवें। मंदिर श्री लाड़ली पै दोनों पक्षन के गोस्वामी बैठें और ये पद शुरू होवै-

अति रस सरस्यौ बरसाने जू
राजत रमणीक रवानें जू
जब दिन होरी को आयो जू
न्यौंतो नन्दगांव पठायौ जू
सुन कैं मनमोहन धाये जू
सब सखा संग लै आयो जू
श्री जसुमति न्यौंत बुलाई जू
समधिन समध्याने आई जू
जब कर गहि ढिंग बैठारे जू
गावे गारी ब्रज नारी जू

मंदिर में पूरी परम्परा है जावे पै सायं 6 बजे पश्चात , मंदिर सौं उतरि कैं भगवान श्री कृष्ण के सखा अपनी सुसज्जित ढाल लैकें लाल पीली गोटेदार पगड़ी बाँधे रंगीली गली में आ जाए हैं। बरसाने की ब्रज गोपिका सुसज्जित हैकैं आनन्द सौं भरपूर अपनी लाठीन कूं लैकें उनकी प्रतीक्षा में होय हैं।

–68/132, प्रतापनगर, सैक्टर हल्दी घाटी,

सांगानेर, (जयपुर)

ब्रज के लोकगीतन में पारिवारिक सन्दर्भ

-डॉ. त्रिलोकीनाथ 'प्रेमी'

यों तौ लोकजीवन अरु संस्कृति ते जुरी भई हैवे ते लोक साहित्य की सगरी विधा अपने आप मैं मधुर एवं आकरसक हांय पर लोक संगीत अरु आत्मानुभूति की संवेदना सरसता की विद्यमान्यताते लोकगीतन कौ रूप अरु प्रभाव अलंगई दीख परै। कानन मैं परतेई विनके मीठे वोल अरु लोक-संगीत के सुर हिये कूँ जैसें वाँध लैं। मन वरवस दूर ते आते विन सुरन की गैल में पग धरिवे लगै। तवी तौ लोकगीतन की चुम्बकीय छमता अनूठी होय। लोक मानस की अंत: सक्ति अरु सुन्दरता इनमैं लवालव भरी रहै अरु ये जन जीवन पै अविच्छिन्न रूपते छाए भए रहैं। इन लोकगीतन की अवाध धारा न कवहुँ अवरुद्ध होय अरु न कवहूँ टूटै। युगीन चेतना नए-नए संदरभनिते जोरिकैं इन्हैं औरऊ तीव्र वनावै। याई लियें इनकी अविच्छिन्न-अच्छुण्ण परंपरा में भूत, भविस्य, वर्तमान की विभाजक रेख नहीं वन सकी है अरु मौखिक-रूप मैं ये पीढ़ी दर पीढ़ी जीवित हैं। अनुभूति की गहराई अरु अभिव्यक्ति कौ प्रकृत संतुलन इनकी अपनी सुन्दरता है। लोकजीवन अरु संस्कृति कौ पूरौ वैभव इनमैं प्रतिविंवित होय। व्रज के लोक गीतऊ या विचारते अनूठे हैं। पारिवारिक जीवन के सम्वन्ध-संदरभ इनमैं यहाँ के परिवेस के अनुरूप व्यंजित भए हैं।

व्रज प्रदेस मूलत: गौ पालक अरु कृषि प्रधान प्रदेस रह्यौ है। आजऊ व्रज के गामन मैं अधिकांस लोगन की जीविका कौ आधार येई दो व्यवसाय हैं। इन दौनोंन के तांई एकाधिक आदमीन की जरूरत होय। संभवत: याई लियै ह्याँ संयुक्त परिवारनि की परम्परा रही है। वाखर अरु कुटम्बन के रूप मैं अवउ जे देखी जाय सकै। चूल्हे भलैंई अलग-अलग वन गये हॉय, पर कृषि अरु पसून मैं साझे की ई व्यवस्था देखी जाय। वाहर के कानन में पुरुषन कौ जितनौ दाइत्व होय, घर के भीतर महिलाई सव कछु होय। परिवार के सगरे सदस्य एक दूसरे के संग अनेक संवन्ध अरु रिस्तेन मैं वंधे रहैं। कोई अपने वड़प्पन की अधिकार लिप्सा मैं आवद्ध होय, तौ कोई मौन अपने कर्त्तव्य पालन मैं दत्तचित्त। कवहूँ कोई काऊ के प्रति सिकवा-सिकायत करै, तौ कोई काऊ पै रौव जमावै। कवहूँ कोई काऊते अपने तन मन की वात कहै, तो दूसरौ वाके सहारे अपनी स्वार्थ-पूर्ती कौ साधन खोजै। कहूँ कोई अपने छोटेपन मैं दवतौ चलौ जाय, तौ कहूँ कोई अपने वड़ेपन की ऐंठन में काऊ कूँ कछु समुझैई नहीं है। या प्रकार संयुक्त परिवार के सदस्य सर्वथा एकमत अरु परस्पर सहमत नहीं हॉय। आपस मैं खड़खड़ाइवे की प्रकृति याई कौ परिनाम है। कवहुँ प्यार अरु कवहुँ लराई व्रज के पारिवारिक जीवन की अपनी कहानी है। याई ते ह्याँ जे कहावत प्रचलित है-'चार वासन हुंगे तौ आपस मैं खनखनाविंगेई' अकेलौ आदमी कौनते लरैगौ अरु कौनते प्यार करैगौ? याई ते या संयुक परिवार व्यवस्था में एक ओर माहूँ ऐंसे सम्वन्ध पोषित हांय , जिनकौ आधार सहज सनेह अरु सास्वत अपनत्व होय, तौ दूसरी ओर माहूँ परस्पर व्यंग्य, कटाच्छ, स्वार्थ, आलस, अरु अंहकार के मारे इनके घनत्व नें दरार परिजाय, ऐसेऊ संवंध हॉय। पहले प्रकार के स्नेहिल प्रेममय अरु वात्सल्यपूर्ण संवन्धन मैं पिता-पुत्र, पिता-पुत्री, माता-पुत्र, माता-पुत्री, भइया-वहन, पति-पत्नी, एवं देवर-भाभी आदि के संवंध हैं। दूसरी तरह के संवंधन मैं परस्पर कटुता अरु तनाव की स्थिती वनी रहै-जैसे सास-वहू, ननद-भौजाई, दूयौरानी-जिठानी, अरु सहपत्नी आदि के संवंध। सांस्कृतिक अरु अन्यान्य औसरन पै

एवं रितुपरक लोकगीतन मैं इनकौ यथार्थ-जथावत रूप देख्यौ जाय सकै। नीम अरु मिसरी कौ संग-संग कर औपन अरु मिठास ब्रज के इन पारिवारिक संबंधन को निजी विसेसता है। लोकगीत काऊ भाषा, योलो अरु अंचल के क्यों न होंय, जी यिनकेई सामर्थ है कै सामाजिक-पारिवारिक जीवन ते जुरे भये अनेकानेक संबंधन एवं सन्दरभन के बाहर-भीतर के तन-मन के कहने-अनकहने, खट्टे-मीठे, मुक्त-प्रमुक्त, देखे-अनदेखे, प्रतच्छ-परोच्छ अरु अपने-पराये सग तरह के मार्मिक साँचे कथ्यन कूँ, अनुभव अरु अनुभूतीन कूँ सहज-सरल अरु सरस-संगीतात्मक भाषा में व्यंजित कर दें। फिर ब्रज की भाषा-बोली की तौ लोच-लावण्यई कछु और है। इन सन्दरभन कूँ ह्याँ के लोक-गीतन मैं निम्न रूप मैं आँक्यौ जाय सकै-

पिता और पुत्र-पुत्री के संबंध-सन्दाभ-

बुढ़ापे कौ सहारौ अरु परिवार की बेल कूँ बढ़ाइवे के मारें पुत्र कौ अपनौ अलगई महत्व होय। फिर बाके बिना अंतिम गति हूँ नहिं होय। तबई तौ बाप बेटा के तांईं सब कछु करै। 'खोटौ पइसा अरु खोटौ बेटा समै पै काम आवै' जो कहावत याई ते प्रसिद्ध है। पर ब्रज के लोकगीतन मैं बाप-बेटा के संबंधन को चरचा नहिं मिलै। अनेक लोक-कथानकन मैं जरूर याकौ निरूपन भयौ है।

बेटा की तुलना मैं बेटी कौ जनम बाप के तांईं बितनौं सुखद नहीं होय। बेटी पराई धरोहर होय। कुमारी अवस्था मैं ई याके ब्याह की चिंता बाँकू घेरबे लगै। न जाने कहाँ-कहाँ बाय झुकवे कूँ बिवस होनौ परै। फिरऊ, बाप के हिये मैं बाके तांईं प्यार दुलार को कमी नहीं होय। बेटी के ब्याह के समै जो सहज प्यार उमड़बे लगै-

> मैया नैं दीने अन-धन कंगना, बाबुल नैं दीनों दहेज।
> मैया के रोये नदी बहति है, बाबुल के रोए सागर-ताल।

ब्याह के लोकगीत-

ब्याह के औसर पै बेटी की विदा बेला मैं जो लोकगीत गायौ जाय, बाय सुनिकैं तौ करेजौ जैसै फटिबे लगै, करुना कौ उद्रेक सबकी आँखिन कूँ भिगोय दे-

> काहे कूँ जनमी ए धीय रे, सुन बाबुल मेरे।
> हम तौ रे बाबुल तेरे खूँटा की गैया
> जित हाँकौ हँक जांय रे ॥ सुन... ॥
> हमतौ रे बाबुल तेरे पिंजरा की चिरियाँ-
> जब खोलौ उड़ि जांय रे ॥ सुन... ॥

मैया-बेटा के संबंध-सन्दरभ-

माँ-बेटा के संबंध की चरचा ब्रज-लोकगीतन मैं अनेक स्थलन पै मिलै। यौं बेटा-बेटी दोनों एकई कोख ते जनम लें और मैया समान प्रसव-पीड़ा सहन करै। फिरऊ, बेटा के तांईं बाके हिये मैं अगाध सनेह होय। आखिर बिना बेटा के वो निपूती हैवे ते घर-परिवार अरु बाहर सर्वत्र अपमानित होय। सास-ननद के तीखे बोलन कूँ सहन करै अरु पतिहू बाय परित्यक्त कर देय। बिना बेटा की मैया कौ जैसे कछु अस्तित्वऊ नाँहि। बाकी कोख की सारथकता तौ पुत्रवती हैवे मैंई है। बिना बेटा के बाप जीवन भर रोतौई परै-'बाग मैं पपइया बोलै, बिना पुत्तर की मइया रोवै' बेटा कूँ जनम न दैवे ते बाके भागई फूट जांय-'मेरे फूटे भाग पूत मेरी गोद न आयौ।' बेटा के अभाव की वेदना जनमभर कचोटती रहै, तबी तौ वो देवी मइया ते एकई पुत्र के तांईं बेर-बेर याचना करै-

> मोय दै मइया दूध अरु पूत
> तेरी सेवा मैं बलि-बलि जाऊँ

ब्रज के लोकगीतन में पारिवारिक सन्दर्भ

-डॉ. त्रिलोकीनाथ 'प्रेमी'

यों तौ लोकजीवन अरु संस्कृति ते जुरी भई हैवे ते लोक साहित्य की सगरी विधा अपने आप मैं मधुर एवं आकरसक होंय पर लोक संगीत अरु आत्मानुभूति की संवेदना सरसता की विद्यमान्यताते लोकगीतन कौ रूप अरु प्रभाव अलगई दीख परै। कानन मैं परतेई विनके मीठे चोल अरु लोक-संगीत के सुर हिये कूँ जैसें बाँध लैं। मन बरबस दूर ते आते विन सुरन की गैल में पग धरिवे लगै। तवी तौ लोकगीतन की चुम्बकीय छमता अनूठी होय। लोक मानस की अंत: सक्ति अरु सुन्दरता इनमैं लवालव भरी रहै अरु ये जन जीवन पै अविच्छिन्न रूपते छाए भए रहैं। इन लोकगीतन की अबाध धारा न कवहुँ अवरुद्ध होय अरु न कवहूँ टूटै। युगीन चेतना नए-नए संदरभनिते जोरिकैं इन्हैं औरऊ तीव्र बनाबै। याई लियें इनकी अविच्छिन्न-अच्छुण्ण परंपरा में भूत, भविस्य, वर्तमान की विभाजक रेख नहीं बन सकी है अरु मौखिक-रूप मैं ये पीढ़ी दर पीढ़ी जीवित हैं। अनुभूति की गहराई अरु अभिव्यक्ति कौ प्रकृत संतुलन इनकी अपनी सुन्दरता है। लोकजीवन अरु संस्कृति कौ पूरौ वैभव इनमैं प्रतिबिंबित होय। ब्रज के लोक गीतऊ या विचारते अनूठे हैं। पारिवारिक जीवन के सम्बन्ध-संदरभ इनमैं यहाँ के परिवेस के अनुरूप व्यंजित भए हैं।

ब्रज प्रदेस मूलत: गौ पालक अरु कृषि प्रधान प्रदेस रह्यौ है। आजऊ ब्रज के गामन मैं अधिकांस लोगन की जीविका कौ आधार येई दो व्यवसाय हैं। इन दौनोंन के तांईं एकाधिक आदमीन की जरूरत होय। संभवत: याई लियै ह्याँ संयुक्त परिवारिन की परम्परा रही है। वाखर अरु कुटम्बन के रूप मैं अवउ जे देखी जाय सकै। चूल्हे भलैंई अलग-अलग बन गये होंय, पर कृषि अरु पसून मैं साझे की ई व्यवस्था देखी जाय। बाहर के कामन में पुरुषन कौ जितनौ दाइत्व होय, घर के भीतर महिलाई सब कछु होय। परिवार के सगरे सदस्य एक दूसरे के संग अनेक संबन्ध अरु रिस्तेन मैं बंधे रहैं। कोई अपने बड़प्पन की अधिकार लिप्सा मैं आवद्ध होय, तौ कोई मौन अपने कर्त्तव्य पालन मैं दत्तचित्त। कवहूँ कोई काऊ के प्रति सिकवा-सिकायत करै, तौ कोई काऊ पै रौब जमावै। कवहूँ कोई काऊते अपने तन मन की बात कहै, तो दूसरौ बाके सहारे अपनी स्वार्थ-पूर्ती कौ साधन खोजै। कहूँ कोई अपने छोटेपन मैं दवतौ चलौ जाय, तौ कहूँ कोई अपने बड़ेपन की ऐंठन में काऊ कूँ कछु समुझैई नहीं है। या प्रकार संयुक्त परिवार के सदस्य सर्वथा एकमत अरु परस्पर सहमत नहीं होंय। आपस मैं खड़खड़ाइवे की प्रकृति याई कौ परिनाम है। कवहुँ प्यार अरु कवहुँ लराई ब्रज के पारिवारिक जीवन की अपनी कहानी है। याई ते ह्याँ जे कहावत प्रचलित है-'चार वासन हुंगे तौ आपस मैं खनखनाविंगेई' अकेलौ आदमी कौनते लरैगौ अरु कौनते प्यार करैगौ? याई ते या संयुक्त परिवार व्यवस्था में एक ओर माहूँ ऐसे सम्बन्ध पोषित होंय, जिनकौ आधार सहज सनेह अरु सास्वत अपनत्व होय, तौ दूसरी ओर माहूँ परस्पर व्यंग्य, कटाच्छ, स्वार्थ, आलस, अरु अंहकार के मारे इनके घनत्व में दरार परिजाय, ऐसेऊ संबंध होंय। पहले प्रकार के स्नेहिल प्रेममय अरु वात्सल्यपूर्ण संवन्धन मैं पिता-पुत्र, पिता-पुत्री, माता-पुत्र, माता-पुत्री, भइया-बहन, पति-पत्नी, एवं देवर-भाभी आदि के संबंध हैं। दूसरी तरह के संबंधन मैं परस्पर कटुता अरु तनाव की स्थिती बनी रहै-जैसे सास-बहू, ननद-भौजाई, दूर्यौरानी-जिठानी, अरु सहपत्नी आदि के संबंध। सांस्कृतिक अरु अन्यान्य औसरन पै

एवं रितुपरक लोकगीतन मैं इनकौ यथार्थ-जथावत रूप देख्यौ जाय सकै। नीम अर मिसरी की संग-संग करऔरन अर मिठास ब्रज के इन पारिवारिक संबंधन की निजी विसेसता है। लोकगीत काऊ भाषा, बोली अर अंचल के च्यों न होंय, वो विनकी सामर्थ है कै सामाजिक-पारिवारिक जीवन ते जुरे भये अनेकानेक संबंधन एवं सन्दरभन के बाहर-भीतर के तन-मन के कहने-अनकहने, खट्टे-मीठे, मुक्त-प्रमुक, देखे-अनदेखे, प्रतच्छ-परोच्छ अर आगे-पाछे सब तरह के मार्मिक साँचे कथ्यन कूँ, अनुभव अरु अनुभूतीन कूँ सहज-सरल अर सरस-संवेदात्मक भाव मैं ध्वनित कर दें। फिर ब्रज की भाषा-बोली की तौ सोच-लावण्यई कछु और है। इन सन्दरभन कूँ ह्याँ के लोक-गीतन मैं निम्न रूप मैं आँक्यौ जाय सकै-

पिता और पुत्र-पुत्री के संबंध-सन्दरभ-

बुढ़ापे कौ सहारौ अरु परिवार की बेल कूँ बढ़ाइबे के मारें पुत्र कौ अपनौ अलग्ई महत्व होय। फिर बाके बिना अंतिम गति हूँ नहिं होय। तबई तौ बाप बेटा के तांई सब कछु करै। 'खोटौ पइसा अर खोटौ बेटा सनै पै काम आवै' जो कहावत याई ते प्रसिद्ध है। पर ब्रज के लोकगीतन मैं बाप-बेटा के संबंधन की चरचा नहिं मिलै। अनेक लोक-कथानकन मैं जरूर याकौ निरूपन भयौ है।

बेटा की तुलना मैं बेटी कौ जनम बाप के तांईं वितनौं सुखद नहीं होय। बेटी पराई धरोहर होय। कुमारी अवस्था मैं ई बाके ब्याह की चिंता वाँकू घेरबे लगै। न जाने कहाँ-कहाँ वाय झुकवे कूँ विवस होनौ परै। फिरऊ, बाप के हिये मैं बाके तांई प्यार दुलार की कमी नहीं होय। बेटी के ब्याह के समै जो सहज प्यार उमड़वे लगै-

> मैया नैं दीने अन-धन कंगना, बाबुल नैं दीनों दहेज।
> मैया के रोये नदी बहति है, बाबुल के रोए सागर-ताल।

ब्याह के लोकगीत-

ब्याह के औसर पै बेटी की बिदा बेला मैं जो लोकगीत गायौ जाय, वाय सुनिकैं तौ करेजौ जैसै फटिबे लगै, करना कौ उदरेक सबकी आँखिन कूँ भिगोय दे-

> काहे कूँ जनमी ए धीय रे, सुन बाबुल मेरे।
> हम तौ रे बाबुल तेरे खूँटा की गैया
> जित हाँकौ हँक जांय रे ॥ सुन... ॥
> हमतौ रे बाबुल तेरे पिंजरा की चिरियाँ-
> जब खोलौ उड़ि जांय रे॥ सुन... ॥

मैया-बेटा के संबंध-सन्दरभ-

माँ-बेटा के संबंध की चरचा ब्रज-लोकगीतन मैं अनेक स्थलन पै मिलै। यौं बेटा-बेटी दोनों एकई कोख ते जनम लें और मैया समान प्रसव-पीड़ा सहन करै। फिरऊ, बेटा के तांई बाके हिये मैं अगाध सनेह होय। आखिर बिना बेटा के वो निपूती हैवे ते घर-परिवार अरु बाहर सर्वत्र अपमानित होय। सास-ननद के तीखे बोलन कूँ सहन करै अरु पतिहू वाय परित्यक्त कर देय। बिना बेटा की मैया कौ जैसे कछु अस्तित्वऊ नाँहि। बाकी कोख की सारथकता तौ पुत्रवती हैवे मैंई है। बिना बेटा के वाय जीवन भर रोनौई परै-'बाग मैं पपइया बोलै, बिना पुत्तर की मइया रोबै' बेटा कूँ जनम न दैवे ते बाके भाग्यई फूट जांय-'मेरे फूटे भाग पूत मेरी गोद न आयौ।' बेटा के अभाव की वेदना जनमभर कचोटती रहै, तबी तौ वो देवी मइया ते एकई पुत्र के तांई बेर-बेर याचना करै-

> मोय दै मइया दूध अरु पूत
> तेरी सेवा मैं बलि-बलि जाऊँ

तेरी पूजा मैं कन्या जिमाऊँ
काहे के काजैं मइया धजा-नारियल
काहे के काजैं मइया दौनन मेवा?
दूध के तांई मइया धजा-नारियल
पूत के तांईं मइया दौनन मेवा।

वेटा तेई तौ परिवार चलै और वेटा की वहू ते घर के आंगन की सोभा होय-

घूँघरू पहिरन्ते पुत्र हमारे
रुनक-झुनक डोले कुल-वहू
मैं वारी जाऊँ।

मइया की गोद मैं वेटा हैवे पै तौ वाकौ रूप-सौन्दर्यई खिल उठै-

रेसम की सारी जव नीकी लागै
गोदी में ललना होय।

मइया वेटा के स्नेहिल संवंध कौ जी रूप जनम के समै सोहर, जच्चा अरु छटी के लोकगीतन मैं बड़ौ सुघरता-सरसता और मार्मिकता के संग चित्रित भयौ मिलै। वेदना, करुना अरु आनन्द की ऐसी अनूठी तिरवैनी दूसरे लोक सन्दरभन में नहिं दीख परै।

मइया-वेटी के संवंध-सन्दरभ-

यों तौ मइया लोकजीवन मैं वेटा कूँई अधिक सनेह करै, पर वेटी के तांईऊ वाके हिये मैं थोरी जगह नहिं होय। सजातीय अरु पराई धरोहर हैवे ते वो तुरंत वेटी के प्रति द्रवीभूत है जाय। ससुराल मैं कष्टन की परिकल्पना मात्र ते वाकौ हियौ भर उठै। व्याह ते पहलैंऊ वेटी घर-गृहस्थी मैं मइया के हर काम मैं साझीदार वनी रहै। हर पल कौ जी साहचर्य का यौंई भुलायौ जाय? तवई तौ वेटी के ससुराल जाइवे पै दोनों एक-दूसरे के तांई याद मैं फड़फड़ावैं। विवाह के समै विदा की डोली चलिवे पै मइया कौ करेजौ फटिवे लगै, आँसून की नदी वहिवे लगै-'मैया के रोये नदी वहति है।' ससुराल मैं वेटी के कष्ट के समाचार सुनिकैं तौ घर मैं जैसें तूफानई आय जाय। वाप अथवा भइया कूँ पाइ के मइया सान्त होय। जव तक वे नहीं लौटें, द्वार पै पल-पल राह निहारौ करै। मां की ममता की जी तरलता लोक-जीवन की विभूति है। वेटी के तांई ऊ मइया के रहते मायकौ वनौ रहै, ता-पीछैं तौ नैहर कौ भावई कम हैतौ चलौ जाय। सावन मैं झूला परतेई वेटी कूँ मायकौ याद आइवै लगै, नित्त काऊ न काऊ वुलौआ की वाट देखी जाय। ससुर की ऊँची अटारी पै चढ़िकैं वाय देखिवे कौ प्रयास कितनौ स्नेहसिक्त अरु सहज स्वाभाविक है-'ऊंची अटारी ससुरजी की तैं चढ़ि देखत वाट।'

ससुराल मैं वेटा कूँ जनम दैवे पै 'पछ' नामक लोकाचार के तांईं वाय सवते पहलै मइयाई याद आवै। छत्त पै वैठे कऊआ कूँ उड़ाती भई वो कह उठै-

उड़ि-उड़ि काग सुलच्छने कहियो मेरी माय तै
धीयरली मांगै खीचरी।

मायके मैं वेटी की न कोई मान-मर्यादा है अरु न अस्मिता, जैसे व्याह पीछै ऊ मइया के रहते वो वाके खेलवे कौ आंगन है कै गुड़ियान कौ व्याह रचाइवे कौ मनचाह्यौ स्वच्छन्द परिवेश। तवई तौ गाँव के नऊआ के संग विना वुलाये चलिवे कूं तैयार है जाय-'नउआ के चलूंगी तिहारेई संग वदनि पूरि है गई'। वाके विचार मैं मइयाई पिरथवी कौ सवते वड़ौ सत्त है,

कारन, वोई तौ जनम दे-'था जन जरमु दिखाइए'। मां-बेटी कौ जो सास्वत संबंध लोक मैं बड़ौ बेजोड़ अरु अतुलनीय है। बेटी कूं जनम दैकैं यो सबते पहलै अपनी कोख कूं 'सुलच्छनी' बनावै-'मैं तौ जनूंगी पहलैं धीय री, मेरी जो कोख होय सुलच्छनी'। वाय ब्याह के जोग देखिकैं मैया प्रसन्नऊ होय कै बेटी को बरात आवैगी अरु पालकी पै चढ़िकैं वाकौ साजन आवैगौ-

> जाकी गरजत आवैगी बरात री
> पालकी चढ़ि आवै साजना।

पर, ब्याह के समै चढ़ाई के औसर पै संदेह अरु विकल्पनते मइया कौ हियौ भर उठै तौ विदा के समै करुना कौ उद्रेक वाय सराबोर कर देय। सनेह अरु करुना के संगम पै या छिन न जानें कितने जाने अनजाने संचारी-भावन कौ अवतार है जाय? ममता अरु वात्सल्य मैं डूबी मैया कौ पेट अरु घर दोनोंई रीते है जाऐं। जमाई के तांई वाके हिय में अनन्य सनेह एवं वात्सल्य होय, तौऊ या समै अन्यथा भाव कौ उदय बड़ौ नैसर्गिक होय-

> मेरौ घरऊ रितौ अरु पेट री
> मेरी धीयरी जमइया लै चलौ।

भइया-बहन के संबंध-सन्दरभ-

परिवार मैं मैया-बेटी के पावन अरु सास्वत संबंध के पीछैं बहन-भइया कौ संबंध बड़ौ पवित्र एवं स्नेहिल होय। छोटी-बड़ी सगरी बहन भैया के तांई प्राण दैं। भइया के अभाव मैं सलूने अरु भैया दौज जैसे त्यौहारन पै बहन को आँख आँसून ते भीज जांय। बिना भैया के न तौ ससुराल मैं वाकौ मूल्यांकन होय और न मायकौ आगे चलै। एक भइया के तांईं वो अनेक देवी-देवतान अरु पीर-पैगंबरन ते मिन्नत करै। सलूनेन के त्यौहार पै राखी-बन्धन के सहारे बहन अपनी जीवन सुरच्छा को भार भइया कूँ सौंप कैं निश्चिंत है जाय। ससुराल मैं भइया कूं आयौ देखि कैं खुसीते फूल उठै। सावन के लगते ही वो वाके आगमन की बाट जोहवे लगै। अपने बीरान कूं निहारवे कौ उछाह वाय कबहूं द्वार पै तौ कबहूं भीतर, कबहूं ऊपर छत पै तौ कबहूं नीचें नैंकु टिकनई नहिं देय अरु आयवे पै तौ महमानी कौ ठिकानौई नांय। मामाकूं देखिकैं छोरा छोरीन कौ प्रसन्नताऊ सीमाकूं तोर दे-

> मामा लिबाबे आयौ ऐ मां
> पूरी पुआ करि लै री मां
> छबरिया मैं भरि कै धर दै री मां॥

सावन के दिनान में पूरी पुआ की महमानी ब्रज संस्कृति कौ अपनौ लावण्य है। ब्याह मैं भात के समै भइया की याद बहन कूं बरबस आय जाय। भात नौंतवे पै वो वाय दिन मैं आयवे के तांई आमंत्रित करै, जाते वाके वैभव कूं ससुराली जन भली तरह देख सकैं-

> सिदौसी अइयो भातई
> मेरे बाबुल के हाथी झूमने
> झूमैं-झूमैं रे जमइया दरबार॥ सिदौसी........
> मेरे बिरन के घोड़ा हींसने
> हींसैं हींसैं रे बहनोई दरबार॥ सिदौसी........

बहन कूं भलौ इतने तेई संतोष कैसें होय? आखिर, मायके की प्रतिष्ठा अरु नाक कौ प्रश्न है। तबई तौ पहिरावनी के

तांई सबके कपड़ान कौ नाम लै-लैकें संकेत करै-

भइया रघुवीर! भात घनेरौ लइयो।
मेरी सास कूँ लंहगा लइयो, ससुर कूं पाग पिछौरा,
गरे बिच लइयो जंजीर।

फिर, बहन-भइया की आत्मीयता कौ भाव दौनौन कूं अलगई नहिं हौन देय। भइया के बड़प्पन तेई तौ बहन ससुराल मैं सिर उठावै। वाकौ भइया कोई ऐसौ-वैसौ थोरई है, वो तौ राजा हजारी है, तबी तौ रथ की झंकार के संग बाके आयबे की कहै-

राजा हजारी मेरौ भातई,
अइयो अइयो रे रथ की झंकार।

आयबे पै सहेली,द्यौरानी-जिठानी एवं परौसिनन के संग देखिबे कूं दौर जाय-'मेरौ छोटौ भतैया भात लैकें आयौ, चलौ देख आमैं।' पर, बिना भइया की बहन के तांई जी औसर बड़ौ दु:खद है जाय। बाके पुरे भए चौक सूने रह जायें-'मोकूँ को पहरावै भात बिरन बिन सूने चौक परे हैं।'

याई तरह भईया-दौज कौ पर्व ब्रज-संस्कृति की अनूठी धरोहर है। बहन भइया के माथे पै तिलक करिकैं बाके मंगल की कामना करै। मथुरा के बिसराम घाट पै हाथ पकरि कै संग-संग नहाइबेते बहन-भइया दोनौंन के जम के बंधन टूट जांय। या पावन त्यौहार पै बहन आनंद ते फूल उठै अरु भइया कूं काऊ देस कौ राजा हैवै की असीस देय-

दौज पुजै मेरौ मन हँसै, हियरा हिलोरे लेय।
हाथी के हौदा मेरौ भइया चढ़ै
दै मेरी बहन असीस दै-राजा तौ हूजै काऊ देस कौ॥

पति-पत्नी के संबंध-सन्दरभ-

परिवार अरु परिवारते इतर जितने संबंध एवं रिस्ते हैं, इनमैं पति-पत्नी कौ संबंध सबते अलगई है। इनके बीच कछुई छिप्यौ नहिं रहै। परस्पर एक दूसरे कूं पायकै निहाल है जांय। दाम्पत्य जीवन के स्नेहपूर्ण संबंधन के अनेक संदरभ ब्रज के लोकगीतन मैं जगह-जगह मिलैं। रति-भाव के संग दौनोंन मैं मित्रता अरु अन्योन्याश्रितता कौ भाव पल-पल जुरौ भयौ रहै। पत्नी कौ रूप-सौन्दर्य एवं मन कौ उछाह पति के संगई तौ निखरै-

गोरी कैं कजरा जब खुलै, वाकौ बालम निरखै आइ।
मुख भरि बतियाँ तब खुलैं, जब बालम हँस बतराइ।
बजने बिछिया तब खुलैं, जब बालम निरखै चाल।

जल भरबे गई पत्नी की अंतरंग भावनान के अनेक अछूते संदरभ आखिर पिया के साहचर्य की ई कामना करैं-

जल भरूँ हिलोरे लेइ, डोरी रेसम की।
रेसम की डोरी जब नीकी लागै, सोने की गगरी होय।
सोने की गगरी जब नीकी लागै, पतरी कमरिया होय।
पतरी कमरिया जब नीकी लागै, सोने की तगड़ी होय।
सोने की तगड़ी जब नीकी लागै, रेसम की साडी होय।

रेसम की साड़ी जय नीकौ लागै, गोदी में ललना होय।
गोदी मैं ललना जय नीकौ लागै, संग मैं बलमा होय।

पति-पत्नी कौ संबंध तौ दूध-पानी की तरह होय। अपने आप कूं पति के रूप मैं तदाकार-एकाकार करिबे मैं ई तौ बाके जीवनकी सुन्दरता है-

1. तार मैं तार सितारा, मैं तारा होती।
   तुम बादर मैं चंदा, मैं तारई होती
   सिर बन्ने के साफा, मैं कलंगी होती।
   कान बन्ना के बाला, मैं मोती होती।
2. आज मेरैं अनंद बधाए जी राज।
   मैं तौ खोलूंगी डिब्बा, पहरूंगी गहने जी राज।
   पहिर दिखाऊं छोटी बाईजो के बीरा जी राज।

गर्भावस्था में अपनी मन की इच्छा पूर्ति के तांई पत्नी पतिते ई तौ कहै-'सईयाँ मोकूँ बेर मँगाउ मन चालौ खट्टे बेरन पै'। सपने मैं कौमरी देखिबे पै बिन्नैं बँटबाइबे को हठ करै-

सो राजा मेरे सोइ गई नींद सुनींद-
सपने मैं, सपने मैं देखी कौमरी जी महाराज।
सो राजा मेरे पीतर के टोकना मँगाउ-
चना की, चना की डारूं कौमरी जी महाराज।

रन मैं जैसें तलवार चमकै, जल मैं मछरिया अरु घोड़ा पै पिया की पगड़ी, बैसेंई सेज पै प्रिया की माथे की बिन्दी सुसोभित होय-

जल मैं चमकै जल की मछरिया, रन चमकै तरवार रे। ,
घोड़ा पै चमकै पिय की पगड़िया, सेजिया पै बिंदिया हमार रे।

ब्याह के पीछैं तो दौनोंन कौ अलग रहिबौ असंभव सौ है जाय। पत्नी तौ बिना गौने के लिवा लै जाइबे के तांई संदेस भेजै,-मायकौ बाय उड़-उड़कैं खायबे लगै-

मोय पीहर उड़ि-उड़ि खाय लंगुरिया।
अब ना रहूँगी मइया-बाप कै।
जाय कहौ मेरे बलम ते, मोय बिन गौने लै जाय॥

उभरते यौवन मैं पति की याद बड़ी मनौवैज्ञानिक है-'मोय याद बलम की आवै, मेरौ जोबन झोंका खावै।' पिया के बिना बाकौ जोबन पीरौ परि गयौ है अरु इतने पैऊ पपैया 'पीउ-पीउ' की रट लगावै। बिरह की मारी बिचारी कौन के तांई सिंगार भरै, पति तौ परदैस गयौ है-

मेरे बलम गये कलकत्ता, पिय बिन जीवन पीरौ पत्ता।
मैं कौन पै करूं सिंगार, पपइया बोली बोलै।।

आखिर, पति तौ जल है, बाके अभाव मैं 'पीरे पत्ता' हैबे की बात बड़ी संवेदनापरक है। सावन के बरसते दिनान मैं अकेलीपन सांयमांय बड़ी भारी है जाय। तबई तौ परदेस ते पति कूं बुलायबे के तांई बो संदेस भेजै।'लहरिया' नाम के सावन

के लोकगीत मैं जी संवेदना देखेई यनै-

पाँच टका दऊँगी गाँठिके, है कोई लस्कर जाय, लहरिया-
सब रंग भीजै धन की डोरिया।

परिवारी जन जब पति कूं चाकरी के तांईं परदेस भेजिवे की तैयारी कर दैं, तौ पत्नी की प्रतिक्रिया परिवार की मरयादाईए तोर दे, सावन के या लोकगीत के नाटकीय संवाद मैं पत्नी के हिये कूं निकास कैं धरदे-

किन त्यारौ घोड़ा भँवरजी! कसि दियौ जी।
ऐजी कोई, किन त्याहरी कसि दई जीन-
किनके कहे ते भँवर चाले चाकरी जी।
सहेलने नैं घोड़ा गोरी मेरौ कसि दियौ जी-
ऐजी कोई भइयाजी नैं कसि दई जीन-
बाबुल कहे ते चाले चाकरी जी।
सहेलने पै परियो बीजुरी जी-
ऐजी कोई भइयाजी कूं खइयो कारौ नाग-
भँवर बिछोयौ ससुरजी कर दियौ जी।

पति के सनेह कौ छप्पर पत्नी कूं सदा सुरच्छित रक्खै अरु बाहरी पानी के प्रभावते बचातौ रहै। सावन मैं पुराने छप्पर के ब्याज ते प्रौढ़ावस्था कौ संदर्भ भारतीय दाम्पत्य प्रेम की सारथकता के निमित्त बड़ौ बेजोड़ अरु भावात्मक बन्यौ है या लोकगीत मैं-

छप्पर पुराने मेरे पिया है गये जी,
कोई तरकन लागे हैं बाँस,
अब घर आइजा धन के साहिबा जी। (सावन के गीत)

तन ते ऊपर मन के सूच्छम प्रेमपरक भाव कौ जी संस्पर्श अनूठौ है। नई-नवेली बहू कौऊ इन दिनान मैं ब्याह की पहली साल मैं हरियाली तीजन पै प्रिय कौ सोगी लैकें आइबे की आसा मैं बाट जोहिवे कौ सन्दरभ दम्पत्ति की अंतर्भावना ते जुरौ भयौ है-

अरी बहना तीजन कौ आयौ त्यौहार,
बालम तौ लामैं सोहगी।
तीहर तौ लामैं मोकूं रेसमी
अरी बहना, जंफर पै अजब बहार।

ब्रज के इन लोकगीतन मैं पति-पत्नी के मध्य के रति अरु संभोग के सन्दरभऊ बड़ी मार्मिकता, व्यंजना-वक्रता के संग व्यक्त भए हैं-

'अंधिरिया दइया झूकन लागी रे।'

परस्पर हास-परिहास की अवस्था इनके बीच बड़ी मोहक अरु उद्दीपक होय। याते जीवन मैं मिठास की अनुभूति होय तौ आत्मीयता कौ भावऊ समृद्ध होय। गाँव कौ खेतिहर पति जब सहरी पत्नी के आगें बड़प्पन की डींग मारै तौ पत्नी तुरंत नैला पै दैहला मार दे-

बरबंड बलम त्याहरौ देस तुम! सेखी मोते मत मारौ।
हाथ खुरपिया मैंनें त्याहरे देखौ, भजि-भजि कैं खोद रहे घास तुम...॥

पर, मसखरे सुभाव की पत्नी तौ पति कूं खूब चलावै-

'बदलऊंगी बलमा तोय, काऊ जुलफनवारे छैला ते।'

जी बदलबे की बात तौ 20वीं सदी के अंत कौ प्रभाव है सकै, पर एक अन्य लोकगीत में तौ पत्नी बिचारे पति कूं तनै छुअनउ नहिं दे, रह-रह कैं तरसावै-

जुबना एँ छुअन नाएं दऊँगी
बलमा तोय मारूँगी तरसाय कैं।
लहँगा पहरि ओढ़नी ओढ़ी
सलूजा पहिरौ बनाय कैं।
सलूजा भीतर चोली पहिरी
ढोला ते छिपाय कैं॥ बलमा......

पर, जी मसखरीऊ जब पति की बेदना कौ कारन बन गई, तौ पत्नी हैकैं पति कूं बेहाल कैसें देख सकै। जौ तौ हास-परिहास हतौ। तुरंत व्यवस्था करै-'सासुल ते लाई दुबकाइ, दही कौ बैला लाई रे'। अपनी गलती कूं स्वीकारै अर पति कूं स्वस्थ करिबे के तांई दूधन की व्यवस्था करै-

पीरे परि गए, अब न सताऊँ बलमा,
तोय तीनों दूध पियाऊँ बलमा।
अरे गाय, भैंस, बकरी मिलमा॥ पीरे.......

गइया-भैंस अरु बकरिया के दूधन कूं मिलायकैं पति कूं तन-मन ते स्वस्थ करिबे की गहराई के मरम कूं पति-पत्नी समझ सकैं।

निचिंत अवधि के पीछें लौट आयबे की कहकैंऊ जब पति नहिं लौटै, तौ पत्नी के विरह कातर हिये की पीड़ा अर बाकी अभिव्यक्ति में अनेक भावनान के उतार-चढ़ाव कौ अहसास कोई स्वकीयाई करि सकै। एक संग आक्रोस अरु नमन, प्रेम अरु खीझ, तकरार अरु उपालंभ न जानें अन्तःकरन में कब-कब कौ रकौ भयौ ज्वार फूट परै-

मेरे पान रहे री कुम्हलाइ, नारंगी झोका लै रहीं।
खुद तौ अबई न आयौ बेईमान, छैला तौ धर गयौ दौज कौ।

पति-पत्नी के कोमल एकनिष्ठ प्रेम की जी बिसेसता बड़ी भावपरक है। ब्रज के लोकगीतन 'बारहमासा' की छटा और अनुभूतीन की मार्मिकता बाईते देखेई बनै। प्रकृति के बदलते परिवेस में अरु तीज-त्यौहारन के औसर पै पति की स्मृति बिरहिनी के हिये कूं झकझोर दे-

स्याम बिना मोय कल न परै री।
माघ मास रितु आयौ बसंत, अजहुँ न आयौ पिया तेरौ अंत।
लिखौं कैसें पाती को लैकैं जाय, को निरमोही कूं बतावै समुझाय।
फागुन मैं सब घोरें अबीर, मैं कैसें घोरूं बिन जदुबीर।

जरौं जैसें होरी उठत जैसें लूक, विरह अगिन तन दीन्हौं है फूँक।
चैत मास वन फूले हैं फूल, हमरौ बलम हमें गयौ है भूल।
सावन मास मैं हरियर रूख, हमरौ कँवल गयौ पिया विन सूख।
भादौं मास गरब गंभीर, हमरे नैंन भरि आये हैं नीर।
जिया मेरौ डूबै उतराय, हमरौ खिवैया परदेसन छाय।

पति-पत्नी के मध्य के इन कोमल अरु मधुर संवंधन के संग-संग, कछु करुए अरु तीखे सन्दरभऊ इनमैं मिलैं। ब्रज के लोकगीतन मैं विनकीऊ व्यंजना देखेई वनै। अपने नैहर के तांईं प्रत्येक नारी में अत्यधिक अपनेपन अरु बड़प्पन कौ भाव भर्यौ भयौ रहै, तवी ह्वाँ की थोरीऊ निन्दा याते सहन नहिं होय। मायके कौ गौरव वाकी जवान पै सदा बोलतौ रहै। झूठ बोल कैं ऊ यो वाकी रच्छा करै। आखिर, मायके के आगें ससुराल की गरिमाई कहा है-

दिन अरु रात तहाने मारौ, तिहारी मढ़इया फूटी।
मेरे मायके मैं देख न आऔ, सीस महल सी कोठी।

खान पानमैं ऊ ससुराल की अवमानना करिवे मैं वो नहिं चूकै-

मेरे पीहर मैं जलेवी रसदार, चना के लडुआ को खावै।

पति की अस्मिता याते खंडित होय, परस्पर कटुता कौ भाव उत्पन्न होय। पति जब सपत्नी लाइबे की धमकी दे, तौ पत्नी जोस मैं दूसरे व्याह की वात कहै है-

करि लीजो दूसरौ व्याह लंगुरिया,
मेरे भरोसे इकलौ मत रहियो।
पीस न आवै मोपै पीसनौ अरु डार न आवै मोपै कौर।
राँध न आवै मोपै राधँनौ अरु परस न आवै मोपै थार।

अरु दूसरौ व्याह करि लैवे पै वो अपनी जीवन लीलाइऐ समाप्त करिवे कूँ तैयार है जाय-

'मरूँगी जहर विस खाय, ढोला नैं व्याहि लई दूसरी'।

पत्नी की आभूषण-प्रियता के कारनऊ दोनोंन मैं कटुता पैदा है जाय। पति की आर्थिक सीमा है अरु पत्नी 'लटकन' के तांईं हठ कर रही है-

भूसा विकाय मोकूँ लाय देउ लटकन।
गैया विकाऔ चाहै, भैंसन विकाऔ।
वैलन विकाय मोकूँ लाय देउ लटकन।

पर-जितय-गामी अथवा पर-प्रिय-गामी हैवेपै ऊ दंपति मैं कटुता घर करिवे लागै। लोकजीवन अरु त्यौहार मैं पराई पत्तर ऐ चाटवे कौ स्वाद कछु औरई होय। पर, स्वयं मैं विस्वस्त एवं आत्म संतुष्ट पति-पत्नी या स्थिति ते प्रभावित हैकेंऊ पतित नहिं होंय। तवई तौ विस्वस्त पत्नी कह दे-

'कितने उ द्वार वजाय लै छैला.
पर सुख नाएं व्याहो कौ।'

कंगना लैकें अरु पहिरकैं तौ ननद के आनंद कौ ठिकानौई नहिं रहै। भतीजे कूं असीस दैवे लगै-'कंगना पहिर ननदी आंगन मैं ठाढ़ी, भतीजौ मेरौ जुग-जुग जीवै'। भाभी के रहते वो अकेली भैया की प्रिय कैसैं रह सकै। जौ वेदना ई वाय कुंठित अरु कुटिल वनाय दे। फलतः भइया-भाभी के वीच वो कलह कौ कारन वन जाय-

'मोय ऐसी ननद नंय चइए, जो पांच की सात लगावै।'

छठी के एक लोकगीत मैं तौ भावज अपने पति कूँ ननद के ह्याँ निमंत्रन दैवेऊ नहिं जान देइ-

गोरी आज छटी की रात तौ कौनें-कौनें नौंति आऊँ रे।
नौंति आऔ मइया हमारी अरे वावुल हमारे रे।
गोरी एक मेरी माँ की जाई वहन तौ वाठए नौंति आऊं रे।
ऐसौ वचन मत वोल राजा मरूंगी जहर विस खाय रे।

पुत्र के जनमवे पै भाभी नाइन ते ननद के घर कूं 'छेकिवे' की कहैकै 'वाके घर कौमरी दैवे मत जइयो' अरु भूलते जव वो दै आवै, तौ उलटी मंगवाय ले-

नाइन, जइयो ठल्ली-पल्ली पार,
ननद कौ घर छेकियौ जी महाराज।
सो राजा मेरे नाइन, असल गंवार,
ननदी कैं, ननदी कैं दै आई कौमरी जी महाराज।
सो राजा मेरे मरूँगी जहर विस खाय।
उलटी तौ, उलटी तौ लाऔ कौमरी जी महाराज।

पति वहन के घर जायकैं कहै तौ वहन मोतिन की कौमारी लैकें लौटायवै आवै। भाभी पहलै तौ द्वार नहिं खोलै पर मोतिन कौ सुनकैं लैले। ननदऊ कम थोरई है। मइया-वाप कूं असीस दे अरु अपने वड़े घर की भाभी कूं परिचैऊ करावै-

सो भाभी मेरी जियौ मेरे मइया-वाप।
वड़े घर, वड़े घर व्याही हम गई जी महाराज। (छटी के गीत)

ननदऊ अपने वदले कौ औसर खोज ले। सावन के दिनान मैं जव 'मनिहार' चूरी-चूरी पहरावे आवै, तौ मनिहार के संग भाभी के प्यार की वात भइयाते कह दे-

पचरंग चूरी पहरिए, पहरूंगी भर-भर हाथ।
ननदी नैं भइया सिखाइयौ-
अरे भइया, मनिरा कौ भाभी ते प्यार॥ चूरी तौ हाथी दांत की जी॥ (सावन के गीत)

इतनौ हैवेपै ऊ दौनौंन के प्रेममय मधुर संवंध की चरचा व्रज के लोकगीतन मैं ह्या की संस्कृति कौ चित्र प्रस्तुत करै। भतीजे के जनम पै अन्नप्रासन के समै जव ननद विना वुलाये पहुँच जाय अरु अपमानित हैकैं लौटवे लगै, तौ भाभी वाकी मनुहार करै-

उलटहु ननद गुसांइन, मेरी ठकुराइन रे।
ननदी हार पहर घर जाउ, भतीजे के सोहरे जी। (छटी के गीत)

अरु व्रज संस्कृति के अनुरूप अपने सिर की लटान कूं वाके पामन मैं रखकैं क्षमायाचना करै- 'ननदी, लट छोर लायं

कारन, वोई तौ जनम दे-'या जन जरमु दिखाइए'। माँ-बेटी कौ जो सास्वत संबंध लोक मैं बड़ौ बेजोड़ अर अतुलनीय है। बेटी कूँ जनम दैकैं वो सबते पहलै अपनी कोख कूँ 'सुलच्छनी' बनावै-'मैं तौ जनूँगी पहलैं धीय री, मेरी जो कोख होय सुलच्छनी'। बाय ब्याह के जोग देखिकैं मैया प्रसन्नऊ होय कै बेटी की बरात आवैगी अर पालकी पै चढ़िकैं बाकौ साजन आवैगौ-

जाकी गरजत आवैगी बरात री
पालकी चढ़ि आवै साजना।

पर, ब्याह के समै चढ़ाई के औसर पै संदेह अर विकल्पनते मइया कौ हियौ भर उठै तौ विदा के समै करना कौ उद्रेक बाय सराबोर कर देय। सनेह अर करना के संगम पै या छिन न जानें कितने जाने अनजाने संचारी-भावन कौ अरमान है जाय? ममता अर वात्सल्य मैं डूबी मैया कौ पेट अर घर दोनोंई रीते है जावैं। जमाई के तांईं बाके हिय में अनन्य सनेह एवं वात्सल्य होय, तौऊ या समै अन्यथा भाव कौ उदय बड़ौ नैसर्गिक होय-

मेरौ घरऊ रितौ अर पेट री
मेरी धीयरी जमइया लै चलौ।

भइया-बहन के संबंध-सन्दरभ-

परिवार मैं मैया-बेटी के पावन अर सास्वत संबंध के पीछैं बहन-भइया कौ संबंध बड़ौ पवित्र एवं स्नेहिल होय। छोटी-बड़ी सगरी बहन भैया के तांईं प्राण दैं। भइया के अभाव मैं सलूने अर भैया दौज जैसे त्यौहारन पै बहन की आँख आँसुन ते भीज जांय। बिना भैया के न तौ ससुराल मैं बाकौ मूल्यांकन होय और न मायकौ आगे चलै। एक भइया के तांईं वो अनेक देवी-देवतान अरु पीर-पैगंबरन ते मिन्नत करै। सलूनेन के त्यौहार पै राखी-बन्धन के सहारे बहन अपनी जीवन सुरच्छा कौ भार भइया कूँ सौंप कैं निश्चिंत है जाय। ससुराल मैं भइया कूँ आयौ देखि कैं खुसीते फूल उठै। सावन के लगते ही वो बाके आगमन की बाट जोहवे लगै। अपने बीरान कूँ निहारवे कौ उछाह बाय कबहूँ द्वार पै तौ कबहूँ भीतर, कबहूँ ऊपर छत्त पै तौ कबहूँ नीचें नैंकु टिकनई नहिं देय अरु आयवे पै तौ महमानी कौ ठिकानौई नांय। मामाकूँ देखिकैं छोरा छोरीन की प्रसन्नताऊ सीमाकूँ तोर दे-

मामा लिवावे आयौ ऐ मां
पूरी पुआ करि लै री मां
छबरिया मैं भरि कै धर दै री मां॥

सावन के दिनान में पूरी पुआ की महमानी ब्रज संस्कृति कौ अपनौ लावण्य है। ब्याह मैं भात के समै भइया की याद बहन कूँ बरबस आय जाय। भात नौंतवे पै वो बाय दिन मैं आयवे के तांईं आमंत्रित करै, जाते बाके वैभव कूँ ससुराली जन भली तरह देख सकैं-

सिदौसी अइयो भातई
मेरे बाबुल के हाथी झूमने
झूमैं-झूमैं रे जमइया दरबार॥ सिदौसी........
मेरे बिरन के घोड़ा हींसने
हींसैं हींसै रे बहनोई दरबार॥ सिदौसी........

बहन कूं भलौ इतने तेई संतोष कैसें होय? आखिर, मायके की प्रतिष्ठा अर नाक कौ प्रश्न है। तबई तौ पहिरावनी के

तांई सबके कपड़ान कौ नाम लै-लैकैं संकेत करै-

भइया रघुवीर! भात घनेरौ लइयो।
मेरी सास कूँ लंहगा लइयो, ससुर कूं पाग पिछौरा,
गरे बिच लइयो जंजीर।

फिर, बहन-भइया की आत्मीयता कौ भाव दौनौन कूं अलगई नहिं हौन देय। भइया के बड़प्पन तेई तौ बहन ससुराल मैं सिर उठावै। वाकौ भइया कोई ऐसौ-वैसौ थोरई है, वो तौ राजा हजारी है, तबी तौ रथ की झंकार के संग वाके आयबे की कहै-

राजा हजारी मेरौ भातई,
अइयो अइयो रे रथ की झंकार।

आयबे पै सहेली,द्यौरानी-जिठानी एवं परौसिनन के संग देखिवे कूं दौर जाय-'मेरौ छोटौ भतैया भात लैकें आयौ, चलौ देख आमैं।' पर, बिना भइया की बहन के तांई जी औसर बड़ौ दुःखद ह्वै जाय। वाके पुरे भए चौक सूने रह जायें-'मोकूँ को पहरावै भात बिरन बिन सूने चौक परे हैं।'

याई तरह भईया-दौज कौ पर्व ब्रज-संस्कृति की अनूठी धरोहर है। बहन भइया के माथे पै तिलक करिकैं वाके मंगल की कामना करै। मथुरा के बिसराम घाट पै हाथ पकरि कै संग-संग नहाइवेते बहन-भइया दोनौंन के जम के बंधन टूट जांय। या पावन त्यौहार पै बहन आनंद ते फूल उठै अरु भइया कूं काऊ देस कौ राजा हैवै की असीस देय-

दौज पुजै मेरौ मन हँसै, हियरा हिलोरे लेय।
हाथी के हौदा मेरौ भइया चढ़ै
दै मेरी बहन असीस दै-राजा तौ हूजै काऊ देस कौ॥

पति-पत्नी के संबंध-सन्दरभ-

परिवार अरु परिवारते इतर जितने संबंध एवं रिस्ते हैं, इनमैं पति-पत्नी कौ संबंध सबते अलगई है। इनके बीच कछुई छिप्यौ नहिं रहै। परस्पर एक दूसरे कूं पायकै निहाल ह्वै जांय। दाम्पत्य जीवन के स्नेहपूर्ण संबंधन के अनेक संदरभ ब्रज के लोकगीतन मैं जगह-जगह मिलैं। रति-भाव के संग दौनोंन मैं मित्रता अरु अन्योन्याश्रितता कौ भाव पल-पल जुरौ भयौ रहै। पत्नी कौ रूप-सौन्दर्य एवं मन कौ उछाह पति के संगई तौ निखरै-

गोरी कैं कजरा जब खुलै, वाकौ बालम निरखै आइ।
मुख भरि बतियाँ तब खुलैं, जब बालम हँस बतराइ।
बजने बिछिया तब खुलैं, जब बालम निरखै चाल।

जल भरबे गई पत्नी की अंतरंग भावनान के अनेक अछूते संदरभ आखिर पिया के साहचर्य की ई कामना करैं-

जल भरूँ हिलोरे लेइ, डोरी रेसम की।
रेसम की डोरी जब नीकी लागै, सोने की गगरी होय।
सोने की गगरी जब नीकी लागै, पतरी कमरिया होय।
पतरी कमरिया जब नीकी लागै, सोने की तगड़ी होय।
सोने की तगड़ी जब नीकी लागै, रेसम की साड़ी होय।

रेसम की साड़ी जब नीकी लागै, गोदी में ललना होय।
गोदी मैं ललना जब नीकौ लागै, संग मैं बलमा होय।

पति-पत्नी कौ संबंध तौ दूध-पानी की तरह होय। अपने आप कूं पति के रूप मैं तदाकार-एकाकार करिबे मैं ई तौ बाके जीवनकी सुन्दरता है-

1. तार मैं तार सितारा, मैं तारा होती।
तुम चादर मैं चंदा, मैं तारई होती
सिर बन्ने के साफा, मैं कलंगी होती।
कान बन्ना के बाला, मैं मोती होती।

2. आज मेरैं अनंद बधाए जी राज।
मैं तौ खोलूंगी डिब्बा, पहरूंगी गहने जी राज।
पहिर दिखाऊं छोटी बाईजी के बीरा जी राज।

गर्भावस्था मे अपनी मन की इच्छा पूर्ति के तांई पत्नी पतिते ई तौ कहै-'सईयाँ मोकूँ बेर मँगाउ मन चालौ खट्टे बेरन पै'। सपने मैं कौमरी देखिबे पै बिन्नैं बँटवाइबे कौ हठ करै-

सो राजा मेरे सोइ गई नींद सुनींद-
सपने मैं, सपने मैं देखी कौमरी जो महाराज।
सो राजा मेरे पीतर के टोकना मँगाउ-
बना की, बना की डारूँ कौमरी जी महाराज।

रन मैं जैसें तलवार चमकै, जल मैं मछरिया अरु घोड़ा पै पिया की पगड़ी, बैसेंई सेज पै प्रिया की माथे की बिन्दी सुसोभित होय-

जल मैं चमकै जल की मछरिया, रन चमकै तरवार रे। ,
घोड़ा पै चमकै पिय की पगड़िया, सेजिया पै बिंदिया हमार रे।

ब्याह के पीछैं तो दौनोंन कौ अलग रहिबौ असंभव सौ है जाय। पत्नी तौ बिना गौने के लिवा लै जाइबै के तांई संदेस भेजै,-मायकौ बाय उड़-उड़कैं खायबे लगै-

मोय पीहर उड़ि-उड़ि खाय लंगुरिया।
अब ना रहूँगी मइया-बाप कै।
जाय कहौ मेरे बलम ते, मोय बिन गौने लै जाय॥

उभरते यौवन मैं पति की याद बड़ी मनौवैज्ञानिक है-'मोय याद बलम की आवै, मेरौ जोवन झोका खावै।' पिया के बिना बाकौ जोबन पीरौ परि गयौ है अरु इतने पैऊ पपैया 'पीउ-पीउ' की रट लगावै। बिरह की मारी बिचारी कौन के तांई सिंगार भरै, पति तौ परदैस गयौ है-

मेरे बलम गये कलकत्ता, पिय बिन जोवन पीरौ पत्ता।
मैं कौन पै करूँ सिंगार, पपइया बोलो बोलै।।

आखिर, पति तौ जल है, बाके अभाव मैं 'पीरे पत्ता' हैबे की बात बड़ी संवेदनापरक है। सावन के बरसते दिनान मैं अकेलौपन सांचमांच बड़ौ भारी है जाय। तबई तौ परदेस ते पति कूं बुलायबे के तांई बो संदेस भेजै।'लहरिया' नाम के सावन

के लोकगीत में जी संवेदना देखेई यनै-

पाँच टका दऊँगी गाँठिके, है कोई लस्कर जाय, लहरिया-
सब रंग भीजै धन की डोरिया।

परिवारी जन जब पति कूं चाकरी के तांईं परदेस भेजिबे की तैयारी कर दें, तौ पत्नी की प्रतिक्रिया परिवार की मरयादाईए तोर दे, सावन के या लोकगीत के नाटकीय संवाद में पत्नी के हिये कूं निकास कैं धरदे-

किन त्यारौ घोड़ा भँवरजी! कसि दियौ जी।
ऐजी कोई, किन त्याहरी कसि दई जीन-
किनके कहे ते भँवर चाले चाकरी जी।
सहेलने नैं घोड़ा गोरी मेरौ कसि दियौ जी-
ऐजी कोई भइयाजी नैं कसि दई जीन-
बाबुल कहे ते चाले चाकरी जी।
सहेलने पै परियो बीजुरी जी-
ऐजी कोई भइयाजी कूं खइयो कारौ नाग-
भँवर बिछोयौ ससुरजी कर दियौ जी।

पति के सनेह कौ छप्पर पत्नी कूं सदा सुरच्छित रक्खै अरु बाहरी पानी के प्रभावते बचातौ रहै। सावन में पुराने छप्पर के ब्याज ते प्रौढ़ावस्था कौ संदर्भ भारतीय दाम्पत्य प्रेम की सारथकता के निमित्त बड़ौ बेजोड़ अरु भावात्मक बन्यौ है या लोकगीत में-

छप्पर पुराने मेरे पिया है गये जी,
कोई तरकन लागे हैं बाँस,
अब घर आइजा धन के साहिया जी। (सावन के गीत)

तन ते ऊपर मन के सूच्छम प्रेमपरक भाव कौ जी संस्पर्श अनूठौ है। नई-नवेली बहू कौऊ इन दिनान में ब्याह की पहली साल में हरियाली तीजन पै प्रिय कौ सोगी लैकें आइबे की आसा में बाट जोहिबे कौ सन्दरभ दम्पत्ति की अंतर्भावना ते जुरौ भयौ है-

अरी बहना तीजन कौ आयौ त्यौहार,
बालम तौ लामें सोहगी।
तीहर तौ लामें मोकूं रेसमी
अरी बहना, जंफर पै अजब बहार।

ब्रज के इन लोकगीतन में पति-पत्नी के मध्य के रति अरु संभोग के सन्दरभऊ बड़ी मार्मिकता, व्यंजना-वक्रता के संग व्यक्त भए हैं-

'अंधिरिया दइया झूकन लागी रे।'

परस्पर हास-परिहास की अवस्था इनके बीच बड़ी मोहक अरु उद्दीपक होय। याते जीवन में मिठास की अनुभूति होय तौ आत्मीयता कौ भावऊ समृद्ध होय। गाँव कौ खेतिहर पति जब सहरी पत्नी के आगें बड़प्पन की डींग मारै तौ पत्नी तुरंत नैला पै दैहला मार दे-

बरबंड बलम त्याहरौ देस तुम! सेखौ मोते मत मारौ।
हाथ खुरपिया मैंनें त्याहरे देखौ, भजि-भजि कैं छौंद रहे घास तुम... ॥

पर, मसखरे सुभाव की पत्नी तौ पति कूं खूब चलावै-

'बदलऊंगी बलमा तोय, काऊ जुलफनवारे छैला ते।'

जी बदलबे की बात तौ 20वीं सदी के अंत कौ प्रभाव है सकै, पर एक अन्य लोकगीत में तौ पत्नी बिचारे पति कूं छनै छुअनउ नहिं दे, रह-रह कैं तरसावै-

जुबना एँ छुअन नाएं दऊँगी
बलमा तोय मारूँगी तरसाय कैं।
लहँगा पहरि ओढ़नी ओढ़ी
सलूजा पहिरौ बनाय कैं।
सलूजा भीतर चोली पहिरी
ढोला ते छिपाय कैं ॥ बलमा......

पर, जो मसखरीऊ जब पति की बेदना कौ कारन बन गई, तौ पत्नी हैकैं पति कूं बेहाल कैसें देख सकै। जो तौ हास-परिहास हतौ। तुरंत व्यवस्था करै-'सासुल ते लाई दुधकाइ, दही कौ बैला लाई रे '। अपनी गलती कूं स्वीकारै अर पति कूं स्वस्थ करिबे के तांई दूधन की व्यवस्था करै-

पीरे परि गए, अब न सताऊँ बलमा,
तोय तीनों दूध पियाऊँ बलमा।
अरे गाय, भैंस, बकरी मिलमा ॥ पीरे.......

गइया-भैंस अरु बकरिया के दूधन कूं मिलायकैं पति कूं तन-मन ते स्वस्थ करिबे की गहराई के मरम कूं पति-पत्नी समझ सकैं।

निचिंत अवधि के पीछें लौट आयबे की कहकैंऊ जब पति नहिं लौटै, तौ पत्नी के विरह कातर हिये की पीड़ा अरु बाकी अभिव्यक्ति में अनेक भावनान के उतार-चढ़ाव कौ अहसास कोई स्वकीयाई करि सकै। एक संग आक्रोस अरु नमन, प्रेम अरु खीझ, तकरार अरु उपालंभ न जानें अन्त:करन में कब-कब कौ रुकौ भयौ ज्वार फूट परै-

मेरे पान रहे री कुम्हलाइ, नारंगी झोका लै रहीं।
खुद तौ अबई न आयौ बेईमान, छैता तौ धर गयौ दौज कौ।

पति-पत्नी के कोमल एकनिष्ठ प्रेम की जो बिसेसता बड़ी भावपरक है। ब्रज के लोकगीतन 'बारहमासा' की छटा और अनुभूतीन की मार्मिकता याईते देखेई बनै। प्रकृति के बदलते परिवेस में अरु तीज-त्यौहारन के औसर पै पति की स्मृति विरहिनी के हिये कूं झकझोर दे-

स्याम बिना मोय कल न परै री।
माघ मास रितु आयौ बसंत, अजहुँ न आयौ पिया तेरौ अंत।
लिखौं कैसें पाती को लैकें जाय, को निरमोही कूं बतावै समुझाय।
फागुन में सब घोरें अबीर, मैं कैसें घोरूं बिन जदुबीर।

एकई लाइन मैं तन अरु मन के न जानैं कितने गोपनीय रसीले सुखन की अभिव्यंजना पिचकारी के रंगन की तरह भरी भई है। दाम्पत्य जीवन कौ रहस्य साँचमाँच बड़ौ अनूठौ है। कबहुँ-कबहुँ मानसिक कुंठा अरु करए बोलन ते ऊ दरार परि जाय, मन फट जांय-

लहँगा तौ फाटत झकझोरन ते,
चित फाटत राजा के बोलन ते।

पति-पत्नी के सास्वत संबंध की मीठी अनुभूति बुढ़ापे मैं कै एक के न रहबे पै ई होय। बिधुर के तांईं घर काटिबे लगै। ब्रज की मसखरी औरत बहुधा बिधुरन कूं देख-देख कैं अनेक लोकगीतन नैं गावैं-

' रंडुआ तौ रोवै आधी रात, चूल्हे में जाके राख परी।'

' फूटी री रे तकदीर रंडुआ तोकूं नांय लुगाई रे।'

बिचारे बिधुर की दुरगति है जाय। बेदना अरु पीड़ा ते आँख डबडबाय उठें।

देवर-भाभी के संबंध-संदरभ-

लोक-जीवन मैं देवर-भाभी कौ संबंध बड़ौ मधुर अरु बिनोदपूर्ण मान्यौ गयौ है। बिपदा के समै देवरई संगी साथी बनै। तबई तौ द्वार पै ढोला गामती ब्रज की औरत लछमन जैसे देवर की कामना करै-

सीया ठाढ़ी जनक दरबार
सूरज कूं जल दै रही।
मैंनें बर माँगे सिरी राम,
देवर माँगे लछमन से।

फागुन के दिनान मैं तौ या संबंध की मधुरता कौ सहज साच्छात्कार होय। हास-परिहास अरु नौंक-झौंक कौ आनंद देखे ई बनै। बूढ़ी भाभीऊ देवर के हाथ ते रंग डरवाय कैं निहाल है जाय। राह चलती भाभी देवर के प्रेम की थाह पाइबे के तांई अरु स्वयं गद्‌गद् हैबे के तांईं कह उठै-'काँटौ लाग्यौ रे देवरिया, मोते गैल चली नायं जाय'। या संबंध मैं प्रेम की पावनता देखेई बनै, याई ते वात्सल्य कौ भावऊ यामैं पनप उठै-

छोटौ सौ प्यारौ देवर चिरई उड़ावै रे।
चिरई उड़ावै मेरौ जी ललचावै रे॥

ननद-भाभी के संबंध-सन्दरभ-

ब्रज के पारिवारिक परिवेस मैं ननद की स्थिति मधुर अरु सहेली जैसी हैबेपै ऊ कलहप्रिय एवं ईर्ष्यालु होय। भाभी के आइबे पै जैसें बाकौ सगरौ अधिकार छिन जाय। बात-बात मैं भाभी की चुगली अरु बाय नीचौ दिखाइबे की मनोवृत्ति बामैं देखी जाय। पर, भइया-भतीजे के तांई बामैं बड़ौ प्रेम अरु वात्सल्य होय। हरएक सुभ औसर पै बहिन-बुआई आयकैं सबते पहलैं देहरी-पूजन करै। भाभी के गर्भवती हैबे पै वो भतीजे की आसा मैं बाकौ मौंह चूमै अरु भतीजे के जनमबे पै तौ खुसी ते नाच उठै-'ननदिया आज छमछम नाचै।' वही नामकरन के समै सतिए रखै अरु हठ परिकैं अपुनौ नेग मांगै। भतीजे के जनम ते पहिलैंई वो भाभीते बचन लै लेय-

मैं लऊँगी, मैं लऊँगी, मैं लऊँगी भाभी तेरे कंगना।
जो ननदी मेरे पूत होयगौ, देऊंगी जड़ाऊ तोय कंगना।

कंगना लैकें अर पहिरकैं तौ ननद के आनंद कौ ठिकानौंई नाहिं रहै। भतीजे कूं असीस दैवे लगै- 'कंगना पहिर ननदी आंगन मैं ठाड़ी, भतीजौ मेरौ जुग-जुग जीवै'। भाभी के रहते वो अकेली भैया की प्रिय कैसें रह सकै। जी वेदना ई वाय कुंठित अर कुटिल बनाय दे। फलतः भइया-भाभी के बीच वो कलह कौ कारन बन जाय-

'मोय ऐसी ननद नंय चइए, जो पांच की सात लगावै।'

छठी के एक लोकगीत मैं तौ भावज अपने पति कूं ननद के ह्याँ निमंत्रन दैवेऊ नाहिं जान देइ-

गोरी आज छठी की रात तौ कौनें-कौनें नौंति आऊं रे।
नौंति आऔ मइया हमारी अरे बाबुल हमारे रे।
गोरी एक मेरी माँ की जाई बहन तौ वाउए नौंति आऊं रे।
ऐसौ वचन मत बोल राजा मरूँगी जहर विस खाय रे।

पुत्र के जनमवे पै भाभी नाइन ते ननद के घर कूं 'छेंकिवे' की कहैकै 'वाके घर कौमरी दैवे मत जइयो' अरु भूलते जब यो दै आवै, तौ उलटी मंगवाय ले-

नाइन, जइयो ठल्ली-पल्ली पार,
ननद कौ घर छेंकियौ जी महाराज।
सो राजा मेरे नाइन, असल गंवार,
ननदी कैं, ननदी कैं दै आई कौमरी जी महाराज।
सो राजा मेरे मरूँगी जहर विस खाय।
ठलटी तौ, उलटी तौ लाऔ कौमरी जी महाराज।

पति बहन के घर जायकैं कहै तौ बहन मोतिन की कौमारी लैकें लौटायवे आवै। भाभी पहलै तौ द्वार नाहिं खोलै पर मोतिन कौ सुनकैं लैले। ननदऊ कम थोरई है। मइया-बाप कूं असीस दे अरु अपने बड़े घर कौ भाभी कूं परिचैऊ करावै-

सो भाभी मेरी जियौ मेरे मइया-बाप।
बड़े घर, बड़े घर ब्याही हम गई जी महाराज। (छठी के गीत)

ननदऊ अपने बदले कौ औसर खोज ले। सावन के दिनान मैं जब 'मनिहार' चूरौ-चूरी पहरावे आवै, तौ मनिहार के संग भाभी के प्यार की बात भइयाते कह दे-

पचरंग चूरौ पहरिए, पहरूंगी भर-भर हाथ।
ननदी नैं भइया सिखाइयौ-
अरे भइया, मनिरा कौ भाभी ते प्यार॥ चूरौ तौ हाथी दांत कौ जी॥ (सावन के गीत)

इतनौ हैवेपै ऊ दोनौंन के प्रेममय मधुर संबंध की चरचा ब्रज के लोकगीतन मैं ह्या की संस्कृति कौ चित्र प्रस्तुत करै। भतीजे के जनम पै अन्नप्राशन के समै जब ननद बिना बुलाये पहुँच जाय अरु अपमानित हैकैं लौटवे लगै, तौ भाभी वाकी मनुहार करै-

उलटहु ननद गुसांइन, मेरी ठकुराइन रे।
ननदी हार महर घर जाउ, भतीजे के सोहरे जी। (छठी के गीत)

अर ब्रज संस्कृति के अनुरूप अपने सिर की लटन कूं वाके पामन मैं रखकै छमायाचना करै- 'ननदी, लट छोर लागूं

तेरे पाँम, भतीजौ खिलाऔ गो'। सावन के एक लोकगीत मैं जब भइया, भौजाई ते रुठ जाय, तौ ननदई दौनोंन कूं मिलावै-

> नाँइ खोलूं झंझन किवार, पराये पुरस ते ए बिजैरानी च्यों हंसी जो।
> जाकौ भइया हँसनौ सुभाव, हँसनौ तौ आइगौ ए बिजैरानी के जीय ते जो।
> लई धन हियरा लगाय,
> जरी के दुपट्टा ऐं बिजैरानी ढक लई जो।

भाभी प्रसन्न हैकें ननद कूं मौंह-भर असीस दैवे लगै-

> 'जीऔ नंदुल त्यारौ रे पूत, भँमर मिलायौ ए ननदरानी, सुभ किदौ जो।

सास-बहू के संबंध-सन्दरभ-

पारिवारिक जीवन मैं सास-बहू कौ संबंध बड़ौ महत्वपूर्न है। सास पुत्र कूं जन्म दैवे ते याये अपुनौ अधिकार मानैं अरु पत्नी अग्नि-साछात्कार के मारैं अपुनौ अधिकार जनावै। याई ते सास-बहू के बीच कटुता कौ बीज बुब जाय। युवावस्था मैं पति कौ पत्नी माहूं झुकबौ बड़ौ सारथक है। सास चाहै तौ पराई जाई बेटी कूं लाड़-प्यार दैकें घर कूं स्वर्ग बनाय सकै। पर, ऐसौ कमई देख्यौ जाय। सास-बहू के संबंध की कटुता ब्रज के लोक-जीवन की विसेसता है। अपने भौतिक सुख के तांई सास बहू पै अंकुस रखबे मैं गौरवान्वित होय। बाय दिनभर काम-काज मैं जुटायकैं रक्खै। तबई तौ सास के तांई बहू के हिये मैं श्रद्धा-सदभाव नहीं रहै। सास के रौब के मारैं वाय दूसरे सदस्यन की ताड़ना सहन करनी परै। देवी मइया की जात पै जाइकैं वो अपनी याई व्यथा कूं निवेदित् करै-

> ओ मइया, तेरी जात करन मैं आई
> मइया सास के पीसे मैंनें पीसने
> अरु ससुर की गाय चराई॥ ओ मइया..॥
> ननद के सहे उराहने अरु
> बालम की निठुराई। ओ मइया..॥ (देवी के जात के गीत)

कहूं-कहूं तौ सासकी कठोरता बहू-बेटा के रात मैं मिलिबेमैं ऊ बाधक है जाय। या असह्य वेदना कूं बहू एक लोकगीत मैं सहज आक्रोस के संग व्यक्त करै-

> मेरे राजा की ऊंची अटरिया,
> मिलन जानें कब होयगी।
> पलका बिछाय मैंनें रजाई-तकिया संभारे, तौलू आय गई सास डुकरिया॥ मिलन......

सास की यातनान कूं जब और ज्यादा बहू सहन नहिं कर पावै तौ अपने अधिकार कौ पूरौ प्रयोग करती भई सास कूं सबकऊ एक लोकगीत मैं सिखावै-

> सास तेरे बोलन पै बावाजिन है जाऊंगी
> घर कौ तारौ दै जाऊंगी।
> यौं मत जानैं सासुल भूखी जाऊंगी।
> चून कौ मटका लै जाऊंगी।
> यौं मत जानैं सासुल इकली जाऊंगी।
> संग तेरे बेटा ए लै जाऊंगी। सास......॥

इतने पै ऊ सास-बहू के विरोध में बेटाय भड़कावै। ब्रज की अनेक लोक-कथान में जी संदरभ मिलै। ब्याह के समै 'रतजगे' की रात ते पीछें प्रातःकाल गायबे के 'दाँतुन' नाम के लोकगीत में जी संदरभ देख्यौ जाय सकै। पर, सास यामें विवेक ते काम लेय अरु बेटा कूं समझावै कै बहू नंदलाल जनमैगी, याते तिहारे बाप अरु कुल कौ नाम चलैगौ-

ए मइया कहौ तौ दऊँ निकास
कहौ तौ खँदै दऊँ धन के बाप कैं।
ए बेटा, काहे कूं देऔ निकास,
काहे कूं भेजौ धन के बाप कैं।
ए बेटा जे तौ जनैगी नंदलाल
नाँऊ चलै तिहारे बाप कौ।

लाल जनबे के अपने गुन के मारें बहू कछु काम नहिं करै। देवर के पानी मांगबे पै बड़े अधिकारते वाकी अवग्या करै-

बाहर ते मेरे देवर आये।
भावज मोय पानीरा पिवाऔ हो राज।
पानी रे पिवावै तेरी मइया, बहनिया
मोपै उठौऊ ना जाय।

पुत्र जनम के औसर पै ब्रज में सास चरुए चढ़ाइवे कौ लोकाचार करै। पर, बहू वाकी उपेच्छा करिकैं अपनी मैया ते करवाये की सलाह दे-

सास न आवै मेरी काह करै
चरुए चढ़ावै मेरी मइया।- जच्चा के गीत।

ऐसे मौकेन पै सास कौ रूठिबौ ब्रज के परिवारन में अबऊ देखौ जाय। पर, हँसी-खुसी सगरे काम हैवे पै बहू सास-ससुर सबकी बलिहारी जाय। आखिर, परिवार के फलबे फूलबे में जी प्रसन्नताई तौ साधक होय-

फूल रह्यौ रस केयरौ मैं वारी-वारी।
हथिया चढ़ंते ससुर हमारे, पीढ़ा बैठंती सास॥ मैं वारी-वारी॥ (बधाए के गीत)

पर, आधी रात में जगायकैं चाकी पिसवावे वारी सास की बहू कामनाऊ नहिं करै-'मोय ऐसी सास नांय चइए जो आधी आधी रात पिसावै'। ब्रज के परिवारन की जी पुरानी परंपरा रही है। सास कौ स्थान मइया जैसौ है, तवई तौ बहू वाकौ सम्मान करै। एक लोकगीत में जी संदरभ देख्यौ जाय सकै-

ऐसी मइया या धरती पै द्वै बड़े
एक सासुल अरु माय
सास दियौ घर वास,
या जनु जरम दिखाइयै।। (देवतान के गीत)

तबई तौ बहू कौसल्या सी सास अरु दसरथ से ससुर की कामना करै-

'मैंने मांगी कौसल्या सी सास, ससुर मांगे दसरथ से।' (ढोला के गीत)

इन पारिवारिक जीवन के विविध संदरभन ते अतिरिक्ऊ अनेक संबंध अरु संदरभ अपने खट्टे-मीठे रूप मैं इन लोक-गीतन मैं चित्रित भए हैं। द्यौरानी-जिठानी के संबंध तौ बहन-बहन जैसे होंय। पर सम्पत्ति के काम में खटका-पटको ह्वै जाय। दोनों संग बैठकैं प्यारऊ करैं अरु कबहूँ झगरैऊं हैं-

> 'मैं कौन के पास बैठूँ जिठानी बिना।'
> 'बाँह पसारि कौनते झगरूं द्यौरानी बिना।'
> 'रसोई तपंती द्यौरानी मैं वारी-वारी।'
> 'भैंस दुहन्ते जेठ हमारे, आधौ बटंती जिठानी। मैं वारी-वारी।'

इनमैं ब्रज को संयुक्त परिवार-व्यवस्था कौ स्पष्ट संकेत भयौ है। जीजा-सारी कौ संबंध तौ ब्रज के लोक-जीवन कौ मधुरतम संदरभ है। हास-परिहास की मधुरता अरु स्नेह की आत्मीयता यामैं देखेई बनै। मीठे उपालंभन कौ तौ ह्यां रसई अनूठौ है-

> तैनें मेरी कदर न जानी रे बजमारे जीजा।
> सौने की थारी मैं भोजन परोसे, जैमें जीजा-सारी।

याई तरह सलहज-ननदेऊ के संबंध बड़े आंतरिक अरु स्नेहसिक्त होंय-

> ननदोइया ते यारी नांइ छूटै, बालम रूठै।
> जब रे ननदेउआ बागन मैं आये, चरर-चरर नियुआ टूटै।

सपत्नी-भाव के संबंध-सन्दरभऊ ब्रज के लोकगीतन मैं मिलैं। आखिर, 'सौत तौ चूनकीऊ बुरी होय', ब्रज मैं जो कहावत प्रसिद्ध है। फिर 'कुविजा' तौ ब्रज मैं सौत की प्रतीकई है गई है। सपत्नी, स्वकीया के सगरे सुख-सनेह अरु अधिकार कूँ छीन लेय। बहुत दिना परदेस मैं रहवेते ऊ पति काऊ सौत के जाल मैं फँस जाय, या फिर बाय संगई लिवाय लावै। सावन के 'जाटनी' नाम के एक लोकगीत नैं सौत के मारैं स्वकीया की वेदना कौ चित्रन भयौ है। स्वकीया-विवाहिता बाके डोला कूं वापस लौटायवे के तांई सगरे परिवारी जनन ते अनुनय विनय करै-

> 'गए मारू पटना के देस, लगाइ लाए जाटनी जी महाराज'।

अन्य संबधंन मैं बहन-बहन के संबंध, भाई-भाई के संबंध, सारे-बहनोई, सास-दामाद, समधी-समधी, ससुर-बहू आदि के सन्दरभऊ इन लोकगीतन मैं देखे जांय। इन संबंध-संदरभन कौ आयाम बड़ौ व्यापक है। लोक-संस्कृति के विसिष्ट अंग हैवे ते इन लोकगीतन की पारिवारिक सीमान कौ विस्तार बाखर ते बाहर, अड़ौस-पड़ौस तक भयौ मिलै। बधाए के लोक-गीतन मैं याई ते सबन को कुसलता अरु समृद्धि कौ संकेत मिलै-

> सौने के सब दिन रूपे की रात,
> सौने के कलस भरैयौ महाराज।
> पहलौ बधायौ ससुर घर आयौ,
> सासुल नैं लियौ भर गोद महाराज।
> दूसरौ बधायौ पड़ौसी घर आयौ,
> पड़ौसिन नैं लियौ भर गोद महाराज।

या प्रकार पारिवारिक जीवन के अनेकानेक संबंध-संदरभन कौ बड़ौई यथार्थ रूप ब्रज के लोकगीतन मैं देखौ जाय। लोक-जीवन अरु संस्कृति के ये सजीव चित्र ब्रज के आंचल की विसेसतान कौ सहज आकलन करैं। इनमैं एक ओर मांटू

इतनें पैऊ सास-बहू के विरोध मैं बेटाय भड़कावै। ब्रज की अनेक लोक-कथान मैं जी संदरभ मिलै। ब्याह के समै 'रतजगे' की रात ते पाछें प्रातःकाल गायवे के 'दाँतुन' नाम के लोकगीत मैं जी संदरभ देख्यौ जाय सकै। पर, सास यामें विवेक ते काम लेय अरु बेटा कूं समझावै कैं बहू नंदलाल जनमैगी, याते तिहारे बाप अरु कुल कौ नाम चलैगौ-

ए मइया कहौ तौ दऊँ निकास
कहौ तौ खँदै दऊँ धन के बाप कैं।
ए बेटा, काहे कूं देऔ निकास,
काहे कूं भेजौ धन के बाप कैं।
ए बेटा जे तौ जनैगी नंदलाल
नाँऊ चलै तिहारे बाप कौ।

लाल जनवे के अपने गुन के मारें बहू कछु काम नहिं करै। देवर के पानी मांगवे पै बड़े अधिकारते बाकी अवग्या करै-

बाहर ते मेरे देवर आये।
भावज मोय पानीरा पिवाऔ हो राज।
पानी रे पिवावै तेरी मइया, बहनिया
मोपै उठौंऊ ना जाय।

पुत्र जनम के औसर पै ब्रज मैं सास चरुए चढ़ाइवै कौ लोकाचार करै। पर, बहू बाकी उपेच्छा करिकैं अपनी मैया ते करवायवे की सलाह दे-

सास न आवै मेरी काह करै
चरुए चढ़ावै मेरी मइया।- जच्चा के गीत।

ऐसे मौकेन पै सास कौ रूठिवौ ब्रज के परिवारन मैं अबऊ देखौ जाय। पर, हँसी-खुसी सगरे काम हैवे पै बहू सास-ससुर सबकी बलिहारी जाय। आखिर, परिवार के फलवे फूलवे में जी प्रसन्नताई तौ साधक होय-

फूल रह्यौ रस केवरौ मैं वारी-वारी।
हथिया चढ़ंते ससुर हमारे, पीढ़ा बैठंती सास॥ मैं वारी-वारी॥ (बधाए के गीत)

पर, आधी रात मैं जगायकैं चाकी पिसवावे वारी सास की बहू कामनाऊ नहिं करै-'मोय ऐसी सास नांय चइए जो आधी आधी रात पिसावै'। ब्रज के परिवारन की जी पुरानी परंपरा रही है। सास कौ स्थान मइया जैसौ है, तबई तौ बहू बाकौ सम्मान करै। एक लोकगीत मैं जी संदरभ देख्यौ जाय सकै-

ऐसी मइया या धरती पै द्वै बड़े
एक सासुल अरु माय
मात दियौ घर वास,
या जनु जरम दिखाइयै।। (देवतान के गीत)

तपर तौ बहू कौसल्या सी सास अरु दसरथ से ससुर की कामना करै-

'मैंनें मांगी कौसल्या सी सास, ससुर मांगे दसरथ से।' (ढोला के गीत)

इन पारिवारिक जीवन के विविध संदरभन ते अतिरिक्त अनेक संबंध अर संदरभ अपने खट्टे-मीठे रूप में इन लोक-गीतन में चित्रित भए हैं। द्यौरानी-जिठानी के संबंध तौ बहन-बहन जैसे होंय। पर सम्पत्ति के काम में खटका-पटको है जाय। दोनों संग बैठकें प्यारऊ करैं अर कबहूँ झगरैऊं हैं-

'मैं कौन के पास बैठूं जिठानी बिना।'
'बाँह पसारि कौनते झगरूं द्यौरानी बिना।'
'रसोई तपंती द्यौरानी मैं वारी-वारी।'
'भैंस दुहन्ते जेठ हमारे, आधौ बटंतो जिठानी। मैं वारी-वारी।'

इनमैं ब्रज की संयुक्त परिवार-व्यवस्था कौ स्पष्ट संकेत भयौ है। जीजा-सारी कौ संबंध तौ ब्रज के लोक-जीवन कौ मधुरतम संदरभ है। हास-परिहास की मधुरता अर स्नेह की आत्मीयता यामैं देखेई बनै। मीठे उपालंभन कौ तौ ह्यां रसई अनूठौ है-

तैनें मेरी कदर न जानी रे बजमारे जीजा।
सौने की थारी मैं भोजन परोसे, जैमें जीजा-सारी।

याई तरह सलहज-ननदेऊ के संबंध बड़े आंतरिक अर स्नेहसिक्त होंय-

ननदोइया ते यारी नांइ छूटै, बालम रूठै।
जब रे ननदेउआ बागन मैं आये, चरर-चरर निबुआ टूटै।

सपत्नी-भाव के संबंध-सन्दरभऊ ब्रज के लोकगीतन मैं मिलैं। आखिर, 'सौत तौ चूनकी ऊ बुरी होय', ब्रज मैं जौ कहावत प्रसिद्ध है। फिर 'कुबिजा' तौ ब्रज मैं सौत की प्रतीकई है गई है। सपत्नी, स्वकीया के सगरे सुख-सनेह अर अधिकार कूं छीन लेय। बहुत दिना परदेस मैं रहबेतें ऊ पति काऊ सौत के जाल मैं फँस जाय, या फिर वाय संगई लिवाय लावै। सावन के 'जाटनी' नाम के एक लोकगीत नैं सौत के मारें स्वकीया की वेदना कौ चित्रन भयौ है। स्वकीया-विवाहिता वाके डोला कूं वापस लौटायबे के तांई सगरे परिवारी जनन ते अनुनय विनय करै-

'गए मारू पटना के देस, लगाइ लाए जाटनी जो महाराज'।

अन्य संबधंन मैं बहन-बहन के संबंध, भाई-भाई के संबंध, सारे-बहनोई, सास-दामाद, समधी-समधी, ससुर-बहू आदि के सन्दरभऊ इन लोकगीतन मैं देखे जांय। इन संबंध-संदरभन कौ आयाम बड़ौ व्यापक है। लोक-संस्कृति के विसिस्ट अंग हैबे ते इन लोकगीतन कौ पारिवारिक सीमान कौ बिखराव बाखर ते बाहर, अड़ौस-पड़ौस तक भयौ मिलै। बधाए के लोक-गीतन मैं याई ते सबन की कुसलता अर समृद्धि कौ संकेत मिलै-

सौने के सब दिन रूपे की रात,
सौने के कलस भरैयौ महाराज।
पहलौ बधायौ ससुर घर आयौ,
सासुल नैं लियौ भर गोद महाराज।
दूसरौ बधायौ पड़ौसी घर आयौ,
पड़ौसिन नैं लियौ भर गोद महाराज।

या प्रकार पारिवारिक जीवन के अनेकानेक संबंध-संदरभन कौ बड़ौई यथार्थ रूप ब्रज के लोकगीतन मैं देखौ जाय। लोक-जीवन अर संस्कृति के ये सजीव चित्र ब्रज के आंचल की विसेषतान कौ सहज आकलन करैं। इनमैं एक ओर मांटू

इतने पैऊ सास-वहू के विरोध में वेटाय भड़कावै। ब्रज की अनेक लोक-कथान में जी संदरभ मिलै। व्याह के समै 'रतजगे' की रात ते पीछें प्रात:काल गायवे के 'दाँतुन' नाम के लोकगीत में जी संदरभ देख्यौ जाय सकै। पर, सास यामें विवेक ते काम लेय अरु वेटा कूं समझावै कै वहू नंदलाल जनमैगी, याते तिहारे वाप अरु कुल कौ नाम चलैगौ-

ए मइया कहौ तौ दऊँ निकास
कहौ तौ खँदै दऊँ धन के वाप कैं।
ए वेटा, काहे कूं देऔ निकास,
काहे कूं भेजौ धन के वाप कैं।
ए वेटा जे तौ जनैगी नंदलाल
नाँऊ चलै तिहारे वाप कौ।

लाल जनवे के अपने गुन के मारें वहू कछु काम नहिं करै। देवर के पानी मांगवे पै वड़े अधिकारते वाकी अवग्या करै-

वाहर ते मेरे देवर आये।
भावज मोय पानीरा पिवाऔ हो राज।
पानी रे पिवावै तेरी मइया, वहनिया
मोपै उठौंऊ ना जाय।

पुत्र जनम के औसर पै ब्रज में सास चरुए चढ़ाइवै कौ लोकाचार करै। पर, वहू वाकी उपेच्छा करिकैं अपनी मैया ते करवाये की सलाह दे-

सास न आवै मेरी काह करै
चरुए चढ़ावै मेरी मइया।- जच्चा के गीत।

ऐसे मौकेन पै सास कौ रूठिवौ ब्रज के परिवारन में अवऊ देखौ जाय। पर, हँसी-खुसी सगरे काम हैवे पै वहू सास-ससुर सवकी वलिहारी जाय। आखिर, परिवार के फलवे फूलवे में जी प्रसन्नताई तौ साधक होय-

फूल रह्यौ रस केवरौ मैं वारी-वारी।
हथिया चढ़ंते ससुर हमारे, पीढ़ा वैठंती सास॥ मैं वारी-वारी॥ (बधाए के गीत)

पर, आधी रात में जगायकैं चाकी पिसवावे वारी सास की वहू कामनाऊ नहिं करै-'मोय ऐसी सास नांय चइए जो आधी आधी रात पिसावै'। ब्रज के परिवारन की जी पुरानी परंपरा रही है। सास कौ स्थान मइया जैसौ है, तबई तौ वहू वाकौ सम्मान करै। एक लोकगीत में जी संदरभ दैख्यौ जाय सकै-

ऐसी मइया या धरती पै द्वै वड़े
एक सासुल अरु माय
सास दियौ घर वास,
या जनु जरम दिखाइयै।। (देवतान के गीत)

तवई तौ वहू कौसल्या सी सास अरु दरसथ से ससुर की कामना करै-

'मैंने मांगी कौसल्या सी सास, ससुर मांगे दसरथ से।' (ढोला के गीत)

इन पारिवारिक जीवन के विविध संदरभन ते अतिरिक्त अनेक संबंध अरु संदरभ अपने खट्टे-मीठे रूप में इन लोक-गीतन में चित्रित भए हैं। द्यौरानी-जिठानी के संबंध तौ बहन-बहन जैसे होंय। पर सम्पत्ति के काल में खटका-पटको हैं जाय। दोनों संग बैठकें प्यारऊ करें अरु कबहूँ झगरेऊ हैं-

'मैं कौन के पास बैठूँ जिठानी बिना।'
'बाँह पसारि कौनते झगरूं द्यौरानी बिना।'
'रसोई तपंती द्यौरानी मैं वारी-वारी।'
'भैंस दुहन्ते जेठ हमारे, आधौ बटंती जिठानी। मैं वारी-वारी।'

इनमें ब्रज की संयुक्त परिवार-व्यवस्था कौ स्पष्ट संकेत भयौ है। जीजा-सारी कौ संबंध तौ ब्रज के लोक-जीवन कौ मधुरतम संदरभ है। हास-परिहास की मधुरता अरु स्नेह की आत्मीयता यामें देखेई बनै। मीठे उपालंभन कौ तौ ह्यां रसई अनूठौ है-

तैनें मेरी कदर न जानी रे बजमारे जीजा।
सौने की थारी में भोजन परोसे, जैमें जीजा-सारी।

याई तरह सलहज-ननदेऊ के संबंध बड़े आंतरिक अरु स्नेहसिक्त होंय-

ननदोइया ते यारी नांइ छूटै, बालम रूठै।
जब रे ननदेउआ बागन में आवे, चरर-चरर निबुआ टूटै।

सपत्नी-भाव के संबंध-सन्दरभऊ ब्रज के लोकगीतन में मिलें। आखिर, 'सौत तौ चूनकीऊ बुरी होय', ब्रज में जो कहावत प्रसिद्ध है। फिर 'कुबिजा' तौ ब्रज में सौत की प्रतीकई है गई है। सपत्नी, स्वकीया के सगरे सुख-सनेह अरु अधिकार कूँ छीन लेय। बहुत दिना परदेस में रहबेसूं ऊ पति काऊ सौत के जाल में फँस जाय, या फिर बाय संगई लिवाय लावै। सावन के 'जाटनी' नाम के एक लोकगीत में सौत के भाँ स्वकीया की बेदना कौ चित्रन भयौ है। स्वकीया-विवाहिता बाके ढोला कूं वापस लौटायबे के तांई सगरे परिवारी जनन ते अनुनय विनय करै-

'गए मारू पटना के देस, लगाइ लाए जाटनी जी महाराज'।

अन्य संबंधन में बहन-बहन के संबंध, भाई-भाई के संबंध, सारे-बहनोई, सास-दामाद, समधी-समधी, ससुर-बहू आदि के सन्दरभऊ इन लोकगीतन में देखे जांय। इन संबंध-संदरभन कौ आयाम बड़ौ व्यापक है। लोक-संस्कृति के विसिष्ट अंग हैबे ते इन लोकगीतन कौ पारिवारिक सीमान कौ विस्तार बाखर ते बाहर, अड़ौस-पड़ौस तक भयौ मिलै। बधाए के लोक-गीतन में याई ते सबन की कुसलता अरु समृद्धि कौ संकेत मिलै-

सौने के सब दिन रूपे की रात,
सौने के कलस भरैयौं महाराज।
पहलौ बधायौ ससुर घर आयौ,
सासुल नें लियौ भर गोद महाराज।
दूसरौ बधायौ पड़ौसी घर आयौ,
पड़ौसिन नें लियौ भर गोद महाराज।

या प्रकार पारिवारिक जीवन के अनेकानेक संबंध-संदरभन कौ बड़ौई यथार्थ रूप ब्रज के लोकगीतन में देख्यौ जाय। लोक-जीवन अरु संस्कृति के ये सजीव चित्र ब्रज के आंचल की विसेषतान कौ सहज आकलन करें। इनमें एक ओर माँहू

ब्रज प्रदेस कौ पारिवारिक व्यवस्था अरु स्थिति कौ सरूप स्पष्टत: उजागर होतौ भयौ मिलै, तौ दूसरी ओर माँहू याके करुए-मीठे अनुभव-अनुभूतीन की यादगारऊ तैरती मिलैं। ब्रज के पारिवारिक परिवेस मैं परस्पर खड़खड़ाहट के बीच मैं जीवन की सरस अरु मधुर सलिला कौ प्रवाह याके आकरसन-बिन्दू कूं काऊ तरह लुप्त नहीं हौंन दैय। ब्रज के लोकगीत साँचमाँच झाँकि पारिवारिक जीवन के हँसते-बोलते, रोते-बिलखते, रूसते-मटकते, लरते-झगरते, मिलते-बिछुरते, नाचते-गाते, खाते-खबाते अरु नौंक-झोंक करते मनुहार करते छिनन के बड़े संवेदनापरक, भावनासिक्त एवं संगीतात्मक सास्वत बिम्ब हैं। तबई इनके सहारे ब्रज की सामाजिक सांस्कृतिक धरोहर ते सहज परिचय है जाय। फिर, ब्रजभाषा कौ लोच-लावण्य इनकी सिल्पगत-अभिव्यंजना कूँ अलगई स्वरूप प्रदान करै। सावन को 'मल्हार' अरु फागुन के 'रसियान' कौ तौ रसई अनूठौ है। फिर, कृष्ण-भक्ति के संदरभन नैं तौ इन लोकगीतन मैं चार चांद लगाय दिये हैं।

-49, बी, आलोक नगर
आगरा-282010

❑

सामन के लोकगीतन में नारी की बिरह-वेदना

-श्री मेवाराम कटारा

नारी कौ हियौ लौनी घी की नाईं कोमल अर सनेह भर्यौ होय । भावुकता अर सहृदयता में नारी पुरुष ते ऊ बढ़िकें होय । भावुक हैये के कारन या पुरुष-प्रधान समाज माँहि अपने उद्गारन की अभिव्यक्ति के ताँई सदा लालायित रहै। समाज की कछू ऐसी विवस्था बन गई है कै नारी भीतर ई भीतर घुनती, बुनती, गुनती अर घुटती रहै । अपने मनगुन की बातन कूँ अपने पति के सिवाय काऊ ते नाँय कह सकै । परि जब म्हाँऊ वाकी बात नहीं सुनी जाय तौ फिर कौन सौं कहै। पति,सास, सुसर,जेठ,जिठानी, देवर,देवरानी की सिकायत करै तौ कौन ते करै । सो वाकी इच्छा होय कै सम्पूरन नारी जाति को या घुटनै सार्वजनिक रूप ते समाज के सांमई व्यक्त करै । स्यातै सुनके कोऊ वाकी पीर हरै।

पुरानौ साहित्य उठायकें देख्यौ जाय तौ सिद्ध होय कै नारी जाति सदा ते अपने हिये के उद्गार व्यक्त करती आई है । वैदिक युग की ऋषिका,उपनिषदकाल की विदुषी अर बुद्धकाल की भिक्खुणी याकौ प्रमान है । विज्जिका जैसी अनेकन नारी साहित्यकारऊ भई हैं । नारी सृजित साहित्य ते पतौ चलै कै नारी जाति अपने मन की बातै काऊ न काऊ माध्यम ते व्यक्त करती आई है ।

समै बीततौ गयौ । भारत पै विदेसीन की कारी छाया परी । भारतीय संस्कृति मरी अर मर्दन की मति हरी । सो बिचारी नारी के म्हौंपै परदा डारि दियौ,नाक में गहने के रूप में नकेल सी डार दई । गरे में हाथन में अर पामन में ऊ गहने के बहाने बेड़ी अर हथकड़ी पहराय दई । छाती पै गहने कौ पत्थर धर दियौ । विलासी संस्कृति के पुजारी विदेसीनें नारी कूँ विलासिता कौ साधन बनाय लियौ । बिचारी नारी गहने के हिसक की मारी घरबारी बनिकें घर की चारदीवारी में इन मोटे अत्याचारनें सहती रही । वाके विदुषी हैये के तौ सपने दूर रहे,आखर ज्ञान ते ऊ वंचित रह गई । सो एक भौत बड़ी सख्या अनपढ़ नारी की समाज में है गई परि लाज की मारी सब कछू सह गई ।

मांसि चाहै पढ्यौ होय या अनपढ़ अपने मनकी बात तौ कहनौई चाहै । पढ़े लिखेन कूँ तौ बात कहबे के भौत से साधन हैं परि अनपढ़न कूँ तौ मात्र लोक साहित्यई सार्वजनीन साधन है । लोक साहित्य की अनेक विधा होंय । नानी-दादी बच्चान कूँ कहानी सुनाय-सुनायकें अपनी अभिव्यक्ति करदें अर मन हलकौ करलें । भौत से अनेक औसरन पै लोकगीत गायकें अपने मन की टीसै कह दें। सार्वजनिक रूप ते मिलकें व्यक्त करी भई टीस काऊ एक नारी की नाँय होय,सम्पूरन नारी समाज की टीस होय ।

नारी बचपन तेई अभिव्यक्ति कौ औसर तौपती रहै । जैसेंई औसर मिलै,अपनी बातै कह दे । ये औसर है-सादी -ब्याह के गीत,संस्कार-गीत,तीज -त्यौहारन के गीत अर मौसम-महीनान के गीत । सामन अर फागुन कौ महीना नारी जाति कौअभिव्यक्ति कूँ सबते जादा औसर दैये वारे हैं । इन महीनान में ब्रजवासिनी नारी अपने मन की अच्छी तरियाँ निकार सकै। फागुन की होरी में तौ अपनी झिझकै पूरी तरियाँ खोलिकें मर्दन कूँ दो दो हाथ बतावै ।

सामन के गीत नवोढ़ान के गीत हैं। या औसर पै पहलौ वेर मैया के घरै छोड़िवे वारी, कै ज्याके ब्याहै चार छै सालई भये होंय, कै ब्याह की ठमर आय गई होय,नायिका के रूप में देखी जाय ।ल्हौरी-ल्हौरी लालीऊ पहले तेई लैन में लग जांय। सो वे गीत नवोढ़ान केई कहे जाय सकें ।पिया के घर जाये पीछें सास,सुसर ,जेठ, जिठानी अरु ननदन की दीवारन में घुटती भई यू जो कछू भोगै वाय झूला पै वैठकें गीतन में कह दे ।सुसरार में भैया के आयवे की वाट देखै अरु मैया वापन की याद करै तौ पीहर में आयकें पिया के प्यार कौ सुमरन करै ।दोनूं लंग के प्यारे विसार नॉय सकै सो दोनूं ठौर विरहा की आग में जलती रहै अरु याही धुनाधुनी में पलती रहै ।सूधी सादी भापा में गाये गये सामूहिक राग अरु लय वारे इन गीतन के भाव भौत गहरे अरु मार्मिक हॉय ।व्यंजना सब्दसक्ति के माध्यम ते वे अनपढ़ वालिका, किसोरी अरु नवोढ़ा नारीऊ न जानें कहा कहा मन की वातै कह जांय ।कवहु-कवहु तौ सूधी अभिधा में ई कह डारें ।विनकी भापा भाव अरु आवेस के अनुसार मीठी अरु करई होय ।जैसेंई सामन कौ महीना सिरू होय सवन के भैया अपनी-अपनी भैनान्नें लिवायवे जांय। भैन भैयानके आयवे की वाट अटान पै चढ़कें देखती रहें। विन्नें अपने मायके की याद सतामती रहै ।अपनी माँ ते अरदास करै-

मैया मोकूँ भैया खंदइयौ री कै सामन आयौ ।
वेटी तेरी भाभी कौ वरज्यौ री कै सामन आयौ ।
मैया मोकूँ चाचा खंदइयौ री कै सामन आयौ ।
वेटी तेरी चाची कौ वरज्यौ री कै सामन आयौ ।

या तरियाँ लड़की ज्याय खंदायवे की वात करै वायैमें कोऊ न कोऊ वरजवे वारौ तैयार है जाय ।भाभी,चाची ,ताई अपने-अपने मरदन नें वरज दें ।अखीर में विचारी अपनी मैयाते ई कहै-

मैया मेरी तूही अइयौ री , कै सामन आयौ ।

पुराने समै में नाई-वाम्हन छोरीन कौ सम्वन्ध करिवे भेज दिए जांते ।वे अपनी राजी ते दूर-दूर सम्वन्ध कर देंते। जहां विन्नें कोऊ वेटावारौ खातिरदारी ते राजी करि लेंतौ,चाहें छोरा कैसौऊ होय, वे रुपैया नारियलै म्हांई टिकाय देंते ।विनकी वात कौ कोऊ विरोधऊ नाॅय करतौ अरु नाक कौ सवाल समझौ जांतौ ।इन सम्वन्धन में छोरी की कोऊ सलाह नाॅय पूछी जाती अरु न वाकी कोऊ वात मानी जांती ।पसु की तरियाँ विना मरजी के वर के संग रथ में वैठायकें ढकेल दई जांती ।भौत से तौ क्षत्रिय कहायवे वारे निर्जीव माल की तरियाँ या ढोर की तरियाँ लूटकें कै जीतकेंऊ लै जांते। पीहर ते एक दम भौत दूर पहुँचतेई,जहां अपनौ कोऊ नहीं दीखै,विचारी विपदा की सी मारी, कोमल-कान्त भाव पुष्पन की क्यारी,वचपन की सहेलीन ते न्यारी कहा सोचती होयगी ।जो कछू यू सोचै वाय झूला की पटली पै वैठकें अपनी सहेलीन के संग न्यौं गावै-

ठल्ले पार मेरौ पटुवा भीजै
पल्ले पार मेरौ हार जी ।
आवेगौ मेरौ-----(नाम) सौ भैया
जिन्नें दई परदेस जी ।

एक संग वाकौ सनेह की सम्पति ते भर्यौ भयौ सुसरार रूपी पटुआ अरु दूसरी लंग पीहर के प्यार कौ हार,दोनूं लंग प्यार पलै,दोनून के तांई जीवै मरै ।दोनूं कुलन की लाज वाके हाथै ।या पच्छ में 'पटुआ' अरु वा पच्छ में 'हार' भीजै सो वड़ी नीधि कै या वातै कहै कै या विरह के कष्ट ते उवारवे की छिमता वाई भैया में है।अरु वूई आवैगौ ज्यानें मोय परदेस में डारौए। भैया सासरे ते आदर के संग लिवाय लैजायगौ अरु सासरे वारेऊ प्यार ते वाके संग पठाय दिंगे ।याते दोनूं कुल की लाज वनी रहैगी अरु मेरौऊ मन वंट जायगौ ।लोकगीतन की इन सूधी सादी पंक्तिन ते पतौ चलै कै विरह वेदना में डूवी भई लाड़िलीयै अपने भैया पै पूरौ भरोसौ है कै यूई या वियोग के सागर ते पार कर सकै ।परि फिर सोचै,या दूर डारिवे में भैया कौ का खोटै, खोट तौ विन नाई-वाम्हनन कौ है जो विना सोचे समझे इतेक दूर सम्वन्ध कर गये हैं। नायिकाय क्रोध आयजाय,आवेस के संग भाव वदल जाय अरु नाई-वाम्हनन कूं कोसवे लग जाय -

धीरे नीया वरके कौवा
क्यों डारी परदेस जी ?

बिचारी फिर आए ?, बुद्धि पै जोर डारै अरु सोचै,यामें बिनकौऊ कहा खोट । बेऊ तौ या बातै भाग्य पै टार सकें। सन्तोष करिबे के कार्जें भौत अच्छौ तरीका है । नाई-बाम्हन के मन की बातै ल्यौं कहै-

कहा करूं जिजमान की बेटी,
करम लिखे परदेस जी ।

जि बातऊ सांचै । भाग्य कौन के बसमें है? क्यौंकै भाग्य कौ जानबौ तौ सम्भव हैई नांय सकै । क्यौंकै-

चिट्ठी होय तौ बाँच लऊं,
करम न बाँचौ जाय जी ।

या प्रकार बू अपने मन की बिथाय मन में पालती जाय अरु सामन में झूला पै बैठकें गावै-

कच्चे नीम की निबौरी
सामन जल्दी अइयौ रे ।
दादा दूर मत दीजौ ,
मैया नहीं बुलावैगी ।
बाबा दूर मत दीजौ,
दादी नहीं बुलावैगी ।

सामन कौ महीना लगतेई असाढ़ के अंत में नीम के पेड़न में निबौरी लगबे लग जांय । राह तकती बिचारी मैया-बाप अरु भैया के बियोग ते दुखी भई निबौरी अरु मन्द मंद गन्ध वारे बौर ते लदे नीम के पेड़ देखकें सामन आयबे कौ अनुमान लगावै । या बीच के धीरे से दिनाऊं बाय भौत लगैं सो सामन कौ आह्वान करै अरु दादा-बाबान ते या बात की बिनती करै कि बाकौ ब्याह इतेक दूर मत करियौ कै मैया,दादी,भाभी बाय बुलामेंई नहीं अरु कोऊ लैवे जाय तौ बाय बरज दें । छोरी छोरीऊ सामन में झूलें और गामें । या गीत के माध्यम ते अपने दादा,बाबा,भैया आदि कूं पहलै ई राजी करलें ज्याते बिरह-वेदना सहन नहीं करनी परै । जि गीत काऊ न काऊ के कान परतौई होयगौ, कोऊ न कोऊ तौ कान धरतौई होगौ अरु या कष्ट के निवारन तांईं कोऊ न कोऊ तौ ध्यान रखतौ ई होयगौ ।

सासरे में ब्रजनारी सामन के आगमन पै पलक पांवड़े बिछायकें अपने भैया (बीरन)की बाट देखती रहै । आमतईं बाय आदर दैकें आसन पै बैठावै अरु बाकौ तन-मन-धन ते खातिर करै-

आमत देखूंगी---(नाम)से बीर,
बदलिया बे छोटी।
बैठौरे भैया तरवर,बिछाय,
तिहारी सौने की टोपी।
झरा झर मोती।
मैदा की वे पूरी
जैपौ से भैया ।
मोती छल्ला भात मैदा की पूरी।

लड़की चाहै पीहर में होय चाहै ससुरार में ,सुख में होय चाहै दुख में, दूर रहै चाहै पास,क्वारी होय चाहै ब्याही, अपने पीहर कूँ कबहूं नाँय बिसरै ।गीत गीत में वाकौ सुमरिन करै ।वाय अपने भैया की सदा बाट लगी रहै।वाके स्वागत के ताईं सदा ठाड़ी रहै।याते वाकी विरह वेदना कौ प्रमान मिलै है ।जैसेई मगरे पै कौवा बोलै वाय और कोऊ नाँय सूझै,अपने भैया के आगमन की सूचना समझै अरु राजी हैकै गावै-

मगरे ऊपर भैया कागा रे बोलै
बोलै वचन सुहावने ।
माँ जाये आमें,
बोलै वचन सुहावने ।
चुगवे कूँ दऊंगी रे कागा ,
सांठो रे चाँमर
सौने की चोंच मढ़ामने ॥

या विरहन के मन में भैया मिलन की कितेक प्रबल लालसा है ।जब आय जाय तौ वाकौ आदर अरु खातिर करिकैं राजी करै फिर अपने सासरे वारेन ते पीहर जायवे की अनुमति माँगै परि वे वा विरह वेदना ते व्यथित के संग कैसौ अन्याव करैं या गीत ते पतौ चलै-

आयौ री मैया जायौ वीर,
नंदी नखता डाक कें ।
हिरना की वे डोड़ी ।
कहौ तौ सासुल हम पीहर जामें ?
पीहर डरे हिंडोरे जी राज ।
हम का जानें हमारी कुलबहू रानी,
पूछौ ए अपनी जिठानी ते जाय
जब दुरि जइयौ माई बाप कें ।हिरना---
कहौ तौ जिठानी हम पीहर जामें ?
हम का जानें हमारी कुल बहू रानी
पूछौ ए अपनी द्यौरानी जाय ।

या तरियों विचारी सबन ते पूछै ।वे नखरा करती भई एक दूजे के माथे पै वातै डार दें । अन्त में विचारी बड़ी आस के संग ननदुल ते पूछै,परि ननदुल तौ सबन ते ई कठौर निकरी ।आगे याही गीत में ननद कौ अत्याचार देखिबे कूँ मिलै-

कहौ तौ बाई जी हम पीहर जांय
पीहर डरे हिंडोलने ।

ननद अनुमति तौ दे परि कछूक सर्त लगावै।सर्तऊ ऐसी है जो कबहुं पूरी होंनी नाँय।न सर्त पूरी हुंगी अरु न अपने पीहर जायगी।कठोर हिरदै वारी ननदुलकौ जवाब सुनौ-

जितनौ री भाभी कुआ में नीर
इतनौई पानी भरि जाइयौ ।हिरना----
जितने री भाभी पीपर में पात,

यदि यथा वदति क्षितिपस्तथा
त्वमसि किं पितरत्कुलया त्वया ।
अथ तु वेत्सि शुचि व्रतमात्मनः
पति कुले तव दास्यमपि क्षमम् ।।

कहकै नारी सुतन्त्रता पै रोक लगाय कै वू अविस्वसनीया यनाय दई है अर महत्वहीन प्रानी की नांई उपेक्षित करि दई है । कालिदास जैसे महान कवि की बात कौऊ असर या समाज पै आदर्स के रूप में परयौ है ज्याय नारीजाति कबहुँ छिमा नहीं कर पावैगी।

भौत से मैया-बाप अबोध बच्चान कौ अनमेल ब्याह करि दें । यिनें अपनौ सम्मत्र भयौ ब्याहु याद नांय रहें । वे कहा जानें ब्याह की बीमारी । वे तौ न्यौं समझें कै यिनके तांई कोऊ एक और साथी खेलवे के तांई मंगाय दियौ है । ऐसे ब्याह ते छोरी बिचारी जीवन भर दुख पामती रहै ।

गरमीन के दिनां तौ सासरे में बड़ी कठिनाई ते निकरें । याऊ में पति कौ बिरह अर होय तौ कैसें सहै । कैसें सहै वू सास-ननद के अत्याचारनें । या गरमी में पीसनौ-पोयबौ कितेक कष्टदायक होय,याय वूई समझ सकै ज्याय अनुभव होय। ऐसी कस्ट की घरी में भैनाय भैया की याद सतावै अर गीत के माध्यम ते अपनी या बिथाय न्यौं बतावै -

पाँच पसेरी रे भैया पीसनौ
अरे भैया ज्याय पीसतई दिन जाय
कहत दु:ख घोर सौं ।

इत जब पति सौमा पै देस की रछा करिबे चल्यौ जाय तौ वाके बिरह वेदना ते जरती भई मिलन की आस ते सन्देस-वाहक कूँ इनाम दैवे की कहै अर वाकूँ भौत से तरीका बतावै कै वाकौ सन्देसौ कैसें प्रभावसाली बन सकै। या लहरिया ते स्पस्ट होय-

पाँच टका तोय दऊंगी गांठ के
है कोऊ लसकर जाय लहरिया
अब रंग भीजै धन कौ डोरिया ।
या लसकरिया ते न्यौं कहै
घर मरीयै तेरी माय,लहरिया । अब---
माय मरीयै मर जान दै
घरखा की सोभा उठ जाय,लहरिया । अब--

या लसकरिया ते न्यौं कहै

घर मरीयै तेरी भाभी लहरिया । अब -----।
भाभी मरीयै मर जान दै,
चाकी की सोभा उठ जाय लहरिया । अब---।
या लसकरिया ते न्यौं कहै
घर मरीयै तेरी छोटी लहरिया ।अब---।
छोटी मरीयै मर जान दै
रसोई की सोभा उठ जाय लहरिया । अब---।
या लसकरिया ते न्यौं कहै

आप न्याई रहिंगे तौ मैं सिंगार करूंगी ,पूजा करूंगी । परि विरहनी झूलती झूलती अपनी विन सहेलीन ते ईर्ष्या करिबे लगै जिनके पति विनके पासई रह रहे हैं । ऐसी सहेलीन्नें भाग्यवती वतावै परि अपने पति तेई नेह राखै। कोऊ दूसरौ बाते ठट्टेऊ करै तौ वाय अच्छौ नाँय लगै । या प्रसंग पै विचार करौ –

वर के डुग्गे झूलती डावर नयनी
सात सहेली वीच ।
गैल वटोही नीकस्यौ,
लीले घोड़ा असवर ॥

वटोही झूलती युवतीन में ते विरहनी कूँ पहचान जाय । मलिन मुख कान्तिवारी वियोगिनीयै देखिकैं पूछै–

हैं विनके मुख ऊजरे
त्यारौ मैलौ वेस ?

नायिका उत्तर देइ–

उनके ढोला घर रहैं,
हमारौ वसै परदेस ।

उत्तर सुनकैं राही वाय अपने संग लै चलिवे कौ न्यौंतौ दे– मेरे संग चलौ,तुमन्नें प्रीतम के पास पहुंचाय दऊँ। परि नारी कौ पतिव्रत धर्म जाग उठै अरु पराये पुरुष की भर्त्सना करती भई कहै–

डाढ़ी मूडूँ तेरे वाप की,
पराये ढोला,गोंछन सेत समेत ।

राही विचारौ झेंप कौ मारौ वाते वाके पति कौ परिचै अरु सकल सूरत पूछै परि वानें तौ विचारी नें अपने पिया की सूरतई नाँय देखी । वारी सी उमर में व्याह है गयौ,गौने कौ समै आयौ तौ परदेस चलौ गयौ । विचारी घर कौ कामकाज करिबे वारी घरवारी वनिकें ई रह गई । यू अपनी सास ते सवरी वात जाननौ चाहै । ज्याते पिया कौ समाचार मिल सकै,आपऊ पिया ते मिल सकै अरु अपने विरहा की आगै वुझाय सकै । सास वाकूं जो सूरत सकल वतावै बू सब बटोही ते मिलै। पहचान के सब चिह्न या वटोही में पावैं । सास कूँ जब यू या वातै वतावै कै याई सूरत सकल और पहचान वारौ एक वटोही कुआ के पनघट पै ठाड़्यौ है तौ सासऊ याते मिलवे के तांई लालायित है जाय अरु वहू ते वाय घर वुलायकें लायबे की बात कहै । जाऔ बहू यू वटोही मेरौ वेटा है ।

या समस्या कौ मूल कारन है वाल-विवाह। छोरी तौ या समाज नें ऐसी समझ राखी है कि जि तौ दूसरे के तांई जनमी है सो जल्दी ते जल्दी काऊ दूसरे कूँ दैकैं अपनौ वोझ कम करौ । याकौ समर्थन महाकवि कालिदास नें ऊ अपने नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' में पुरजोर तरीका ते करूयौ है–

'अर्थो हि कन्या परकीय एव,
तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः ।
जातो ममायं विशदः प्रकामं,
प्रत्यर्पित न्यास इवान्तरात्मा ।।'

इतेकई नाँय ,शार्ङ्गरव के या वाक्य नें तौ विचारी या विरहिन की कमर तोर दइयै–

शार्ङ्गरव-किं पुरोभागे ! स्वातन्त्र्यमवलम्यसे शकुन्तले!

यदि यथा वदति क्षितिपस्तथा
त्वमसि किं पितरत्कुलया त्वया ।
अथ तु वेत्सि शुचि व्रतमात्मन:
पति कुले तव दास्यमपि क्षमम् ।।

कहकै नारी सुतन्त्रता पै रोक लगाय कै वू अविस्वसनीया बनाय दई है अर महत्वहीन प्रानी की नांई उपेच्छित करि दई है । कालिदास जैसे महान कवि की बात कौऊ असर या समाज पै आदर्स के रूप में परयौ है ज्याय नारीजाति कबहूं छिमा नहीं कर पावैगी।

भौत से मैया-बाप अबोध बच्चान कौ अनमेल ब्याह करि दें । बिन्नें अपनौ सम्पन्न भयौ ब्याहु याद नांय रहें । वे कहा जानें ब्याह की बीमारी । वे तौ न्यौं समझें कै बिनके तांई कोऊ एक और साथी खेलवे के तांई मंगाय दियौ है । ऐसे ब्याह ते छोरी बिचारी जीवन भर दुख पावती रहै ।

गरमीन के दिनां तौ सासरे में बड़ी कठिनाई ते निकरें । याऊ में पति कौ बिरह अर होय तौ कैसें सहै । कैसें सहै बू सास-ननद के अत्याचारनें । या गरमी में पीसनौ-पोवनौ कितेक कष्टदायक होय,याय वूई समझ सकै ज्याय अनुभव होय। ऐसी कस्ट की घरी में भैनाय भैया की याद सतावै अर गीत के माध्यम ते अपनी या बिथाय न्यौं बतावै -

पाँच पसेरी रे भैया पीसनौ
अरे भैया ज्याय पीसतई दिन जाय
कहत दु:ख बीर सौं ।

इत जब पति सीमा पै देस की रछा करिबे चल्यौ जाय तौ वाके बिरह बेदना ते जरती भई मिलन की आस ते सन्देस-वाहक कूं इनाम दैबे की कहै अर वाकूं भौत से तरीका बतावै कै बाकौ सन्देसौ कैसें प्रभावसाली बन सकै। या लहरिया ते स्पस्ट होय-

पाँच टका तोय दऊंगी गांठ के
है कोऊ लसकर जाय लहरिया
अब रंग भीजै धन कौ डोरिया ।
वा लसकरिया ते न्यौं कहै
घर मरीयै तेरी माय,लहरिया । अब---
माय मरीयै मर जान दै
चरखा की सोभा उठ जाय,लहरिया । अब--

वा लसकरिया ते न्यौं कहै

घर मरीयै तेरी भाभी लहरिया । अब ----।
भाभी मरीयै मर जान दै,
चाकी की सोभा उठ जाय लहरिया । अब---।
वा लसकरिया ते न्यौं कहै
घर मरीयै तेरी छोटी लहरिया ।अब---।
छोटी मरीयै मर जान दै
रसोई की सोभा उठ जाय लहरिया । अब---।
वा लसकरिया ते न्यौं कहै

घर मरीयै तेरी भैन लहरिया । अव रंग---।
यहन मरीयै मरजान दै
आये साजन फिर जाँय,लहरिया । अव रंग---।
या लसकरिया ते न्यौं कहै
घर मरीयै तेरी गोरी लहरिया । अव रंग---।

या समाचार कूं सुनते इ पति चल्यौ आवै-

पूछी कुआ की पनहारियाँ
पूछी घर की कुसलात,लहरिया । अव रंग---।

पनिहारी असलियतै यताय देइ-

मायतौ कातै त्यारी कातनौ
भैना तौ खेलै गुड़िया ख्याल लहरिया । अव ---।

या मिथ्या यातै सुनकें भरतारै क्रोध आय जाय और कहै-

लाओ कंटीली रे वन की लौदरी
झूरूं लाड़ लड़ीली कौ लाड़,लहरिया
अव रंग भीजै धन कौ डोरिया।

झूला झूलती भई या'नागनियां' गीत में एक व्रज नारी नागिन के डसिवे पै अपनी सुसरार वारेन के वियोग ते और विनके प्रति अपनौ धरम न निभाय पायवे तांईं छिमा याचना करती भई कह रही है । अपनौ फर्ज नहीं निभाय पायवे कौ वाय भौत परेखौ है-

झूला रे झूलत नागिन डस गई जी
ऐजी डस गई अंगुरी की पोर । झूलारे---
सासुल सौं कहियौ मेरी वीनती जी,
और ससुर सौं कहियौ प्रनाम
यहुअल की सेवा अय ना यदी जी । झूला रे---
सैंया जी सौं कहियौ भूलै भूल जी,
घर कूँ यसामें,लामें दूसरी जी
लैमें न भसम रमाय । झूला रे--

परमारथ के कारन सरीर धरिये वारी व्रजनारी अपनी चिंता नाँय करै,याय चिन्ताय अपने सास-ससुर की वुढ़ापे में सेवा की,याय चिनाय अपने पतिकी गिरस्ती की । दूसरे के तांईं अपने अधिकारऊ ए छजोड़ दे ।

या लोकगीत में सामन में झूला झूलती व्रज यनिता वैसे तौ प्रकृति कौ वरनन करै परि व्यंजनार्थ लियौ जाय तौ याके माध्यम ते जि कहनौ चाहै कै भैया अय तौ लैये आय जाय,मैया अय तौ मोय वुलाय ले । या लोकगीत ते पिया कौ विरहाऊ व्यंजित होय कै या यातायरनै देख कै विरहिन कौ प्यार उमड़ परै । भावुकता में भरो दोऊ कुलन के विरह में अपने मनें कैसें यतावै-

सामन आयौ अजब सुहावनौ
एजी कोई आइयै अजब बहार ।
सखियन बागन झूला झूलतीं जी
कारे कारे बदरा बिजुरी चमकती जी । एजी--
नदियन किस्ती अम्मा मेरी चलि रहीं जी,
भंवरा गुंजारैं अमुआ की डार पै जी । एजी--
बागन कोयल कुहु कुहु कर रही जी,
चम्पा चमेली फूली केतकी जी । एजी--
चमन की सोभा गैंदा दै रहे जी ।

झूलते बाय अपने भैया की याद आय जाय । कल्पना करै भैया घोड़ा पै चढ़िकें आय रह्यौ होयगौ जो सबन कूं कछू न कछू जरूर लावैगौ अरु बहन के तांईं तौ चूंदरी जरूरई लावैगौ नहीं तौ लोग बाय बोलन नहीं दिंगे –

बाबाजी के बाग में हम झल झलर झूले हे ।
बाबा जी के बाग में दो चिड़िया चूं चूं करती हीं ।
इतते आये---(नाम)भैया, का सौदा लाये जी ।
आप कूं घोड़ा बाप कूं घोड़ा कै मां कूं जोड़ा लाये जी ।
बहन कूं चूंदरी न लाये तौ सौ सौ नाम धराये जी ।

सासरे में रहै तौ पीहर बारेन की विरह वेदना अरु पीहर में रहै तौ सासरे बारेन की विरह वेदना सतावै। पीहर में सखीन के संग झूलती भई गरजती बिजुरियाय देखकें पिया के विरह में डरप रही है–

सावन आयौ सुघड़ सुहावनौ
एजी कोई आइये अजब बहार ।
झूला तौ झूलै सखियन बाग में जी
एजी कोई गामैं गीत मल्हार
नहनी नहनी बुंदियन झर लग्यौ जी
एजी कोई झुक झुक कृष्ण मुरार ।
पिहु पिहु पपीहा देखौ करि रह्यौ जी ,
एजी कोई मोरन की किलकार ।

परदेस में गये पिया कौ विरह बाके गीत-गीत में व्यक्त होय –

अरी भैना घटा तौ उठीयै घनघोर,
सामन में चमकै बीजुरी जी ।
कारे कजरारे री बदरा झुकि रहे,
अरी भैना उमड़ घुमड़ चहुं ओर ।
झूला झूलती री भैना डर लगै
अरी भैना पिया गये परदेस ॥

पर फिर बदरियानें उमड़ती-घुमड़ती देखके विचार करै कै या पिया कूं विरह की वेदना सतावैगी सो वेऊ जरूर आमिंगे, राजी करिबे कूं चूंदरीऊ लामिंगे । ऐसौई एक गीत–

वदरिया वरसत है चहुं ओर
किवरिया खोलौरी सजनी ।
दादुर मोर पपैया वोलैं,
अंग कँपत डरपत मन मोरे ।
अव तौ आवौ विदेसी पिया ,
पचरंगी तोहै चूनर लायौ ।

परदेस गये पिया के वियोग की विथा तौ होय ही है। संग में वाय एक चिंता औरऊ सतावै कै पिया कहूँ परायौ नहीं है जाय ।

वर्षा होय। पानी वहै। वहते पानीयै देखकें पीहर के वियोग ते दुःखी वहन के मन में मैया-वाप अरु भैया की चिंता वनी रहै । छिन छिन याद आमते रहें । न्यौं कहौ एक छिनऊ विन्नें अपने मन ते त्याग नाँय पावै, भुलाय नाँय सकै ।

रिमझिम रिमझिम मेहा वरसै
जी पानी कहां जाय जी
आधौ पानी नन्दी किनारे
आधे में मेरौ भैया न्हाय जी ।

वावुल के घर ते विदा होती भई व्रज व्याहता अपने वावुल के घर की अरु वचपन की यादन में ऐसी डूब जाय कै पिया के घरऊ जायवे कौ मन नाँय करै । या गीत में नारी की विरह वेदना की चरम सीमा झलकै-

नियला तले डोला धर दे मुसाफिर
सामन को वहार रे ।
अपने महल में गुड़िया खेलती रे,
झूला झूलती रे,
सैंया के आये कहार रे
गुड़िया तौ खेलन न पाई
झूला तौ झूलन न पाई
डोली लैगये कहार रे ।

जि विरह की विथा वेटी कूँई नाँय रहै मां कूँऊ वरावर होय । मांऊ तौ नारी है । वेटी के आयवे की वाय सदां बाट रहै। या गीत ते पतौ चलै कै मैया की विरह विथा काऊ ते कम नाँय । वू सदा अपनी लाड़िली ते मिलवे की लालसा राखै-

कोठे पै चढ़िकैं वाकी मैया देखै
आज तौ लाड़ी वेटी आवैगी ।

पर जव वू भैया के घोड़ाय खाली देखै तौ दूरतेई पछार खाय जाय-

रीतौ सौ घुड़ला वाकी मैया नें देख्यौ
ठाड़े ते खाई पछार ।

या गीत में मां पच्छ की वेदना चरम सीमा पार कर गई है ।

पति नारी कौ सिंगार है, मांथे की विंदिया है, मांग कौ सिंदूर है, वाके अधरन की मुसकान है, वूई वाकौ वार है, वूई त्यौहार है । या पति के सुखै पायवे कूँ वू सब दुःखन्नें हँस हँसकें सहती भई संघर्ष करै । पति के विरह में वाय न कोऊ त्यौहार अच्छौ

लगै अरु न कोऊ उच्छव । रिमझिम बरसते सावन के बदराऊ वाय नांय सुहामें अरु उल्टी विरह की आग में जरामें । पिया के संग रहकें जो घनघोर घटा बरदान बन आवें अरु आनन्दित करें येई कारी कजरारी घटाटोप अँधेरी करिबे वारी घटा पिया के विरह में नागिन सी डसें, मन कौ धीर छुड़ामें अरु पीर पहुँचामें –

अरी भैना घटा तौ उठीयै घनघोर
सावन में चमकै बीजुरी जी ।
कारे कजरारे री बदरा झुकि रहे
अरी भैना उमड़ घुमड़ चहुं ओर ।
झूला झूलती री भैना डर लगै
अरी भैना पिया गये परदेस जी ।

सावन की गुहार अरु कोयल की गुहारऊ वाय नांय भावै। ज्या झूला पै वू बड़े चावते झूलै वू बाय विरह-वेदना के दोनूं पच्छ के भावन में झुलावै अरु अपने मनें सतावै ।

–36 जसवंत नगर,प्रदर्शनी मार्ग,
भरतपुर 321001

□

ब्रज के लोकगीतन में सास-ननद

-डॉ. नज़ीर मुहम्मद

समाज भाव विभोर हैकें सहज भाव ते जो गाइ उठै है वुई लोकगीत है जाए है। मानव समाज सदा ते ही अपनी-अपनी भासान में लोकगीतन कूं गावत रह्यौ है। लोकगीत हमारे जीवन-विकास के इतिहास हैं, इनमें संगीत अरु काव्य कौ सम्मिश्रन होए है।

वैसे तो सब भासान में लोकगीतन की अटूट परम्परा रही है परि मिठलौनी भरी ब्रजभासा के लोकगीत तौ रस के सागर, प्रेम भाव के निर्झर और ब्रज संस्कृति के उजागर हैं। इनमें मानव जीवन के समस्त क्रिया कलापन कौ सफल चित्रन भयौ है। ब्रजभासा के लोकगीत सुख-दुख, हर्स-विसाद, आसा-निरासा, इच्छा-अनिच्छा, संजोग-वियोग, राग-विराग, प्यार-तकरार के ताने बानेन ते बुने गए हैं। इनमें सामजिक रीति रिवाजन कौ घनौ वर्नन है। समय-समय पै गाए गए लोकगीतन कौ संग्रह करिकै इन्हें क्रमते सजाइ दयौ जाइ तौ ब्रज लोक महाकाव्य बन जाएगौ। सास-ननद के सम्बन्ध के अनेक लोकगीत मिलें हैं।

माँ बड़े उत्साह सौं बेटा कौ ब्याह करै है। बहू के आइबे पै बेटा कूं बाके बस में भयौ समझिकें बहू के विरुद्ध है जाए। ननद बाय और भरै और कहति है-

> मां भाभी कौ मुंहड़ौ कैसौ ?
> नाक चना सी, मुंह बटुला सौ घूंघट में घुर्राई।
> बहुतै खानी, नैंक कमानी जै जग जीती आई।
> माँ रोटी कितनी खावै?
> बेटी चही की चही उड़ावै।
> माँ सौनौ कितनौ लाई
> नाक की लोंग हाथ कौ छल्ला सब मैके धरि आई।

सास-ननद दोऊ बहू पै पहरौ सौ लगावन लगैं और बाय अपने आदमी तेऊं नांय मिलन देंइ।

गामन में पानी दूरि कूँअन पै ते बहू-बेटी ही भरिकें लावैं। एक दिना बिचारौ कुआ पै ही पहुँच जाए अरु रसीली बातन्नें करिबे कौ प्रस्ताव करै है। पर ननद के डर तें बहू बोऊ नांय करि पावै-

> पनियाँ भरन चली बांकी रंगीली।
> मटका उतारि गोरी कुआ पै धरि देउ ।
> हमतें करौ कछु बातें रसीली।

याते तौ रसिया कैसें कहूं मैं
छोटी ननद मेरे संग गरयोली।

प्यार भरी यातें करिकें यतरस लैबे की चाह तौ यहू के मन में ऊ है। एक दिना मोकों देखिकें अकेली ही पानी भरिवे चली जाए। पनघट पै मिलि जाएं यंसी यारे, नटखट नन्द किशोर और याय घेरि लेंत। येचारी पनिहारी कन्हैया जू सूं निहोरे करै है-

कान्हा गागरिया मति फोरै मेरे घर सासु लरैगी रे।
परि कन्हैया नांय मानै
यंसी यारे नें घेरि लई, अकेली पनियाँ गई।
सिर पै घड़ा, घड़े पै गागर, गागरि फोरि दई।
हार मेरी भीजौ, सिंगार मेरौ भीजौ चुनरी भीजि गई।
सासु मेरी मारै, ननद फटकारै जग में हंसाई भई।

जाड़े की रात में अटारी पै सोयबे वारौ आदमी बेर-बेर खाँसिकें अपनी बहू कूं बुलाइवे कौ इसारौ करै। बहू नीचे बैठी सोवती सासु के पांय दबाय रई है। सोची अब तौ सबु सोय गए। इते में ही ननद कुलबुलाय उठी। बहू बेचारी बोली-

सोइजा सोइजा ननद प्यारी सोइजा
तेरो भैया बुलावै छज्जे पै।

ननद सोय जाय, परि सासु खाँसि देय, बहू फिर बोली-

सोइजा सोइजा सासु रानी सोइजा
तेरौ येटा बुलावै छज्जे पै।

सासु सोवती सी है जाए। बहू जैसे ही उठिवे की कोसिस करै सासु बोली-

बहू पीठि खुजाइदै कुतरी काटि गई है।

बहू पीठ खुजान लगै। परि मन ही मन कहै-

डुकरिया हत्याखोर मरत हति नाहैं।

फिरि खांसिवे की अवाज सुनिकें सासु कहै है जा गडुआ में गुड़ डारि कें दूध लै जा-

बहू दूध लैकें जाए तौ देखै कै नसैनी सबरी टूटी भई है। तौ कहै है-

नसैनी बिनु भाएली
कैसें पिया की अटारी चढ़ौ जाइ।

जैसे-तैसे ऊपर चढ़ जाए तो देखै कि रिस के मारे पती ने किवार ही बंद कर लई-

बिचारी कह उठी-

खोलौ सैंया जी खोलौ किवार
तिहारी धन द्वार खड़ी

येला हू लाई कटोरा हू लाई, दूध भरौ गडुआ लाई
लाई जुवनवा में प्यार, तिहारी धन द्वारा खड़ी।

बहू के गर्भाधान होय है। पतौ लगै तौ उमंगति और उछरत सी बल खात भई ननद आवै और भाभी के कान पै मोंह धरिकै हौले ते बोली 'सुनो! हे भाभी, तैनें तौ ठढ़ की दार खाय लई।'

भाभी खिलखिलात भई बोली 'ऐ, मेरी बहना! तुमनें कहाँते सुन लई', और ननद के मोंह पै प्यारौ सौ स्वीकारोक्ति सूचक चुम्बन दैकें चुप है जाए। ननद एक पांयते उछरत भई मौहल्ला भरि की भाभी और सखी सहेलीन कूं संदेसौ दै आवै।

प्रसव हैवे ते पैलैंई ननद नें बेटा हैवे की भविस्यवानी करी है। भावज प्रसन्न हैकै वाकौ गले कौ हार दैवे कौ वचन दै डारै।

जो बीबी मेरे होगौ नंदलाल, तुम्हें दूंगी गलहार।

लाल हैवे पै ननद जब गलहार मांगै तौ भावज मुकरवे लगै, बोली-

लाली जे हरवा मेरे बाप कौ
तिहारे बिरन गढ़ायौ सोई लेउ।

ननद क्रोधित हैकें चल देय और बोली-

पूत जनन्ती भावजी, जनियौ नौ दस धीय।

भावज ननद कूं लौटाय के गलेते लगाय लेय। ननद प्रसन्न हैकें गायवे लगी-

धीय जनन्ती भावजी, जनियौ नौ दस पूत।

इन गीतन में ननद-भाभी के मलिन व्यवहार कौ चित्रन है। जातें लोक की मनोवृत्ति कौ पूरौ पतौ लगै है।

याही तरह एक अन्य गीत में आयौ है जन्ति की पीर ते परेसान बहू सास-ननद ते कहै है कि तुम मेरी पीर कूं बांटि लेउ तौ सासु कूं हँसुला और ननद कूं कँगना दूंगी। और वु दै देय। बेटा कौ जन्म है गयौ। पीर मिटि गई तौ बहू कहै है कै मेरे लल्ला तौ राम की कृपा ते भयौ है। सास ननद तुमनें जामें कहा करौ है। दोनों जनी मेरे हंसला और कंगन लौटाय देउ -

तैनें सासु का कीयौ
मोहि लल्ला राम नें दीयौ
फेरिजा मेरौ हंसला
तैनें ननद का कियौ
मोहि लल्ला राम नें दीयौ
फेरि जा मेरौ कंगना।

बच्चा हैवे पै ही जच्चा और सोहिले गाए जाऐं। गीतन तें जच्चा कौ मन हू लगौ रहै और सबकी प्रसन्नता और खुसी हू व्यक्त है जाए। जच्चा के तांई गुड़, गोंद, गोला और मेवा डारि कें स्वादिष्ट कैबकौ बनायौ जाए वाय चाखिवे के काजें सबन के संग सासु-ननद कौऊ मन चल निकरै परि जच्चा कैबकौ खवाइवे की बड़ी करौ सर्त लगावै, बोली-

मेरे कौरे तें ननदुल उझके, भाभी एकु पोटुआ मोकूं।
मेरे लाला की माई है जा, भर पेट कैबकौ तोकूं।

मेरे कौरे तें सासुल उझकै, बहू एकु पौदुआ मोकूं।
मेरे लाला की नानी हैजा, भर पेट कैयकौं तोकूं।

इतनौ सुनिकें कौन चुप्प रह सकै। जच्चा पै डलियन छबरियन गारी परि निकरें। ढोलक की थाप दूनी है जाए। बिछुअन की छनछनाहट और झाँझन की झनझनाहट तें घर गूंजि उठै, तब गलौ फारि कें सब गामन लगैं-

सब लपु-लपु खाइ, छिनरिया कौ।
सासु कूं न पूछै ननद कूं न पूछै।
परी-परी इतराइ, परी-परी मुसकाइ, छिनरिया कौ।

नए जन्मे भतीजे की आँखिन में काजर आंजिये कौ नेग बुआ माँगि रही है-

लैकें भतीजे कूं बैठी सहोदरी अब कछु देउ भौजाई।
सौ लाख गउअर सवा लाख भैंसियां तौ हम करें अँजाई।

इन नेगन में इतनौ जादा खरच देखिकें बहू घबराय जाए और अपने घर वारे ते बोलै है इन नेगन में तुम सबु घर मति लुटाइ दीजौ। इन सब कामन्ते तुम मेरी मैया-भैना पै कराय लेउ तौ कछु ना दैनौ परैगौ-

घर में अकेली सैंया घरु न लुटाइ दीजौ।
सासु जो आवें सैंया द्वारे ते लौटाइ दीजौ।
सासु कौ नेगु मेरी मैया पै कराइ लीजौ।
ननदी जो आवें सैंया उनहू कूं लौटाइ दीजौ।
ननदी कौ नेगु मेरी भैना पै कराइ लीजौ।

एक ओर गीत में ननद ते वचन दैकेंऊ भाभी कठोर व्यवहार करै है। बु रिस हैकें बोली-

भाजि भाजि यहाँ ते भाजि ननदिया।
छीनौ छिनार कौ घाघरौ
और छिनार की ओढ़नी ।

तब हो भैया आय जाए है और बाप सान्त करै है। एक और गीत में अपने भैया के बेटा हैवे की खबर सुनिकें ननद बिना बुलाये ही आय जाए। मां-बाप और भैया तौ स्वागत करैं पर सोभर में ते भावज पूछै-

किन्नें ननद बुलाई
बिना बुलाये चौं आई
बड़ी बेसरमी करी।

जगमोहन लुगरा के गीतन मे हू ननद-भाभी की नोंकझोंक फिर सुलह सत्कार सुनाई देवै। छठी के दिना ननद भतीजे के तँई कुरता टोपी लावै। रुक्मिनी सुभद्रा के रूपक द्वारा बात चलाई जाए कि सुभद्रा नें रुक्मिनी कूं पुत्र हैवे की भविष्यवानी करी तौ रुक्मिनी नें उन्हें जगमोहन सारी और लुगरा नाम कौ लंहगा दैवे कौ वचन दियौ पर बाद में बु मुकर जाए-

राजे ननद भावज दोऊ बैठिए
राजे रुक्मिनी नौ दस मास गरभ ते।
राजे ननदुल बात चलाइए

राजे जौ तिहारे होइ नंदलाल जगमोहन लुगरा दीजीए
लाली जे लुगरा ना देऊँ कुमर जी के सोहिले।
लाली, लौटि वगदि घर जाउ, फिरि मति अइए।

तौ ननद दुखी होय। इत्ते में भैया आ जाए और बहू कूं छोड़िकें दूसरी लावे की धमकी दै उठै। तब भावज ननद कूं जगमोहन लुगरा पहिरावै। ननद तब खुस हैकें दूधन न्हाइवे और पूतन फलिवे कौ आसीर्वाद दै देय-

लाली पहरि ओढ़ि घर जाउ तौ मुख भरि आसीस जु दीजिए
भाभी! अमर रहै तिहारी चूरियाँ, अमर तिहारे बोछिया
भाभी! जीऔ तिहारे कुमर कन्हैया
कुमर तिहारे चौक में, खेलै तिहारे आंगन में।

पारिवारिक सम्बन्धन की प्रगाढ़ भावनान कौ और पारस्परिक नेह कौ ऐकसौ ही चित्रन भौत से गीतन में भयौ है। इन गीतन में अनेक अन्तर्कथान कौऊ सुन्दर प्रयोग भयौ है। लोक में प्रचलित है कि सीता की ननद ने रावन सीता ते कौरे पै कढ़वाइ कें राम कूं दिखाय दियौ ताते क्रोधित हैकें राम नें सीता कूं निकारि दियौ-

ननदुल तेरौ जइयो नासु कै रावनु कौरे पै कढ़वायौ
भैयन कूं दिखराइ कै हमकूं बनोवासु दिलवायौ।

सीता जी ननद कूं श्राप दै देय कि ननद 'टिटहरी' पंछी बनकें बन-बन में टिटियाति फिरैगी। अबहू ब्रज की बैयरबानी टिटहरी की आवाज कूं असगुन की निसानी मानें और सुनिकें झट्ट धरती पै तीन पोत थुक्थुकाय बोलै हैं "रांड! टिटियाय रई है। निपूती रातें का करैगी?" परित्यक्ता सीता के बन में लाल पैदा होंय हैं। सीता घर वार की और सासु ननद की याद करकें कहै है-

सीता ठाड़ी पछिताय लाल बन में भए।
जो घर होती सासु हमारी चरुए देती धरवाय।
जो घर होती ननद हमारी सतिए देती धरवाय।

समय के संग-संग ब्रज के लोक-गीतन के विषय और सरूप में ऊ परिवर्तन आयौ है। धीरे-धीरे परदा प्रथा कम हैवे लगी है। पर पुरानी चाल की परम्परावादी सासु कूं जि कहां भावै। अपनी बहू ते वू जरति भई कहै है-

बहू तोहि लग्यौ है जमाने कौ रंग
देखि तोहि जियरा जरि-जरि जाय।
उल्टौ पल्लौ तैनें लै लीयौ
और घूंघट दियौ छिटकाइ।
नैंकहु ना सकुचावै सबसौं
हंसि-हंसि कें बतराय
बिजली घर में तैनें लै लई
नलहू लियौ लगवाइ ॥ बहू... ॥

ऊपर में नारी-जागरन की प्रतीक बहू नए रीति रिवाजन के अपनाइवे कूं उचित बतावै और प्रौढ़ा सास कूं हो पढ़ाइवे की बात बोलै है-

सासु! अब काहे कूं ओर जनाइ जमानों आग्यौ है।
अब तेरौ घुंघटा मोहि न भावै
घूंघटा में जी अकुलाय॥ जमानौ.. ॥
जो मैं पढाऊ प्रौढ़न तांई
अंधियारौ भजि जाय॥ जमानौ.. ॥
बैल बेचि टैक्टर मगांवाऊँ
कूआ में टू बैल लगाऊं
लरिकनु लेंउ पढ़ाय।
जमानों आग्यौ है।

आ तरह ब्रज लोक गीतन में सास-ननद कौ सरस बर्नन भयौ है।

-प्रोफेसर हिन्दी विभाग
अलीगढ़ मुस्लिम वि. वि.
अलीगढ़, (उत्तर-प्रदेश)

◻

ब्रज के लोकगीतन में देशभक्ति के संदर्भ

-डॉ. श्रीमती हर्षनन्दिनी भाटिया

ब्रज कौ लोकसाहित्य लोकगीतन की सहज, स्वाभाविक एवं सरल अभिव्यक्ति है। ब्रज अंचल के अज्ञात रचनाकारन नें ब्रज लोकसाहित्य कौ अनुपम सृजन कियौ ऐ। लोकजीवन की सहृदयता, कोमलता औ निर्मलता-निस्छलता प्रमुख रूप ते लोकगीतन में प्रतिबिम्बित होय है। लोकगीतन में मानव-मन के हृदय कौ स्पन्दन छिपौ भयौ ऐ। सरल हृदय की सहज अभिव्यक्ति य मार्मिक उक्तिन में ब्रज लोक जीवन तथा ब्रज लोक संस्कृति को चित्रन गीत बनकें ओठन सौं प्रस्फुटित होवै। लोकगीतन में लोकजीवन के मर्न कूं लैकें सजायौ-संवारौ जाए। मानव जीवन कौ हास-परिहास, हर्षोल्लास, दुःख-पीड़ा हृदयस्पर्शी गीतन के माध्यम ते प्रकट होय। जि लोकसाहित्य अपने लोकगीतन के माध्यम ते समाज कौ प्रतिबिम्ब बनकें हृदै के अंतरंग भावन कूं प्रकट करिबे में सक्षम और समर्थ होय ऐ। ब्रज के सर्वस्व कृष्ण-कन्हैया ने अपनी सीधी सादी रसीली बातन में ब्रजवासिन कूं अपने भरोसे में लैकें बिनके हिये मांहि चेतना की अनुभूति जगाई है। ब्रज कूं दुष्टन के जंजाल ते बचाय लियौ। आजऊ ब्रज लोक साहित्य मांहि वाकी भावना चेतना कौ संदेस दै रई ऐ। ब्रज लोक साहित्य में माधुर्य की छटा भौत अनूठी दीठ परै। जा साहित्य में राष्ट्रीय चेतना कौ ऊ रूप विद्यमान है। ब्रजवासी लोकभासा में ई अपने हिरदे की बात कर सकैं। जाई ते साहित्य कौ उपदेस अति मिठलौनौ होए। जा प्रकार के उपदेसन ते मन मैं चेतना कौ भाव जागै।

ब्रज लोक साहित्य में गीतन के माध्यम ते, समै-समै पै, परिस्थिति सापेक्ष स्वर उभरते रहे हैं। स्वतन्त्रता संग्राम में देशभक्ति के स्वर चहुं दिसान में सुनाई देते रहैं।

'सबते अच्छौ देस मम, आन देस सब धूल' की भावना, ब्रजवासीन में कूट-कूट कर भरी ऐ,। अंग्रेजन के प्रति घृणा की भावनान ते ई जा गीत कौ जनम भयौ:

फिरंगी नल मति लगवावै रे, फिरंगी नल मति लगवावै ।
नल कौ पानी भौत बुरौ रे, मेरी तबियत घबरावै ।।

जा प्रकार एक अन्य गीत में बिनकूं डाकू कहकैं अंग्रेजन के विरुद्ध जनभावना कौ उजागर कियौ गयौ। 'रे धंसि गए डाकू देस में।..'

स्वतन्त्रता आंदोलन के संग महात्मा गांधी भी जुर गये। वाकौ पूरौ पूरौ प्रभाव लोकगीतन पै परौ। ब्रज की चौपारन पै बैठकें नर तौ देशभक्ति के स्वरन में ही बातचीत करते पर बैयरबानी भी लोकगीतन के द्वारा वाकी सूचना देतीं। चरखा अरु खादी के प्रति आकर्षन, लोकगीतन मैंऊ प्रकट भयौ । पत्नि पति से कहै-

चरखा लाइ दै रे मोय भरतार, सूत कातूं न्हैनौ न्हैनौ।

यहाँ पैन भाई ते कहै-

भइया रख भारत को लाज भात खद्दर को सदयौ रे।

ब्रजबनितान की रुचि चरखा कातवे में अधिक होय। आलस्य छोड़िकैं, अति लगन ते, प्रतिदिन चरखा चलावें तौ सूत की बरसा सी है जाए। अधिक सूत ते अधिक वस्त्र तथा अच्छे वस्त्र मिलवे ते बाहर मुद्रा जाइवे पै रोक लग जाय। या प्रकार चरखा की घरर घरर ध्वनि हू कर्णप्रिय लगै-

घरर घर घरर चलै चरखा रे ।
चलै चाक पै माल तौ चरखा करै सूत बरखा॥
घर घर कातौ सूत ओत सब कपड़ा कौ कीजौ ।
तज देउ सब आलस्य किफायत पैसा की कीजौ।
घरर घररर चलै चरखा ।
शुद्ध सूत के कपड़ा पहरौ स्वच्छ रहैं दिन रात ।
पैसा बाहर ना जाये तौ सदा रहै अपने पास ॥
घरर घर घरर चलै चरखा ॥

गृहकार्य के बाद चरखा चलायवे कौ नियम अति प्राचीन ऐ। पहलें हू ब्रजबनिता अपने समय कौ उपयोग चरखा चलायवे में करतीं। अपने हाथ के कते व बुने कपड़े पहनके अति हर्षित होंय। चरखा आय कौ साधन बन जाय:

अरे तेरो चरखा हत्थेदार पड़ौसिन सुनियौ बहना।
जा दिन ते मेरी कती कतार,
नथ सौने की बनवाई,
बनवायौ गरे कौ हारु, पड़ौसिन सुनियौ बहना॥

ब्रजनारी की इच्छा है कि बाकौ चरखा निरन्तर चलतौ रहे-

मेरे चरखे को टूटै न तार, चरखा चलतौ रहै।
काहे कौ चरखा बनवायौ काहे की डारी माल॥ चरखा चलतौ रहै..
चन्दन कौ चरखा बनवायौ, रेसम की डारी माल॥ चरखा चलतौ रहै..
प्रेम कौ मैंनें तकुआ बनवायौ, ज्ञान कौ तार निकालौ।
सुद्ध सूत कौ कपड़ा पहिनौ, गर्मी लगै न ठण्ड॥ चरखा...
गांधी जी नें कर्म करिकैं, कियौ भारत आजाद॥ चरखा..
जो चरखा नित प्रति, कातै, कटैंगे दुःख अपार।
जैंसे नाम अमर गांधी कौ, तैसैं ई रहै मेरौ तार।

राष्ट्रीय चेतना के सुर इन लोकगीतन में खूब गूंजवे लगे। अंग्रेजन के अत्याचारन की निन्दा, गांधी, नेहरू आदि नेतान के त्याग, बलिदान कौ स्वर गूंजवे ते चेतना जागरित भई-

जाग उठे हैं भारतवासी अब सोवन कौ कछु काम नहीं।
देशभक्त नवयुवकन कूं, कहूं मिल्यौ कर आराम नहीं।
बढ़े चलौ या रन भूमि पै जहां सबन कौ है अधिकार।
आज देश की सीमा मांहि मचि रहे कैसे अत्याचार।
सांचो धन है आज हयामें रन से पाछे पांम नहीं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद ऊ देश-भक्ति के स्वर, चुनाव के समै सुनाई देवें। ब्रज नारियाँ ब्याह में बन्ना गाती जायँ और देशभक्ति के संदर्भ उभर कैं स्पष्ट दिखाई परैं-

गांधी पार्क में मोटर घुमाना हरियाले बन्ने।
झंडा तिरंगा लगाना।
वोट थैलों के बक्से में देना हरियाले बन्ने। झंडा तिरंगा....
पूछें तो दीपक दिखाना, हरियाले बन्ने, झंडा तिरंगा लगाना.........

देश भक्ति की सुधा-धारा के स्वर बिनके रोम-रोम ते निकलते भये प्रतीत हॉय हैं।

जब-जब देश पै संकट के बादर घुमरे तौ देशभक्ति कौ स्वर गूंज उठौ। बंगला देस की लड़ाई के दिनान में रसिया के माध्यम ते चेतावनी दई-

चलैगी गोली सीमा पै, तुम रहियो वीर हुस्यार
दगाबाज छलिया बैरी बिह दुबकि लगावै घात।
समय ले रह्यौ तैयारी कूं करै मेल की बात ।
बिनके दांत सांप के तोरौ तब लीजौ बिसराम।
पानी आगे पारि बांधनौ यही सयानौ काम।
झूठे बाइदे करै जो बैरी बाकौ का विस्वास।

बंगला देस की आजादी कौ बरनन करते भये गाय उठे वीरन कौ बलिदान-

या बंगला की आजादी में है गये बहुतेरे बलिदान।
हँस-हँस वीरन नें जंग कीयौ।
दुसमन कौ हौसलौ तंग कीयौ।
गये छोड़ मैदान, या बंगला की आजादी में हूवे गये बहुत बलिदान।

मातृभूमि, मातृभासा, अरु सबकैं ऊपर स्वदेसी बस्तुअन सौं प्रेम होनों चहिए-

जाकूं अपनी मातृभूमि सौं, अन्तर्तम सौं प्यार नहीं।
कह देओ तुम लोगन कूं, जीबे कौ अधिकार नहीं।।

राष्ट्रीयता के संदर्भ में अरु देशप्रेम में होरी के रंगे ये हुरियार काऊ तरियां पीछैं नांय दिखाई दैं। शिवाजी अरु राणा प्रताप सौं लैकैं भगतसिंह अरु बाके बाद गांधी तक सबई नें देसप्रेम की होरी खेली हती। सबई नै तो सुतंत्रता पाइबे कै तँईं त्याग-भावना की गागर माँहि संगठन कौ रंग उडेलौ है।

खेलौ री प्रेम की होरी।
रंग-संगठन की मिलि खेल्यौ, त्याग गगरी को री।
तीन रंग की लै पिचकारी, निर्भय है कै बढ़ौ अगारी।
देखौ अपनी अपनी बारी खूब करौ बरजोरी।

गया शिवा सहज ही खेले, तन पै कष्ट अनेकन झेले।
खेले भगतसिंह जत प्यारे, राजगुरु सुखदेव सितारे।
बानूं खेले हरि के आगे, हम देखत रह गये अभागे।
डटे रहे सब ममता त्यागी, प्रीत राष्ट्र सौं जोरी।

जा प्रकार होरी के गीत में देशप्रेम की भावना भर दई ऐ। या तरियां होरी के हुरियारन्नें देस कूं सुतंत्र किदौ। देश कूं नवीन दिसा दिखाई।

स्वतन्त्र हैये के याद देश कौ विकास कियौ गयौ। स्वतन्त्रता की लड़ाई में अनेक यलिदान किये। पं. जवाहरलाल और लाल यहादुर शास्त्री नें यड़ौ काम कियौ और याद में भी प्रधान मंत्री के रूप में काम करते रहे। या तरै विनकूं भी याद किदौ जाय-

मां कठिन मुसीयत झेल हिन्द लौ आजादी।
अत्याचार अंगरेजन कियौ यहुत जनता दई मार।
यड़े-यड़े वीरन चढ़ाय दिये फाँसी यहु कूअन दीये डार।
करीयै अति यरयादी। मां कठिन......
सिरी महात्मा गांधी जी नें नारे दिये लगवाय।
भारत कूं आजाद कर्यौ दिये अंगरेज भजाय।
रोय रही शहजादी। मां कठिन.........
पंडित जवाहर लाल नैहरू यन गये अय परधान।
हाथ तिरंगा झंडा लियौ, राजनीति में मान।
पहर तन पै खादी। मां कठिन..........
मंत्री लाल यहादुर जी नें कही खुले मैदान।
ईंट कौ जवाय मिलै पत्थर ते भगजा पाकिस्तान।
सीमा सेना लादी। मां कठिन.............

सरदार भगतसिंह के यलिदान कूं कयहूं कोऊ नांय भुलाय सकै। जिन शहीदन नें अपनी कुर्यानी दई विनकूं कौन भुलाय सकै-

भूल न जईयो भारतवासी उन वीरन की कुर्यानी।
हँसते-हँसते प्रान गँवाये अमर रखौ मां कौ पानी।
जात-पात औ मजहय नाम पै आज मचाऔ हल्ला
धरम यचाऔ, शक्ति यढ़ाऔ, जगह-जगह पर है गिल्ला।

याकेयाद हरित क्रान्ति सौं देस में अन्न उत्पादन यढ़ायौ गयौ और स्वेत क्रांति से दूध खूय यढ़ौ-

ठड़ी क्रान्ति किशोरी।
खेलौ री इनसौं मिल जुरि करि कै होरी।
हरित क्रान्ति कौ रङ्ग से खेलौ-नव उपकरण यटोरो।
स्वेत क्रांति कौ दूधन खेलौ, यात करौ मत कोरी।

देश भक्ति के गीतन ते जिजीविसा कूं नयौ जोस मिलै। देश-प्रेम के इन गीतन तें शक्ति मिलै। स्वतन्त्रता के याद सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक परिवर्तन दिखाई दैवे लगे ऐं। भविष्य में आसा है कि सामाजिक दायित्व के प्रति हमारी चाह और यढ़ैगी और गहरी होतौ जायेगौ तथा देसभक्ति के संदर्भ आगे खुलते जांयगे।

-भारती नगर, मैरिस रोड
अलीगढ़

जच्चा तौ मेरी भोरी भारी रे।
पाँच कनस्तर आटौ खावै, सात कनस्तर घी के।
जच्चा तौ मेरी खायौ न जानें रे।
जच्चा तौ मेरी भोरी भारी रे॥ 1॥
पाँच मटुकिया पानी पीवै, दूध के मटका सात।
जच्चा तौ मेरी पीयौ न जानें रे।
जच्चा तौ मेरी भोरी भारी रे ॥ 2॥
साँप कूँ मार बगल में दाबै, बीछू मार सिहावै।
जच्चा तौ मेरी मच्छर सों डरपै रे।
जच्चा तौ मेरी भोरी भारी रे॥ 3॥
सास ननद कौ लंहगा फारै, आई गईन को फरिया।
जच्चा तौ मेरी लड़ियौ न जानें रे।
जच्चा तौ मेरी भोरी भारी रे॥ 4॥

नामकरन संस्कार के समैऊ ऐसेई हास्य व्यंग के गीत जच्चा के ताँई गाए जामें।

बालक जब तीन बरस कौ है जाए तो पाठशाला में पढ़िबे कूँ जावै। गनेस जी कूँ भोग धराइकें लड्डू बाँटे जात्। घर में मंगलगीत गवैं। जा औसर पैऊ ब्रज गोपी अपने सुभाव के कारन ठट्ठा(व्यंग) करिबे में नाँय चूकें। बे मिलि जुरिकें गाइबे लगें-

लाला तौ देखौ पढ़िबे जावै है।
बगल में पट्टी बस्ता लैकें, रौब दिखावै है।
लाला तौ देखौ पढ़िबे जावै है।
तीन बरस भए-आ ई.उ. नाँ आखर आवै है।
कान पकरिकें धौल जमावै, बाप रिस्यावै है।
लाला तौ देखौ पढ़िबे जावै है।

पढ़ाई ते पीछें ब्याह कौ समै आवै। ब्याह बरात के रस रंग में तौ हास्य-व्यंग की तरंग अपने आपई उमड़ी करै है जो लोकगीतन में देखी जाय सकै। अगर जे कहें कै ब्याह के सिगरे संस्कारगीतई हास्य व्यंग सौं भरे भए होंय तौ झूँठ नाँय होगो। सगाई अरु लगन के समै जो खेल के गीत गाए जामें बो तौ सिगरे हास्य-व्यंग के ई गीत होंय। जो पुराने समै तेई गवते चले आय रहे हैं। जाकी थोरी सी झाँकी आपुकूँ आगें देखिबे कूँ मिलैगी। यहाँ तौ नेग-जोगन के कछु, परम्परा ते गवते आय रहे हास्य-व्यंग गीत प्रस्तुत करि रह्यौ ऊँ।

कछु साल पैले ताँई ब्याह में गिंदौरा(250 ग्राम खाँड की बड़ी टिकिया) बाँटिबे कौ चलन हो, जो मँहगाई के कारन अब बंद सौ हैतो जाय रह्यौ है। जामें बेटा बारे की ओर सौं महिला सज-धजिकें, गीत गामती भई, अपने ब्यौहारीन के द्वारे जामती हीं। या समैं बो उछाह में भरिकें हास्य के ऐसे-ऐसे गीत सुनामें हीं जिनें सुनिकें लोग खिलिर-खिलिर करिकें हँसे बिना नाँय रह पामते। बिन गीतन को कछु सैन जा तरियाँ ते हैं-

मौहल्ला रँडुअन कौ न्यारौ रे, मौहल्ला रडुँअन कौ न्यारौ।
देखि पराई नारि मूँड़ पत्थर ते दै मारौ ॥ 1॥
मटर पै अधर चलै चारौ रे, मटर पै अधर चलै चारौ।

लोग बड़े बदमास लुगाई घर-घर की साँची ॥ 2 ॥
सहर के सो गए हलवाई रे, सहर के सो गए हलवाई।
अबतौ मुखड़ा खोलि जलेबी लायौ हूँ प्यारी ॥ 3 ॥

गिंदोरा बाँटिबे जा ब्यौहारी के द्वारे पै जे महिला टोली जावै, या घर की बड़ी-बूढ़ी, कै फिर अपनी बराबर की कूँ हास्य व्यंग में खरी खोटी सुनाइबौ जे अपनों अधिकार मानें हैं। जैसें-

क्यौं ठाड़िऐ ओट किवारन की? क्यौं ठाड़िऐ?
यार बुलावै दौरी दौरी आवै,
खसम बुलावै सिर धमकै। क्यौं ठाड़िऐ......

ये फिर तरंग में गाइबे लगें-

चम्पो ते चौखट चिपट जाऐ तौ?
ऐसौ मारूँ मंत्र, दारी टूट जाऐ तौ?
गुल गैंदा लगाय दै रे, छोरा माली के।

इनते मिलेजुले से ई हास्य-व्यंग के गीत, चाक पूजिबे के समैऊँ गाए जामें। चाक कौ पूजन ब्रह्मा कौ पूजन मान्यौ जाए। दूल्है दुलहैन की मैया चाक कूँ पूजें, कुम्हार की पीठ पै हरदी कौ थापौ रक्खें, याकी घरवारी (कुम्हारी) कूँ लहँगा-फरिया भेंट दैकें नेग पूरौ करें। ता पीछें विनकूँ हास्य-व्यंग के गीत गामें। जे गीत ब्याह के सगुन माने जाऐं।

ब्याह के 'रतजगे' (रात कौ जागरन) में 'रजना' गीत गाए जाऐं। रजना में हास्य-व्यंगई होंय जो दोहान में अपनी अनूठी धुनि पै रात भर गवें। जा की कछु कड़ी जा प्रकार सौं हैं-

आगरे की गैल में लम्बौ पेड़ खजूर।
यापै चढ़िकें देखती मेरौ बालम कितनी दूर ॥ मर गई...
गैल भरतपुर बीच में, पर्यौ भुजंगी नाग।
खा लई होंती बच गई या छैला के भाग ॥ मर गई...
भरौ कुठीला मोंठ कौ, घर में चाकी नाँय।
गली-गली में डोलियौ, मेरे बस की नाँय ॥ मर गई...
खूँटी पै चरखा टंग्यौ, उर कातन की हूक।
देवर ते भाभीऊ लड़ै करै गजब के टूक ।। मर गई...
भरी अँगीठी आँच की, धक धक करें अंगार।
मोधू के पालें परी, सौवै पाम पसार ॥ मर गई....

जा रचना गीत में हर दोहा के पीछें -'मर गई मर गईरे रजना, पीरी परिगई रे रजना, मेरी जल्दी खबर सुधि लीजौ रे रजना। मेरी जल्दी खबर......।' जा टेक में हास-परिहास के संग महिलान कौ आनंद-उछाह देखिबे जोग होय।

हमारी लोक संस्कृति में छोटी ते छोटी चीज कूँ कितनों सम्मान दियौ जाऐ। जे ब्याह में घूरौ पूजिबे ते जानो जाऐ, घूरौ पूजिबे में 'हुल्लमार' हास्य गीत बड़ौ पुरानौ है। ढोलक मजीरा के संग जब रसोई के चीमटा, फूँकनी कूँ वाद्य यंत्र के रूप में बजामती भई महिला 'हुल्लमार' गामें तौ दूर-दूर तक पतौ परि जाए कै ब्याह वारे के घर घूरौ पुजि रह्यौ है। वे गामें-

'हुल्लमार रे सारे अक्खो कें द्वै-द्वै बहौरियां।
हुल्लमार! हुल्लमार रे जाकी इक गोरी इक कारियाँ।'

जे हुल्लभार कहा है जाकूँ कोई नाँय जानें
पर 'सावरी' मंत्र की तरियाँ जासौ प्रभाव खूब होय।

ब्याह में बरात के आइबे ते लैकें बिदा हैबे तक तौ सिगरे संस्कार गीत हास्य-व्यंग के ई होंय जो न जानें कबते गवते चले आय रहे हैं। बरात द्वारे पै आई, दूल्है तोरन मारिकें चौकी पै ते उतरौ ई हो कै तबई बेटी वारेन की ओर सौं सुगाई ठट्ठा(व्यंग) करिकें गाइबे लगें-

रंडी न लायौ नचाइबे कूँ, समधी के द्वार।
बाजौ न लायौ बजाइबे कूँ, समधी के द्वार।
नंगौई आयौ लजाइबे कूँ, समधी के द्वार।
अपनी भैनाँ न लायो रिझाइबे कूँ, समधी के द्वार।

बेटा बारौ चाँहे सब कछु लायौ होय, पर बाते का? बेटी वारे की सुगाइन कूँ तौ कछु कहनों है। एक गीत पूरौ भयौ कै दूसरौ छिड़ गयौ-

समधी न आयौ मेरी खातिर में, हम्बै खातिर में,
जाके डेरा तौ लगाय देऔ पल्ली बाखर में।
दूल्है न आयौ मेरी खातिर में, हम्बै खातिर में ,
जाके डेरा तौ लगाय देऔ पल्ली बाखर मे।

जाई तरियाँ ये सिगरी बस्तुन कौ नाम लै लै कें गामें अरु मे काई कूँ अपनी खातिर में नाँय लामें। जाई तरियाँ तौ बारौठी पै गवबे बारौ एक गीत होय-'कूर-कूर' जामेंऊ समधी सौं छेड़छाड़ करी जाऐ।

मैंनें हाथी मँगायौ घोड़ा लायौ रे समधी।। सारे कूर कूर....
मैंनें गोरे बुलाए कारे आए रे समधी॥ सारे कूर कूर.......

जे कूर कूरऊ द्रोपदी के चीर की तरियाँ लम्बी हैती जाए। द्वारे पै ऐसे हास्य-व्यंग के अनेकन गीत गाए जामें, जिनकूँ सुनिकें बराती मगन है जामें।

वैसे गारी बहौत बुरी चीज मानी जाऐ। अगर काईकें म्हौंड़े ते भूल-चूक मेंऊ काईके ताँई गारी निकर जाए तौ समझौ गारी दैबे वारे की खैर नाँए। पर ब्याह की गारी के तौ ठाठई कछु और होय। प्रीत की तौ रीतई न्यारी होय। जे गारी दई नाँय, गाई जाऐं। द्वै परिवारिन कूँ प्रैम के धागे में पिरोमें। छत के अट्टा पै बैठी कोकिल कंठी जब सुमधुर धुनि ते गारी गामें तौ रस की बरसा सी होंन लगै। भोजन के ताँई पत्तर पै बैठे बराती, उचक-उचककें, बड़े चाव सौं बिनकौ आनंद लियौ करें। इन गारीन में काव्यकला, इतिहास अरु संस्कृति के संग हास्य-व्यंग कौ अनूठौ संगम देखिबे कूँ मिलै, जैसें-

मुकुट धर सामरे रे लाला द्वै बापन कौ जाम।
एक बाप मथुरा बसै रे लाला दूजौ गोकुल गाम॥
पहिली मैया देवकी रे लाला कंस कैद दई डार।
दूजी माय जसोधरा रे लाला गोकुल की छछिहार॥
भैन तिहारी सहोदरा रे लाला अर्जुन संग सिधार।
भुआ तिहारी कुंती रे लाला क्वारी करन दियौ जाय।।
भाय तिहारी द्रोपदी रे लाला पाँच पुरष इक नार।
मुकुट धर सामरे रे लाला द्वै बापन कौ जाम॥

ऐसी प्रेम पगी गारी के संग तरंग में आयकें नारी फिर सीधम सट्ट सुनाइवे लग जाएं-

अट्टा ऊपर अट्टा समधी, व्याह करै कै ठट्ठा,
ड्यौढ़ी वान लगाय दुंगी-सारे जायगौ कहाँ?
गडुआ ऊपर गडुआ समधी, जे गौने के लडुआ,
ड्यौढ़ी वान लगाय दुंगी, सारे जायगौ कहाँ?
कलसा ऊपर कलसा समधी जे ऐं मेरे झलसा,
ड्यौढ़ी वान लगाय दुंगी सारे जायगौ कहाँ?
चेला ऊपर चेला समधी, मती मचावै हेला,
ड्यौढ़ीवान लगाय दुंगी, सारे जायगौ कहां?

जब इन प्रेम पगी गारीन सोंऊ गाइवे वारीन कौ पेट नाँय भरै तौ वे ततइया गीत सुनाइवे लग जाऐं। जे ततैया गीत बरातीन कूं भोजन हजम करिवे में चूरन कौ सौ काम करैं। ततैया के वोल जा तरियाँ हैं-

अव नाऐं छूटै हमारौ ततैया॥ अव नाऐं छूटै.......
कारौ नाऐं पीरौ नाऐं लाल ऐ ततैया॥ अव नाऐं छूटै....
जा समधी की भैनें लग गये ततैया॥ अव नाऐं छूटै.....

और फिर जे गीतन के ततैया ऐसे लगें कै ये फिर वेटा वारे की मैया, भुआ, घरवारी तौ का दूल्है के वाप, वावा, चाचा, ताऊ, तक काइऐ नाँय छोड़ें। वेटा वारे इन ततैयान के डंक सौं हाय-हाय करिवे की जगै हंसिकें हा....हा.... करिवे लगें।

जब वराती भोजन करिकें उठिवे लगें तवऊ हास्य व्यंग के गीत विनकौ पीछौ नाँय छोड़ें। वइयर गाइवे लगें-

काहे उठि वैठे और लै लैंते,
पूरी लै लैंते कचौरी लै लैंते, अपनी मैया कौ दान करि दैंते।
काहे उठि वैठे और लै लैंते।
लड्डू लै लैंते इमरती लै लैंते; अपनी भुआ कौ दान करि दैंते।
काहे उठि वैठे और लै लैंते।

जा तरियाँ ये हरेक कड़ी में पकवानन कौ नाम लै लैकें, वाके संग वेटा वारेन के घर की महिलान कौ दान करिवे कौ सुजाय दैं। जाके संगई ये दूल्है की दादी, मैया, ताई, चाचीन के ताँई अलग ते गीत गायौ करें-

गंगा कैसी वहै मोऐ देखिवे कौ चाव।
दूल्है की मैया न्हावे चाली संग लिए लगवार,
धारा कैसी वहै मोऐ देखिवे कौ चाव।
जब दारी नें गोता लीने चिपट गए सव यार,
जब दारी ऐ भूख लगी तौ लडुआ लामें यार,
गंगा कैसी वहै मोऐ देखिवे कौ चाव।

जा तरियाँ व्याह में एक ते एक ऊँचे अरु वढ़ि-चढ़िकें हास्य-व्यंग के गीत गाए जामें। इनमें सिरमौर होय है मंडप सोभा पे सनै गयवे वारे 'ललमुनिया गीत'। ललमुनियाँ में नाचिवे, गाइवे अरु वजाइवे कौ सिगरौ खजानौई, हास्य-व्यंग में एक

संग खोलिकें धर दियौ जाऐ। इत पै जमी ललमुनियाँ गाइये वारीन के टोल में एक मुखिया होंय, जो पुरुषन कौ भेष धारन कर अपनी हास्य मुद्रा सों जा खेल कौ संचालन करै। मुखिया अपने म्हौंकूँ हलके लत्ता ते ढँके रहै, जाते [illegible] कोऊ वाकूँ पहिचान नाँय सकै।

ललमुनियाँ में 'पहिलै लै.....लै परमेसुरी...मेरो खेलै भवानी', गीत गायौ जाऐ। साँची मानों जा गीत के संगई गाइबे वारी लुगाई पै भवानी सी चढ़ि यैठै। फिर तौ वे यराती कूँ ऐसी ऐसी कथा गाइकें सुनामें कै पूछौई मत? पुरुष रूप धारी मुखिया गीत में पूछै–

च्यौं समधी मैं युड्ढौ ऊँ?

पीछें ते सिगरी यइयर मिलिकें गामें–

कौन कहै तू युड्ढौ ए?
तेरी भैनाऐ लै जाऊँ युड्ढौऊँ?
कौन कहै तू युड्ढौ ऐ?
तेरी मैयाऐ लै जाऊँ युड्ढौऊँ?
कौन कहै तू युड्ढौ ऐ?

जे ऐ ललमुनियाँ की खोपरी में ते सम्हरिकें निकारौ भयौ एक चामर कौ दानौं। जाई सों अनुमान [illegible] कै ललमुनियाँ में कैसे-कैसे हास्य-गीत गाऐ जातें। पर अय तौ एक दिनां के ब्याह में ललमुनियाँ [illegible] है।

इतकूँ येटी यारे के यहाँ ब्याह के समै हास्य-व्यंग गीतन के रंगल-मंगल होंय तौ [illegible] में चले जाइये के कारन 'खोइया' के नाम ते तिरियान कौ राज है जाए। खोइया सिगरौ [illegible]। [illegible] यइयर पुरुषन कौ भेस धारन करिकें हाथ में यलरामजी कौ अस्त्र 'मूसर' लैकें अनजानें [illegible] चाहै जाकूँ मूसर मार कौ परसादऊ चखाइदें।

ब्याह-यरात ते हटिकें यार-त्यौहारन के गीतन में ऊँ हास्य व्यंग के गीत अच्छे [illegible] जातें। सावन में झूला पै गाइबे यारौ एक हास्यगीत जा तरियाँ ए–

चाकी के नीचें धनियाँ योयौ,
हाँ सहेली धनियाँ योयौ।
धनियाँ मैनें गैया खवायौ,
हाँ सहेली गैया खवायौ।
गैया ने मोकूँ दुद्धा दीनों,
हाँ सहेली दुद्धा दीनों।
दुद्धा की मैनें खीर यनाई,
हाँ सहेली खीर यनाई।
खीर ते मैनें यामन जिमायौ,
हाँ सहेली यामन जिमायौ।
यामन नें मोऐ दई असीष,
यच्चा होयें नौ-दस-यीस।

जाई तरियाँ साँझी अरु टेसू के गीतन में ऊ हास्य-व्यंग पूरौ पूरौ मिलै है। साँझी कौ एक गीत देखौ-

भैया! भैया! कहाँ-कहाँ व्याहे ? ॥ पारे बरिया.. ॥
अलवर व्याहे, जैपुर व्याहे, दिल्ली सहरते लाए॥ पारेबरिया... ॥
भैया! भाभी कैसी आई?॥ पारेबरिया... ।
आँख चनाली म्हों बटुला सौ घूँगट में घुरामें॥ पारेबरिया... ॥
भैया! भाभी का-का लाई?॥ पारेबरिया.... ॥
आठ बिलैया नौ चकचूंदर, सोलह मूसे लाई॥ पारेबरिया... ॥
भैया! भाभी कितनी खामें?॥ पारेबरिया... ॥
घागे भरिकें मठा महेरी सौ रोटी घर जानें॥ पारेबरिया... ॥

जा गीत में लोइवे की ऐसौ हास्य में बरनन है कि सुनिबे वारे खिलखिलाय परें। जाई तरियाँ 'टेसू' कौ गीत और दैखौ-

टेसू रे टेसू घंटार बजइयों,
दस नगरी दस गाँव बसइयों।
बस गए तीतर बस गए मोर,
बूढ़ी डुकरियाएँ लै गए चोर।
चोरन के घर खेती भई,
खाय डुकरिया मोटी भई।
मोटी हैकें दिल्ली गयी,
दिल्ली ते द्वै बिल्ली लाई।
एक बिल्ली कानी,
टेसुरा की नानी।

साँझी अरु टेसू गीत तेऊ अलग हटिकें अनेकन ऐसे हास्य गीत होंय जो ब्रज मंडल में नितई गाए जाँए। इनमें ते एक गीत देखौ जाकूँ घर में गायकें छोटे बालकन कूँ प्रसन्न कियौ करें।

अटकन बटकन दही चटाके,
बरकूलो बंगाले।
मामा लायौ सात कटोरी, एक कटोरी फूट गई
मामा की बहू रूठ गई।
का बात पै रूठ गई?
दूध दही पै रूठ गई।
दूध दही मुकतेरौ,
दै दारी में पूरौ।

घर-त्यौहार अरु नेग जोगन के गीतन ते अलग 'खेल के गीत' और होंय जो परिवार में हैवे वारे उच्छवन में संस्कार गीतन के पीछें मनहूँ गुदगुदावे के ताँई गाये जाएँ। इन हास्य गीतन में ब्रज के लोक जीवन कौ खुलौपन झलकै है। इनमें हंसोड़ी सुभाव की वहू अपनी खास सास सौं ऊ ठट्ठा करिवे में नाँय चूकें। इन हास्य गीतन कूँ कोऊ नाँय जानें कबते गवते चले आ रहे ऐं अरु आजऊ गाए जा रहे ऐं-

कजरा बिकन कूँ आयौ रे, कजरा लै लै बुढ़िया
चढ़ूँ अटारी परसा की लौनों।

बुढ़िया नें रुपया खुलायौ रे। कजरा लै लै बुढ़िया...
बहु येटिन नें डिबिया में राख्यौ,
बुढ़िया नें डिब्बा उठायौ रे। कजरा लै लै बुढ़िया.....
बहु येटिन नें सलाई ते लगायौ,
बुढ़िया नें मूसर उठायौ रे। कजरा लै लै बुढ़िया......
बहु येटिन नें दरपन में देखौ,
बुढ़िया नें बुड्ढौ बुलायौ रे। कजरा लै लै बुढ़िया.....

दूसरौ गीत तौ जातेऊ कर्यौ ए देखौ-

जे बुढ़िया हत्याखोर, मरै हत नाँऐं।
जे दूधऊ पीवै नाँऐं, और छाछहु पीवै नाँऐं।
जे रबड़ी माँगे रोज, मरै हत नाँऐं ॥ जे बुढ़िया.....
जे दरिया खावै नाँऐं, जे रोटी खावै नाँऐं।
जे पूरी माँगे रोज, मरै हत नाँऐं ॥ जे बुढ़िया......
पट्टा पै बैठें नाँए, पीढ़ा पै बैठे नाँऐं।
जे पलका तोरै रोज, मरै हत नाँऐं॥ जे बुढ़िया.....
जे मंदिर जावै नाँऐं, देवालय जावै नाँऐं।
जे रार मचावै रोज, मरै हत नाँऐं ॥ जे बुढ़िया.....

खेल कौ एक और गीत देखौ जाकी एक एक कड़ी में सिंगार के संग हास्य कूँ पिरोयौ गयौ ऐ-

राजा एक मझोली सोलह जने,
पायन मत जइयों एकउ जनों।
राजा एक धोयती सोलह जने,
नंगौ मत रहियौ एकऊ जनों।
राजा एक फुलकिया सोलह जने,
भूखौ मत रहियौ एकऊ जनों।
राजा एक खटोला सोलह जने,
धरती मत सोइयौ एकऊ जनों।
राजा एक रजाई सोलह जने,
जाड़े मत मरियौ एकऊ जनों।

ब्रज के लोक जीवन में तौ हास-परिहास के गीत जीव अरु ब्रह्म की तरियाँ दोऊँ आपुस में ऐसे रच-पच गये ऐं कै मरिवे के पीछेंऊ जे पानी कौ पीछौ नाँय छोडें। ब्रजमंडल में बड़े बूढ़े की मृत्यु पै, वाके समधी के यहाँ, मदयर यानी गेये-बिलाप करिवे नाँचती-गामती-बजामती नाँच कुदना करिवे कूँ आमें। जाके तांईं वे दस बीस सहेलीन कूँ संग लैकें पूरी तैयारी ते आमें और गांम (कस्या,सहर होय तौ गली मौहल्ला) में घुसतेई ढोलक की थाप पै जोर-जोर सौं गावे लगें-

पंछी बोलना, औ हमारी राम-राम।
आज सहर में को मरिगौ?
पंछी बोलना औ हमारी राम-राम।
आज सहर में लछमा कौ बाप मरौ,

पंछी योलना, औ हमारी राम-राम।
आज गांम में को मरिगौ?
पंछी योलना, औ हमारी राम-राम।
आज गांम में रूपो कौ ससुर मरौ,
पंछी योलना, औ हमारी राम-राम।

जाई तरियाँ मृतक सों सम्बन्ध जोड़िकें याकौ नाम लै लैकें 'पंछी योलना औ हमारी राम-राम' गाते भए द्वार पै आमें और म्हाँ हास्य-व्यंग के गीतन के संग अपनों नाँचियौ प्रारम्भ कर दें। जामें व्याह के समैं गाइवे वारी 'गारी' जादा होय। जासमै गवैये वारी गारी जा प्रकार है जो श्री कृस्न की 'चीरहरन लीला' सों जुरी भई ऐ-

दारी समधिन न्हायवे चाली संग लगे गिरधारी।
रंग यरसैगौ हाँ-हाँ राम रंग यरसैगौ॥
चीर उतार तीर पै धर दिऐ, जल में घुसी उघारी।
रंग यरसैगौ हाँ-हाँ राम रंग यरसैगौ॥
चीर चुराय किसन जी लै गए, जाय कदम पै यैठे।
रंग यरसैगौ हाँ-हाँ राम रंग यरसैगौ॥
चारों ओर निरख रहीं तिरिया, कोई दीख न पावै।
नाँय कोई पुरुस नाँय कोई यंदर कौने यादर फारे?
रंग यरसैगौ हाँ-हाँ राम रंग यरसैगौ॥
ताई समै यजाई यंसी देख रही जे तिरिया।
हमरौ चीर हमें देऔ लाला, जल में निपट उघारी।
रंग यरसैगौ हाँ-हाँ राम रंग यरसैगौ॥
चीर तिहारे जयई मिलिंगे, जलते आऔ प्यारी।
आपु हँसौ सय यिरज हँसैगौ, ग्वाल हँसें दै तारी
रंग यरसैगौ हाँ-हाँ राम रंग यरसैगौ॥
दादी चाची न्हाइवे चालीं संग लगे गिरधारी।
रंग यरसैगौ हाँ-हाँ राम रंग यरसैगौ॥

यड़ौ-यूढ़ौ जितनो यड़ौ आपु कौ मरै याकूँ यितनेई घने हास्य गीत गाये जाएँ। जाके पीछें भाव जेएं कै भगवान सयकूँ लम्यी उमर दें जासें ये नाती पंती के आनंद देखिकें जाएँ।

व्रज के लोकगीतन में हास्य-व्यंग इतनों भरौ परौऐ कै जाकूँ समैटकें इकठौरौ कियौ जाए तौ भारी पोथन्ना यनि जायगौ जे लोकगीत नाँय जानें कयते प्रेम की डोरी में यांधिकें समाज कूँ जोरें भएं एं? समाज इनकौ रिनीऐ।

-यड़ा याजार,
गोवर्धन (मथुरा)

❑

ब्रज के कछु चटपटे लोकगीत

-श्री आनन्द वल्लभ शर्मा 'सरोज'

ब्रजभूमि सदैव सों नटखट कृष्ण कन्हैया की केलिस्थली रही है। या कृष्ण-कन्हैया की, वाके प्रत्येक क्रिया-कलाप में पल-पल चंचलता और छिन-छिन हास-परिहास, आमोद-प्रमोद और नाना प्रकार को जन-मन रंजनो क्रीड़ान को समावेस रह्यौ है। गिरि गोवरधन की तरहटी और जमना के कछारन के बीच गोरस कौ नित्य निरन्तर आस्वादन करवे वारे कान्हा नें कबहु दान, कबहु मान, कबहु चोरी, कबहु होरी, कबहु रास और कबहु विलास की नाना विध लीला रचकें ब्रज भूमि *कों एक ऐसी रस धारा सों सिंचित कर दियौ जाते हहाँ के कण-कण में माखन जैसी मृदुता और मिसरी जैसी मधुरता मिल* गई। मनमोहन की मोहिनी मूरत सदा सदा के तांई हर ब्रजवासी के उर अन्तर में पैठ गई। रसेश श्री कृष्ण की मादक अनुभूति सों अनुप्राणित हैकें समस्त ब्रज मण्डल राममय है उठो। ऐसी ब्रज की भाषा हू रूखो-सूखो कौं रहती। कन्हैया के केलिकलापन ते जुरिकें यामें हू अद्‌भुत माधुर्य को संचार भयौ और यो हू जन-जन को हिय हार बन बैठो।

अपनी सनातन परम्परा सौं सरसते विहँसते ब्रज लोक जीवन नें अपनो ही प्राणदायिनी ब्रजभाषा में अपने हृदय की भाव-भित्ति पै ऐसे-ऐसे जीवन्त और मनोरंजक शब्दचित्र अंकित करे हैं जो आज हू हर ब्रजवासी के मन मानस में गुदगुदी सी मचायकें वाहि सदा रसविभोर बनाएं भए हैं। मात्र ब्रज वासिन कौ ही नहीं अपितु हर रसिक हृदय कौं मायवे लुभायवे की वृत्ति इनमें निहित है। इनमें ते कछुक शब्दचित्र यहाँ पाठकन के सम्मुख रखवौ हमारौ अभीष्ट है।

ब्रज में 'रसियान' की और 'छैलान' की कमी न पहले रही न आज है। जो कहूँ फागुन को महीना और होय तब तौ कहनों ही कहा। फिर तौ गिलोय कौं नीम चढ़ते देर नाँय लगै। फागुन तौ मानों उमंग और उल्लास, राग और रंग कूं संग लैकें विसेषत: होरी के मिस ठिठोली और छेड़-छाड़ करवे कूं ही आवै। वा समै बूढ़ेन पै हू जवानी छा जाय है। छैलान की मटकन-*झटकन देखवे लायक होय है। उनकी अटपटी बानी ते छूटे राग-अनुराग के तीखे तीर जब काऊ ब्रज-बधू कूं जाय लगैं तौ* वाहू को अहं आहत है उठै और प्रतिक्रिया स्वरूप बोहू इठलावे-इतरावे लगै, अपने हाव भावन ते, चाल-ढाल ते तब रसिया और हू मुखर हैकें जि कहवे कू विवस है उठै कै:-

बरसाने की गुजरिया-कमर तेरी छल्ला मुदरिया
बरसाने की गूजर तेरो नैनों-नैनों कजरा
हँस-हँस के मारै नजरिया। कमर तेरी.........

कहूँ गोरी की पतरी कमर पै फिकराकसी तौ कहूं वाकी चाल पै-

'गोरी चलै मरोरा की चाल दिखावै रंग ज्वानी को।'

रसिया हर पल मानों वा के गोरे गदराए अंगन पै निगाह गड़ाए रहै है। गोरी को सौन्दर्य [illegible]

तौ वो स्पष्ट कहवे में नाँय चूकै-

ढर गई ज्वानी पर गई सलवट लोग करें बकवाद

अब पहले जैसी रौनक नांय रही-

गयौ मिसरी कौ स्वाद-रह्यौ गुड़धानी कौ, गोरी चलै......

या मिसरी और गुड़धानी के स्वाद कौ अन्तर रसिक जन ही पहचान सकें हैं। 'रस की बात रसिक ही जानें-रस कूं कूर कहा पहचानें।'

कैसी अनूठी उपमा है और कैसे अनूठे प्रतीक। छैला कूं गोरी के कजरारे नयनन में घटा उठती नजर आय रही है-

गोरी तेरे नैना कारी घटा।
घर के बलम की रबड़ी न भावै-यारन कौ पी गई खट्टौ मठा......

और हू-

छम-छम पूजन चली हनुमान कौं
तेल की मिठाई हनुमान पै चढ़ाई
घी की मिठाई काऊ ज्वान कौं....

हद है गयी सैतानी की। गोरी के पातिव्रत्य कूं चुनौती। तब ही तौ वुऊ मुखर होयगी। बाध्य होयगी कछु न कछु बोलवे कूं। बुलबुलाहट चहिये रसिया कूं तौ गोरी के बोलन की। चौं न वु गुड़-मिसरी, मठा-महेरी की चर्चा करकें गोरी के हृदय-प्रदेस में रस घोरवे की चेष्टा करै। कबहु-कबहु तौ वो काहू नई गुजरिया के तौ सूधौ दरवज्जै पै ही जाय पौंहौंचै और निःसंकोच कहवे लगै-

खातिर करलै नई गुजरिया रसिया ठाड़ौ तेरे द्वार

अरी, ओ! देख जि रसिया तेरे द्वारे बेर बेर नाँय आयवे वारौ। जल्दी ते एक काम कर डार-

हिरदय की चौकी कर हेली-नेह कौ चन्दन चरच नवेली।
पुतरिन पलंग बिछाय पलक के करलै बन्द किवार.........

ऐसे दिवाने कूं जब वाकी अपनी ही गोरी भली भाँति मजा चखायवे कूं तत्पर है जाय तौ जिही रंग रंगीलौ मस्त मौला रसिया अपनी मित्र मण्डली के मध्य अपनी ही रामकहानी निसंक हैकें सुनायवे में नाँय चूकै-

मारौ-मारौ मेरे यार मोय घरवारी नें मारौ

मित्र पूछैं कै बात का भई तौ कहबे लगै कै-

मैनें कही तू दार-भात कर वाने चून निकारौ मेरे यार.....
याही बात पै भई है लड़ाई-कछु नाँय दोस हमारौ मेरे यार...

फिर का भयौ-

ओढ़ चुनरिया पीहर कूं चल दई
घर कौ लगाय गयी तारौ मेरे यार.......

अब तौ बिचारे के पास रोयबे के सिवाय और कोई चारौ नाँय। रोयबौ हूँ सिसकी भर-भर कै-

गोरी चली पीहरवा बलम सिसकी दै-दै रोवै
तालन पै रोवै-तलैयन पै रोवै-घाटन पै दै दै मूड़ फोरै....

बिचारौ माथौ फोरबे कूं बिबस। का कहने जा आकर्षण और ऐसी अनन्यता के। और जि चूनरी ब्रज की जि चुनरिया तौ गोरी नें जैसें ही ओढ़ी नाँय कै समझ लेउ अब यु नाँय रकबे बारी। कहूं न कहूं चल दैबे कूं तत्पर है। कहाँ? वाही के मुख ते सुनौ-

अरे मैं तौ ओढ़ चुनरिया जाऊँगी मेले में

रसिया नें पूछी, चौं? चौं कै-

नाँय मानें मेरौ मनुआँ मैं तौ गोवरधन कूं जाऊँगी
और पांच आना को पाव जलेबी बैठ सड़क पै खाऊँगी

हाँ, जो सड़क पै बैठे चाहे चौखण्डी पै ब्रज में तौ 'सबै भूमि गोपाल की यामें अटक कहा' सूधौ-सादौ ग्राम्य जीवन। अस्तु गोरी जब जिद करबे लगै तौ रसिया हास-परिहास की सृष्टि करतौ भयौ वाकूं बरजै कै देख तू ब्हौत मलूक है याते-

मेला कूं मत जाय मेरी प्यारी बड़े-बड़े 'दद्दुआ' आंगे
सात पाँच मिलकें तोय गोरी संग उठाय लै जांगे

जानें कितने रसिक छैला म्हाँ घूम फिर रहे होंयगे। तेरौ हरन कर लियौ तौ? ना बाबा ना। मैं तोय म्हाँ न जान दूंगौ। अब भला ऐसे अनुरागी रसिया पै गोरी प्रतिपल अपनौ प्रेम-घट न उँड़ेलती रहै तौ फिर प्रेम की अनन्यता ही कैसी। जिही कारण है कै ब्रजबाल हू अपने प्रियतम कूं प्रतिक्षण प्रसन्न राखबे की चेष्टा में निमग्न रहै है। कबहु उल्टी-पुल्टी बोल हू जाय तौ वाकूं बड़ौ पश्चाताप होय है और यु भविष्य में प्रण करै है कै-

मेरौ पीरौ परि गयौ बलमा याहि अब न सताऊँगी
भूरी भैंस लाई पीहरते भर भर बेला प्याऊँगी।

हाँ, गोधन गैया, भैंस ही तौ ब्रजबासिन कौ सबते बड़ौ धन है। नन्दबाबा की तौ नौ लाख गैया हीं। 'नौलख धेनु नन्द बाबा के घर घर माखन होय।' वाही माखन कूं खाय खाय कैं ब्रजजन हृष्ट-पुष्ट बने रहत हैं। वाही निमित्त यह ब्रजललना हू अपने पीहरते भूरी भैंस लैकें आई है। वाहि भरोसौ है कै जाकौ दूध पीकैं वाकौ बलमा फिर सुरख है जायगौ। ब्रज में भाभी-देवर कौ नातौऊ बड़ौ अनूठौए। या आत्मीय सम्बन्ध कूं कैसी बढ़िया संज्ञा दीनी है काहू गीतकार नें-

रेल बनी भौजाई इंजन बन गयौ ल्हौरौ देवरिया

जि रेल गंगा घाट तक जाय पौहोंची है। भाभी-देवर दोनों संग-संग स्नान करिंगे। पर म्हाँ तौ कोई घाट ही खाली नाँय।

घाट नाएँ खाली देवर गंगा कैसें न्हाऔगे

तौ फिर विचार होय कै चलौ गंगा पार चलैं किन्तु समस्या है कै म्हाँ तौ केवल चना मटर ही खायबे कूं मिलिंगे। गोरी तैयार है-

लै चल गंगा पार सिपहिया चना-मटर ही खाय लुंगी

तौ यो स्पष्ट कहवे में नाँय चूकै-

ढर गई ज्वानी पर गई सलवट लोग करें चकवाद

अब पहले जैसी रौनक नांय रही-

गयौ मिसरी कौ स्वाद-रह्यौ गुड़धानी कौ, गोरी चलै......

या मिसरी और गुड़धानी के स्वाद कौ अन्तर रसिक जन ही पहचान सकैं हैं। 'रस की बात रसिक ही जानें-रस कूं कूर कहा पहचानें।'

कैसी अनूठी उपमा है और कैसे अनूठे प्रतीक। छैला कूं गोरी के कजरारे नयनन में घटा ठठती नजर आय रही है-

गोरी तेरे नैना कारी घटा।
घर के बलम की रबड़ी न भावै-यारन कौ पी गई खट्टौ मठा......

और हू-

छम-छम पूजन चली हनुमान कौं
तेल की मिठाई हनुमान पै चढ़ाई
घी की मिठाई काऊ ज्वान कौं....

हद है गयी सैतानी की। गोरी के पातिव्रत्य कूं चुनौती। तब ही तौ वुऊ मुखर होयगी। बाध्य होयगी कछु न कछु बोलवे कूं। चुलबुलाहट चहियैं रसिया कूं तौ गोरी के बोलन की। चौं न वु गुड़-मिसरी, मठा-महेरी की चर्चा करकें गोरी के हृदय-प्रदेस में रस घोरवे की चेष्टा करै। कबहु-कबहु तौ बो काहू नई गुजरिया के तौ सूधौ दरवज्जै पै ही जाय पौहोंचै और निःसंकोच कहवे लगै-

खातिर करलै नई गुजरिया रसिया ठाड़ौ तेरे द्वार

अरी, ओ! देख जि रसिया तेरे द्वारे बेर बेर नाँय आयवे वारौ। जल्दी ते एक काम कर डार-

हिरदय की चौकी कर हेली-नेह कौ चन्दन चरच नवेली।
पुतरिन पलंग बिछाय पलक के करलै बन्द किवार.........

ऐसे दिवाने कूं जब वाकी अपनी ही गोरी भली भाँति मजा चखायवे कूं तत्पर है जाय तौ जिही रंग रंगीलौ मस्त मौला रसिया अपनी मित्र मण्डली के मध्य अपनी ही रामकहानी निसंक हैकें सुनायवे में नाँय चूकै-

मारौ-मारौ मेरे यार मोय घरवारी नें मारौ

मित्र पूछैं कै बात का भई तौ कहवे लगै कै-

मैनें कही तू दार-भात कर वाने चून निकारौ मेरे यार.....
याही बात पै भई है लड़ाई-कछु नाँय दोस हमारौ मेरे यार...

फिर का भयौ-

ओढ़ चुनरिया पीहर कूं चल दई
घर कौ लगाय गयी तारौ मेरे यार......

अब तौ बिचारे के पास रोयबे के सिवाय और कोई चारौ नाँय। रोयवौ हूँ सिसकी भर-भर कै-

गोरी चली पीहरवा बलम सिसकी दै-दै रोवै
तालन पै रोवै-तलैयन पै रोवै-घाटन पै दै दै मूड़ फोरै....

बिचारौ माथौ फोरवे कूँ विवस। का कहने जा आकर्षण और ऐसी अनन्यता के। और जि चूनरी ब्रज की जि चुनरिया तौ गोरी नें जैसें ही ओढ़ी नाँय कै समझ लेउ अब बु नाँय रुकबे वारी। कहूँ न कहूँ चल दैबे कूँ तत्पर है। कहाँ? वाही के मुख ते सुनौ-

अरे मैं तौ ओढ़ चुनरिया जाऊँगी मेले में

रसिया नें पूछी, चौं? चौं कै-

नाँय मानें मेरौ मनुआँ मैं तौ गोवरधन कूँ जाऊँगी
और पाँच आना की पाव जलेबी बैठ सड़क पै खाऊँगी

हाँ, जो सड़क पै बैठें चाहे चौखण्डी पै ब्रज में तौ 'सबै भूमि गोपाल की यामें अटक कहा' सूधौ-सादौ ग्राम्य जीवन। अस्तु गोरी जब जिद करबे लगै तौ रसिया हास-परिहास की सृष्टि करतौ भयौ वाकूँ बरजै कै देख तू कैसौ मलूक है मतो-

मेला कूँ मत जाय मेरी प्यारी बड़े-बड़े 'ददुआ' आंगे
सात पाँच मिलकें तोय गोरी संग उठाय लै जांगे

जानें कितने रसिक छैला म्हाँ घूम फिर रहे होंयगे। तेरौ हरन कर लियौ तौ? ना बाबा ना। मैं तोय म्हाँ न जान दूँगौ। अब भला ऐसे अनुरागी रसिया पै गोरी प्रतिपल अपनौ प्रेम-घट न उँड़ेलती रहै तौ फिर प्रेम की अनन्यता ही कैसी। जिही कारण है कै ब्रजबाल हू अपने प्रियतम कूँ प्रतिक्षण प्रसन्न रखबे की चेष्टा में निमग्न रहै है। कबहु उल्टी-पुल्टी बोल हू जाय तौ वाकूँ बड़ौ पश्चाताप होय है और बु भविष्य में प्रण करै है कै-

मेरौ पीरौ परि गयौ बलमा वाहि अब न सताऊँगी
भूरी भैंस लाई पीहरते भर भर बेला प्याऊँगी।

हाँ, गोधन गैया, भैंस ही तौ ब्रजवासिन कौ सबते बड़ौ धन है। नन्दबाबा को तौ नौ लाख गैया हीं। 'नौलख धेनु नन्द बाबा के घर घर माखन होय।' याही माखन कूँ खाय खाय कें ब्रजजन हृष्ट-पुष्ट बने रहत हैं। याही निमित्त यह ब्रजललना हू अपने पीहरते भूरी भैंस लैकें आई है। वाहि भरोसौ है कै वाकौ दूध पीकें वाकौ बलमा फिर सुरख है जायगौ। ब्रज में भाभी-देवर कौ नातौऊ बड़ौ अनूठौए। या आत्मीय सम्बन्ध कूँ कैसी बढ़िया संज्ञा दीनी है काहू गीतकार नें-

रेल बनी भौजाई इंजन बन गयौ ल्हौरौ देवरिया

जि रेल गंगा घाट तक जाय पौहोंची है। भाभी-देवर दोनों संग-संग स्नान करिंगे। पर म्हाँ तौ कोई घाट ही खाली नाँय।

घाट नाएँ खाली देवर गंगा कैसें न्हाओगे

तौ फिर विचार होय कै चलौ गंगा पार चलैं किन्तु समस्या है कै म्हाँ तौ केवल चना मटर ही खायबे कूँ मिलिंगे। म्हेंऊ तैयार है-

लै चल गंगा पार सिपहिया चना-मटर ही खाय लुंगी

विरही विरहिया कबहू गोरी कूं लांगुरिया के रूप में दृष्टिगोचर होय है तौ वाकूँ दूर वटवृक्ष के नीचे ते टेर लगावै-

चरखौ चल रहौ बर के नीचे रस पीजा लांगुरिया

निश्चै ही ये रस भर्यौ आमंत्रन गांडे(गन्ना) कौ रस पियायवे के लिए प्रेम-रस कौ पान करायवे हेतु दियौ गयौ है।

कहाँ तक बरनन कियौ जाय। ब्रज लोकगीतकारन ने गूढ़ गहन प्रेम के, पवित्र प्रीति-रीति के ऐसे-ऐसे मनमोहक शब्द-चित्र सहज सरल रूप ते अपनी अपनी भाव भूमि पै अंकित किये हैं, जिनकूँ सुन सुन कैं हृदय उत्फुल्ल है उठै और ब्रज बासिन की विनोदप्रियता, उनकी मस्ती, उनकी हासोल्लासमय जीवनचर्या मूर्तिमान हैकें प्रत्येक सुधीजन के रोम-रोम कूं पुलकित करती भई ये कहवे कूं विवस कर देय है कि-

'ब्रज भूमि मोहिनी मैं जानी'

-जे-जी-ई-45/III, कौंसिलर कालौनी,
पोर्ट ब्लेयर (अण्डमान द्वीप समूह)

□

ब्रजभाषा कौ एकु मनोरंजक लोकगीत

-श्री हीरालाल शर्मा 'सरोज'

आजकल्ल तौ मनोरंजन के एक नांय सैकरान साधन-स्रोत बनि गये हैं। आकासवानी अरु दूरदर्सन सबते अधिक लोकप्रिय साधन बनि गए हैं जन साधारन के। इनमें जुरि गए हैं-आडियो, वीडियो, टू-इन-वन, थ्री-इन-वन, और न जानें कहा कहा। अब तौ कवि सम्मेलन जैसे साधन गाम्मन माँऊ पाँय पसारिबे लगे हैं। पर या जुग की कल्पना करौ जब सिगरौ भारत घोर गरीबी, अज्ञान के अंधेरे अरु पिछुरेपन में आकण्ठ डूबौ भयौ हो। या समै लोक कौ बिसेस रूप ते ग्रामीन छेत्र माँहि मनोरंजन कौ कोई साधन हतो तौ बू ओ-ढोला अरु आल्हा। होरी के औसर पै रसिया अरु धमार, अरु कबऊ-कभार नौटंकी अरु छोटे-मोटे नाटक-छटे चौमासे। लोक मनोरंजन के काजैं भूखौ मरतौ, मर्यौ जीमतौ।

भौत पुरानौ किस्सा है। जब रेल चलोई चली। एक बाबा रेल में बैठके गयौ अरु द्वै दिना में गंगा जी न्हायकें बगद्‌आयौ। गाम के सग निवासीन कैं बड़ौ अचम्भौ भयौ कै गंगा जी जाये और बगद के आये में तौ महीनान लग जाते, जा बाबा पै ऐसौ कौन-सौ जादू आ गयौ कै द्वै दिना मांहि ई जि गंगा जी न्हा आयौ। बिन दिनान में रेल जन साधारन की पौंच ते भौत दूरई। याके बिसै में जानिबे की गाम के लोग-लुगाईन की जिज्ञासा भौत-भारी बढ़िबे लगी। एक नये नवेले रेंठ उठान छोरार गंगा न्हावे कौ भूत सवार हैगौ अरु बू बाबा के ढोरे जाकें बोल्यौ-

> बताय दै बाबा, कैसे चलन की गाड़ी रेल।
> बताय दै बाबा, कैसे चलन की गाड़ी रेल॥

बाबा नें वाँकू ब्वाब दियौ-

> बाबा कही, सुनौ मेरे बेटा फक-फक धुँआ देवै है।
> चलै पवन ते तेज रंग कारे-कारे कौ होवै है॥
> अट्टेसन ते छूट जाय दम गंगा जी पै लेवै है।
> एक दिना में गंगा नभाय दे ऐसौ कुदरती बाकौ खेल।
> बताय दै बाबा कैसे चलन की गाड़ी रेल॥
> सुन बूढ़े की बात रंग फिर गंगा कौ चढ़ि आयौ।
> नौजवान भोरौ किस्सान पर भऊ ते जाय बतायौ।
> सेर कौ अंगा एक गठरिया बाँध मौंठ कौ लै आयौ।
> बू अट्टेसन पै जाय तुरत बाबू ते न्यों बतरायौ।
> तू दै दै मोकूँ टिकट, गंगा कौ रंग मोप चढ़ि आयौ।
> तू लै लै मेरी दार-मौंठ मैं छाँट-फटक कें लायौ।

आज मोइ गंगा जी नभाय दै, खूब मिलैगी मेल।
बताय दै बाबा कैसे बरन की गाड़ी रेल॥

बुकिंग बाबू कूँ या किसान की बातैं सुनकै भौत क्रोध आयौ। ठीक ऊ औ, कोई नाज के बदले में टिकट थोरेई मिल्यौ करै। पर फिर बाबू किसान के भोरेपनै समझ गयौ अरु बानैं किसान कूँ समझायौ कै बाय टिकट लैवे के काजैं का करनौ चहिए। किसान नैं यूई कर्यौ और टिकट ऐसैं लई-

सुनि कैं किसान की बात भौत बाबू फिर न्यौंओ रिसियानौ।
का दियौ तोहि मैंनें करज गठरिया बाँध मौंठ मेरे ढिंग आनौ।
याइ बनिया कैं दै बेच फेर वू बाबूजी नैं समझानौ।
वू बनिया कैं दई बेच रुपय्या सवा टिकट कौ पकरानौ।
गंगाजी के सुनौ रंग में बेझर बिकी है अधेल।
बता दै बाबा कैसे बरन की गाड़ी रेल॥

टिकट तौ बाय मिलि गई, पर बिचारौ वू किसान कहा जानैं कै गाड़ी कैसी होय, कहाँ ठाड़ी होय, कैसें बामैं बैठ्यौ जाय और या टिकट कौ वू कहा करै। या टिकट बाबू नैं भोरे किसान कूँ सब कछु संछेप मांहि न्यों समझाय दियौ-

सुन लै रे भोरे किसान इन बैंचन पै बैठौ रहियौ।
जब आवै गाड़ी रेल सवारी बापैइ तुम कर लइयौ।
कोई कहै उतर परि गाड़ी ते तौ ज्वाब साफ न्यौं दै दीऔ।
पूरौ चारज भरि दियौ, टिकट मुँह के तौ सामई कर दीऔ।
देखत-देखत बाट रेल की, है गयौ वू नफसेल।
बताय दै बाबा कैसे बरन की गाड़ी रेल॥

बात न्यौं भई कै रेलगाड़ी घण्टान लेट है गई। अचानक प्लेटफार्म पै कारे रंग कौ सूट पहिनैं भयौ अरु सिगार फूंकतौ भयौ ऐनकधारी अट्टेसन मास्टर प्लेटफार्म के किनारे किनारे टहलवे लग्यौ। अनपढ़ भोरे किसान कूं ऐसौ भरम भयौ कै कछू कहिबे कौ नाँय-

गाड़ी लेट भई बाबूजी पलट रहे अपने नैना।
कारे रंग के सूट-बूट सिगरेट लगी मुंह पर ऐना।
भोरे किसान नें वू देख्यौ तौ बानैं समझी रेल खरी।
अंगा सोटा समगाय लिए, बाबू पै सवारी जाय करी।
गंगा जी कौ भूत मूड़ पै, लख्यौ ना मेल-कुमेल।
बताय दै बाबा कैसे बरन की गाड़ी रेल॥

ज्योंई या किसान नैं अट्टेसन मास्टर की सवारी करी, त्योंई वू झल्लाय कैं पर्यौ। बड़ी भारी धमकी दैवे लग्यौ। ऊल जलूलऊ बोल्यौ, परि किसान काहाँ उतरिबे वारौ। बाकूं तौ पैलेंई सग समझाय दियौ हत्यौ बुकिंग के बाबू नैं। सो आगे कौ बानक कछू ऐसौ बन्यौ कै, न कबहू देख्यौ और न सुन्यौ।

अट्टेसन मास्टर किल्लायौ-

उल्लू के पट्ठे उतरि बेगि नहिं परवाय दुंगौ हाथ कड़ी।
पूरौ चारज भर दियौ, टिकट मुंह के तौ सामई तुरत करी।

फिर कसकैं लीनी पकरि, सवारी लात दई औरउ जपरी।
यायू जी घुटमन गिरे लैन पै तऊ न उतर्यौ येमगरी।
ऐसौ कौतुक कर्यौ कै याने मार निकास्यौ तेल।
बताय दै बाबा कैसे चलत की गाड़ी रेल॥

फागुन मास ब्रजमण्डल कौ सबते अधिक महत्वपूर्ण महीना ए। अमराई की बगुरावी, कोकिला की गूंजबौ अरु [illegible] में मादकता कौ विलास रसियन अरु गोरीन के मन माँहि उमंग अरु उमंग भर देय। फिर बाजैं चंग, मृदंग अरु ढोलक, झांझता उठैं और ढफ अरु बम्ब (नगारे) बमक उठैं। ब्रज में समारोहन की धूम मच जाय। नगारेन के संग ब्रज गोप रसिया गावैं और गोरी नाचैं, भरि-भरि फिरकैंया। एक प्रतियोगिता कौ माहौल बनि जाय। रात-रात भर नाच-गान में [illegible] जाए। एक बेर की बातै कै ऐसेई सई सांझ ते अखाड़ौ जम गयौ। या नाच-गान के दंगल में गोरीन नैं एक मिलजुट बनाई कै आज [illegible] है जाय, रसियन कूं पानी पियानौ है, पाठ सिखानौ है कि ब्रजबालान ते बे ऊपर नाँयें। दंगल जम गयौ। नगारे पै [illegible] लगौ डंकान की। रसिया गयबे लगे और इतमैं गोरी बीच मैदान माँहि आकें ठसट्टा सरपट्टा भरिबे लगीं। रसिया गाबे अरु नगारे बजायबे बारे बारी-बारी सौं बदलते गये अरु इतमें गोरी ऊ एक के अनन्तर दूसरी मैदान में उतरती रही। कोई पार्टी हटिबे कौ नाम नाँय लै रही । प्रातः के आठ नौ बजे कौ समै हैगौ। नगारे पै चोट मारत-मारत रसियन के हाथ [illegible] दै गए। पर इज्जत कौ प्रश्नौ नगारौ बजाबे की सामर्थ कौ ना रहयौ, अरु खेतन पै काम-काज कौ टैम हैबौ बड़ौ मसला बन्यौ। तबई एक अधेड़ बोल्यौ, भैय्याऔ, अब मेरौ रसिया होगौ। सब तैयार। अधेड़ रसिया नैं ऊँची अवाज लगाई और रसिया के बोल न्हौं निकस परे–

अरे टर जा यहां ते मानस खानी।
सई साँझ के रसिया ठाड़े,
इन्नैं अन्न मिल्यौ नाँय पानी
टर जा यहां ते मानस खानी।

इन बोलन नैं सुनिकैं मैदान के बीच में भरपूरौ नांच करती भई गोरी बाहर कूं [illegible] भई भाग गई। रसिया हू या स्थिती कूं तैयारई ठाड़े। सबन्नैं जोर ते हल्ला मचायौ, हार गई, हार गई...... भाग गई...... अरु बे झट-पट [illegible] (नगारे कूं) उठाय कैं घर भाजे।

जान बची अरु लाखों पाये।

आज कल्ल जमानौ तेजी सौं करवट लै रह्यौ है। कोई समौ हो जब पढ़े-लिखे [illegible] ढूंढ़बे ते नाँय मिलते हते। पर अब जुग पलट्यौई नाँय पर उल्टौऊ होत जा रह्यौ है। नयौ [illegible] अरु [illegible] की [illegible] दिन दूनौ रात चौगुनौ उठतौ जा रह्यौ है। एक ब्रजबाला कौ *आधुनिक* प्रिय कॉलेज [illegible] है–

आऊँ जाऊँगी बलम कॉलेज,
तू चौकस रहियौ बंगला पै।
क्रीम-पाउडर बीत गये हैं, बिनैं [illegible] मैं [illegible]।
सखी-सहेलिन संग [illegible] मैं, [illegible]।
आके खाऊँ बलम [illegible]
तू करतौ रहियौ [illegible] पै
आऊँ जाऊँगी..............

रिपरा में जाते भए दो सवारिन की बीच बजार में ऐसी टक्कर भई कै दोनों उछरकें रिक्शा मैं ते बीच बजार में ऐसे गिरे कै कितऊ कूँ थैला, कितऊ कूँ अटैची अरु कितऊ कूँ झण्डा-झोरी। ऊपर ते लहू-लुहान और है गये बिचारे। ऐसी चोट खाई कै सूधौ अस्पताल जानौ परयौ। सहानुभूति दिखाइबे वारे तौ कम होंय पर ऐसे में हँसिबे वारे अरु तमाशगीर बहौत इकट्ठे है जाँय। भीर में ते काऊ नैं सुर अलाप्यौ-

दुनियाँ देखै बीच बजरिया।
घुटमन परि गए लांगुरिया।
कपड़ा फाटे माल बिखर गौ,
टूटी है पांसुरिया।

या तरियाँ सौं जो कहूँ लोकगीतन कौ संग्रह करयौ जाय , खोज करी जाय, तौ विनमें ऐसौ-ऐसौ मनोरंजन अरु हास्य-व्यंग्य मिल सकै जो नगरीय गीतन माँइ बाँस डारे ते ऊ नाँय मिल सकै।

-पुरोहित मौहल्ला, भरतपुर (राज.)

ब्रज लोकगीत और ब्यौपार

-श्री राम गोपाल शर्मा 'गोपाल भैया'

ब्रज लोकगीत ब्रज-वसुन्धरा की मांटी की सांस्कृतिक विरासत है। याकी भीनी-भीनी मधुर गन्ध नें जनजीवन के अमिट रंगन कूँ प्रसारित व प्रकाशित कियौ है। ब्रजभाषा की अनेक विधा और ब्रज लोकगीतन की अपार वर्णीकरन याके विपुल भण्डार कौ साक्षी है। संस्कार गीत, रितु, पर्व, उत्सव गीत, सामयिक गीत, ब्रज मण्डल कौ महत्व दरसौते रहे हैं।

रससिद्ध कवि श्री हरीहर गुरुजी हाथरसी नें महत्व पै प्रकाश डारते भए कही हो-वेद शास्त्र के मंत्र तौ हर अनुष्ठान पै एकसेई उच्चारित होंवें हैं पर ब्रज लोकगीत घर में हैवे वारे उत्सव व अनुष्ठान कूँ घर तेई स्पष्ट बताय देत है कि घर में गायबे वारे जच्चा, सोहले, बालक के जन्म कूँ; घोड़ी-बन्ना, वर पक्ष के विवाह कूँ और उत तै यो लाड़ो बांनी मरंगी जहर विष खाय बारौठौ हैबे कूँ इंगित करै। लोकजीवन के चार पदारथन में धनोपार्जन कौ दूसरौ स्थान है। अतः ब्रज प्रान्तर के गाम-खोपन में फेरी वारे मधुर कंठ सौं अपनी वस्तु के बेचबे कौ प्रचार करैं झुनझुना, बांसुरी, भौंपू, ढोलक, आदि बजाय बजाय कैं मनगढ़न्त गीत बनायकें गावें और खरीददारन कौ चित्त आकर्षित करैं। यह परम्परा आज सौं नहीं द्वापरकाल सौं चलत भई मानी जात है।

श्री श्याम सुन्दर श्री कृष्ण अपनी प्रियतमा रासरासेश्वरी श्री श्यामा जू कौ सानिध्य पायबे कूँ कबहू मनिहारिन बनें, कबहूं लिलिहारिन, कबहू फूल बेचन हारी बनें। एक प्रसंग वार्ता विक्रेता (श्री श्याम सुन्दर) एवं क्रेता (श्री श्यामा जू) कौ या प्रकार श्री सूरदास जी नें कही है-

> सुन्दर तेल फुलेल उबटनों, अतर सुगंध मिलाई
> जोइ जोइ रुचै सो लेबहु श्याम बेर भई मो आई।

देरी के कारन कूँ नकारत भए किशोरी जी कहैं-

> बेर-बेर तू जिन कह मालिन, दयौ माल उधार,
> होरा लाल मणि मानिक, भूषन बसन बनारसी।

श्री कृष्ण श्याम सखी के रूप में अपनी गरिमा बतात भए कहैं-

> बड़े घरन की मालिन मैं हू, धन की रचि है नाय
> हम सौदागर प्रेमरतन के, और कछु न सुहाय।

श्री किशोरी जी अहंकारी बतन सौं खीज कैं उपालम्भ करैं-

फूल-फूल की बेचन हारी।
कहा अधिक इतराइ
लेउ लेउ कह फिरत गलिन में,
हमसे करत बड़ाय।

सामिग्री की सुन्दरता और शुद्धता के कारन बह स्थान प्रसिद्ध ह्वै जात है। या ब्रज लोकगीत में गोरी अपने प्रियतम सौं जयपुर की छपी लंहगा-चूनर लाबे की कामना करै-

पिया जैपुर शहर तुम जइयौ।
मांते लंहगा चूनर लइयौ।
चोली सीसा टँकी हो भारी।
चमकै गोरे बदन पै कारी।

हाथरस की तगड़ी लाइबे के तांई तौ भूसा, बैल, खेत, बालक और स्वयं पिया के बिकवाइबे की बात चलाबै-

मैं गई हाथरस मण्डी,
बहां एक जनी पै देखी।
मेरौ बहुत दिना ते जिया ललचाय,
तगड़ी सौने की देउ मंगवाय।

ब्रज लोक गीतन में आगरे कौ घाघरौ दिवाइ दै रसिया। मथुरा के पेड़ा, खुरचन, बंगाली मिठाई, फिरोजाबाद की चूड़ी-चूड़ौ तौ हाथी दांत कौ, बरेली कौ काजर, करौली की गागर आदि नित्य प्रति प्रयोग की वस्तुन पै अनेक गीत सुनाई परैं।

आधुनिक काल के सामान विक्रेता गीत गाय-गायकें कैसौ मन मोहत हैं याके कछु उदाहरन नीचे दिये जात हैं।

ब्रज में मसालेदार चना-चिरवा बेचबे कौ प्रचलन है। अपनी वस्तु की विशेषता बतात भयौ कहै-

मेरा चना मसाले वाला।
इसको घर ले जाना लाला।
चना जोर गरम बाबू।
मैं लायौ चना जोर गरम।
चना मैरौ हनुमान नैं खायौ।
लंका में जाय दुर्ग ढहायौ।
सीता कूँ खोज कें लायौ।
सबते ज्यादा राम कूँ भायौ।
जो कोई पुड़िया लेता जाए।
तापै दुलहिन बलि-बलि जाए।
फिर-फिर बार-बार ले जाए॥ चना जोर....

ब्यौपारी छोटौ होय या बड़ौ एक सादा बोर्ड अपनी दुकान पै जरूर टाँग राखै-

आज नगद कल उधार।
परसौं मुफ़्त मिलेगा यार॥

गर्मी में सुबह ही सुबह, सर्दी में दुपहरी में ठेल पै कबाड़ी सुमधुर आवाज लगावैं-

लोहा टीन टप्परवाला
डिब्बे रद्दी अखबार वाला

सब्जी मंडी में प्राय: पूनौ कूं बन्दी राखौ जावै। चौदस वारे दिना गली फाड़-फाड़ कें गीत गावैं-

कल है मेरे भैय्या पूनौं।
लै जइयौ साग तू दूनौं।

बरसात के दिनन में जामुन वारे कौ मनमोहक गीत कौन कूं रिझावे कौ सामर्थ नाँय रखै-

कारे कारे नैन में हिराए।
देवर भाभी कूं खिलाए।
जमुना बाग ते हैं आए।
हरियल तोतन नें गिराए।
अमई बीन बीन के लाए।
कारे कारे नैन में हिलाए।

बर्तनन पै कलई टाँके लगावे वारे हू गीत गावे में पीछे नाँहि रहैं-

पीतल के बर्तनों पर
कलई ई ई करालो।
टूटे फूटे बर्तनों पर
टाँका लगवा आ आ लो।

ब्रज क्षेत्र में कोई भी फेरी लगावे वारौ बिना अलाप के अपने सामान कौ प्रचार कर ही नाँ सकै। ब्रज लोकगीतन कौ माध्यम बनायकें अपनी बिक्री बढ़ावे कौ माध्यम बनाय राखौ है। सावन के महीना में मल्हार की तर्जन पै, फागुन में फाग रसिया की तर्ज पै तुक मिलाय मिलाय कें गलिन में जात फिरैं और चार पैसा कमावैं हैं।

ब्रज माधुरी में रचे बचे ब्रजवासी अपने जीवन के हर पहलू कूं गाइकें गुनगुनाइकें गुजार देंय हैं। गीत अपने आप कूं आप ही मुखरित करैं। ब्रजवासी बालक कबड्डी में 'ओय कबड्डी आला, लाला नें तीतर पाला' गाइकें खेल जीत जावैं। पाठशाला जाइबे वारे बालक गिन्ती पहाड़े गाए-गाए कें याद कर लेत हैं। अंग्रेजी तक कूं गेय पदन में ढाल कें याद कर लेवैं हैं और तौ और तांगे वारौ वृन्दावन सवारी लै जाइबे वारौ कैसौ गीत गाइ रह्यौ है-

दो रुपया सवारी।
वो हल्की होय या भारी।
चाहे जीजा हो या सारी।
वो गोरी होय या कारी।

या प्रकार सौं ब्रजवासी मस्ती भरौ जीवन जीवत भए श्री राधा-कृष्ण की अनुरागी भूमि पै 'पुनरपि जन्म पुनरपि मरण:' की कामना करत भए लालित्य भरे दिनन की याद में भोर की मधुरिमा, मध्यान्ह की रमणीयता, सन्ध्या के शान्तिमय वातावरण में आनन्द प्राप्त करत रहैं।

9/218, गुदड़ी गली
आगरा (उ.प्र.)

❑

अरे दही रे बिलोवै रानी राधिका और कान्हा माखन रे खाद।
अरे और रे खवावै मोरा बांदरा और बंसीवट पै रे ज्याद॥

पौराणिक साहित्य में भलेई राधा-कृस्न के ब्याह कौ बर्नन नांय भयौ होय किन्तु लोकसाहित्य राधा-कृस्न के बिवाह कौ साखी है। एक 'होरो' में बर्नन है कै वृषभानु जी के ह्यां श्री कृस्न कौ बिवाह रचायौ जा रह्यौ है। श्री कृस्न दूल्हा बने हैं और राधिका जी दुल्हन बनी भई हैं-

अरे ब्याहु रच्यौ ऐ रे श्री कृस्न कौ और बिरखभान के रे द्वार।
अरे दुलहनि रे बनी ए रानी राधिका और दूल्हे रे नंद कुमार॥

बालपने में चपलता होंते भएऊ श्री कृस्न के सुभाव में बाल सुलभ सरलता ही। एक 'होरो' में वे मात जसोदा सौं कह रहे हैं कै-मैया, मोय एक कारी कम्मर देदै, एक सफेद सी गाय ला दै और मधुर स्वरन बारी एक बंसी दिवा दै जासौं बर्षा रितु के ये दिना खेलते गाते ब्यतीत है जांय-

अरे कारी रे सो लै दै मैया कामरी और धौरी सी दै रे गाइ।
अरे बंसी रे सो लै दै मैया बाजनी जाते चौमासौ कटि रे जाइ॥

भगवान श्री कृस्न की अनन्य प्रियतमा वृंदावन बिहारिणी राधिका की केलि-स्थली वृन्दावन के बृच्छन की मर्म-ब्यथा कूं भला कौन जान सकै है? आजऊ वृन्दावन के बृछन की डाल-डाल और पात-पात सौं 'राधे-राधे' के सुर गूंजै है। 'होरो' में प्रस्तुत मार्मिक अनुभूति कौ यह एक उदाहरन है-

अरे वृन्दावन के रे बिरछ कौ और मरमु न जानैं रे कोय।
अरे डार-डार और पात पै ए प्यारे राधेई राधे रे होय॥

कातिक माह के द्वै प्रमुख उत्सवन कौ ऊ 'होरो' में बर्नन भयौ है। दीवारी भारत कौ प्रमुख पर्व है किंतु जि आस्चर्ज कौ बिसै है कै अन्य लोकगीतन में दीवारी कौ चित्रन प्राय: नांय भयौ है। एक 'होरो' में दीवारी के दिन अरु रात्रि कूं अत्यन्त महत्वपूरन बतायौ गयौ है-

दिवारी रे प्यारे दिन बड़ौ और मावस बारी रे राति।
पहले रे आयौ प्यारे जा के और फिर गूजर के रे द्वार॥

एक अन्य 'होरो' में दिवारी की रात कूं 'मानसी गंगा' में सौं साधु सन्तन के अपने पात्रन में दूध भरबे कौ चित्रन है। दिवारी पै मानसी गंगा में भक्त जन दूध चढ़ावैं हैं। यासौं मानसी गंगा के दूध सौं भरी हैबे की कल्पना करी गई है-

मानसी रे के गंगा दूध की और भरी भरी रहति दिन रे राति।
संतन रे के तूमा भरि लिए और स्यौं दिपावली रे राति॥

'होरो' कौ सबसौं अधिक रंग गोवर्धन पूजन कै समै जमै है।

दिवारी के दूसरे दिना कातिक सुक्ल पड़वा कूं ब्रज में 'गोवर्धन' की पूजा करी जाय है। घर के आंगन में मानवाकार आकृति के 'गोवर्धन' बनाए जात हैं और रात कूं बाकी प्रदक्षिणा(परकम्मा) करते भये बाकी टूंडी में दूध चढ़ायौ जाय है। या औसर पै 'होरो' गाये जाबे की बिसेष परंपरा है। एक 'होरो' में गोवर्धन पूजन कौ दृस्य चित्रित है-

गोवर्धन रे मांसू तू बड़ौ और तो ते बड़ौ न रे कोइ।
तेरे ऊपर रे क्यौ धुवै और दही बिलोवै रे लोइ॥

मानसी गंगा कूँ स्वर्ग कौ प्रवेश द्वार ऊ बतायौ गयौ है। जहाँ भगवान के दर्सन होंय हैं-

मानसी गंगा रे दूध की और गिरिवर से परवान।
सिढ़ी लागी रे बैकुण्ठ की जहाँ आइ मिले रे भगवान॥

ब्रजभूमि कौ वर्नन करते भए एक 'होरे' में वृन्दावन, मथुरा, बरसाना तथा नन्दगाम कूँ पावन स्थान बतायौ गयौ है-

अरे ब्रज चौरासी रे कोस में और चार गाम निजधाम।
अरे वृंदावन रे मधुपुरी और बरसानों रे नंदगाम॥

'होरे' में नीति और लोक रीति कौ पक्ष ऊ प्रबलता के संग प्रस्तुत भयौ है। एक 'होरे' में वर्नन है कै गांडर(एक तरियाँ की घास) तौ झील में अच्छी लगै है, मोर सरस की डार पै, कन्या अपनी ससुराल में और पशु घर के द्वार पै ई सुशोभित लगैं है।

गांडर सोहै रे झील में और मोर सरस की रे डार।
बेटी तो सोहै रे सासुरे प्यारे गोधन घर के द्वार॥

एक अन्य 'होरे' में अभीष्ट काम की सिद्धि के लयें इष्ट देवता कूँ मनाकै गुरु कौ नाम स्मरन करवे कौ निर्देश करौ गयौ है-

अरे पहले रे कौनु मनाइए और कौन कौ लीजे रे नाम।
अरे पहले रे रामु मनाइए और गुरु कौ लीजे रे नाम॥

-ज्ञानदीप, डैम्पियर नगर,
मथुरा (उत्तर प्रदेश)

□

ब्रज कौ लोक-महाकाव्य- ढोला

-डॉ. श्याम सनेही लाल शर्मा

सगरे ब्रज-मंडल में प्राप्त लोक-साहित्य में ब्रज लोक-जीवन और ब्रज लोक संस्कृति कौ सच्चौ संवाहक ब्रज कौ लोक महाकाव्य 'ढोला' है। आजु तें लगभग दोसौ पचास बरस पैले 'ब्रजलाल मदारी' नें ब्रज में 'ढोला' कौ बीज वपन करयौ। 'मदारी' मथुरा जनपद में 'लोहवन' गाम कौ रहियेवारौ हतो। 'मदारी' नगर कोट वारी देवी कौ भगत हतो। वानें कैऊ बेर नगर कोट की जात्रा करी। एक बेर नगर कोट की जात्रा के समै वानें याई कथा कूँ आधार बनाइकें और नई बिधि सें 'ढोला' कूँ कथिकैं गाइबौ आरम्भ करयौ। 'मदारी' के 'ढोला' गाइबे की सैली इतनी सरस हती कि याई सैली कौ सहारौ लैकें मथुरा जिले में ई 'रायसिंह के नगरा' के रहियेवारे लोक-कवि 'गणपति' नें 'नल अरु दमयन्ती' के पौराणिक आख्यान कूँ कथ्यौ और गायौ। 'गणपति' नें कैऊ मैदानु की सर्जना करी। यु कल्पनासील कवि हतो। याके बाद निरन्तर 'ढोला' हमें मिलै है। एक महाकाव्य के ताँई जैसी विसदता, व्यापकता और विविधता की आवस्यकता परै है, वैसीई व्यापकता और विविधता 'ढोला' में मिलै है।

ढोला की बस्तु संयोजना:

ब्रज के 'ढोला' की सबरी कथा 'नल अरु दमयन्ती' के जीवन सौं सम्बन्ध रखै है। कथा के तीनि भाग करे गये हैं 1- पैले भाग में मुख्य रूप तें मंझा कौ देस निकारौ, नल कौ जनमु, बनियानु के हयाँ नल कौ पालन-पोषनु, भौमासुर दैत्य कौ बध और वाकी अपसरा बिटिया ते नल कौ ब्याह, बाप(पिरथम) और पूत (नल) कौ पुनर्मिलन, 'कनिगाढ़' के राजा 'फूलसिंह पंजाबी' के संग 'नल' कौ युद्ध और चंदनवन के दैत्यन कूँ परास्त करिकैं वन ते चन्दनकाष्ट लाइबे की घटना कौ बरनन है। 'ढोला' की कथा के पूरबभाग में जिन प्रसंगन की संयोजना भई है उनकौ उल्लेख 'नल' के जीवन तें सम्बन्ध रखियेवारे काऊ प्रामानिक ग्रंथ में नाँहि मिलै। जासूँ जे प्रसंग लोक-मानस प्रतिभा-प्रसूत ई लगै हैं, जिनकौ आधार परम्परागत प्राप्त अभिप्राय और लोक-विस्वास में देख्यौ जाइ सकै है।

'ढोला' की कथा के मध्य भाग की घटना कौ आधार महाभारत-पुराणादि ग्रंथनु में प्राप्त नलाख्यान है। पै लोक कवियन नें उन ग्रंथनु में प्राप्त नल कथा में ऊ कैऊ परिवर्तन करे हैं। मध्य-भाग में मुख्यरूप ते-दमयन्ती के ब्याह कौ 'टीका' लैकें 'हंस' इन्द्रपुरी जाय है। मारग में प्रचंड आँधी के आइ जाइबे ते आहत हैकें 'नल' के उद्यान में गिरि परै है। सबेरे सिकार के ताँई निकसे नल कूँ हंसु आहत दसा में मिलै है-जि प्रसंग पूरौ लौकिक नयौ और मुख्य है। दूसरे प्रसंगन में हंस कौ उपचार, नल कूँ टीका चढ़ानौ, नल कौ दमयन्ती ते ब्याह कौ निस्चय करौ। मोतिन-मरन, नल-विचार, इन्द्र और नल मे सामान्य मानवीय स्पर्धा हैं। इन्द्र और नल में युद्ध, नल-दमयन्ती-परिणय, मझा मरन तौ प्रमुख हैं ही याई अपने अपमान ते पीड़ित

1- ब्रज क्षेत्र में प्रचलित ढोला साहित्य का साहित्यिक और सांस्कृतिक अध्ययन शोधकर्ता स्वयं लेखक [illegible] का [illegible] अध्ययन अवलोकनीय है।

घटनानु में 'भंगिन की कथा' कौ उल्लेख घटना की निर्रथकता कूं दिखाइबे के लएं भयौ है, संगई जि प्रसंग 'नियम' कूं निरपेक्षता कौ आभास कराइबे मेंऊँ सहायक सिद्ध भयौ है।5- दच्छिनपुर के सेठन की कथा आगरा-जनमन में नल कूं स्थापित देवे के तांई और सैसव मेंई वाके चरित्र की महत्ता दिखाइबे के तांई समायोजित करी गई है।6- भौमासुर दैत्य और मन-मोतिनी के ब्याह की कथा कौ मुख्य उद्देश्य नल की पराक्रम प्रदर्शन और मानव-अमानव-सम्बन्ध कूं दिखाइबे के लएं है।7- ऐसांई न जानें कितनी घटनाएं हैं, जिनकौ उल्लेख 'ढोला' में मिलै है। इन सबरी घटनान कूं एक क्रमते 'ढोला' में प्रस्तुत कर्यौ गयौ है। वे सब मुख्य-कथा के अंग रूप में आई हैं।

'ढोला' में लोक-गायकन नें ऐसे रसात्मक वरननऊ अपनाएं हैं, जिनमें रसोद्‌बोधन में पूरो सहायता मिलै है। नगर कौ किलौ, युद्ध, जात्रा, बाग-बगीचा, सौन्दर्य आदि के वरनन में विविध वस्तुअन की योजना करत भये लोक-गायकनु नें अपने काव्य-कौसल कौ परिचय दयौ है।'अजय नगर' के मैदान में मां की अमराई, सरोवर, नगर और किले के वरनन में वस्तुवरननगत रसात्मकता देखी जाइ सकै है-

1. गढ़ कोटु बनौ रुरुकैसा।
   खाखा बुर्ज बनौ परयत पै जिअ कछु परयत पै नांहैं।
   तेरे गढ़ के नके कँगूरा जाकै पार नके नांईं॥
   तेरौ किलौ गिरिवर सम ऊँचौ, आमति बिचारि रुरुकैसा॥ 8

2. बर पीपर आम कदम्ब खिरै सेमरि जो खिली बागन में अकेली।
   महकत तार खजूरन में फल गूलर जामुन नीम चमेली।
   खट्टा-मिट्ठा सेव इमीरी, चकोतरा अंगूर डार नींबुन तें पीरी।
   लखै नारियल दाख सुपारी किसमिस सीरी।
   नरवर वारौ लखै बागु सब लखै अमीरी॥ 9

   फूलौ न अंग समाइ, रम्य बाग के बीच में एकु तालु भव्री भरि जाइ।
   जल में खिलि रहे कमल भँमर ऊपर गुँजारैं,
   ताल में मंदिर बनि रहे गोल।
   सिंगमरमर के बने कँगूरा झुकि रई सुनहरी जिनरै झोल॥ 10

ऐसे ई अनेकानेक रसात्मक वरनन 'ढोला' में मिलें हैं। इन वस्तुवरनन की रसात्मकता में लोक-गायकन की अनुभव कौऊ अच्छौ परिचय मिलि जावै है। मंझा कौ देस-निकासौ और हिंसक जन्तुअन तें भरे निरजन बन में नल के जनम के प्रसंग में-11 मोतिनी कौ पिरान त्याग और नल के विलाप के प्रसंग में-12 नल-औंधा के वरनन में -13 और नल घोड़ा के मिलन-14 प्रसंग में लोक-गायकनु की मार्मिक अभिव्यक्ति मिलै हैं।'ढोला' की सौन्दर्य-वर्नन परम्परागत है।

5- नल पुराण, पृ -48-49, 6-वही पृ -70-72, 7-वही पृ -2-5

8- अजयनगर (हस्तलिखित सौं)

9- वही।

10- वही।

11- नल पुराण, पृ. 56-67, 12- दमयन्ती कौ ब्याहु (हस्तलिखित सौं)

13- नल-औंधा (हस्तलिखित सौं) 14- घोड़ा खेलना (हस्तलिखित सौं)

'ढोला' की सबते बड़ी विसेसता जि है कि जामें कथा सूत्रन कूँ ऐसे क्रमबद्ध रूप में सुगुम्फित कर्यौ गयौ है, कि कथा कहूँ ते ऊ टूटी नाँएँ। रसात्मक औरु भावात्मक स्थलन की प्रधानता होते भयै कथा-प्रवाह कहूँ अवरुद्ध नाँइँ है पायौ अपितु रसात्मक बरनन कथा कूँ गतिसील करिवे औरु सहृदयपन की रागात्मक वृत्ति कूँ उभारिवे में सहायक हैकैं आए हैं। 'दमयन्ती' के सौन्दर्य-बरनन नें न केवल वाय पाइवे की लालसा जगाई, अपितु वाकी प्रेम-भावना कूँऊ पक्कौ कर्यौ है।-15 'लखियावन' की बनी के बरनन नें नल के मारग की कठिनाई कूँ ई निरूपित नाइं कर्यौ अपितु वाके प्रयत्नपच्छ कूँऊ पुस्ट कर्यौ है।-16 जा तरियाँ सभी वस्तुबरनन मुख्य कथा तें पूरी तरियाँ जुरे हैं औरु मुख्य कथा कूँ सरस बनाइवे में सहायक भये हैं।

'ढोला' में कार्य की दृष्टि तेंऊ एकरूपता पाई जावै है। जितनौं बड़ौ कामु 'रामचरितमानस' में 'रावन बधु' कौ है, उतनौई बड़ौ कामु 'ढोला' में 'नल की कीरति कौ विस्तार' है। जा 'कारज' की प्राप्ति के ताँईं नल के सबरे प्रयत्न हैं अरु अंत में बू सबरी विघ्न बाधान पै विजय पावतौ भयौ अपने जतन ते वाय पाइ लेइ है। जाके अतिरिक्त जा कारज कौ प्रभाव नैतिक, सामाजिक अरु धार्मिक ऊ है। जाई प्रभाव कूँ दिखाइवे के लिये 'ढोला' की सबरी घटना नियोजित करी गई हैं। सबरी कथा कौ अनुसीलन अरु परीच्छन करिवे के बाद जि तथ्य स्पस्ट है जाय है कि नल कूँ दयौ गयौ नागात्मजा कौ सरापु-17 फल की दृस्टि तें जा कथा कौ बीजु है जो क्रमते दमयन्ती ब्याह अरु मोतिनी कौ नल कूँ दयौ गयौ सरापु-18 के रूप में अंकुरित भयौ है अरु धीरै-धीरै एक छोटे विरछ के रूप में विकसित है गयौ है। नल की औखा समाप्ति अरु फिरिते राज्य प्राप्ति तक आमत आमत या बीज कौ पूरौ पूरौ विकास है जाय है। बाद में कथा 'कारज' की ओर उन्मुख है जाय है अरु नरवर कौ तालु नामक मैदान में नल कूँ फल की प्राप्ति है जाय है। जा तरियाँ 'कारज' संकलन के माध्यम ते 'ढोला' की सबरी कथा एक प्रमुख फल की ओर उन्मुख दिखाई देय है।

ऊपर के विवेचन ते जि तथ्य स्पस्ट है जाय है कि ब्रजकौ "ढोला" एक प्रबन्ध काव्य है अरु यामें महाकाव्य के सबरे गुन पाये जाय हैं।

-हिन्दी विभाग, कुसुमबाई जैन कन्या महाविद्यालय,
भिण्ड (म. प्र.)

15- दमयन्ती कौ ब्याहु (हस्तलिखित सौं) 16- लखियावन (हस्तलिखित सौं)

17- 'तुम पै कुगरी याऊ सांपा। घनी पौरै तू राठौरी के मां तेरे जनमैगौ बेटा। मैं अबै करौकै करमनु की हेटी। बुध के जनमूँगी मारू बेटी। [illegible] तेरौ [illegible] [illegible]। सवर तूबै नरवारां नरवर में रहैगौ एकु सूखौ तालुं'-नल पुरान, पृ. 15

18- 'बरल तैं [illegible] है हंस को [illegible]। एक बेर कोढ़ी है जइगौ, तेइ घर-घर को मंगनी होयगी भीख।'-दमयन्ती कौ ब्याहु (हस्तलिखित सौं)

ब्रज लोकगीत : संस्कृति अरु इतिहास

-डॉ. राधेश्याम शर्मा

जनमानस की संवेदना कूँ व्यक्त करिबे कौ सशक्त माध्यम है लोकगीत। जाकी सबसौं बड़ी विसेसता जि है कै सब्द संरचना सौं ज्यादा लय (Tone) कौ महातम ज्यादा होय। (1) लोकगीतन के गायक कौ जासौं मनोविनोद हू है जाय। 'लोकगीत' सब्द के तीन अर्थ है सकैं-लोक माँहि प्रचलित गीत, लोक निर्मित गीत अरु लोक विसयक गीत। परि यहाँ पै 'लोक-गीत' सब्द कौ अर्थ लोक विसयक गीत सौं लैबौ ठीक नाँय। जहाँ तलक लोक माँहि प्रचलित गीतन के अर्थ कौ सम्बन्ध है-ऐसे गीतन के द्वै भेद माने जाइ सकैं। अस्थायी रूप सौं प्रचलित अरु स्थायी रूप सौं प्रचलित गीत। अस्थायी रूप ते प्रचलित गीत लोकगीतन की परिभासा में नाँय आमें। स्थायी रूप ते प्रचलित गीत लोकगीत माने जाइ सकें। परि तुलसी, सूर अरु कबीर आदि कवीन के भजन स्थायी रूप सौं प्रचलित हैं परि येऊ 'लोकगीत' नाँय है सकैं। लोकगीत तौ गीतन कौ ऐसौ प्रकार है कैं जाय ऐसे व्यक्ति सौं नाँय जोड़ौ जाय सकै जाकी मेधा लोकमानस सौं नाँय जुड़ी होय। साँची बात तौ जि है कै लोकगीतन माँहि रचयिता कौ व्यक्तित्व नाँय होय। जा व्यक्तित्वहीन रचना माँहि सिगरे लोक (समाज) कौ व्यक्तित्व ध्वनित होय अरु लोग याय अपनी चीज मानिबे लगैं। जि मौखिक परम्परा माँहि आ जावै फिर वामें समै-समै पै परिवर्तन होयौ करै। जा बारे में लोक साहित्य के मर्मग्य डॉ. सत्येन्द्र नैं लिखौ है-'यह गीत' जो लोक मानस की अभिव्यक्ति होय अथवा जामें लोक-मानसाभास होय तौ याय लोकगीत मानि सकैं, (2) प्रो सिजविक नैं लोकगीतन के बारे में लिखौ है-"It is older than literature, older than alphabet It is lore and belongs to the illeterate." (3) अर्थात लोकगीत तौ वर्णमाला अरु साहित्य सौं ज्यादा पुरानौ है। जि तौ लोक की चीज है अरु समाज विसेस के बिना पढे-लिखे लोगन की धार्नी मानी जावै।

कछु लोकगीतन माँहि लोकवार्ता के तत्त्वन कौ समावेस होतु है, जिनसौं लोकमानस अपने मनोरंजन कौ उपकरन जुटावत है। जाके संग-संग इन लोकगीतन माँहि लोक संस्कृति के तरै-तरै के चरनक मिलि जावैं। कछु लोकगीतन माँहि ऐतिहासिक प्रसंगउ मिलि जात हैं।

जि कहिवे की जरूरत नाँय कै लोकगीत एक आँचर विसेस की थाती मानी जावैं। यहाँ पै हम ब्रज आँचर के लोकगीतन तक अपनौ अध्ययन समेटें हैं। 'ब्रज' नामु कैसैं पड़ौ है जा पै कछू विचारु करिबौ जरूरी है। संस्कृत में 'ब्रज धातु' कौ प्रयोग 'चलिवे' के अर्थ के रूप में होय। जि प्रदेश लीलावतार अरु रसिक सिरोमनि श्री कृष्ण कौ विचरन क्षेत्र हैवे के कारन ज्यादा गतिसील, स्पन्दनसील अरु रौनक वारौ है। यासौं जि आकरसन कौ केन्द्र वनि कैं रहि गयौ है। अत: 'ब्रज' अर्थात् चल् वा क्षेत्र कूँ कहौ जाय जो श्री कृष्ण की लीला भूमि है। याही सौं जा क्षेत्र कौ नामु 'ब्रज' परि गयौ। डॉ. जय किशन खण्डेलवाल कौ मानिवौ है कै 'ब्रज' सव्द कौ प्रयोग गायनि के चरागाह के लिए होवै। श्री कृष्ण कौ गायनि के लिए वहौत प्रेम हौ। श्री कृष्ण जा क्षेत्र माँहि गाय चराइवौ करते वा क्षेत्र कूँ 'ब्रज' मानौ जावै।

ब्रज लोक साहित्य ब्रज लोकगीतन सौं समृद्ध है जामें विवाद की कोई गुंजाइस नाँय। या कारन ब्रज लोकगीतन कौ वर्गीकरन करिवौ कठिन है परि पाठकन की ध्यान माँहि रखिकैं वर्गीकरन यहाँ दियौ जाय रह्यौ है। (4)
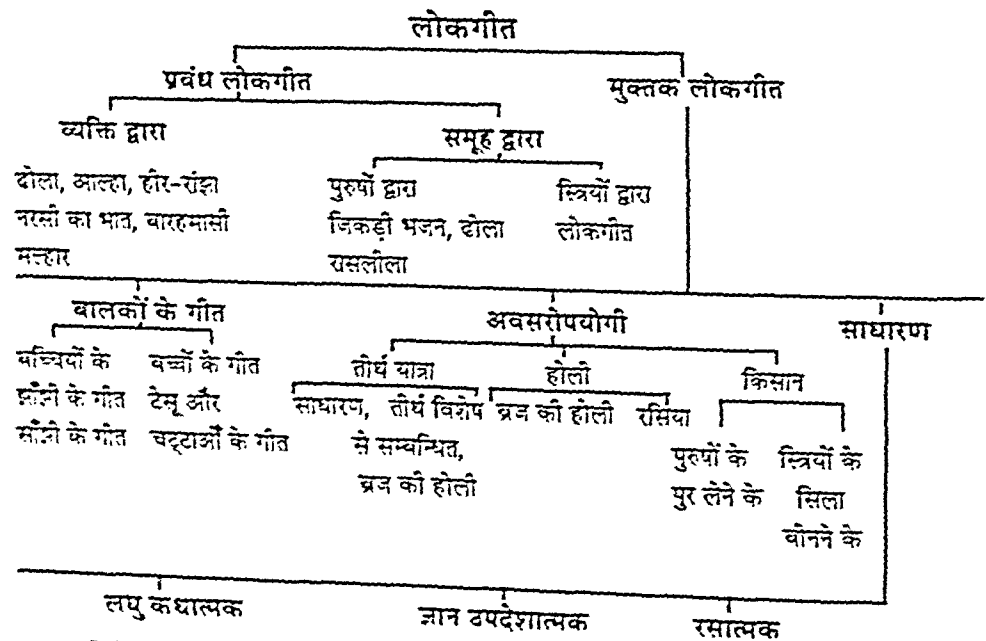
ऊपरि लिखित वर्गीकरन के अलावा लोकगीतन कौ वर्गीकरन जा तरियाँ हू करौ जाय सकै-

लोकगीत (5)

लोक-कला	लोकोपासना	लोक-साहित्य	लोक नाट्य
चौक, भितिचित्र, मेंहदी, ललमनिया, होली, टेसू एवं झाँझी, साँझी।	देवी-देवता, बूढ़ौ बाबू, जाहरपीर, अछूत, प्रेत, शीतला देवी, पथवारी के गीत	जिकड़ी,भजन, रसिया, आल्हा, ढोला, मल्हार, होली, बारहमासा, सावनी, जन्म, विवाह और अन्य संस्कारन सौं सम्बन्धित गीत	नौटंकी, स्वांग, रासलीला एवं कठपुतली आदि

श्री भास्कर रामचन्द्र भालेराव नैं लोकगीतन कौ वर्गीकरन या समै करी ही जब ये गीत संकलन करि रहे हे-

लोकगीत

संस्कार विषयक	माहवारी गीत	सामाजिक-ऐतिहासिक
पुत्र जन्म, सोहर, चरुया, चौक, साध, कौंधनी बांधवे के, मुण्डन, यज्ञोपवीत, टीका, विवाह, द्विरागमन, अन्न-प्राशन, पलने, पत्तल बांधने, समधी-समधिन की गाली, भरनी, मेले के गीत, जन्म-गोठ के गीत	बारहमासा, नौरता, रामनौमी, सावन हिण्डोला, साँझी, झाँझी, कृष्ण-जन्माष्टमी, करवा चौथ, महालक्ष्मी, नौ दुर्गा, गणगौर, कार्तिक-माघ स्नान के गीत, होली, श्रावणी तीज	ढोला, बाबू के गीत, हीरामन, जाहरपीर, गोरा-बादल, राम और केवट आदि के गीत

ब्रज लोकगीतन के इन वर्गीकरनन माँहि डॉ. सत्येन्द्र कौ वर्गीकरन सबसौं अच्छौ वैज्ञानिक मानौ जाय। (6)डॉ. धीरेन्द्र वर्मा ऊ जा वर्गीकरन सौं सहमत हैं। (7) फिरिऊ, लोकगीतन कौ वर्गीकरन वस्तु, रूप, प्रकृति, लिंग, उपयोगिता, क्षेत्र अरु जातिन के आधार पै करौ जाय सकै। काव्य-रूप के हिसाब सौं लोकगीत-साहित्य कूँ द्वै भागन माँहि बाँटि सकैं-कथा प्रधान अरु विचार प्रधान। दूसरी तरियाँ इनकूँ प्रबंध अरु मुक्तक लोकगीत मानि सकैं। पहले प्रकार के लोकगीतन कौ उपजीव्य तौ पुरान अरु इतिहास रहौ है तथा दूसरे प्रकार के गीत काऊ घटना या विचार विसेस कूँ लैकैंआवैं। जि मानि सकैं कै जेई लोकगीत संस्कृति कूँ अपने संग लैकैं चलैं, जीवित राखैं। इन ब्रज लोकगीतन माँहि ब्रज के मानवन की आदिम मनोवृत्तियाँ, भावनाएँ, हर्स-उल्लास, सोक-विवाह, प्रेम-ईर्सा, भय-आसंका, घृना-ग्लानि, अचरज अरु विसमय, भक्ति-निवृत्ति आदि भाव बड़े सरल अरु रागात्मक रूप में प्रकासित हैबौ करैं हैं।

अब जि देखिवौ जरूरी है कै ब्रज के इन लोकगीतन माँहि इतिहास अरु संस्कृति कहाँ तलक प्रतिफलित भई है। यहाँ संस्कृति कौ मतलब लोक संस्कृति सौं ई मानौ जाय। चूँकि लोक संस्कृति अरु

अभिजात्य संस्कृति सदैव भिन्न होय। (8) डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर' नें संस्कृति कूँ जीवन जी
कौ एक तरीका मानौ है। (9) समाज विसेस के संस्कार, रीति रिवाज, लोक-विस्वास, व्रत, त्यौहा
मेले, सकुन-अपसकुन, जादू-टौना, भूत-प्रेतन के प्रति आस्था, देवी-देवतान के प्रति अटूट विस्वा
आदि के ताने-बानेन सौं वा समाज की संस्कृति निर्मित होय। ब्रज लोकगीतन माँहि उपर्युक्त संस्कृ
के सबई तत्त्व भरे पड़े हैं। जि तौ कहि चुके हैं कै लोकगीतन कौ वर्गीकरन करिबे के अनेक आध
हैं अरु ब्रज लोक साहित्य खूब सम्पन्न है। तरै-तरै के वर्गीकरनन के आधार पै लोकगीत अरु बा
भेद, उपभेदन के आधार पै अलग-अलग उदाहरन दैवौ जगह की कमी के कारन मुनासिब नाँय समझ
अरु संस्कृति के तत्व अरु बाते सम्बन्धित लोकगीतन कौ दैवौ उचित लगौ है। कछु गीत तौ भौतु लम
हैं। विनमें ते कछु अंसु ई दियौ गयौ है।

भारत माँहि सोलह संस्कारन सौं जीवन कौं संस्कारित करिबे कौ आदर्सु अरु आदेस रह्यौ है। जा
कछु संदेह नाँय कै गीत संस्कार के प्रधान अंग हैं। विनमें ते प्रमुख संस्कार हैं-जनम, विवाह अरु मौत
जब जातक जननी गर्भ में आवतु है तब जि गीत गायौ जाय-

पहलौ महीना जब लागिये, बाकौ फूलु गयौ फल लागिए।
ए बाई दूजौ महीना जब लागिये, राजे तीजौ महीना जब लागिये।
बाकौ खीर खांड मन भाइए।
ए बाई पंचयौ महीना जब लागिए, ए बाकूँ कोल के आम मंगाइए।

तत्पस्चात् सोभर, छठी, चरुवे धराई अरु साँतिये आदि के लोकगीत नारी गावैं। जच्चा के गीत क
जि निदर्सन देखिवे लाइक है-

चार बरस पानी के पीए, नौं बोतल सरबत की पी गई
जच्चा मेरी पीनौं न जानै री।

इतनौं ई नाँय, लापसी, पालनौ, काजल, नारंगफल अरु जनम के सातवें दिना ननद जब जातक के
काजैं कुर्ता-टोपी लावैं तौ एक गीतु गायौ जावै-जगमोहन लुगरा। बाकी कछु पंक्ति एं-

"लालो! बगदौ बगदि घर आउ, जगमोहन लुगरा पहरिए।
लालो पहरि ओढ़ि घर आउ, तौ मुख भरि असीसउ दीजिए।
भाभी अमर रहैं तिहारी चूरियाँ अमर तिहारे बीछिया,
भाभी! जीऔ तिहारे कुमर कन्हैया।"

ऊं ई तरियाँ विवाह संस्कार सौं सम्बन्धित अनेक लोकगीत ब्रज लोक नारीन सौं सुनिबे कूँ मिलैं
सगाई, पीरी-चिट्ठी, लगुन, भात-न्यौतने, हरदहात, रतजगा, तेल, बरनी-बरना ते सम्बन्धित गीत गाये

जावैं। कंगन तौ वर-वधू दौनूँन के हातनि में बाँधौ जावै। कंगन में का-का होवै, जि देखिवे लायक ए-

कम्बर कौ लयौ टूँकु, छानि कौ फूँसु, गिरारे कौ रेतु, अन्न की भुसी, नीम के पत्ता।
रँग्यौ कारौ लत्ता, लोह की कील, भयौ मन ढकना, बान्ध्यौ कुमर के कंकना॥

याई तरियाँ घूरौ पूजन, अछूतौ, बूढ़े बाबू के गीत गाए जावैं। बूढ़ौ बाबू सायद हनुमान कौ प्रतीक ए। लोकगीत की जे पंक्ति देखिवे लायक हैं-

न्यों मति जानैं रे स्वामी अन्न अछूतौ, अनु सुरैहरी विढ़ारियै।
न्यों मति जानै रे स्वामी पानी अछूतौ, पानी कोरनु विढ़ारियै।

भातु सम्बन्धी जि लोकगीत पढ़िवे लाइक ए जामैं भातु नौतिवे के समै वहिन कहि रई ए-

तेरौ भरोसौ बड़ौ भारी रे मैया के जाये
अपने जीजा कौं कपड़ा तौ लैयौ भैया,
बहना कौं लैयौ कंचन सारी, रे मैया के जाये।

भात लैकैं आए भतैया के सुआगत में गविवे वारौ गीत-

रिमझिम बरसत मेह कै मेरे भीजत आमें रे भातई।
ए मेरे छोटे से बन्ना कौ ब्याहु कै बहना नैना भरि कै रे कह रही।
बारौठी अरु बरात के भोजन के समैं 'गारी' गायी जाँय-
गोरे बुलाये कारे आये री बिल्ली, परि कूंइ-कूंइ।
काए कूँ आयौ लजाइबे कूँ सरदारों के द्वार, जिमीदारों के द्वार।

भोजन के समै-

ल्हौरी-ल्हौरी समधिन डोलै पहरि हाथ में चूड़ौ।
हौलैं-हौलैं जैंऔ बराती, फिर परसूंगी बूरौ, जुगति सौं जैंऔ जी।
बहू कौ नचाइवौ, दई देवता कौ सिरानौ, दई-देवता पूजिबे के ऊ लोकगीत गाये जावैं।

मौत के समै गाये जावे वारे गीत ब्रज माँहि नाँय मिलैं अर्थात् मौत संस्कार के गीत नाँय मिलैं। ब्रह्मा और चीन की सीमा पै भवीना गांव में जरूर ये गीत गाये जावैं चौंकि म्हाँपै नर-नारी मानव के जनम पै रोवें कै एक सुद्ध आत्मा यहाँ आयकैं फँस गयी अरु बाकी मौत पै प्रसन्न हैकैं गीत गावैं जि सोचकैं कै बाकौ उद्धार है गयौ। (10) बचे भये तेरह संस्कारन के ऊ गीत गाये जावैं।

सगुन-अपसगुन के हिसाब सौं पानी ते भरौ बासन लैकैं सुहागिन कौ आनौ, दही-दूध लैकैं आनौ, हरे पेड़ पै सौनचिड़ी कौ चहकिवौ, दायौं ओर गाय आदि कौ आनौ, बछड़ा कूँ दूध पिलावति भई गाय,

जे सब सुभ सगुन माने जावैं। साँप कौ रस्ता काटिवौ, विधवा कौ रीते घड़ा लैकैं निकसिवौ, तेल लैकैं तेली कौ निकसिवौ आदि सब अपसगुन माने जावैं-

अव न्यां सुनि लेउ अरज हमारी, सर्प देवता नैं काटी है अगारी,
विधवा नारि अगारी ते आई, रीते वासन धरि कैं लाई,
सगुन-सगुन पर डारत डेली, तीन कोस पै मिलि गयौ तेली।
मानों मौत सीस पर खेली।

भूत-प्रेत सौं छुटकारौ पाइवे के लिएं थाली बजाई जाय अरु बाके संग गीत गाये जाँय। 'भरनी' गाइकैं साँप कौ विस उतारौ जावै। चारित्रिक आदर्स के हिसाब सौं ब्रज लोकगीतन माँहि विस्वास-घात करिवौ जघन्य अपराध मानौ जाय-

पाँच विसे हारै जो पंच कह्यौ टारै, दस विसे हारै जो प्यासी गाइ बिडारै।
पन्द्रह विसे हारै जो होत कन्याऐ मारै, बीसों विसे हारै जो विस्वासु दैकैं मारै॥

देवी-देवतान ते सम्बन्धित गीतन में देवी की आराधना माँहि लांगुरिया गायौ जाय अरु देवी की स्तुति माँहि जि गीतु गायौ जावै-

आदि की भमानी तेरौ ग्रंथन में परिमाण,
जानि कैं अग्यान मोहि हिरदै में दीजौ ग्यान।
ब्रह्मा विस्नु सहसफन कालिका धरत ध्यान,
नाम सरूप संवारौ, तैंनें सब दिन ते
पन पारौ भगत कौ री।

मेलेन पै गविवे वारे गीतन माँहि जग विख्यात गीतउ ए-

पाँच रुपैया दै दै रे वालम मैं मेला कूँ जाउंगी।
पाँचाना की पाउ जलेवी वैठि सड़क पै खाउंगी।
मेले में मत जाइ मेरी प्यारी वड़े गजव है जाइंगे।
मेला में तौ जुरैं रण्डवा, अधर उठाइ लै जाइंगे।

उपरि लिखित विवेचन सौं जि तौ साफ जाहिर है कै ब्रज लोकसंस्कृति के वाहक जे गीत मुक्तक परम्परा के गीत एं। ब्रज लोकसंस्कृति ते संवंधित औरु निरे गीत यहाँ दै सकैं परि विस्तार भय के कारन ब्रज लोकसंस्कृति विसयक विवेचन कूँ यहीं विराम दै रहे एं।

ब्रज लोकगीतन माँहि अब हम इतिहास खोजिवे की कोसिस करि रहे एं। जि साफ करिबौ जरूरी

है कै पौरानिक कथा इतिहास नाँय है सकै परि जनमानस सौं इतनी निकटता ते जुड़ि गई है कै इतिहास ते ऊ जादा सच लगैं। पौरानिक कथान कूँ लोक गीतन माँहि ऐतिहासिक कथान के रूप में देखौ जाइ। प्रवन्ध गीत अरु नाट्य गीतन के जरिए पौरानिक अरु ऐतिहासिक वृतान्तन कूँ ब्रज प्रदेस माँहि प्रकास मिलौ ए। प्रवन्ध गीत तौ व्यक्ति विसेस या समूह गावै परि नाट्य गीत तौ एकु ई मानुस मंच पै प्रस्तुत करै। नाट्य गीतन कौ जन मानस पै जादा प्रभाव पड़ै। ब्रज के प्रबंध गीतन माँहि आल्हा, ढोला, बारहमासी, जिकड़ी, भजन अरु पँवारा आदि कूँ सम्मिलित करि सकैं। इन गीतन माँहि कोई न कोई कहानी होय। सबसौं पैलें हम आल्हा गीत पै बात करिंगे। जा गीत कौ नाम महोबा के निवासी आल्हा के नाम पै पर्‌यौ है। जि गीत वीरकाव्य की कोटि माँहि आवै। आल्हा-ऊदल की वीरता जा गीत माँहि गायी जावै।

आल्हा लोकगीत इतनौ चर्चित है गयौ है कै वीरता कौ बखान न हैवे पै ऊ जाइ आल्हा छंद माँहि गिनौ जाइ। युद्ध कौ विवरन 'आल्हा' छंद माँहि देखिवे लायक है-

चारिन मारै चारि टाप ते, पाँचए मुख तें जाइ चबाइ।
छटये पै तेग चलै आल्हा की, सातयौ मरै पैधकाखाइ।
बोले आल्हा जब ललकारे लाला सुन लै कान लगाइ।
बड़े लड़ैया महोबे बारे, जिनकी मार सही ना जाइ।।

'आल्हा-ऊदल' के पराक्रम कौ वर्नन हैवे के कारन जाकौ नामु 'आल्ह खण्ड' पर्‌यौ ए। कविवर जगनिक नैं . 1173 ई. के आसपास आल्हा छंद माँहि 'आल्ह खण्ड' लिख्यौ ए, जाकी खूब चर्चा ए। जा बारे में डॉ. योगेन्द्र प्रतापसिंह के विचार जानिवे लायक एं-'' यानैं (आल्ह खण्ड) नैं जनता की सोवती भई भावनान कूँ सदैव गौरव ते गरव ते सजीव राखौ ए। आल्ह खण्ड जन समूह की निधि ए। '' (11) आल्हा के बाद आवै 'ढोला' प्रबन्ध गीत। 'ढोला' प्रबन्ध गीत कौ वितान भौतु विसाल ए। चिकाड़ें, ढोलक अरु मंजीरनु आदि बाद्य यंत्रन पै गावे जावे वारे जा गीत माँहि इतनी कथा है कै लगातार पन्द्रह दिनन तक राति में गाइबे पैऊ जाकौ अन्तु नाँय। गाइबे वारौ मुखिया चिकाड़ा बजावतु ए, याकी सहायता करवैया सुरैया कहौ जात है। एक पहरी खतम हैवे पै गवैया थोरौ सौ सुस्तावै अरु स्रोतान कूँ चुटकले आदि सुनावै जासौं बिनकौ रस-परिवर्तन है जाइ। नित्त की कथा सुनाइबे कूँ 'मैदान' कहौ जाय। ब्रज प्रदेस के अलावा पूरे उत्तर प्रदेस माँहि जा प्रबंध लोकगीत में नरवर के राजा नल, ढोला मारू, नल दमयन्ती अरु रघुवंशीय नल की कथान कूँ गूँथिकैं ऐसौ गायौ जावै कै बामैं कोई संधि नाँय दिखाई दे। जामैं तुकन कौ मोहु जादा ए। जब राजा नल अपनी ननसाल अजैनगर पौंहचौ ए तौ वा जगै के बाग कौ वर्नन जा तरियाँ करैं-

जे सब सुभ सगुन माने जावैं। साँप कौ रस्ता काटिवौ, विधवा कौ रीते घड़ा लैकें निकसिवौ, तेल लैकें तेली कौ निकसिवौ आदि सब अपसगुन माने जावैं-

अब न्यां सुनि लेउ अरज हमारी, सर्प देवता नैं काटी है अगारी,
विधवा नारि अगारी ते आई, रीते बासन धरि कैं लाई,
सगुन-सगुन पर डारत डेली, तीन कोस पै मिलि गयौ तेली।
मानों मौत सीस पर खेली।

भूत-प्रेत सौं छुटकारौ पाइबे के लिएं थाली बजाई जाय अरु बाके संग गीत गाये जाँय। 'भरनी' गाइकें साँप कौ विस उतारौ जावै। चारित्रिक आदर्स के हिसाब सौं ब्रज लोकगीतन माँहि विस्वास-घात करिवौ जघन्य अपराध मानौ जाय-

पाँच विसे हारै जो पंच कह्यौ टारै, दस विसे हारै जो प्यासी गाइ बिडारै।
पन्द्रह विसे हारै जो होत कन्याऐ मारै, बीसों विसे हारै जो विस्वासु दैकैं मारै॥

देवी-देवतान ते सम्बन्धित गीतन में देवी की आराधना माँहि लांगुरिया गायौ जाय अरु देवी की स्तुति माँहि जि गीतु गायौ जावै-

आदि की भमानी तेरौ ग्रंथन में परिमाण,
जानि कें अग्यान मोहि हिरदै में दीजौ ग्यान।
ब्रह्मा विस्नु सहसफन कालिका धरत ध्यान,
नाम सरूप संवारौ, तैंनें सब दिन ते
पन पारौ भगत कौ री।

मेलेन पै गविवे वारे गीतन माँहि जग विख्यात गीतउ ए-

पाँच रुपैया दै दै रे बालम मैं मेला कूँ जाउंगी।
पाँचाना की पाउ जलेबी बैठि सड़क पै खाउंगी।
मेले में मत जाइ मेरी प्यारी बड़े गजब है जाइंगे।
मेला में तौ जुरैं रण्डवा, अधर उठाइ लै जाइंगे।

उपरि लिखित विवेचन सौं जि तौ साफ जाहिर है कै ब्रज लोकसंस्कृति के वाहक जे गीत मुक्तक परम्परा के गीत एं। ब्रज लोकसंस्कृति ते संबंधित औरु निरे गीत यहाँ दै सकैं परि विस्तार भय के कारन ब्रज लोकसंस्कृति विसयक विवेचन कूँ यहीं विराम दै रहे एं।

ब्रज लोकगीतन माँहि अब हम इतिहास खोजिवे की कोसिस करि रहे एं। जि साफ करिबौ जरूरी

है कै पौरानिक कथा इतिहास नाँय है सकै परि जनमानस सौं इतनी निकटता ते जुड़ि गई है कै लोग ते ऊ जादा सच लगैं। पौरानिक कथान कूँ लोक गीतन माँहि ऐतिहासिक कथान के रूप में देखौ जातौ। प्रबन्ध गीत अरु नाट्य गीतन के जरिए पौरानिक अरु ऐतिहासिक वृतान्तन कूँ ब्रज प्रदेस माँहि प्रचलन मिलौ ए। प्रबन्ध गीत तौ व्यक्ति विसेस या समूह गावै परि नाट्य गीत तौ एकु ई मानुस मंच पै प्रस्तुत करै। नाट्य गीतन कौ जन मानस पै जादा प्रभाव पड़ै। ब्रज के प्रबंध गीतन माँहि आल्हा, ढोला, बारहमासी, जिकड़ी, भजन अरु पँवारा आदि कूँ सम्मिलित करि सकैं। इन गीतन माँहि कोई न कोई कहानी होय। सबसौं पैलें हम आल्हा गीत पै बात करिंगे। जा गीत कौ नाम महोबा के निवासी आल्हा के नाम पै पर्‌यौ है। जि गीत वीरकाव्य की कोटि माँहि आवै। आल्हा-ऊदल की वीरता जा गीत माँहि गायी जावै।

आल्हा लोकगीत इतनौ चर्चित है गयौ है कै वीरता कौ बखान न हैवे पै ऊ जाइ आल्हा छंद माँहि गिनौ जाइ। युद्ध कौ विवरन 'आल्हा' छंद माँहि देखिवे लायक है-

चारिन मारै चारि टाप ते, पाँचए मुख तें जाइ चवाइ।
छटये पै तेग चलै आल्हा की, सातयौ मरै पैधकाखाइ।
बोले आल्हा जब ललकारे लाला सुन लै कान लगाइ।
बड़े लड़ैया महोबे वारे, जिनकी मार सही ना जाइ।।

'आल्हा-ऊदल' के पराक्रम कौ वर्नन हैवे के कारन जाकौ नामु 'आल्ह खण्ड' पर्‌यौ ए। कवियर जगनिक नैं, 1173 ई. के आसपास आल्हा छंद माँहि 'आल्ह खण्ड' लिख्यौ ए, जाकी खूब चर्चा ए। जा बारे में डॉ. योगेन्द्र प्रतापसिंह के विचार जानिवे लायक एं-" जानैं (आल्ह खण्ड) नैं जनता की सोवती भई भावनान कूँ सदैव गौरव ते गरब ते सजीव राखौ ए। आल्ह खण्ड जन समूह की निधि ए। " (11) आल्हा के बाद आवै 'ढोला' प्रबन्ध गीत। 'ढोला' प्रबन्ध गीत कौ वितान भौतु विसाल ए। चिकाड़ें, ढोलक अरु मंजीरनु आदि वाद्य यंत्रन पै गावे जावे वारे जा गीत माँहि इतनी कथा हैं कै लगातार पन्द्रह दिनन तक राति में गाइवे पैऊ जाकौ अन्तु नाँय। गाइवे वारौ मुखिया चिकाड़ा बजायतु ए, बाकी सहायता करवैया सुरैया कहौ जात है। एक पहरी खतम हैवे पै गवैया थोरौ सौ सुस्तावै अरु स्रोतान कूँ चुटकले आदि सुनावै जासौं विनकौ रस-परिवर्तन है जाइ। नित कौ कथा सुनाइवे कूँ 'मैदान' कहौ जाय। ब्रज प्रदेस के अलावा पूरे उत्तर प्रदेस माँहि जा प्रबंध लोकगीत में नरवर के राजा नल, ढोला-मारू, नल-दमयन्ती अरु रघुवंशीय नल की कथान कूँ गूँथिकैं ऐसौ गायौ जावै कै यामैं कोई संधि नाँय दिखाई दे। जामैं तुकन कौ मोहु जादा ए। जब राजा नल अपनी ननसाल अजैनगर पौंहचौ ए तौ वा जगै के बाग कौ वर्नन जा तरियाँ करै-

वाग में उठि रही है सुगन्ध कुमरु परसन्द जी ऐसो लागो म्हैरि, केरा पै पका धैरि।
भूख सवु भाजी, जानें करी ए वाग की सैल कुँवरु भयौ राजी।
ताल कौ मोती वरनों नीर, मारै महक उठै खसबोई ए जाकौ सीतल भयौ रे सरीर।

ढोला गीत गवैया वीच-वीच में कवित्त, दोहा आदि छन्दन कौ प्रयोग करैं। जा तरियाँ जा प्रबन्ध गीत माँहि अनेक छंद है सकैं। उदाहरन कूँ एक छंद कवित्त ए-

गोरे-गोरे अंग पै गुमान प्यारे च्यों करै, रंग तौ पता लौं जाकौ यों ही उड़ि जाइगौ।
धुँआ से हाड़ गोड़ जरत में न लागै देर, नदी के किनारे पेडु कबजू ठहराइगौ।
कंचन सौ सरीर जामें लोह की न लागी कील मोह की नदी में बैठि कव जू इतराइगौ।
कहँ पंडित मुरलीधर गन्दौ ई बह्यौ रे जाइ, ज्वानी के मांस यै कोई कूकरा न खाइयौ॥

'ढोला' पै विचारु करिवे के वाद अव बारहमासी पै विचारु करिवौ जरूरी ए। नाम सौं ई साफ ए कै कथा कूँ वारह महीनान में बाँटिकैं गायौ जाइ। जामैं ध्रुव की कथा तौ पौरानिक ए। ध्रुव की तपस्या की कथा कूँ वारहमासी कौ माध्यम वनाइ कैं प्रस्तुत करौ गयौ है। भादौं महीना कौ चित्रन देखिवे लायक हैं-

महलन करति विलाप ध्रुव की रोवै महतारी (टेक)
भादों रैनि अँधेरी छाई कैसें धीर धरूँ
मोइ दीखै वेटा के विरह में बिन ही मौत मरूँ
दरस तू दै मोकूँ छैया,
ऐसें तड़पै मात तेरी, ज्यों विन बछरा गैया,
लगी लौ हृदय में भारी। महलन......
पूस मास जाड़ौ अति भारी वस्त्र न तन माँही
कैसें सोमतु होइगौ मेरौ वेटा वन माँही
नहीं कछु ओढ़नु कूँ लीयौ
करि-करि पिछली याद लाल मेरौ यों ही चल दीयौ
सौत नें करि दीन्ही ख्वारी,
महलन.......

जि वात पैंलें कहि आये हैं कै लोकगीतन माँहि कथ्य सौं लय, धुनि जादा महत्ता राखैं। बारहमासी अपने आपु ई छंद ए, काऊ कथ्य कूँ लैकैं काहू माह के उल्लेख विना चलि सकै। उदाहरन के तौर पै ढोला लोकगीत माँहि नल की नानी अपने जीवन की व्यथा नल के प्रति जा तरियाँ प्रस्तुत करि रही है-

अरज जब नल ते बुढ़िया नें करी, है गई बालापन की राँड कि हिम्मत बंटन पै बाँद सई।
नृप जिनें छोड़ि गये बारे, मैनें दई पेट में गाँठि लाल तो नौ हाथन ते पारे।
कै गंगा हरद्वार न्हाई, बाई घाट पै छोरी चेटा एक बंगाली की आई।
चुराई जानें छोरी डेरन में, खबरि परी है बाके धरम पिताए बैरी आइ गयौ छन में।
करि दयौ लाला पै हम्म, लायौ फौज चढ़ाइ लगि रहे हाथन में बम्म।
फौज जब अजय नगर आई, लीनी मुसक चढ़ाइ कि बैरी नैं दहसत नाँय खाई।
कुंवर कह कैसें धीर धरूँ, जाइ बताइ चेटा घोड़ा वारे, कुन से कूआ में खिसिल परूँ।
डोकरी पेटु पकरि..........फाँसी।
कै दाँती बुढ़िया नें भींची, तू मेरी काट जा नारि कै गरदन करि दीन्हीं नीची।

यहाँ पै काऊ महीना कौ जिकर नाँय। मंझाकी, ध्रुव की, राम-निर्वासन की बारहमासी प्रसिद्ध हैं, विन में पौरानिक अरु ऐतिहासिक कथा प्रतिबिम्बित होंय।

प्रबन्ध गीतन की परम्परा में जिकड़ी भजन सामूहिक रूप ते गाये जाँय। इनमैंऊ पौरानिक अरु ऐतिहासिक कथानकन कूँ लयौ जाय। जि गीत जाड़े की रातिनि में गामन में किसान काऊ ठौर पै रोजीना गामैं, बाद में प्रतियोगिता होय, जाय 'फूल डोल' कहैं। जिऊ राति में होय। जाकौ कारन ए कै सीतकाल की (जाड़े की) राति लम्बी होय। गावे के समै ढोलक, बाजे, नगाड़े के संग खरताल कौ प्रयोग करैं। राजा दंग, प्रहलाद अरु राम-निर्वासन आदि प्रसंगन पै अच्छे जिकड़ी भजन गाये जाँय। एकु प्रसंग है-सीता बाल्मीकी आश्रम माँहि रहिकैं अपनी संतान कूँ पालि रई ए, लव अकेलौ ए। मुनि बाला पानी भरिवे के समै अपने बालकन कूँ संग लै जातीं परि सीता तौ अपने लव कूँ पालने में छोड़ि जाती। एक दिना सब महिलान नैं सीता सौं कही कै अपने सपूत कूँ संग लायै नईं तौ जंगली जनावर याके पूत कूँ खाय सकैं। मुनि सौं बिना कहे सीता दूसरे दिना पानी भरिबे काजें अपने संग लव कूँ लै गई। महर्षि बाल्मीकि नैं जब ई देखौ कै पालनौ सूनौ ए तब बिननैं सीता के भावी दुख को सोचि कैं लव जैसौ ई अपनी तपस्या के बल सौं छोरा बनाइ दयौ। चच्चा कुस (घास विसेस) पै जल छिड़कि कैं बनायौ, जासौं बाकौ नाम परि गयौ कुश। सीता अरु बाल्मीकि अचरज में पड़ि गये। बाद में तै करी गयी कै दोनों बालकन कूँ पालौ जाय। जा कथानक कूँ जिकड़ी भजन माँहि जा तरियाँ गायौ गयौ है-

अरे भखि जाइ कोई जोव बनी कौ (टेक)
दूजे दिन जल भरन गई, और सुत कौं लै गई गोदी में
मुनि कुटी के भीतर आये, भारी सोच भयौ मन में।
सो भारी सोच मुनीसुर कीयौ उड़ि गयौ होस मुनी कौ
अरे.................

'पँवारे' लोकगीत पै विचारु जरूरी ए। 'पँवारा' ब्रज में मुहावरे के रूप में झगरौ-झंझट के लियें काम में आवै अरु युद्ध कौ परिणाम मानौ जावै। कथा चाहें भलैंई ऐतिहासिक न होय परि बामें कथावस्तु कौ विन्दु ऐतिहासिक जरूरी ए। ब्रज लोकगीतन में 'जगदेव कौ पँवारौ' मिलै। 'रासमाला' के आधार पै जगदेव मालवा के राजा उदयादित्य (1059-87) के सपूत ए। धारा नगरी सौं घरेलू झंझटन के कारन वाहिर चले गये और जिय मानौ जाय कै वे गुजरात के राजा जैसिंह के यहाँ नौकरी करिबे लगे। 18 वरस तक नौकरी करिकैं जव वे वापस आये तव विननैं अपनौ पराक्रम दिखायौ। (12) जाई तरियाँ 'होमपाल के पँवारे' कौ उल्लेख मिलै। 'अमर सिंह' कौ ऊ पँवारौ मिलै। अमरसिंह में पहलैं सारदा माँ कूँ स्मरन करौ जाय, फिर उस्ताद की वन्दना करी जाय, ताके वाद पंचपीर अरु सब औलियान कूँ मस्तक झुकायौ जाय। फिर वाद में गाथाकार जि कहै-

'अमरसिंह' नें कियौ पँवारौ, कहौ तौ गाइ सुनाऊँ,
अरु आगे कहै-
कहाँ ते उत्पन्न भई, कहाँ ते भई लड़ाई
दीघ सहर उत्पन्न भई, आगरे ते भई लड़ाई। (13)

अव हम नाट्यगीतन माँहि इतिहास अरु पुरान कूँ खोजिवे की कोसिस करिंगे। नाट्य-गीत कछु मानसन के समुदाय द्वारा प्रस्तुत होंय। वाय मण्डली कहें। अव 'रास मण्डली' सब्द तौ कृष्ण-कन्हैया सम्वन्धी रास तेई सम्वन्धित मानौ जाय। जासौं इन नाट्य मंडलीन कूँ 'स्वाँग मण्डली' कहौ जाय। 'स्वाँग मण्डली' में वाजा, नक्काड़ा, ढोलक आदि कौ प्रयोग करौ जाय। संस्कृत में जिय मानों जाइ कै 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' परि नाटकनि में देखिवौ और सुनिवौ दोनों मिलै। नाट्य गीतन माँहि अभिनय, गीत, संवाद सव कछू मिलैं जासौं जनता माँहि जादा मनोरंजन होय। मँहगाई के जमाने में मंडली के दस-पन्द्रह कलाकारन कूँ भोजन कराइवौ मुस्किल होय। सिनेमा, टेलिविजन आदि नैं सस्तौ मनोरंजन दैवौ सुरू करि दयौ है यासौं अव नाट्यगीत प्रस्तुत करिवेवारी मंडली एकाध ई दिखाई दे। जामें स्त्रीन कौ अभिनय पुरुष करै। आज ते 30-40 वरस पहलैं नाट्यगीत कछू आदमीन की जीविका कौ साधन बनि गयौ ओ। सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र, भक्त प्रवर मोरध्वज, सत्यवान-सावित्री, भक्त पूरनमल आदि पौरानिक वृतान्तन कूँ इन नाट्य गीतन में लियौ जाय। दर्सकनु के सामई वड़े अच्छे तरीका सौं रखौ जाय। बीच-वीच में हँसी-मजाक की वात ऊ है जाय। जो हँसी ठट्ठा करै वाय कहैं 'मनसुखा'। भक्त अम्बरीश, प्रतापी अभिमन्यु औरु ऐतिहासिक नाट्य गीतन में 'अमर सिंह राठौड़' बूँदी नरेश सम्वन्धी नाट्यगीत प्रसिद्ध है। 'अमरसिंह राठौड़' की कछू पंक्ति देखिवे लायक हैं-

चौ तरफा से तौ लगी गढ़ बूंदी में आगि।
चाकर कौं व्याही गई, अरु फूटे मेरे भागि॥
फूटे मेरे भागि डसै वावुल कौं विसियर कारौ।

अरु पै बीजुरी बामन पै मरियौ नाई बजमारौ।
मरौ वो बामन नाईजो जिनन मेरी करी सगाई जो,
सुख कौ रह्यौ न सहारौ,
कौन जनम कौ पाप उदै भयौ। हे जगदीश हमारौ।

जा गीत में अनेक छन्दन कौ प्रयोग मिलै-लावनी, दोहा अरु कवित्त आदि।'सत्य हरिश्चन्द्र' नाट्य-गीत की कछूक पंक्ति यहाँ दैबौ जरूरी ए। जामें राजा हरिश्चन्द्र कौ चरित्र बड़े उदात्त ढंग सौं प्रस्तुत कियौ ए। संझा कूँ माली राजा कूँ सूचना देतु ए कै एक जंगली सूअर नैं राजसी बगीचा उजार दयौ ए। जब वाय रोकिबे की कोसिस करी तौ वानैं माली कूँ ऊ घायल कर दीनौ। खुद राजा सौं अपनी रच्छा के लिएं कहि रह्यौ ए। वा समै कौ राजा हरिश्चन्द्र कौ जि संवाद देखिबे लायक है-

आनि हुआ संध्या समै अरु जा माली निज धाम।
इस दम जीव सताना अरु महापाप का काम।।
महापाप का काम रोकि रखना गुस्सा भारी को।
वक्त साम के नहीं सताऊँ किसी जीवधारी को।
कि हनि दूँ एक बान से जी
न जिन्दा छोडूँ जान से जो
जो इतना कर न दिखाऊँ,
मुझको है सौगन्ध कि बेटा अपनी माँ का नाऊँ।

अपने सपूत रोहित की लास कूँ लैकैं रानी तारामती मसान पहुँचति ए, यहाँ पै कालू के नौकर के भेस में राजा हरिश्चन्द्र खुद ई पहरौ दै रहे एं कै कोई बिना आधौ कफ्फन दिये लास कूँ नाँय जराय जाय। कालू के नौकर नैं अपनी खुद की पत्नी अरु मरे भये पूत कूँ अच्छौ तरै देखि लियौ परि अपने कर्तव्य कौ पालन करत भयौ वानैं आधौ कफ्फन मांगौ। परि आधौ कफ्फन दैबे पै तौ रोहित अधनंगौ है जातौ। वा वक्त रानी अपने पति के सामई विलापु करति भई कहि रही है-

रानी-बेटे की सूरत को निरख करि प्यार सौं पुचकार लो।
छोनां पिरोना लाल की सूरत को आज निहार लो।
पहला तौ बिछुड़ा मिल गया अरु अब नहीं है मिलन का,
उठ अन्न-जल जग से गया पीतम तुम्हारे ललन का।
राजा- जब तक मैं रहा राजा, तब तक हे सुकुमारि।
रोहित मेरा लाल था, तू अर्धांगिनि नारि।
अब मैं बाप न यह बेटा न तू नारि है हरिश्चन्द्र की।
कासी में बिकते ही गईं बातें सकल सम्बन्ध की।

विस्तार भय के कारन जि चर्चा यहीं समाप्त करि रहे हैं। इतनौं निवेदन है कै ब्रज के लोकगीतन माँहि संस्कृति अरु इतिहास भरौ पड़ौ ए। विसै तौ इतनौ व्यापक है कै पूरौ सोध प्रबन्ध लिखौ जाय सकै। हौं ऐसौ दावा नाँय करि रह्यौ कै विसै के संग पूरौ न्याव करि सकौ हूँ। गागर माँहि सागर भरिबे की मोमें सम्बाई नाँय।

संदर्भ-.

1. Kenneth Richmond-Poetry and the people-In all folk songs it is a common thing to find that the words are inferior to the tunes and because of this it is often stated that it was the tune which mattered most.
2. डॉ. सत्येन्द्र-लोक साहित्य विज्ञान, पृ.-390
3. ढोला मारू रा दूहा (प्राक्कथन)-नरोत्तम स्वामी
4. डॉ. सत्येन्द्र-लोक साहित्य विज्ञान, पृ-404
5. डॉ. भगवान सहाय पचौरी-ब्रज साहित्य का मूल्यांकन, पृ.-276
6. डॉ. सत्येन्द्र-ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, पृ.-400-404
7. डॉ. सत्येन्द्र-ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, पृ.-399
8. डॉ. भगवान सहाय पचौरी-ब्रज साहित्य का मूल्यांकन, पृ.-277
9. डॉ. रामधारी सिंह 'दिनकर'-संस्कृति के चार अध्याय, पृ.-159
10. डॉ. सत्येन्द्र-ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, पृ.-106
11. हिन्दी साहित्य कोश भाग-2. पृ.-33-34
12. डॉ. सत्येन्द्र-ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, पृ.-313-14
13. डॉ. सत्येन्द्र-ब्रज लोक साहित्य का अध्ययन, पृ.-313-14

-राजकीय महाविद्यालय, करौली (राजस्थान)

ब्रजभाषा लोकगीत परम्परा-आन्ध्रवासीन में

-डॉ. राकेश तैलंग

भारतीय संस्कृति कौ मूल आग्रह कह्यौ जाय सकै है वो समाहारमूलक व्यौहार जो देश, जाति, भाषा की सीमान कौ ध्यान न दैकैं विनमें छिपी अच्छी-अच्छी बातन सौं अपने रूप कौ श्रृंगार करयौ चाहै।

कछू ऐसी ही घटना घटी आज ते लगभग 900 बरस पहलैं जब दक्षिण के आन्ध्र प्रान्त सौं शुद्धाद्वैत दर्शन के आचार्य वल्लभाचार्य कौ प्रत्यावर्तन भयौ उत्तर भारत में ब्रज की ओर। दक्षिण की एक पूरी की पूरी शास्त्रीय परम्परा जामें जीवन के हर मंगल-अमंगल पक्ष कूँ ईश्वरीय अनुग्रह के रूप में शिरोधार्य करबे की बात निहित ही, दक्षिण के सुदूर अंचलन में व्याप्त कैई प्रकार के रीति-रिवाज, खान-पान, भाषा कौ ओज और रहवे, पहनवे, ओढ़वे के अलावा मनुष्य जीवन के सिगरे संस्कारन सौं मनुष्य कूँ संस्कारित करबे वारी सुगन्ध व्याप्त ही अरु एक मैनरिज्म, शास्त्रोक्त विधि, संस्कृत जीवन के आगैं पीछैं लोकजीवन की परोक्ष झलक के बहाने अपनी मूल जातीयता, उत्स सौं जुड़े रहवे की ललक ही- सब कछू ब्रज में आ गयौ।

दक्षिण सौं आई विद्योपजीव या ब्राह्मण समाज की परम्परा नैं अपनी जातीय परम्परा की रक्षा के लिए कोऊ संगठनात्मक प्रयास तौ नहीं करे लेकिन द्वै प्रकार को जीवन शैली में दक्षिण और ब्रज कौ मिलौ-जुलौ एक मीठौ सौ व्यौहार विनकी एक विशेष पहचान बनी-गोस्वामी वर्ग कौ आचार्य परम्परा जो पुष्टिमार्गीय पीठन के अधिष्ठाता बने और विनही के संग-संग अपनी स्वतंत्र वृत्ति सौं गृहस्थ जीवन बितावे वारे दूसरे वे लोग जो आर्थिक दृष्टि सौं यहाँ-वहाँ जीवन की आवश्यकतान कूँ पूरी करबे के ताँई भागते रहे।

ये दोनों ही प्रकार के जातिवर्ग अपने परिवार-कुटुम्ब में दक्षिण की परम्परा लैकैं ब्रज आए जहाँ

ब्रज को आनन्द उल्लास प्रिय संस्कृति के रंग, वहाँ को उत्सवप्रियता जीवन कूँ एक मनोरथ के रूप में जीवे की इच्छा इनकी संस्कृति में रच बस गई। ये ही सब फिर औरंगजेब के समय माँहि श्रीनाथजी, द्वारकाधीशजी, मथुराधीशजी के स्वरूपन के संग 16वीं सदी के उत्तरार्द्ध में आकें मेवाड़ में बसे। तब यों कहैं कि दक्षिण में ब्रज कौ जो पुट मिलौ वामें मेवाड़ की परम्परान कौ हू थोरौ-थोरौ समावेस हैबौ अनिवार्य बनौ।

आज गोस्वामी जी के आचार्य परिवार समेत तैलंग भट्ट वर्ग के अनेक परिवार मथुरा, कामाँ, जयपुर, बीकानेर, चौंपासनी, नाथद्वारा, काँकरौली में बसे भए हैं। वे अपने आप कूँ ब्रज के कहवे में गौरव कौ अनुभव करें, राजस्थान कूँ वे जनम और करमभूमि दोनों मानें और इनमें कहूँ गहरे में दक्षिण भारत के रीति ब्यौहार हू बीज बने बिखरे परे हैं जिनकी खबर बिनें हू नाँय। इन तीनूँ संस्कृतिन के रंग सौं रँगे भए हैं, इनके परिवारन में समय-समय पै बहू-बेटिन द्वारा गावे जावे वारे ब्रजगीत।

ये गीत मुख्यत: ब्रजराज कृष्ण के जीवन प्रसंगन कूँ अपने पारिवारिक प्रसंग में लावे की भावना सौं जुरे हैं। बालक के जनम के बाद छटी के दिन दूध खाजा के बीच जब लाला कृष्ण के जनम की बधाई बटें तौ 'बिरज कौ कान्हा अपने घर आयौ, मंगल छायौ' की अभिव्यक्ति होइ। आज हू इन शुभ गीतन कूँ इन परिवारन में 'चानन के गीत' (जैसौ कि कह्यौ गयौ है या शब्द कौ मूल 'चरणु' है जो तेलगु में आनन्द या शुभ अवसर कूँ इंगित करे है) कह्यौ जाय।

ब्याह-जनेऊ में कृष्ण यजुर्वेद पद्धति के ठेठ मंत्रोक्त परम्परा के सिगरे रिवाजन के संग-संग ब्रजभाव कौ आनन्द अनुभव कियौ जा सके है-बन्ना-बन्नी वारे गीतन में। इन गीतन में जहाँ एक ओर बन्ना-बन्नी के फूलन के ऐसे श्रृंगार कौ वर्नन है जो दक्षिण भारत की विवाह सज्जा कूँ आँखन के आगें लाय दे है, वहाँ इनके बीच विशुद्ध लोक शैली में बन्ना और बन्नी के बीच आँखिन के कोरन सौं एक दूसरे कूँ सन्देस निवेदन करवे कौ हू बड़ौ बारीक वर्नन होय है-'बन्नी मेरी मिश्री की डली, निहारे बन्ना वाकूँ खड़ी खड़ी, बन्ना मेरौ रहै बेली की घड़ी, निहारे बन्नी खड़ी खड़ी।' इन पंक्तियन में 'बेली की घड़ी' शब्द खबर नहीं का है। लगै ऐसौ है कै बेली शब्द वेलिनाडु शब्द कौ अपभ्रष्ट रूप है जो दक्षि...त्य इन परिवारन कौ मूल उद्‌गम देश है। आन्ध्र में 'वेलि' ब्राह्मण के वा समुदाय कूँ कहैं जो वेदपाठी हैं और नाडु कौ मतलब है, देश।

इन ब्याह प्रस्तावन में अलग -अलग प्रसंगन पै छोटे गणेश स्थापना, बड़े गणेश, वृद्धि पठौनी, नागबली (विदा), समध मिलाई, मधु पर्क आदि नामन सौं विवाह की शुभकामना भाव सौं जुरे भए गीत गाइवे की परम्परा है जाके व्यापक अनुशीलन की जरूरत है।

समय के संग ये गीत फिल्मी तर्जन पै 'आगरे का ताजमहल लस्कर का किला' जैसे हल्के-फुल्के

गीतन के रूप में परिणत है रहे हैं। वीडीओ रील की चकाचौंध में विवाह, छठी, गंगा पूजा, चम्आ आदि गीत धीरे-धीरे फिल्मी गीतन के संग मिक्स होते जा रहे हैं। फिरि हू कबहूं-कबहूं जब ये गीत कानन में पड़ें तौ इनकौ ऑरिजिन ढूंढ़वे की इच्छा है जाय। शब्द नैं कितनी लम्बी यात्रा तय करी है- दक्षिण सौं ब्रज और ब्रज सौं राजस्थान, शुद्धाद्वैत दर्शन कौ स्वरूप ब्रज में जा भोग, राग और श्रृंगार सौं वलयित करवे कौ काम कियौ तैलंग भट्ट विट्ठलनाथजी नैं यो ही आज या जाति के हर कर्म में कहूं न कहूं रचौ बसौ है। या रचावट बसावट में अब कितनौ दक्षिण रहौ, कितनौ ब्रज और कितनौ राजस्थानी - ये तौ सुधी शोधकर्त्तान के सोचिवे कौ काम है।

-प्रधानाचार्य
राजकीय सीनियर माध्यमिक विद्यालय, राजसमंद, (राजस्थान)

□

ब्रज की आनन्द उल्लास प्रिय संस्कृति के रंग, वहाँ की उत्सवप्रियता जीवन कूँ एक मनोरथ के रूप में जीवे की इच्छा इनकी संस्कृति में रच बस गई। ये ही सब फिर औरंगजेब के समय माँहि श्रीनाथजी, द्वारकाधीशजी, मथुराधीशजी के स्वरूपन के संग 16वीं सदी के उत्तरार्द्ध में आकें मेवाड़ में बसे। तब यों कहें कि दक्षिण में ब्रज कौ जो पुट मिलौ वामें मेवाड़ की परम्परान कौ हू थोरौ-थोरौ समावेस हैबौ अनिवार्य बनौ।

आज गोस्वामी जी के आचार्य परिवार समेत तैलंग भट्ट वर्ग के अनेक परिवार मथुरा, कामाँ, जयपुर, बीकानेर, चौपासनी, नाथद्वारा, काँकरौली में बसे भए हैं। वे अपने आप कूँ ब्रज के कहवे में गौरव कौ अनुभव करैं, राजस्थान कूँ वे जनम और करमभूमि दोनों मानें और इनमें कहूँ गहरे में दक्षिण भारत के रीति व्यौहार हू बीज बने बिखरे परे हैं जिनकी खबर बिनैं हू नाँय। इन तीनूँ संस्कृतिन के रंग सौं रँगे भए हैं, इनके परिवारन में समय-समय पै बहू-बेटिन द्वारा गावे जावे वारे ब्रजगीत।

ये गीत मुख्यत: ब्रजराज कृष्ण के जीवन प्रसंगन कूँ अपने पारिवारिक प्रसंग में लावे की भावना सौं जुरे हैं। बालक के जनम के बाद छठी के दिन दूध खाजा के बीच जब लाला कृष्ण के जनम की बधाई बटें तौ 'बिरज कौ कान्हा अपने घर आयौ, मंगल छायौ' की अभिव्यक्ति होइ। आज हू इन शुभ गीतन कूँ इन परिवारन में 'चानन के गीत' (जैसौ कि कह्यौ गयौ है या शब्द कौ मूल 'चरणु' है जो तेलगु में आनन्द या शुभ अवसर कूँ इंगित करै है) कह्यौ जाय।

ब्याह-जनेऊ में कृष्ण यजुर्वेद पद्धति के ठेठ मंत्रोक्त परम्परा के सिगरे रिवाजन के संग-संग ब्रजभाव कौ आनन्द अनुभव कियौ जा सकै है-बन्ना-बन्नी वारे गीतन में। इन गीतन में जहाँ एक ओर बन्ना-बन्नी के फूलन के ऐसे श्रृंगार कौ वर्नन है जो दक्षिण भारत की विवाह सज्जा कूँ आँखन के आगें लाय दे है, वहाँ इनके बीच विशुद्ध लोक शैली में बन्ना और बन्नी के बीच आँखिन के कोरन सौं एक दूसरे कूँ सन्देस निवेदन करवे कौ हू बड़ौ बारीक वर्नन होय है-'बन्नी मेरी मिश्री की डली, निहारै बन्ना वाकूँ खड़ौ खड़ौ, बन्ना मेरौ रहै बेली की घड़ी, निहारै बन्नी खड़ी खड़ी।' इन पंक्तियन में 'बेली की घड़ी' शब्द खबर नहीं का है। लगै ऐसौ है कै बेली शब्द वेलिनाडु शब्द कौ अपभ्रष्ट रूप है जो दक्षि...त्य इन परिवारन कौ मूल उद्‌गम देश है। आन्ध्र में 'वेलि' ब्राह्मण के वा समुदाय कूँ कहैं जो वेदपाठी हैं और नाडु कौ मतलब है, देश।

इन ब्याह प्रस्तावन में अलग -अलग प्रसंगन पै छोटे गणेश स्थापना, बड़े गणेश, वृद्धि पठौनी, नागवल्ली (बिदा), समध मिलाई, मधु पर्क आदि नामन सौं विवाह की शुभकामना भाव सौं जुरे भए गीत गाइवे की परम्परा है जाके व्यापक अनुशीलन की जरूरत है।

समय के संग ये गीत फिल्मी तर्जन पै 'आगरे का ताजमहल लस्कर का किला' जैसे हल्के-फुल्के

गीतन के रूप में परिणत है रहे हैं। वीडीओ रील की चकाचौंध में विवाह, छठी, गंगा पूजा, घन्आ आदि गीत धीरे-धीरे फिल्मी गीतन के संग मिक्स हौते जा रहे हैं। फिरि हू कबहूँ-कबहूँ जब ये गीत कानन में पड़ें तौ इनकौ ऑरिजिन ढूंढ़वे की इच्छा है जाय। शब्द नैं कितनी लम्बी यात्रा तय करी है- दक्षिण सौं ब्रज और ब्रज सौं राजस्थान, शुद्धाद्वैत दर्शन कौ स्वरूप ब्रज में जा भोग, राग और शृंगार सौं वलयित करवे कौ काम कियौ तैलंग भट्ट विट्ठलनाथजी नैं वो ही आज या जाति के हर फर्म में कहूँ न कहूँ रचौ बसौ है। या रचावट बसावट में अब कितनौ दक्षिण रहौ, कितनौ ब्रज और कितनौ राजस्थानी- ये तौ सुधी शोधकर्त्तान के सोचिवे कौ काम है।

-प्रधानाचार्य

राजकीय सीनियर माध्यमिक विद्यालय, राजसमंद, (राजस्थान)

❑

मेवाड़ माँहि गविवे वारे ब्रज लोकगीत

-श्री दुर्गाशंकर यादव 'मधु'

या मेवाड़ भूमि आड़ावल की गोद में, जहाँ श्रीकृष्ण लीला के तीरथ राय सागर की पाल पै, प्रभु द्वारकाधीश, काँकरोली अरु श्रीनाथजी नाथद्वारा विराजमान हैं, ऐसे ब्रजधाम आँचल में वल्लभ सम्प्रदाय की महर ते, लीला धाम के नित नये उत्सव होयौ करें, जिनकौ भक्तजन दर्शन कर अपनौ जीवन सफल बनावें।

धर्म रक्षार्थ अरु औरंगजेब के आतंक ते बचवे की खातिर उत्तर प्रदेस ब्रजभूमि के गोकुल, मथुरा, वृंदावन आदि गाँवन ते अनेकानेक आयवे वारी जातिन में, कछू रूपन में या मेवाड़ आँचल में यादव समाज के बहुतेक नरनारी हू बसे भये हैं जिनकी ब्रज भाषा की ही खास पहचान है।

आज हू इनके परिवार समाज में प्रभु श्रीकृष्ण के मुखारविंद तैं बोली जावे वारी भाषा ही अमरता लिये भए हैं।

या समाज में व्याह-काज तीज-त्यौहारन में ब्रजभाषा ही सिरमौर है।

व्याह में गणपति वंदना या तरियाँ सौं है-

महाराज गजानन आजइयो
मेरे मंगलाचार करा जइयो। महा.....

यही नहीं पहलें जब तीन-तीन दिना तक बरात बेटीवारे के यहाँ ठहरती तब श्रीकृष्ण लीला कौ प्रसंग रुकमणि मंगल गायकें कलाकारन ते विवाह जैसे मांगलिक काम कूँ सफल मानते-जाकौ उदाहरण, मेरौ आँखन देख्यौ अरु कानन सुन्यों प्रसंग या तरियाँ सौं है-

शिशुपाल की बरात अपने पूरे ठाठ-पाट ते रुकमणि जी ए ब्याहवे आय गई है-पर रुकमणिजी की

लौ तौ प्रभु श्रीकृष्ण वर के ताँई लग रहो है। महलन में विप्र बुलाय कैं पाती लिख रही है-

बोली मंदरी बानी पाती लिख रही रुकमन रानी,
विप्र महलन में बुलाए जो
सिंह की सिकार प्रभु स्यार कैसें लिये जाय,
नहीं आओगे तौ मरूँगी जहर खाय।
देवकी के लाल तुम बिन रुकमन तजत है प्राण,
जसोदा के लाल, तुम बिन रुकमन तजत है प्राण॥

या तरियाँ सौं पूरी लीला गाई जावै और सरस्वती के भात की पातल कलाकारन कूँ दैकैं अपनौ काज सफल करतें।

ब्याह ते पहलें लड़की कौ पिता जब वर ढूँढवे ताईं जावै वो भाव या गीत की पंक्ति ते मिले-

वर ढूंढन वाके बाबुल चाले
मामल पै छाय गई उदासी बरनी कूँ वर कैसे मिलेंगे।
बरनी मेरी गेंदा-चमेली बरनी कूँ वर कैसे मिलेंगे....

याही तरिया सौं, लरिका के ब्याह में बरना गायौ जाय वो या तरियाँ सौं है-

बरना के सासरे ते चिट्ठी जो आई-2
बाँचो-बाँचो गिरधर लाल चिट्ठी सासरे ते आई
बरना के सासरे ते मेंहदी जो आई-2
राचो-राचो गिरधर लाल मेंहदी सासरे ते आई।

बड़यर बानी बरना-बरनी लम्बी टेर ते झोरी दै-दै कै गायवे लगें हैं। देव पूजन में धरती के देवता भोमिया कौ गीत हू गायौ जाय और धूप लगै, जैसें-

भोमिया तो सोवे महलन में वाय कौन जगावै जाय
ऐसौ बलधारी जोधा लाड़लौ जी-2
कै तौ जगावै वाकी गोरी जालम दे
कै जगावै वाकी माय।।
ऐसौ बलधारी....

बरात आयवे के पहलें भैया कौ मान रखवे खातिर बहना मायरो पहरे वाय भात बोलैं। ये भात के गीत या तरियाँ सौं हैं जैसें-

मेरे लछमन बीर भात घनेरौ लइयो
मेरे श्रवन बीर भात घनेरौ लइयो ॥

—

मत बरसै इन्दर लाल मेरौ रतन भतइया भींजै

—

भैया लै-लै रस की झनकार।
राजा की रोरी मेरौ भातइया।
भैया पहलें बड़े ससुर पहराय,
ससुर के संग सास पहराय।। राजा....

समय के फेर ते काऊ कारन भैया ना आ सकै या देर ते पहुँचै तौ ससुराल पक्ष के बहन ते ताना़कसी करें। वा भाव कौ एक गीत जैसें-

बहुअल तेरौ ऐसौ नकीलो बीर,
भात क्यों ना लैकैं आयौ री।
गोरी तेरौ ऐसौ नकीलो बीर।
भात क्यों ना लैकैं आयौरी।
जी! मेरे बाबुल गये परदेस
नायल की सरदा नाँय जी
जी! मेरौ बीरा थानेदार
भावज की चलता नाँय जी ॥ तेरौ.....

ऐसें ही आरती उतारें लड़का या लड़की की शादी में, वाय ब्रजभाषा में झारे झमके बोलें-

झारे झमकेन बरसैगौ मेह
झमकारे ना मांगर बाजने
वाकी भुआ करेंगी, आरती
तुम बैठौ लाड़ लड़ेऊ चौक......

बरात कूँ जिमावे बखत जौनार गाई जाय, जामें लड़की बारे की तरफ सौं विनम्रता कौ भाव जगै, और भारत की गौरव-गाथा की झलकी सुनवे कूँ मिलै जैसें-

राजा जनक दईए जौनार,
साजन आए हमारे द्वार।
गरीबी मेरी हरे-हरे लाचारी मेरी सहाय करियो।

शादी के राग रंग बहुतेरे हैं। रात जागरण में लम्बे-लम्बे गीत व प्रभाती, साँझ सही समय-समय में गाई जाँय। जामें प्राकृतिक वरनन समायौ भयौ है अरु प्रकृति के आनंद के संग ही जीवन कौ आनंद प्रारंभ होय। ऐसें ही बेटी की विदाई करते समय गीत गायौ जाए-जाकौ भाव या तरियाँ सौं है-जा विरियाँ विरह कौ वातावरन है जाए-

बाबुल अब की घड़ी मोय राखिले
मायल अब की घड़ी मोय राखिले।
धीयर नौ रे महीना राखी पेट में
धीयर अब मोपै राखी न जाय
दूल्है असवार बराती ठाड़े खेत में
लाड़ो अब मोपै राखी न जाय।

राम-राम के गीत ते बरात कूँ विदा करौ जाय-जैसें-

साजन राम-राम ते हेत हमें कछु चइए हूँ नाँय
एक पाँव दो पाँव समदी राम राम।

ब्याह में गारी गाई जाय जाकौ गीत या प्रकार सौं है। इन मीठी गारिन कौ कोई बुरौ ना मान सकै-

ये हरि ते गावैं गारी री जनकपुर की नारी,
इन गारिन कौ बुरौ मत मानो, कोई सास कोऊ सारो री
जनकपुर की नारी.......

या तरह सौं ब्याह के औरु गीत गाए जाएँ, जाकी छोटी-मोटी किताब बन सकै। थोड़े में खास-खास बानगी ही लई गई है।

या तरियाँ सौं विवाह इत्यादि के सांस्कृतिक कामन के अलावा ऊ बारह महीना तक के तीज-त्यौहारन के मौके-मौके पै भाव भरे गीत गाए जायें। जैसें दीपावली पूजन पै, गोवर्धन पूजा करते समय पूजा कौ गीत गायौ जाय-

गोर्धन जी के खेत में हो काना,
गाय चरावै नंदलाल।
मेरौ मन हर लियो हो,

कान्हा नटवर नंद किसोर।
काहे की तेरी बाँसुरी हो,
कान्हा काए के मौंचंग।
हरे बाँस की बाँसुरी हो,
राधे रूपे के मौचंग॥
मेरौ मन हर लियो हो कान्हा........

श्रावन महीना आवे के पहलें, नीम की निबौरी पकवे लगें तब गीत गायौ जाय-

पकी नीम की निबौरी
सावन बेगो अइयो रे॥

-

पिया साड़ी छपवाय दै मूँगे मोल की,
जापै अगल-बगल दादुर मोर,
घूँघट पै माना गूजरी॥

-

अंबुआ की डार पकर, गोरीधन क्यूँ खड़ी,
का तेरौ पीयर दूर कहा घर सास लड़ी।
ना मेरौ पीयर दूर ना रे घर सास लड़ी,
मेरे पिया गये परदेस अंदेसे में खड़ी॥

या तरियाँ सौं पावस ऋतु में या हरियाले खुशहाल वातावरण में अनेकानेक गीत गाये जाँय।
नव रात्रि के मौके पै माता जी के गीत गाये जाँय, लाँगुर हूँ गावैं जैसें-

ऊँचे भवन पै मैया बैठी जालम दे।
जिन नैं मेरे कारज सारे हो माय।
दूध कौ दूध मैया पानी कौ पानी,
बोलत अमृत बानी हो माय॥

याही तरह सौं लाँगुर कितेकऊ तरियाँ सौं गायौ जाय-भाव विह्वल हैकैं बइयर बानी नाचती हू जाँय औरु गावैं जैसें-

कैसें आयौ महल जनाने में बताय दै लाँगुरिया
मेरे ससुर की जुड़ै कचहरी

वहीं बुलाय लूँगी तोय
हाथ हथकड़ी पामन वेड़ी
मजा चखाय दूँगी तोय॥ कैसें.....

भगत लोग नवरात्रि में माता जी कौ जागरण करें तब सब देवतान कूँ सुमरें। पीरजो कूँ याद करें जैसें-

वाबा मेरौ मेंड़ी वैद्यौ, मुजरौ लेय,
पीर मेरौ मेंड़ी वैद्यौ, मुजरौ लेय,
कित्ती कोस तेरे दिल्ली आगरे, कित्ती कोस अजमेर।। वावा .....
साठ कोस तेरे दिल्ली आगरे, अस्सी कोस अजमेर॥ वावा......
साम्प्रदाइकता कौ मेल मिलाप ऐसे गीतन ते जाहिर होय।

याही तरियाँ सौं भरपूर मधु मास में फागुन में रसिया गाये जाँय-

राजा चलौ ना विरज में होरी ए,
कै मन घोरी कस्तूरी, कै मन घोरी गुलाल,
नौ मन घोरी कस्तूरी, दस मन भई गुलाल।
मैं रसिया नैं रंग में बोरी रे।। राजा.......

फागुन के मौके पै अनेकानेक श्रृंगार अरु रसिया गाये जाँय जैसें-

आज बिरज में होरी रे रसिया
होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया।
कौन-गाँव के कुँवर कन्हैया।
कौन गाँव राधा गोरी रे रसिया।। आज.....

नवेली काजर सारें, वा काजर कौ गीत, जैसें.....

मेरी अँगिया के बीच, रतन डिबिया रे-2
ढोला के दै तो चटक सुरमा सारूँ रसिया
सारूँ रसिया रे घुटाऊँ रसिया-ढोला.....

याही तरियाँ स्थानीय वातावरण कौ ऊ प्रभाव कितनेन पै परै -

मेरे सलुआ के बीच पीयर घहरो रे
हट मत करियो री ननदिया पीयर तेरौ री
मेरे सागर की पार झाँकी मंदिर की-2
ठंडी आवै ढोला लहर समन्दर की।

याही तरह सौं विरछन के महत्व कौ गीत युवती गावैं जैसें-

वारे रसिया अंगना में, लीमरली लगाय दीज्यो
या लीमरली की शोभा जब लागै
याकी गहरी-गहरी छैंया होय। वारे रसिया......
व्रज भाषा में युवक प्रौढ़ भजन गामें, जैसें-
भंवरा बन के मजा उड़ाय लै,
गेंदा बड़ौ हजारी फूल॥
बड़ौ हजारी फूल, गेंदा

-

करनी कर पार उतर जायगौ, करनीकर......
आकासन तक, सीढ़ी बनी है, सिढ़ियन-सिढ़ियन चढ़ जायगौ, करनीकर..........

भजन

मेरे सतगुरु दइए बताय
दलाली दलूलालन की
हीरा पर्यौ बजार में रे रेतन में लुड़काय,
मूरख ठोकर दै गए रे,कोक चातुर नैं लियौ है उठाय॥ दलाली............

-

वारे जोवना तेरे रहे ते मेरौ मान दगा मत दीज्यो।
तू है तौ गोरी लगै सुहानी, रसवन्ती मनुहार॥ दगा......

प्रभाती कौ गीत-

उठौ हो सुहागल नारी झार डारौ अँगना
झार डारौ अँगना बुहार डारौ अँगना।
पथ के पथिक चालैं पंछी चालैं चुगना॥

या तरियाँ सौं व्रज भाषा लोक संस्कृति के जीवन में समायी भई है और ये ब्रजराज के रास की तरियाँ सौं ही अमरता प्राप्त करै है।

-कांकरोली (राजस्थान)

ख्याल-लोकगीत : एक झलक

-डा. डी.एल. शर्मा

ईसा ते कोई एक हजारवें साल के पाछैं तुर्की-भाषी तुर्कन नैं भारत हिया पंच-नद-प्रदेश पै अपनौ अधिकार स्थापित कर लीनौ। उननें छः सात सौ सालन तक राज करते-करते खुद अपने आपकूँ और संगई अपनी भाषा अरु संस्कृति कूँ भारतीय संस्कृति एवं भाषान के संग या प्रकार सौं मिश्रित कर दीनौ कै कहूँ-कहूँ तौ बिनकौ अलग-अलग पहचानबौ हू कठिन है जाय।

गजनी, गौर और मुसलमान बादशाह अरु भारत में मुगल सासन की नींव डारबे वारे बाबर कौ वंश तुर्की ही हतो। इस्लाम धरम और ईरानी सभ्यता के प्रभाव के कारन उत्तर भारत में मुसलमानी साहित्य की भाषा फारसी है गई और धरम की भाषा अरबी रही। इन दोनूँ भाषान के सब्दन नैं हिन्दी-साहित्य के महल कौ निरमान करबे में बड़ौ ही महत्वपूर्ण काम कीनौ। हमारे साहित्य के संगई वे हमारे जन-जीवन मेंऊ रमि रहे हैं और हिरदे के भावन कूँ व्यक्त करबे के काजैं काम में आवैं। इनई सब्दन में ते अरबी भाषा कौ एक शब्द है-"ख्याल।"

'ख्याल' अनेक रूपन में हमारे सामईं आवै है। ख्याल आवै, जावै, चलै, जनै, बिगड़ै, बनै, उतरै रहै और न जानै कौन-कौन रूपन में हमकूँ दीखै। या ख्याल कौ लगाव भाव, बिचार, मनोवृत्ति, स्मृति आदि ते मानौ जाय जो काऊ मनोवैज्ञानिक की विवेचना कौ विषय होय। इहाँ तौ हम लोकगीतन के रूप में प्रचलित ख्याल की झलक प्रस्तुत करिंगे।

लोकगीतन के विवेचन और न्यारी-न्यारी छाँट करिबे के काजैं बड़े-बड़े अधिकारी विद्वानन नैं अपने श्रम और शक्ति कौ खूब उपयोग कीनौ है। बिनमें डॉ. सत्येन्द्र, श्री रामनरेश त्रिपाठी, डॉ. श्याम परमार, डॉ. कृष्ण बल्देव उपाध्याय, श्री सूर्यकरण पारीक आदि के नाम लिये जा सकैं। इहाँ हम डॉ. सत्येन्द्र की लोकगीतन कौं दई भयी परिभाषा ते पूरी तरियाँ सहमत हैं जाके अनुसार-

"लोकगीत वह गीत है जो लोक मानस की अभिव्यक्ति हो अथवा जिसमें लोकमानसाभास भी हो।"

'ख्याल' लोकगीत कूँ डॉ. सत्येन्द्र नैं ग्रामीण मुक्तक लोकगीतन में रसिया, होरी आदि के संग तथा साधारन लोकगीतन में नागरिक ख्याल, स्वाँग के संग राख्यौ है। हमारौ अभिप्राय यहाँ पै खासतौर ते ग्रामीण मुक्तक लोकगीतन सौं ही हतै, जो राजस्थान के करौली, भरतपुर, हिण्डौन, दौसा आदि ठौरन के ओर-पास के गामन में अरु कहूँ-कहूँ कस्बान तक में गाये जामैं। इनकूँ ख्याल (हेला) के नाम तेऊ पुकारौ जाय।

'ख्याल' की 'तुर्रा' और 'कलंगी' दो न्यारी न्यारी शैली होंय, जिनमें शिव कूँ मानवे वारे ख्यालबाज 'तुर्रा' शैली कूँ और शक्ति कूँ मानवे वारे ख्यालबाज 'कलंगी' शैली कूँ अपनावैं। ये 'ख्याल' करौली आँचर में खासतौर ते प्रचलित हतैं। इनकौ वाद्य 'ढफ' होय। जबकि और स्थानन पै 'ख्यालन' कौ वाद्य 'नगाड़ौ' (व्रजभाषा-भाषी जायै बम्ब कहैं) होय। डॉ. सत्येन्द्र नैं ख्यालन के काजैं वाद्य ढफ, बेला अरु हारमोनियम मानौ है। परि हमारे विवेच्य ख्यालन में मुख्य वाद्य नगाड़ौ है। संभव होय कै वर्गीकरन करिबे के वखत डा. साहब की निगाहन में या आँचर के ये 'ख्याल' नाँय आये होंय कै बिननैं 'ख्यालन' कूँ तुर्रा, कलंगी या काऊ और सीमा तक सीमित कर दीनौं होय। इहाँ हमारौ तुर्रा और कलंगी की और शैलीन ते कोऊ प्रयोजन नाँय।

हमनैं 'ख्याल' के संग 'हेला' शब्द कौ उल्लेख कीनौ। 'हेला' संस्कृत कौ तत्सम शब्द है, जाकौ सम्बन्ध नायक ते मिलन के समै नायिका की विनोद-सूचक क्रीड़ा की मुद्रा ते अथवा हाव-भावन के एक प्रकार ते है। या दृष्टि ते 'ख्याल' लोकगीतन में प्रेम-क्रीड़ा या श्रृंगार कौ प्राधान्य रहनौ चहिए। किन्तु ऐसौ नाँय होय। फिर जो जनता अरबी फारसी के प्रभाव ते संस्कृत कूँ भूलती जाय रही होय वाकूँ अरबी शब्द 'ख्याल' के संग संस्कृत के 'हेला' शब्द कौ जोरिबौ जँचै नाँय। तबई तौ या हेला कौ सम्बन्ध बोलचाल की भाषा में "हल्ला" चल निकसौ। हल्ला कौ अर्थ होय हाँक-पुकार या शोरगुल। साँची पूछौ तौ जिही अरथ इन गीतन की विशेषता कौ द्योतक है। या कारन ते ई इन्हें 'हेला' के 'ख्याल' कौ नाम दीनौं, क्योंकि इनके गायबे में एड़ी चोटीन कौ पसीना एक है जाय और इनकूँ चिल्लाइ कैं ही गायौ जाय। धीरैं-धीरैं याके सरूप मेंऊ परिवर्तन है रह्यौ है।

लोकगीतन में टेक, तोड़, भरती, मोड़ आदि कौ प्रमुख स्थान होय। 'ख्याल' हू इनते ही पूर्णता कूँ प्राप्त करै। 'ख्याल' कौ जनम कब भयौ, याकी परम्परा कब ते चालू भई या विषै में कछू नाँय कहौ जा सकै। हाँ, पिछली कैई सदीन ते इनकूँ जन-मानस कूँ आनन्द-सागर में डुबायबे कौ श्रेय दियौ जा सकै। यदि हम 'ख्याल' शब्द कूँ गौर सौं देखें तौ याकौ प्रचलन मुसलमानन के भारत में आयबे के पाछैं ही भयौ होगौ। ऐसौ अनुमान होय कै 'ख्याल' लोकगीतन कौ विशेष प्रचार बादशाह अकबर के

शासनकाल में मुगलन की भाषा अरु बिनकी संस्कृति के भारतीय जन-मानस में एकमेक है जाने के पाछैं ही भयौ होयगौ।

'ख्याल' कौ खिलाड़ी नगाड़े कौ वादन करतौ भयौ जब अपनी मीठी-मीठी बानी ते वायु मण्डल कूँ गुंजाय रह्यौ होय, ता समय सुनवैयान कौ मन, मोरन की नाँईं नाचिबे लग जाय और येऊ या गवैया के संग-संग अपनौ सुर मिलायबे कूँ उत्कंठित है जाँय। इन गीतन के गायबे ते पहलेंई चारों दिसान कौ वातावरन बड़ौ मनमोहक है जाय। सुनवैया आनन्द सौं झूम उठैं। फिर रह-रह कैं यू वातावरन कबहूँ शान्त है जाय तौ कबहूँ उत्तेजना भरौ बन जाय। ऐसौ लगै मानौ मद की सरिता लहराय रही होय और अपनौ पूरौ प्रभाव दिखाय रही होय।

इन लोकगीतन ते भारत के जन-जन के हिरदे माँहि समाये भये, संगीत, साहित्य और कलान सौं गहरी अरु विशिष्ट अभिरुचि कौ पतौ चलै है। वह बिना पूँछ-सींग के पशु की भाँति साहित्य, कला अरु संगीत ते विहीन नाँय जैसौ कि कछू सयाने और चतुर लोग गामवारेन कूँ समझबे की भूल करौ करैं।

इन लोकगीतन की विषयवस्तु महाभारत, रामायण अरु न्यारी-न्यारी पुरान कथान सौं राई जाय। भारत कौ लोकमानस अति प्राचीन काल तेई इन परम पावन ग्रन्थ-सागरन में ते अपने गीतन की कथनी ढूँढ़तौ भयौ अपने भाव और भाषा के परिधान पहरामतौ रह्यौ है। इन गीतन के माध्यम ते करुण, शृंगार, वीर और शांत आदि अनेक रसन की सृष्टि भई है पर करुण रस की धारा ही अधिक प्रबल रूप ते प्रवाहित भयी है। जे गीत गज, द्रौपदी, सरवन कुमार आदि की आर्त-पुकार ते भरे हैं। याही कारन ते इनकूँ लोकभाषा में *"करुना के गीत"* कह्यौ जाय।

गज-मोक्ष की कथा और गज की करुन पुकार एक अति प्रसिद्ध प्रसंग मानौ जाय। या प्रसंग के बेर-बेर बरनन करिबे ते भक्तन के हिये में सान्त्वना अरु आशा कौ संचार होय अरु अपनौ-उद्धार हैबे की प्रेरना कूँ बड़ौ सहारौ मिलै। गज-मोक्ष कूँ कथबे वारे एक ख्याल की नीचे लिखी पंक्ति देखबे जोग हैं-

ए गज टेरत-टेरत हारी जो सुन म्हारी
पधारो क्यों ना गिरधारी।
तिलभर सूँड़ रही जल ऊपर
टेक-तिल भर सूँड़ ....
संकट पड़ रह्यौ भारी.........

महाभारत युद्ध के बीच ई एक पक्षी टिटहरी (लोकभाषा में टींटोड़ी या भारई) के अन्डान की रक्षा की कथा लोक-गायक या तरियाँ ते गावै-

ए तुम विन कौन तौ हरैगौ रे, विपति बिहारी
टेक-ए विपति विहारी.........
भारई करै पुकार, करुना सुन जो कृष्ण मुरारी
मेरे बच्चान के प्रान, अब तौ आन बचा भगवान
देऔ टीटोड़ी पै ध्यान मैं तौ कह हारी।

पक्षी की करुन पुकार कूँ लोकगीतकार नैं कितेक सरलता, सहृदयता अरु मार्मिकता ते व्यक्त कीनौ है। जा प्रकार सौं लड़ाई में लगे कौरव-पाण्डवन की सेनान के बीच में बिना धनी-धोरी पड़े अन्डान की रक्षा भगवान नैं करी ताकौ स्मरन करकैं लोक कवि कछु औरहू भगतन की कथान कौ बरनन करतौ भयौ तुलसी अरु सूर के सुर में सुर मिलातौ भयौ कहै है-

तुमनें ही तौ उबारे गजराज, जल डूबत अरजी कर दई।
तुमनें द्रौपदी लज्जा राखी, सब जग दै रह्यौ याकी साखी॥
बाहु दुशासन की थाकी, सारी बढ़ी भारी।
वस्त्र रूप धरि लियौ श्री कृष्ण मुरारी॥

अनेक ख्यालन में महाभारत ते पांडवन की जुआ में हारबे की, अज्ञातवास की अरु युद्ध ते जुड़ी अन्य अनेक कथान कूँ ग्रहन कियौ गयौ है। याही प्रकार सौं रामायन ते सरवन कुमार, राम-वन गमन, विश्वामित्र यज्ञ, केवट, शबरी, सुग्रीव, अशोक वाटिका-विध्वंस, अहिल्या कौ उद्धार आदि अनेक प्रसंगन कूँ लियौ गयौ है। विस्तार भय ते बिन सबन की चरचा करिबौ संभव नाँय।

रसराज श्रृंगार कूँ इन लोकगीतन में उचित स्थान मिलौ है। श्रृंगार के दोनूँ पक्ष संयोग अरु वियोगन की झाँकी इन ख्यालन में देखवे के काजैं मिलै। इनमें सीधे-साँचे नायक-नायिकान के संयोग-वियोगन के मन हरबे वारे वरनन के संगई-संग, उषा-अनिरुद्ध, गोपी-कृष्ण, पूरनमल-फूलनदे आदि प्रेम-कथान में संयोग के संग वियोग कौ अधिक निखरौ रूप देखौ जा सकै। ऊषा-अनिरुद्ध की प्रसिद्ध प्रेम-कथा तौ पहलेंई सूफी कविन नैं लिख दई हती। वाही भाव-धारा कूँ ख्यालन में देखकैं ऐसौ लगै कै इन ख्यालवाजन की दृष्टि बड़ी दूर-दूर ते कथानक ढूँढ़ कैं लावै।

श्रृंगार की एक मधुरिम झाँकी वा गीत में दीखै है जामैं एक प्रिया अपने प्रियतम सौं अभिसार करनौ चाहवै पर वाके सोवे की ठौर अरु वाके बीच परिवार के लोग सोय रहे हैं, तौ बू बिचारी विवस है जाय। संगई चंदा कौ प्रकास चारौं दिसान में बिखर रह्यौ है जिहू बड़ी बाधा हतै। कहूँ अँधेरौ हौंतौ तौ अटारी चढ़िकैं चली जाती। जा कारन बू अपनी बा विषम स्थिति कौ बरनन या प्रकार सौं करै है-

ए चन्दा छिप क्यों न जावैरे, कारी सी बदरिया में?

प्रत्युत्तर में सखी कहवै-

चन्दा देखि कैं छिपैगौ री, आलो अर्घ दैलै आँगन में।

यहाँ सखी नैं चन्दा के छिपवे कौ उपाय अर्घ दैबौ यतार्कैं यड़ी बढ़िया युक्ति बनाई कै चन्दा लज्जित हैकैं छिप जायगौ। नायिका कौ सौन्दर्य चन्दा कूँ हीन बना देय ऐसी काव्य-रूढ़ि प्रचलित है, याकौ प्रयोग श्री मैथिलीशरण गुप्त नैं 'पञ्चवटी' काव्य में सीता-सौन्दर्य-वरनन में या प्रकार ते कीनौ है-

'यह मुख देख पांडु सा पड़कर,
गया चन्द्र पश्चिम की ओर।'

याही ख्याल में आगे चलकैं काव्यन में प्रसिद्ध उपमानन के माध्यम ते यौवन-वसन्त ते भरी या नवोढ़ा नायिका के रूप-सौन्दर्य की छटा या प्रकार सौं बिखेरी गई है-

रथ-पथ छदनन पै सवार, करते विहँस भ्रमर गुञ्जार
झुक-झुक परत लता औ डार, तोसौं लिपटन में।

-

नाभी सरस निहार, सप्तऋषि कामातुर तारागन में।

-

चोटी नागिनयान, छटा पै हरपै विद्युत मन में।

'ख्यालन' में वीर-रस कौ परिपाक हू भली-भाँति भयौ है। महाभारत के अनेकन युद्ध-प्रसंग, *आल्हा-ऊदल आदि* कौ कथानक ओज-गुण ते भरौ भयौ है, जामें भाव प्रमुख होय और शब्द गौण है जाँय। जब श्रृंगार पै वीरता की जीत दिखाई जाय तौ गीत औरहू सुन्दर बन जाय। उदाहरन के काजैं एक आपसी संवाद ते युक्त 'ख्याल' दैखौ जा सकै जामें एक वीर की प्रेयसी अपने पति कूँ अपने यौवन-बसंत ते भरी पूरी शरीर-वाटिका कौ लालच दिखायकैं युद्ध में जावे ते रोकवौ चाहै पर वीर पति रण-भूमि जावौ ही सही समझै-

स्त्री-

पहले जोवन जंग मचाऔ, पीछे दरबार में जाऔ।
अब मोहि हँसि कै कंठ लगाऔ, जाऔ परभात में।
जाऔ परभात में.............(टेक)
ऋतु पै पके हैं नींबू, नारंगी, अनार

मत जाऔ! मानों कहन आधी रात है।
अरे हे रे! जोवन लहर-लहर लहराय, लूटौ सेजन पै
सेजन पै........................(टेक)

वीर पुरुष-

अव तौ सुन ले मेरी प्यारी, क्यों करती है मेरी ख्वारी
तू है रजपूतों की नारी, डरपौ रे अब दिल में।
पहले वादशाह को मारूँ, फिर मुगलन कूँ पकरि पछारूँ
पीछे सेज तेरी पग धारूँ, नारी, हे! सुन प्यारी!

ख्यालन में अन्य साहित्यिक प्रवृत्ति हू पाई जाँय। खुसरो अरु कबीर जैसी बूझ पहेली, या कहमुकरी बड़ी चकित करिवे वारी हैं। खेलबे की चौपड़ कूँ लक्ष्य करकैं बाकूँ एक अनौखी नारी कौ स्वरूप प्रदान करकैं एक रहस्य ते भरी अटपटी पहेली सी बनाकैं कही है-

एक नारि हमर्नें जो देखी, मुख से बोलै सीस बिना।
टूँड़ी तीन बनी कन्या के सोलह सीस बिचारी के।
एक-एक मुख में नौ-नौ जिह्वा पुरुष नहीं बा नारी के।

पौराणिक प्रसंगन कूँ लैकैं अनेक रहस्यन भरे गीत लिखे गये हैं, जिन में निरगुन-पन्थीन की जिज्ञासा प्रकट भयी है। आदिशक्ति सृष्टि के सृजन कौ केन्द्र-बिन्दु हतै अरु सगरौ संसार वाही कौ रूप प्रसार हतै। नीचे एक 'ख्याल' में जी बिचार या भाव कूँ प्रकट करै-

अरे हे रे, चतुर नारि कैसी बनि आई।
अरे, धरती कौ यानैं कियौ घाँघरौ, अम्बर फरिया पहर्याई।
शेष नाग कौ नाड़ौ कीन्यौ, इन्दर बिछुआ पहर्याई।
अजी ए, अजी हो ....(टेक)
अरे, महादेव कौ सुरमा सार्यौ ब्रह्मा बैंदी दै लाई
मैं तोय पूछूँ सुघर खिलारी, चतुर नारि कहाँ ते आई?

या प्रकार ते सैकड़ान प्रश्न ख्यालबाजन नें पुरानन में ते लिए जो बिनकी रहस्यमय प्रवृत्ति कूँ बतावैं। ख्यालन में ऋतु-वरनन, नगर वरनन अरु समसामयिक प्रसंगन मैंऊ घनी मात्रा में लोकगीत मिलैं हैं।

'ख्याल' लोकगीतन में लोकभाषा कौ ही प्रयोग भयौ है। इन गीतन में बहुतेरे शब्द और क्रिया ठेठ बोलचाल की भाषा के लीने हैं जैसें-दीजौ, याकौ, चक्काबू (चक्रव्यूह) भयौ, समन्दर, तिरलोकी,

परभात, सेज, जमुना आदि। इनमें तद्भव शब्द जादा हैं। बोलबे की सुविधा के कारण संयुक्त शब्द तोड़-मरोड़ कैं काम में लीने हैं। प्राय: दन्त्य 'स' कौ प्रयोग होय। भाषा में प्रसाद, माधुर्य अर ओज गुण मिलैं।

साहित्य अरु लोकशैली के अनेक छन्द ख्यालन में मिलैं। अनेक अलंकार स्वाभाविक रूप सौं आ गये हैं।

संक्षेप में कहैं तौ ख्यालन कौ ख्याल हम सबन के ख्यालन में रमि जायगौ अर [illegible] कै साहित्यवाटिका कूँ सुरभित करैगौ।

-प्राचार्य
उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान
गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर

□

घर में सुंदर नारि बलम तोहि परनारी भावै

-श्री मोहन स्वरूप भाटिया

ब्रज भूमि में काऊ गाँम या नगर माँहिं हैकें निकसि जाऔ। संयोग सौं कहूँ कुआ पूजन है रह्यौ होय या ब्याह-बरौंद, बैयरवानी लुचाय लुचाय कैं या गीत कूँ गामती मिलिंगी- 'घर में सुन्दर नारि बलम तोहि परनारी भावै'। जि गीत न तौ राधाकृष्ण की लीलान सौं संबंधित है, न जि देवी-देवतान की स्तुति है। या गीत में सम्पन्न हैवे वारे उत्सव के अनुरूप भाव हू नाँय।

या गीत की तौ लीला ही विचित्र है। जि गीत अपने अन्तर माँहिं न जानैं कौन-कौन सी व्यथा-कथान कूँ सँजोए भए है। पतौ नहीं यामैं इतिहास कौ कौन सौ पन्ना बिना पढ़े रह गयौ है। न जानैं कौन से युग कौ स्वर मुखरित हैकैं मौन पड़ौ है? पतौ नहीं या गीत में नारी की कौनसी अन्तर्भावना उमड़-घुमड़ रही है, या मानव प्रकृति कौ एक सदा-सदा कौ सत्य चुनौती दै रह्यौ है? नृतत्व विज्ञान के तांई जहाँ या गीत में कैई अंसन में एक अनुत्तरित सवाल है वहां भावुक और संवेदनशील मनन के ताँई रस की सृष्टि होय और चंचल-चपल उच्छृंखल मनन में उत्तेजना की विचार सृष्टि।

गीत कौ अपनौ साहित्यिक वैभव हू है। प्रतीक सौं प्रारम्भ भयौ है जि गीत। पहली पंक्ति है-

चिड़ी तोय चामरिया भावै।
घर में सुन्दर नारि बलम तोहि परनारी भावै॥

चिरैया कूँ चाँवर अच्छे लगनौ स्वाभाविक है। पर, घर में सुन्दर नारि होय तौ पति कूँ दूसरी स्त्री अच्छी लगनौ का स्वाभाविक है? स्वाभाविक नाँय होय तौऊ जि अस्वाभाविकता जहाँ एक ओर पुरुष वृत्ति की परिचायक है, वहाँ दूसरी ओर यामें युग-युग सौं कुंठित नारी कौ करुण क्रन्दन हू है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन नैं मेरे टेप रिकार्डर पै जि गीत सुनौ तौ एक संग कह उठे, "इस गीत की केवल एक

पंक्ति में उसके रचयिता ने एक बहुत बड़ा सूत्र दे दिया है। एक प्रश्न दे दिया है, उत्तर के लिए, एक समस्या दे दी है, समाधान के लिए। ''

पूरौ गीत याही तरियाँ की दो-दो पंक्तिन में गुँथकैं माला बनतौ चलौ जाय। प्रतीक कौ सहारौ लैकैं गीत की अगली पंक्तीन में मान्सन द्वारा महिलान के प्रति करे जावे वारे अत्याचारन कौ चित्रन और संग में पूरी पुरुष जाति के झूठे और नारि जाति के सच्चे हैवे की बात कितने कम सब्दन में कितनी सरसता सौं कही है-

मटर पै अधर चलै चाकी, मटर पै अधर चलै चाकी।
लोग बड़े बदमास, लुगाई घर-घर की साँची॥

मटर के दानेन पै चक्की चलवे की बात कहकैं यह बात कही है कै जैसें मटर के दाने पिस जाँय ऐसें ही नारी मान्स के अत्याचारन सौं पिसै। लोग बहुत बुरे होंय जब कै लुगाई साँच बोलैं, साँचे आचरन करैं।

पति-पीड़ा सौं पीड़ित नारी की वेदना अगली पंक्तीन में देखौ-

हर्यौ नगीना आरसी सो कोई ऊँगरी में दुख देइ।
ऐसे के पालैं परी सो कोई हँसै न उत्तर देइ॥

जाकौ मतलब है जैसें हरौ नगीना आरसी में जड़ौ भयौ ऊँगरिया कूँ कष्ट दे ऐसैं ही पति पीड़ा देय। ऐसे अरसिक पति के संग निर्वाह कैसें होय जो न हँसै और पूछवे पै न कोऊ उत्तर देइ।

छै छल्ला छै आरसी सो कोई छल्लन भरी परात।
इक छल्ला के कारनैं सो मैंनें छोड़े माई बाप॥

यामें पति के संग जीवन बितावे की बात कही है। पीहर में तौ छै छल्ला, छै आरसी और छल्लन की परात भरी भई यानी आभूषनन कौ ढेर हौ पर पति के एक छल्ला के ताँई पति के संग दाम्पत्य जीवन बितावे कूँ माई-बाप तक छोड़ दिए।

या तरियाँ गीत की इन दो पंक्तीन में पति के प्रति अगाध प्रेम दरसायौ है। पति कूँ प्रेम करवे वारी, सर्वस्व न्यौछावर करवे वारी जब अपने पति कूँ पराई स्त्री के आकर्षन में बँधौ देखै तौ वाकौ फरियाद उठनौ सहज है, स्वाभाविक है। वह यह सवाल पूछ उठै कै घर में सुन्दर नारि हौते भए हू हे पति, तोय पराई नारि क्यों मन भावै? यह सवाल कल हू विना उत्तर रह्यौ। आज हू विना उत्तर कौ है और मानव मन की अन्तर व्यथा कौ सूक्ष्मतम विश्लेषण करबे वारे अन्वेषकन के सामहैं न जानैं कब तक यह प्रश्न-

चिह्न बनकैं बिना उत्तर खड़ौ रहैगौ। जो हो , सो हो, पर आजहू ब्रज के गिरारेन में, घरन में ब्रज बनितान कौ जि चुनौती भरौ स्वर गूंज रह्यौ है-

घर में सुन्दर नारि बलम तोहि परनारी भावै।

-ज्ञानदीप
डेम्पियर नगर, मथुरा।

❑

ब्रज कौ झूलना साहित्य

-श्री गोपाल प्रसाद मुद्गल

बरसत है रस माधुरी, ब्रज अंचल के मांहिं।
याही सौं या धरा पै, ब्रज सौ दूसर नांहिं।
ब्रज सौ दूसर नांहिं, गीत गावत नर नारी।
लोकगीत मन हरत, लगत मिसरी सी गारी।
सुनि रसियन की तान, सबन के तन-मन हरसत।
साज बाज बिन अजहु, झूलना में रस बरसत॥

झूलना में रस बरसै। झूलना मीठौ लगै। बिना साज बाज के हू झूलना मन हरले। झूलना सुनिवे कूँ लोग खिंचे चले आवैं। मन ते आवैं। झूलनान के बीच रात-रात रहैं। झूलनान में एकम एक है जावैं।

झूलना गायक बड़े उतार-चढ़ाव ते गावैं। गामते-गामते वे मीठे-मीठे झोटा से दैं। श्रोतानैं अपनी मीठी-मीठी गायकी सौं झोटा दै दैकें झुला से दैं। याही सौं या छन्द कौ नाम झूलना परौ है।

श्री रामनारायण अग्रवाल कौ माननौ है कै यह छन्द पिंगल के त्रोटक छन्द के निकट है। पर, झूलना के अन्त्यानुप्रास की छटा में जो सुन्दरता है बु त्रोटक छन्द में नाँय मिलै। या गायकी के प्रारम्भ में एजी और अन्त में जी हू लगायकैं गावैं।

झूलना गायकी यों तौ अन्तरप्रान्तीय विधा रही है फिरऊ ब्रजप्रदेश में याकौ तूती सबके सिर पै चढ़कैं बोली है। झूलना की भाषा, अलंकार और कलात्मक गुम्फन सदा गौरव सौं मंडित रह्यौ है। याही सौं याकूँ साहित्यिक विधा कौ गौरव मिलौ है।

झूलना छंद के कई रंगत और रूप होंय। याके प्रत्येक चरण में अन्त्यानुप्रास एकई पंक्ति में जोड़े

जाइवे सौं या छन्द कौ सौन्दर्य औरहू बढ़ जाय।

झूलनाकारन कौ कहनौ है कै 250 बरस पहलैं या गायकी की बड़ी धूम ही। सन् 1940 तक यह गायकी चलती रही। पहलैं झूलनान के अखाड़े हौंते। ब्रज के गाँव-गाँव में झूलना गाए जाते। खुर्जा, हाथरस, कामां, डीग, भरतपुर, मथुरा, कोसी, होडल, बंचारी, आगरा, सौंख तौ ता समैं झूलनान के गढ़ है। इन ठौरन पै झूलना दंगल वाही तरियाँ हौंते जैसें रसिया और भजन-जिकड़ीन के दंगल हौंय।

या छन्द के साहित्य नैं इतनी लोकप्रियता पाई कै हाथरस के स्वांग कलाकार राय मुरलीधर जी नैं या छन्द कौ प्रयोग अपने स्वाँगन में बहुतायत सौं कियौ। वा समै बहरतवील कौ पतौ नाहौ। बहरतवील के आते ही स्वांगन में ते झूलना छन्दन नैं अपने हाथ-पाँव समेट लिए।

स्वांगन में झूलना छन्द कौ प्रयोग उस्ताद इन्दरमल जी नैं कियौ। इन्दरमल पं. नथाराम गौड़ के दादाभाई गुरु हे। इन्दरमलजी कूँ पं. नत्थाराम गौड़ के गुरु चिरंजीलाल लैकैं आए। यहाँ विन्नै झूलनान के स्वांग रचे। उस्ताद इन्दरमलजी पढ़े लिखे नाँए। वे बोलते जाते और विनके चेला उतारते जाते। इन्दरमलजी हाथरस ज्यादा दिन नहीं रहे। वे चिरंजीलाल कूँ आसीस दैकैं चले गए। झूलना लेखन कौ सुर मंदौ परि गयौ। या तरियाँ या सहित्य कौ सृजन कम है गयौ।

हाँ, स्वांगन में झूलनान कौ प्रयोग दो तरियाँ सौं लाभदायक रहौ। एक तौ कथानकन की सोभा बढ़ी। दूसरे कथानकन कूँ आगैं बढ़वे की एक कलात्मक विधा हाथ लगी। इन झूलनान में ब्रज कौ प्राकृतिक सौन्दर्य, सामाजिक रीति-रिवाज, आमोद-प्रमोद, रहन-सहन, पौराणिक आख्यान और ब्रज रज सौं लैकैं स्यामास्याम की ललित लीलान कौ समावेस प्रमुख रूप सौं रहौ। इनमें जैसौ कलात्मक सरूप दिखाई दे वैसौ अन्यत्र दुर्लभ है। दो चार दिना पहलैं भाई भगवानदास बजाज झूलना गायक कामां वारेन सौं बातचीत में एक झूलना हाथ लगौ। झूलना में अनुप्रास की छटा और कलात्मकता देखौ-

आलू, अलीचा, अंजीर, अदरक, अखरोट, अरबी अमरूद खाओ।
आड़ू, आमरे, अनार अव्वल, अंगूर अच्छे अकल लड़ाओ।
आमी-आमी की अलग-अलग दर, आला आचारी अमरस बनाओ।
अगर अदा अपनी आप राखो, अठंग ऐते अमल में लाओ।

या झूलना में 'अठंग' शब्द अमल में लावे की कही है। यानी हर पंक्ति में आठ बेर 'अ' वर्ण के आ जाइवे की बात बताई है। झूलना लिखिवे के ताँई एक पद्धति, रीति और रचना-प्रक्रिया के दर्सन कराए हैं।

कामाँ में स्व. गोपाल प्रसाद पुजारी झूलनान के बारे में बतायौ करै हे कै सन् 1940 के आसपास तक झूलनान के दंगल हौंते रहे पर अब तौ खतम से है गए हैं। विन्नैं पुराने दिनान के किस्सा सुनाए।

कबहू-कबहू बरातन में जनवासे में ही झूलना शुरू है जाते। दंगल रुप जाते। हल्ला मच जातौ। दूर-दूर ते झूलनाकार बस्तान नैं लैकें आ जमते। जब तक दंगल नहीं सुरझतौ तब तानूं बरात बिदा नहीं हौंती।

झूलना साहित्य के रचयिता स्व. श्री पन्नीलाल जी के सहित्य कौ अवलोकन करवे कौ औसर मिल्यौ। पहलें दंगलन में अपनौ परिचय दैते। बिनके झूलना में बिनकौ परिचै देखौ-

बरसाने नंद गाँव के निकट कामयन धाम।
तहाँ दास की झोंपड़ी, मुरसद सालगराम।
मुरसद सालगराम, के सागिर्द हैं लड़ाके सभी,
सामलिया सुखनंदन करते कविताई का काम हैं।
लाला चिरंजीलालजी दिमाग ते निकारें चाल,
बिनकी रंगत सुनकें, नुगरे चक्कर खांय तमाम हैं।
जुगल गुपाल पन्नालाल हैं इष्ट मित्र,
हरफन में हुरियार, नुकता चीनी में सरनाम हैं।
द्विज परसादी लाल जय गोपाल राधेश्याम कहैं,
जनता को जय हिन्द, सब गुनियों को राम-राम है।

बड़ी विनम्रता सौं बात शुरू हौंती पर ठन जाती तौ यहाँ तक कह बैठते-

मिसरी कौ ढेला हूँ नहीं, पी जाय जिसको घोल जी।
जितने खिलाड़ी हैं जमा, सब खेल लो दिल खोल जी।

झूलना साहित्य में राधाकृष्ण विषयक झूलनान की अधिकता दिखाई परै। नंद के आंगन में आनंद की झाँकी देखौ-

नंदराय के द्वार, बंदी बोलें जै-जैकार,
ताजा मालन के भंडार पूरी भंडारी कूँ मालकी.
गोपी लाईं चाव, नाचें दिखा हाव अरु भाव,
बाजे बजत अनूप घोर संखन की अरु घड़ियाल की।
कंसा कूँ ना चैन, चिंता रहवै है दिन रैन,
लीनी पूतना बुलाय, दहसत गालिब काल कराल की।
पन्नी है परसंद, भजौ सभी जै गोविंद
भए नंद कै आनंद, बोलौ जै कन्हैया लाल की।।

स्व. श्री पन्नीलाल कौ 'राधाबाग' एक अद्भुत रचना है जामें स्यामसुन्दर मालिन कौ रूप धरकें

वरसाने राधाबाग जामैं। मालिन के रूप में स्यामसुन्दर कौ सिंगार देखौ-

शैर-

ब्रज में नित नई लीला करैं भगवान मुरारी हैं
दंत धावन धरौ मिस्सी, सुगन्धी केस डारी है।
उवटना मलकैं तन धोया, किए असनान पुन उज्ज्वल।
आइना सामने धरकर, माँग मोहन संवारी है।

झूलना-

मोहन रचिपचि माँग सँवारी, चोटी गुह लई पटिया पारी,
घिस मलियागिर अंग लगायौ, फरजी तिल कपोल दरसायौ।
चरनन में दै आड़ महावर, म्हेंदी रचा लई दोऊ कर,
जवाहरात के डिब्बा खोले, कंचन जेवर जड़े अमोले।
धारन सीसफूल कर लीनौ, हिंगुर माँग मध्य भर लीनौ,
चीतौ फगुआ चमक सितारे, चन्द्रानन में ललित मरोर है।
श्रवन झूमका काँटे बारी, बिन्दी भाल लाल उनहारी,
नासा में बेसर झलकारी, झोखा लै रह्यौ कीर हजारी।
गल वैंजंती माल छिपाऊ, हँसुली हार हमेल जड़ाऊ,
चम्पकली जौमाला पहरी, हिरदै भूषण की छवि गहरी।
टिस्सी, तिमनी, सीतारामी, झुक हियरा कूँ देय सलामी,
दोउ दृग अंजन रेख सिंगारे, चितवत ही चित लेते चोर हैं।
बनमाली डाली लई, बनमाली की नारि।
चाली राधा बाग को, फूल लैन सरकार।।

झूलना साहित्य सिंगार तकई सीमित नाँय रह्यौ। स्यामास्याम की ही चरचा नाएं। यामें आधुनिक समस्यान कौ हू जिकर है। वर्गभेद की झाँकी देखौ-

किसी को कुछ भी न दे सुनाई, किसी को टैलीफून मिलै।
किसी को मिलती नहीं फितूरी, किसी को रेशम ऊन मिलै।
किसी को मिलती हलुआ पूरी, किसी को माँगा चून मिलै।
किसी को मिलता कलंक टीका, किसी को यशी प्रसून मिलै।

ब्रज के उत्सव, पर्व, त्यौहारन कौ बरनन झूलनान में खूब मिलैं। जीवन के सुख-दुख, हर्ष-विषाद

और आकर्षण के ताने-बाने झूलनान में भरे परे हैं। भाव पक्ष के संग कला पक्ष कौ हू संयोग अद्भुत है। रचना की मधुराई अरु अलंकारन की छटा कौ रूप.देखौ,नगन कौ एक रूप निहारौ-

कल कल कलक कलक कह कह, कलश कनक कर धरत अचक।
कट कर कटक कसक कस कस कर, कटक कटक कर करत लचक।

या तरियाँ झूलना साहित्य में भाव पक्ष और कला पक्ष कौ सुन्दर समन्वय दिखाई दे। झूलना के ऐसे महत्वपूर्ण साहित्य कौ पुस्तक रूपन में प्रकाशन कम है पायौ है। यही सोच कौ विषय है। जो झूलना साहित्य जन-जन के हृदय कौ कंठहार हौ, अब अंतिम सांस गिन रह्यौ है। जरूरत है ऐसे अमोल झूलना साहित्य के संरक्षण की।

-पांडेय मौहल्ला, डीग
(भरतपुर)

❑

रसियान की सृष्टि और लोककथा दृष्टि

- श्री गोपाल प्रसाद मुद्‌गल

रसिया होरी कौ प्रमुख लोकगीत है। डा. धीरेन्द्र वर्मा नैं या लोकगीत के बारे में लिखौ है, ''संगीतज्ञों की धारणा के अनुसार रसिया ध्रुपद घराने की चीज है। रसिया ब्रज के लोकगीतों में अपने वैशिष्ट्य के कारण प्रसिद्ध और प्रिय है, जो सभी अवसरों पर अपना प्रभाव डालने की क्षमता रखता है। रसिया को ध्रुपद शैली का लोक प्रचलित, शास्त्रीय संस्कार कहा जा सकता है।''

हिन्दुस्तानी संगीत जो देव ब्रजभाषा और स्वामी हरिदास सौं प्राप्त भयौ, बाकौ छेत्र बहुत कछू रसिया के लोक और शास्त्रीय दोनों स्वरूपन कौ है। आइने-अकबरी में जा ध्रुपद कौ बरनन है वह स्यात रसिया सौं सम्बन्धित हो।

रसिया गायिकी कौ प्रचलन कब भयौ? याके बारे में पक्कौ पतौ नाएँ। विद्वानन कौ विचार है कै 16 वीं सदी में भक्ति संगीत याकी पृष्ठ भूमि रही है। मंदिरन में भक्तिपरक पद गाए जावै हे। बिन भावन कूँ रसिया गायिकी में लै लियौ गयौ। श्री रामनारायण अग्रवाल कौ कहनौ है कै आजहु नंदगांव और बरसाने में अष्टछाप के कविन के पद रसिया के रूप में गाए जावैं हैं। हमारे लोकगायकन नैं बिन पदन की परम्परागत धुनन कूँ बदल कैं रसिया की धुनन में ढाल लियौ। उदाहरण कूँ सूरदास कौ एक पद है, '' मैया मोरी मैं नहीं माखन खायौ।'' या पद कूँ हमारे लोकगायकन नैं रसिया की धुन में ढाल कैं यों गायौ है- '' अरी मैं नहीं माखन खायौ, सो मैया मोरी मैं नहीं माखन खायौ।''

श्री रामनारायण के कथनानुसार भक्त कविन के पद लोक धुनन में ढले, और रसिया गायिकी प्रारम्भ भई। इनसौं पहलैं कोऊ रसिया नाँय मिलै। बिन्नैं बतायौ है कै रसिया कौ उदय भक्त कविन की बानी सौं 16वीं सदी के पूर्वार्ध्द में भयौ। गोस्वामी विट्ठलनाथजी नैं सम्वत 1602 में अष्टछाप की स्थापना करी। अष्टछाप की मूल गायिकी ध्रुपद की परम्परा सौं उद्‌भूत ही। वाही कूँ लोकधुन सौं जोड़ कैं नाद

लोक कथान कूँ रसियान में प्रमुख स्थान मिलौ। प्रारम्भ में रसियान में राधाकृष्ण की लीलान कूँ समाहित करौ गयौ। कृष्ण के जन्म सौं ही बाल लीला प्रारम्भ भई।" श्री कृष्ण चन्द्र भगवान, लियौ जनम जेल दरम्यान, सो गए पहरिन वारे ज्वान, तारे टूट गए" जैसे रसिया कथा कूँ लैकैं चल पड़े। श्री कृष्ण की माटी लीला कौ रसिया खूब प्रसिद्ध है-

जसोदा सुन माई, तेरे लाला नैं ब्रजरज खाई
जसोदा सुन माई॥
इतनी सी माटी कौ डेलौ,
तुरत स्याम नैं मुख में मेलौ,
जानैं गटक-गटक गटकाई, जसोदा सुन माई........
चौं लाला तैनैं खाई माटी,
माखन कूँ कबहूँ नाँय नाटी,
जसुदा धमकावै लै सौंटी,
याहै नैंक सरम नाँय आई, जसोदा सुन माई........

याकौ उत्तर जो स्याम नैं दियौ, बाकूँ रसिया में यों पिरोयौ गयौ है-

मारै मत मइया वचन भरवाय लै
सौंह गंगा की खवाय लै, चाहै जमुना की खवाय लै।

या तरियाँ सवाल-जवाबन में रसिया में कथानक आगैं बढ़ै। याही तरियाँ गौचारन लीला, नागनाथ लीला, दान लीला, माखन लीला, चीरहरन लीला, बंसी लीला, आरसी लीला, चन्द्रावलि लीला, सुनारी लीला, रंगरेजन लीला, मालिन लीला, जोगिन लीला आदि के कथानक रसियान नें भरे पड़े हैं। लिलहारी लीला तौ आजहू सबन के होठन पै नाचै-

श्री राधा सौं मिलन कौ, कीयौ कृष्ण विचार।
बंसी मुकुट छिपाय कैं, धरौ रूप लिलहार॥
बन गए नन्दलाल लिलहार, लीला गुदवाय लेऔ प्यारी।
लहँगा पहर ओढ़ि सिर सारी,
अंगिया पहरी जापै जड़ी किनारी,
सीस पै सीस फूल बैना, लगाय लियौ काजर दोऊ नैना
पहर लियौ नख-सिख सौं गहना,
नख-सिख गहनौं पहर कैं, कर सोलह सिंगार।
बलिहारी नँद नंद की, बन गए नर सौं नारि॥

बन गए नर सौं नारि, कि झोली कंधा पै डारी। बन गए..........
धरी कन्था झोली गठरी।
गैल बरसाने की पकरी।
महल वृषभान चले आए, नहीं पहचान कोऊ पाए,
स्याम मन में अति हरसाए
महल श्री वृषभान के, दई आवाज लगाय।
नंदगाम लिलहार मैं, कोऊ लीला लेहु गुदाय॥
लीला लेहु गुदाय, अरी मैं हूँ गोदन हारी॥ बन गए...............
राधिका सुन लिलहारिन बैन।
लगी ललिता सौं ऐसे कहन।
बुलाऔ लिलहारिन कूँ जाय, यापै लीला लऊँ गुदवाय।
बिसाखा लाई तुरत बुलाय,
लिलहारिन कौ रूप लख, श्री वृषभानु कुमारि।
हँस हँस कैं कहवे लगी, सु लई पास बैठारि।
लीला मो तन गोद सुघड़, कैसी गोदन हारी॥ बन गए...........
सीस पै लिख दै श्री गिरधारी जी।
माथे पै लिख मदन मुरारी जी।
दृगन में लिख दै दीनदयाल, नासिका पै लिख दै नंदलाल।
कपोलन पै लिख कृष्ण गुपाल,
श्रवनन पै लिख साँवरौ, अधरन आनंद कंद।
ठोड़ी पै ठाकुर लिखौ, गल में गोकुल चंद॥
छाती पै लिख छैल, दोऊ बाहन पै लिखौ बिहारी॥ बन गए..........
हाथन पै हलधरजू कौ भैया जी।.
अंगुरिन पै आनंद करैया जी
पेट पै लिख दै परमानंद, नाभि पै लिख दै तू नदनंद,
जाँघ पै लिख दै जै गोविंद,
घोंटून पै घनस्याम लिख, पिंडरिन पै प्रतिपाल।
चरनन में चितचोर लिखौ जगपति जै गोपाल।
रोम-रोम में लिखौ रमापति, राधा बनवारी॥ ....बन गए
लीला गोद प्रेम गस आयौजी।

तन मन कौ सब होस भुलायौजी।
खबर झोली झन्डा की नाँय, धरन पै चरन नांय ठहरांय
सखी सब देखत ही रह जाँय।
देखत सखी सब रह गईं, झगड़ौ निरख के फन्द कौ।
वीसौं विसै दीखै सखी, छलिया ये ढोटा नंद कौ।
अँगिया में वंसी छिप रही, राधे नैं लई निहार कैं।
हे प्यारे, हे प्यारी कही भेटे हैं भुजा पसार कैं।
'घासीराम' जुगल जोड़ी पै, वार-वार वलिहारी ।
वन गए नंदलाल लिलहार, लीला गुदवा लेऔ प्यारी॥

श्री कृष्ण की लिलहारी लीला कौ कथानक रसिया के विविध छन्दन में जा खूवी के संग गुँथौ है, वू लोककथा कौ एक उदाहरन है। याही तरियाँ अनेक लीलान के कथानक रसियान में भरे भए हैं। यहाँ कछु रसियान के वोल दिये जा रहे हैं। दान लीला रसिया या तरियाँ है-

इकली घेरी वन में आय स्याम तैनैं कैसी ठानी रे।
स्याम मोहि वृन्दावन जानौं, लौटि कैं वरसाने आनौ
मेरी करजोरे की मानौं
जौ कहुँ होय अवार, लड़ै घर नंद जिठानी रे॥ इकली.........
दान दधि कौ तू दैजा मोय, जवई ग्वालिन जावन दऊँ तोय।
नहीं तकरार वहुत सी होय,
जो तू नाहीं करै, होय तेरी ऐंचातानी रे॥ इकली........

ग्वालिन नैं मुकतेरी मना करी। कंस राजा के पास पुकार करवे की धौंस दिखाई । कृष्ण नैं कंस कौ सर्वनाश करवे कौ खुलौ ऐलान करौ। कन्हैया नैं अपने ग्वाल वाल वुला लिए। ग्वालिन लौट कैं खिसियानी सी चली गई। रसिया में भरे भए भावन कूँ सव समझैं। कंस कूँ कमजोर करवे के काजैं सिगरी घेरावंदी ही।

एक और कथानक चीर हरन लीला कौ है। कछु सखी नगन हैकैं जमुना में नहा रहीं। विनकूँ समझायवे के ताँई कन्हैया नैं कहा कियौ, एक रसिया में देखौ-

कोई लै गयौ चीर हमारे, जुलम कर डारे।
अपने-अपने वस्त्र खोलि कैं पारन पै हम धर दीने
सव गोपिन नें जुर मिलिकैं, धँस जमुना में गोता लीने
उछरत चीर लखे नहीं गोपी जमुना तीर किनारे। जुलम.....
देखत चारों ओर गोपिका, कोई नजर नहीं आयौ।

होकर नगिन खड़ीं जमुना में, निज मन सोच बहुत छायौ।
नहिं कोऊ मनुज नहीं कोऊ बंदर, कौनें बादर फारे।। जुलम.......

कथानक या तरियाँ प्रारम्भ होय। श्री कृष्ण कदंब पै बैठे दिखाई दें। विन्नैं बंसी बजाई। उराहने-तुराहने भए। कृष्ण नैं चीर नहीं दिए। गोपीन नैं कंस सौं सिकायत करबे की कही। कृष्ण नैं कही- कंस जैसे मैंनें कितेक संहार दिए। सिगरी गोपीन कूँ पाठ पढ़ा दियौ कै नगन ह्वैकैं स्नान करिबौ ठीक नाँए।

याही तरियाँ कृष्ण विसयक कथानक रसियान माँहि पिरोए भए हैं। कृष्ण विसयक रसियान की तरियाँ राम विसयक रसियाऊ गाए जाएँ। बानगी के रूप में एक उदाहरन देखौ-

बताय दै लक्ष्मण भैया, तेरैं कहाँ लग्यौ है तीर।
मेघनाद नैं तीर चलायौ, स्रो तेरे तन तीर समायौ,
तनमन कौ सब होस गँवायौ, व्याकुल भयौ सरीर॥ बताय......
अवधपुरी में कैसैं जाऊँ, पूछै माता कहा बताऊँ,
रोय-रोय वन में रुदन मचाऊँ, बहै दृगन ते नीर॥ बताय........
एक तौ संग ते सीता छूटी, तो विन भ्रात भुजा मेरी टूटी,
नाँय बगदे हनुमत लै बूँटी, का विधि धारूँ धीर॥ बताय......
इतने में श्री हनुमत आए, द्रोणागिरि संजीवन लाए,
लखनलाल के प्राण बचाए, भेटे दोनों वीर॥ बताय......
मूर्छा ते जब लक्ष्मण जागे, जै जै कार करन सुर लागे,
'घासीराम' सकल दुख भागे, सज गए सब रणधीर॥ बताय......

रसियान माँहि औरहु कथा लिखी भई हैं। कृष्ण सुदामा मित्रता, सत्य हरिश्चन्द्र, मोरध्वज लीला आदि। मोरध्वज लीला उदाहरन के रूप में दई जाय रही है-

अर्जुन और कृष्ण मुरारी, तपसी कौ भेष लियौ धारी।
दो संत बने हैं आला, सिर जटा गले में माला।
कमंडल हाथ बगल मृगछाला, संग में केहर मतवाला,
झड़-गए भूप के धाम, कह्यौ सियराम, भूख हमैं लागी।
हम सुने मोरध्वज भूप, भक्त बड़भागी
दरवारी ते कही, खबर राजा ते करौ हमारी।। तपसी......
सुन टेर चलौ दरवान, बोल्यौ राजा ते बानी।
दो सन्त खड़े निरवानी, संग में केहर अगवानी।
झड़-चलौ आप सरकार छोड़ दरबार, याद तुम्हें करते।

तुम चलकैं दर्सन करौ, संत हैं रमते।

सुनिकैं आतुर चल्यौ, आप राजा नैं अरज गुजारी। तपसी.....

सुन भूप हृदय हरसायौ, महलन ते दौड़ौ आयौ

आसन जल्दी विछवायौ, फिर ऐसे वचन सुनायौ।

झड़-जो कछु होय दरकार, करूँ सत्कार, आप फरमाऔ।

जो इच्छा के अनुसार, कहौ सोइ पाऔ।

केहर कूँ भोजन मँगवाऊँ, इच्छा होय तिहारी॥ तपसी......

क्षुधा नैं हमें सतायौ, दिन तीन अन्न नहीं खायौ

केहर नैं अति दुख पायौ, विन आहार ये घवरायौ

झड़-चीरौ रतनकुमार, करौ दो फार, सिंह जव पावै।

रानी ते पूछौ जाय, क्यों देर लगावै।

हम हैं रमते राम, हमें जानौ है वहुत अगारी। तपसी......

सुन भूप महल में आए, रानी कूँ वचन सुनाए।

दो संत द्वार पै आए, तिन ऐसे वचन सुनाए।

झड़-चीरौ राजकुमार, करौ दो फार, सिंह जव पावै।

सुत चीरत में इक आँसू, गिरन न पावै।

धर्म तिहारे साथ, सोच तुम मन में लेऔ विचारी। तपसी......

अपनौ मन करकैं गाढ़ौ, कियौ वीच कुँवर कूँ ठाड़ौ।

रानी राजा लियौ आरौ, सुत कर दियौ न्यारौ-न्यारौ।

झड़-चीरौ राजकुमार, करीं दो फार, हियौ जव फाटौ।

रानी इक आँसू गिरौ, डटौ नहीं डाटौ।

वैठे आसन मार, संत रानी की दसा निहारी।। तपसी......

सुन राजा वचन हमारौ, इक फार सिंह कूँ डारौ।

दूजे कूँ आप सम्हारौ, ढक देऔ रहै न उघारौ।

झड़-धरौ महल में जाय, कहूँ समझाय, वात सुन लीजै।

अव पत्तर लाऔ पाँच कै पंगत कीजै।

घर ठाकुर जी कौ भोग; फेर भोजन की करौ तैयारी।। तपसी......

मेरे सन्देह यही है, राजा कर जोर कही है।

स्वामी कहौ सही-सही है, पाँचई पत्तर किसकी है?

झड़-कुँवर महल रहयौ सोय, नींद में होय कै हेला मारौ।

पाँचई पत्तर पै आवै कुँवर तिहारौ।

भूप दई आवाज महल ते आयौ कुँवर हजारी॥ तपसी......

धन-धन प्रभुभाग हमारे, महलन में आप पधारे।

भए लोचन सफल हमारे, नारायन नैन निहारे।

झड़-गोवरधन शुभ धाम, 'घासीराम' नाम है मेरौ।

तुम जानौ बड़ौ बजार, मुहल्ला खेरौ।

रखी भूप की लाज, कि भैया राधेश्याम बिहारी। तपसी........

या ढब सौं समाज में प्रचलित पौराणिक, धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि कथानकन के रसिया प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। रसिया छंद की सीमा तौ हत नाँए। पर हर रसिया की कथा जीवन के एक प्रसंग सौं जुड़ी होय। अब तक काऊ खंड काव्य या प्रबन्ध काव्य की कथा रसिया कौ विसै नाँय रह्यौ। हम यों हू कह सकैं कै रसिया लोकगीत में काऊ खंडकाव्य या प्रबन्ध काव्य नाँय लिखौ गयौ। याहो सौं रसिया संग्रह मुक्तक काव्य की श्रेणी में आवै है। हर रसिया अपने में स्वतंत्र है। काऊ रसिया कूँ काहू क्रम में रख सकैं। हाँ कालक्रम में घटी घटनान के आधार पै रचे भए रसियान कौ क्रम रखौ जाय सकै।

अंत में रसिया छन्द की महिमा कौ बरनन प्रस्तुत करौ जाय रह्यौ है। श्री छेदालाल 'छेद' नैं रसिया की महिमा यों गाई है-

तान जाकी मस्तानी, रसिया रसिकन कौ प्रान।

बजै-कहरवा जब ढोलक पै, सारंगी सरसाइ।

मौंड गमक वंसी कौ सुर मिलि, आर-पार है जाइ।। तान......

मीठी-मीठी धुनि सुनि-सुनि कैं, हिय में उठत हिलोर।

लगै ध्यान हरि के चरनन में, है जाइ भाव विभोर॥ तान.......

बरबस पाँय उठैं नाचन कूँ, मनुआ मानैं नाँय।

कूदि-कूदि कैं भरैं उछट्टा, दुल्लर है-है जाँय॥ तान......

और गीत सब गीतरी है रसिया गीत महान।

जैसे गोला तोप कौ होइ, करत जात मैदान।

जो कहुँ रसिया गीत कौ रे, गायक रसिया होइ।

श्रोता हू रसिया मिलै, तौ जाइ भाव में भोइ।। तान.........

ब्रह्मानंद सहोदर रस कौ, वेदन जानैं भेद।

धन्नि वुही है जो जा रस कूँ छकि-छकि पीयें 'छेद'।।

काऊ के सजि गये-ढोलक मजीरा काऊ की बजि रही झाँझ
मेरे सँकर कौ बाजै डमरू सब पंचन के माँझ
ए भामरिया मेरी........
काऊ के सजि रहे रथा-मंझोली काऊ की सजीए तुरंग
मेरे बलम कौ सजौ नादिया उड़ै पवन के संग
ए भामरिया मेरी........
ओर पास जांमें आक धतूरा बीच में बोइ दई भंग
सब कोई पीवै सुलफा गांजा हम पीवें दोऊ भंग
ए भामरिया मेरी...

—

छोरा की लगुन चढ़वे कौ गीत

रघुनन्दन फूले न समांइ, लगुन आई हरे-हरे लगुन, आई मेरे अँगना
बाबा सजि गए, ताऊ सजि गए, सजि गई सबरी बरात
रघुनन्दन तौ ऐसे सजि गए, जैसे सिरी भगवान
लगुन आई हरे हरे.......
चाचा सजि गए, बाबुल सजि गए, सजि गई सबरी बरात
रघुनन्दन तौ ऐसे सजि गए, जैसे सिरी भगवान
लमुन आई हरे हरे........
भैया सजि गए, जीजा सजि गए, सजि गई सबरी बरात
रघुनन्दन तौ ऐसे सजि गए जैसे सिरी भगवान
लगुन आई हरे हरे........
फूफा सजि गए, मौसा सजि गए, सजि गई सबरी बरात
रघुनन्दन तौ ऐसे सजि गए जैसे सिरी भगवान
लगुन आई हरे हरे........

—

भात पहरते समय कौ गीत

पहली सेली तौ चमकै बीर की रे
आये सासुलिया के बीर। मोतिन जड़ि लइयौ रे मैया चूँदरी रे

खोलूँ तौ हीरा मोती झरि परैं रे
ओढ़ति लागै जग जोति। मोतिन जड़ि लइयौ रे मैया चूँदरी रे
दूजी सेली तौ चमकै बीर की रे
आये जिठनियाँ के बीर। मोतिन जड़ि लइयौ रे मैया चूँदरी रे
खोलूँ तौ हीरा मोती झरि परैं रे
ओढ़ति लागै जग जोति। मोतिन जड़ि लइयौ रे मैया चूँदरी रे
तीजी सेली. .....
आये दौरनियाँ के बीर। मोतिन जड़ि लइयौ रे मैया चूँदरी रे
खोलूँ तौ हीरा मोती झरि परैं रे
ओढ़ति लागै जग जोति। मोतिन जड़ि लइयौ रे मैया चूँदरी रे

—

दौहनियाँ

एक हरीऔ चना की दार ऊपर दौहनियाँ
बाबा हरि गुन गाइ सकारे की दौहनियाँ
त्यारे रोग धोग बहि जांय सकारे की दौहनियाँ
ब्याऊ करौ लाला जाइ सकारे की दौहनियाँ
ताऊ हरि गुन गाइ सकारे की दौहनियाँ
ब्याऊ करौ लाला जाइ सकारे की दौहनियाँ
एक हरीऔ चना...........
चाचा हरि गुन गाइ सकारे की दौहनियाँ
त्यारे रोग धोग बहि जांय सकारे की दौहनियाँ
ब्याऊ करौ लाला जाइ सकारे की दौहनियाँ
एक हरीऔ चना.............

—

विवाह लोकगीत : हाथरस क्षेत्र

—संकलनकर्ता— डॉ. सतीश चतुर्वेदी '[illegible]'

ऐसे बोल मति बोलै
कुआ तेरौ ठंडौ पानी-ठंडौ पानी

काऊ के सजि गये-ढोलक मजीरा काऊ की बजि रही झाँझ
मेरे सँकर कौ बाजै डमरू सब पंचन के माँझ
ए भामरिया मेरी........
काऊ के सजि रहे रथा–मंझोली काऊ की सजीए तुरंग
मेरे बलम कौ सजौ नादिया उड़ै पवन के संग
ए भामरिया मेरी........
ओर पास जांमें आक धतूरा बीच में बोइ दई भंग
सब कोई पीवै सुलफा गांजा हम पीवें दोऊ भंग
ए भामरिया मेरी...

—

छोरा की लगुन चढ़वे कौ गीत

रघुनन्दन फूले न समांइ, लगुन आई हरे–हरे लगुन, आई मेरे अँगना
बाबा सजि गए, ताऊ सजि गए, सजि गई सबरी बरात
रघुनन्दन तौ ऐसे सजि गए, जैसे सिरी भगवान
लगुन आई हरे हरे.......
चाचा सजि गए, बाबुल सजि गए, सजि गई सबरी बरात
रघुनन्दन तौ ऐसे सजि गए, जैसे सिरी भगवान
लगुन आई हरे हरे........
भैया सजि गए, जीजा सजि गए, सजि गई सबरी बरात
रघुनन्दन तौ ऐसे सजि गए जैसे सिरी भगवान
लगुन आई हरे हरे........
फूफा सजि गए, मौसा सजि गए, सजि गई सबरी बरात
रघुनन्दन तौ ऐसे सजि गए जैसे सिरी भगवान
लगुन आई हरे हरे........

—

भात पहरते समय कौ गीत

पहली सेली तौ चमकै बीर की रे
आये सासुलिया के बीर। मोतिन जड़ि लइयौ रे भैया चूँदरी रे

खोलूँ तौ हीरा मोती झरि परें रे
ओढ़ति लागै जग जोति। मोतिन जड़ि लइयौ रे भैया चूँदरी रे
दूजी सेली तौ चमकै बीर की रे
आये जिठनियाँ के बीर। मोतिन जड़ि लइयौ रे भैया चूँदरी रे
खोलूँ तौ हीरा मोती झरि परें रे
ओढ़ति लागै जग जोति। मोतिन जड़ि लइयौ रे भैया चूँदरी रे
तीजी सेली.......
आये दौरनियाँ के बीर। मोतिन जड़ि लइयौ रे भैया चूँदरी रे
खोलूँ तौ हीरा मोती झरि परें रे
ओढ़ति लागै जग जोति। मोतिन जड़ि लइयौ रे भैया चूँदरी रे

—

दौहनियाँ

एक हरीअै चना की दार ऊपर दौहनियाँ
बाबा हरि गुन गाइ सकारे की दौहनियाँ
त्यारे रोग धोग बहि जांय सकारे की दौहनियाँ
ब्याऊ करौ लाला जाइ सकारे की दौहनियाँ
ताऊ हरि गुन गाइ सकारे की दौहनियाँ
ब्याऊ करौ लाला जाइ सकारे की दौहनियाँ
एक हरीअै चना...........
चाचा हरि गुन गाइ सकारे की दौहनियाँ
त्यारे रोग धोग बहि जांय सकारे की दौहनियाँ
ब्याऊ करौ लाला जाइ सकारे की दौहनियाँ
एक हरीअै चना.............

—

विवाह लोकगीत : हाथरस क्षेत्र

—संकलनकर्त्ता— डॉ. सतीश चतुर्वेदी 'शाकुंतल'

ऐसे बोल मति बोलै
कुआ तेरौ ठंडौ पानी—ठंडौ पानी

काऊ के सजि गये-ढोलक मजीरा काऊ की बजि रही झाँझ
मेरे सँकर कौ बाजै डमरू सब पंचन के माँझ
ए भामरिया मेरी........
काऊ के सजि रहे रथा–मंझोली काऊ की सजीए तुरंग
मेरे बलम कौ सजौ नादिया उड़ै पवन के संग
ए भामरिया मेरी........
ओर पास जांमें आक धतूरा बीच में बोइ दई भंग
सब कोई पीवै सुलफा गांजा हम पीवें दोऊ भंग
ए भामरिया मेरी...

-

छोरा की लगुन चढ़वे कौ गीत

रघुनन्दन फूले न समांइ, लगुन आई हरे–हरे लगुन, आई मेरे अँगना
बाबा सजि गए, ताऊ सजि गए, सजि गई सबरी बरात
रघुनन्दन तौ ऐसे सजि गए, जैसे सिरी भगवान
लगुन आई हरे हरे.......
चाचा सजि गए, बाबुल सजि गए, सजि गई सबरी बरात
रघुनन्दन तौ ऐसे सजि गए, जैसे सिरी भगवान
लगुन आई हरे हरे........
भैया सजि गए, जीजा सजि गए, सजि गई सबरी बरात
रघुनन्दन तौ ऐसे सजि गए जैसे सिरी भगवान
लगुन आई हरे हरे........
फूफा सजि गए, मौसा सजि गए, सजि गई सबरी बरात
रघुनन्दन तौ ऐसे सजि गए जैसे सिरी भगवान
लगुन आई हरे हरे........

-

भात पहरते समय कौ गीत

पहली सेली तौ चमकै बीर की रे
आये सासुलिया के बीर। मोतिन जड़ि लइयौ रे भैया चूँदरी रे

खोलूँ तौ हीरा मोती झरि परैं रे
ओढ़ति लागै जग जोति। मोतिन जड़ि लइयौ रे मैया चूँदरी रे
दूजी सेली तौ चमकै बीर की रे
आये जिठनियाँ के बीर। मोतिन जड़ि लइयौ रे मैया चूँदरी रे
खोलूँ तौ हीरा मोती झरि परैं रे
ओढ़ति लागै जग जोति। मोतिन जड़ि लइयौ रे मैया चूँदरी रे
तीजी सेली.......
आये दौरनियाँ के बीर। मोतिन जड़ि लइयौ रे मैया चूँदरी रे
खोलूँ तौ हीरा मोती झरि परैं रे
ओढ़ति लागै जग जोति। मोतिन जड़ि लइयौ रे मैया चूँदरी रे

—

दौहनियाँ

एक हरीअै चना की दार ऊपर दौहनियाँ
बाबा हरि गुन गाइ सकारे की दौहनियाँ
त्यारे रोग घोग दहि जांय सकारे की दौहनियाँ
ब्याऊ करौ लाला जाइ सकारे की दौहनियाँ
ताऊ हरि गुन गाइ सकारे की दौहनियाँ
ब्याऊ करौ लाला जाइ सकारे की दौहनियाँ
एक हरीअै चना...........
चाचा हरि गुन गाइ सकारे की दौहनियाँ
त्यारे रोग घोग दहि जांय सकारे की दौहनियाँ
ब्याऊ करौ लाला जाइ सकारे की दौहनियाँ
एक हरीअै चना.............

—

विवाह लोकगीत : हाथरस क्षेत्र

—संकलनकर्ता— डॉ. सतीश चतुर्वेदी 'शाकुंतल'

ऐसे बोल मति बोलै
कुआ तेरौ ठंडौ पानी—ठंडौ पानी

रे सासु रानी ऐसे बोल मति बोलै
अभी तौ मेरौ पीहरु भारी, पीहरु भारी
रे कुआ तेरौ.....
जिठानी रानी ऐसे बोल मति बोलै
अभी तौ मेरौ न्यारौ साजौ न्यारौ साजौ
रे कुआ तेरौ.....
दौरानी रानी ऐसे बोल मति बोलै
अभी तौ मेरे देवर बस में, देवर बस में
रे कुआ तेरौ.....
ननद रानी ऐसे बोल मति बोलै
अभी तौ मेरौ भैया क्वारौ, भैया क्वारौ
रे कुआ तेरौ.....
सौति रानी ऐसे बोल मति बोलै
अभी तौ मेरौ जीजा रँडुआ, जीजा रँडुआ।

—

राजी हैकें कहि देउ (मथुरा क्षेत्र)

राजा राजी हैकें कहि देउ तौ घर करि लेउँ डलिया।
गोरी, को लावै मोकूँ रोटी–बेला, को लावै दरिया?
गोरी, पकरि हात में जेबरा को प्यावै बधिया?
राजा तुमई लाऔ रोटी–बेला, तुम लइयों दरिया।
राजा, पकरि हात में जेबरा, तुम प्यइयों बधिया।
गोरी, नाले पार मेरी ज्वार कौंन टारैगौ हरिया?
राजा, राँधि मेंड़ पै कोंमरी तुम टारौ हरिया।
राजा, सामन झूलन जाऊँ, कै लाऊँ पचरँग फरिया।
गोरी, मारूँ लात झुलाइ देउँ, सामन करवाइ देऊँ डलिया।
राजा, धोकौ दै जाऊँ सफा निकरि जाऊँ, करि जाऊँगी रँडुआ।
राजा, राजी हैकें कहि देउ तौ घर करि लेउँ डलिया।

—

नृत्य गीत (गुरसाल क्षेत्र)

मेरे दिल कूँ तोड़ मेरे से बोलै क्यों ना रे?
सबके बालम घर सोमें, घर सोवै क्यों ना रे?
मैंनि, मेरौ एकु कह्यौ करि दीयौ,
मैंनि, जाकूँ थारी में खीरि सिरइयौ,
मैंनि, जाकूँ चम्मच कोई मति दीयौ,
खाइगौ सप्प ई सप्प कै चम्मच माँगै क्यों ना रे?
सबके बालम.......
मैंनि, मेरौ एकु कह्यौ करि दीयौ
मैंनि, जाकी चौरे में खाटै बिछइयौ
मैंनि, जाकूँ बिस्तर कोई मति दीयौ
सोइगौ पाँइ सकोढ़ि कै बिस्तर माँगै क्यों ना रे?
सबके बालम.......
मैंनि, मेरौ एकु कह्यौ करि दीयौ
मैंनि, जाबै खाई में हलु चलवइयौ
मैंनि, जाकूँ रोटी कोई मति दीयौ
जोतौ बारै बीघा रोटी माँगै क्यों ना रे?
सबके बालम.......
मैंनि, मेरौ एकु कह्यौ करि दीयौ
मैंनि, जाइ पीहर कूँ भिजवइयौ
मैंनि जाकूँ पैसा कोई मति दीयौ
पौंचौ कोस पचास कै पैसा माँगै क्यों ना रे?
सबके बालम.......

—

न पैलै कारी बेलि की टेहँन रे –2
लढ़े सासुलि लढ़े ससुरा रे–2
लढ़े राजा फटे छाती रे
जौ होते मेरे पंख उड़ि जाती रे
फटे धरती समाइ जाती रे, न पैलै.....
लढ़े जेठा लढ़े जिठानी रे –2
लढ़े राजा फटे छाती रे

रे सासु रानी ऐसे बोल मति बोलै
अभी तौ मेरौ पीहरु भारी, पीहरु भारी
रे कुआ तेरौ.....
जिठानी रानी ऐसे बोल मति बोलै
अभी तौ मेरौ न्यारौ साजौ न्यारौ साजौ
रे कुआ तेरौ.....
दौरानी रानी ऐसे बोल मति बोलै
अभी तौ मेरे देवर बस में, देवर बस में
रे कुआ तेरौ.....
ननद रानी ऐसे बोल मति बोलै
अभी तौ मेरौ भैया क्वारौ, भैया क्वारौ
रे कुआ तेरौ.....
सौति रानी ऐसे बोल मति बोलै
अभी तौ मेरौ जीजा रँडुआ, जीजा रँडुआ।

—

राजी हैकैं कहि देउ (मथुरा क्षेत्र)

राजा राजी हैकैं कहि देउ तौ घर करि लेउँ डलिया।
गोरी, को लावै मोकूँ रोटी–बेला, को लावै दरिया?
गोरी, पकरि हात में जेबरा को प्यावै बधिया?
राजा तुमईं लाऔ रोटी–बेला, तुम लइयों दरिया।
राजा, पकरि हात में जेबरा, तुम प्यइयों बधिया।
गोरी, नाले पार मेरी ज्वार कौन टारैगौ हरिया?
राजा, राँधि मेंड़ पै कोंमरी तुम टारौ हरिया।
राजा, सामन झूलन जाऊँ, कै लाऊँ पचरँग फरिया।
गोरी, मारूँ लात झुलाइ देउँ, सामन करवाइ देऊँ डलिया।
राजा, धोकौ दै जाऊँ सफा निकरि जाऊँ, करि जाऊँगी रँडुआ।
राजा, राजी हैकैं कहि देउ तौ घर करि लेउँ डलिया।

—

नृत्य गीत (गुरसान क्षेत्र)

मेरे दिल कूँ तोड़ मेरे से बोलै क्यों ना रे?
सबके बालम घर सोमें, घर सोवै क्यों ना रे?
भैंनि, मेरौ एकु कह्यौ करि दीयौ,
भैंनि, जाकूँ थारी में खीरि सिरइयौ,
भैंनि, जाकूँ चम्मच कोई मति दीयौ,
खाइगौ सप्प ई सप्प कै चम्मच माँगै क्यों ना रे?
सबके बालम........
भैंनि, मेरौ एकु कह्यौ करि दीयौ
भैंनि, जाकी चौरे में खाटै बिछइयौ
भैंनि, जाकूँ बिस्तर कोई मति दीयौ
सोइगौ पाँइ सकोड़ि कै बिस्तर माँगै क्यों ना रे?
सबके बालम........
भैंनि, मेरौ एकु कह्यौ करि दीयौ
भैंनि, जापै खाई में हलु चलवइयौ
भैनि, जाकूँ रोटी कोई मति दीयौ
जोतौ बारै बीघा रोटी माँगै क्यों ना रे?
सबके बालम........
भैंनि, मेरौ एकु कह्यौ करि दीयौ
भैनि, जाइ पीहर कूँ भिजवइयौ
भैंनि जाकूँ पैसा कोई मति दीयौ
प्हौंचौ कोस पचास कै पैसा माँगै क्यों ना रे?
सबके बालम........

—

न पैरूँ कारी बेलि कौ लेहँगा रे –2
लड़ै सासुलि लड़ै ससुरा रे–2
लड़ै राजा फटै छाती रे
जौ होते मेरे पंख उड़ि जाती रे
फटै धरती समाइ जाती रे, न पैरूँ.....
लड़ै जेठा लड़ै जिठनी रे –2
लड़ै राजा फटै छाती रे

जौ होते मेरे पंख उड़ि जाती रे, न पैरूँ....
लड़ै देवर लड़ै द्यौरानी रे –2
लड़ै राजा फटै छाती रे
जौ होते मेरे पंख उड़ि जाती रे, न पैरूँ......
लड़ै ननदी लड़ै ननदेऊ रे –2
लड़ै राजा फटै छाती रे
जौ होते मेरे पंख उड़ि जाती रे, न पैरूँ.....

—

(हाथरस क्षेत्र)

दो–दो नारी कोई मति राखियो दो नारिन की है ख्वारी
एक नें लै लए बाग बगीचा
एक नें लै लई फुलवारी। दो दो नारी......
एक नें ले लए तए चीमटा
एक नें लै लई द्वै थारी। दो–दो.......
एक तौ सोवै अट्टा ऊपर
एक देति आँगन गारी। दो–दो नारी.....
बारै बरस पीछें आए चकरी सें
वोलि रई ऊपर बारी। दो–दो नारी.....
धरिकें नसैनी चढ़वे लागौ
खेंचि रई नीचे वारी। दो–दो नारी....
वो का तेरी लगै लुगाई
मैं का लागूँ महतारी। दो–दो नारी......

—

(औसर विवाह)

झूँटु नाँइ बोल्तई

झूँटु नाँइ बोल्तई झूँट की ऐ आनि
पोखरिया की पारि पै एकु मेंढ़क चाबै पान। झूँटु ....

चारि मन के चारि पाए, आठ मन की खाट
चौंसटि मन कौ गूदरा, बत्तीस मन कौ जाट। झूंटु ....
एक दिना की बात रे, बन में जायौ ऊँटु
चेंटी के तन पाम रे, पीमन लाग्यौ ऊँटु। झूंटु ....
चेटी चढ़ी पहाड़ पै रे, नौ मन बजनु लदाइ।
हाती–घोड़ा लए बगल में, ऊँट लिए लटकाइ। झूंटु ....
चेंटी मरी पहाड़ पै रे खेचन कूँ गए चार,
सौ जोड़ी जूता बने औरु चप्पलि बनी हजार। झूंटु ....
बोदी जाति बरात की रे बिना ब्यारि बर्राइ,
बारै मन के घूँघरा इक मुरगी बाँधैं जाइ। झूंटु ....
गधा चलौ ससुरारि कूँ रे पैरि गले में पायौ,
सबरे बालक जों कहैं जि फूफा बड़े दिना में आयौ। झूंटु .....
कुतिया चली बजार कूँ रे पैरि गले में ईंट,
सबरे बनियाँ जों उठि बोले, खद्दर लेगी कै छींट। झूंटु .....

—

मैं तौ मरि गई हकीम जी तारा बाबू चंद। –2
हकीम जी नें कह दिया कै दारि फुलकिया खाना,
मैं तो खाइ गई हकीम जी, आलू गोभी बंद।
मैं मरि गई..........
हकीम जी नें कह दिया कै गरम पानी पीना,
मैं तौ पी गई हकीमजी, सोड़ा वाटर बंद।
मैं मरि गई..........
हकीम जी नें कह दिया तुम छति ऊपर सोना
मैं तौ सोइ गई हकीमजी, कोठे भीतर बंद।
मै मरि गई..........
हकीमजी नें कह दिया तुम अकेली ही सोना,
मैं तो सोइ गई हकीमजी, लै बालम कूँ संग।
मैं मरि गई..........

—

(कासगंज क्षेत्र)

सिर दूखे की दवा बतइयौ हकीम जी
जीती रहूँ तौ गुन मानूँ।
सोंने की थरिया में भोजन परोसे
अपनेई हात जिमइयौ हकीमजी, जीती रहूँ तौ गुन माँनू।
आले कौ लोटा सिवाले कौ पानी
अपनेई हात पिबइयौ हकीम जी, जीती रहूँ तौ गुन मानूँ।
पान पचासी के बीड़े लगाए
अपने ई हात चबइयौ हकीम जी जीती रहूँ तौ गुन मानूँ।
चंदा की चाँदनी में चौपड़ बिछाई
अपने ई हात खिलइयौ हकीम जी जीती रहूँ तौ गुन मानूँ।
फूलों की सेज मोती झलरि कौ तकिया
अपनेई जौरें सुवइयौ हकीमजी, जीती रहूँ तौ गुन मानूँ ।

—

संगई चलुंगी

सिपाई महाराज, संगई चलुंगी,
दरोगा महाराज, संगई चलुंगी।
सो गोरी, तेरे माथे पै बिंदिया चमकनी
उजिरिया राति, नहीं ले चलूँगा। सिपाई.....
सो गोरी, तेरे नैनों में कारा काजल
अँधिरिया राति, नहीं ले चलूँगा। सिपाई....
सो गोरी तेरे पाँहिनि में बजने बिछुआ
गलिनु में रँडुआ, नहीं ले चलूँगा। सिपाई....
सो गोरी, तेरी ऊँची–नीची धोती
गलिनु में कीच, नहीं ले चलूँगा। सिपाई....
सो गोरी, तेरी गोदी में छोटा सा ललुआ,
भूड़ पै भूत , नहीं ले चलूँगा। सिपाई.....

—

(मथुरा क्षेत्र)

सावन कौ गीत

लहरि लहरि सरसों करै कै आई रितु सामन की।
आए जी मैया जाए बीर, कै आई रितु सामन की।
सासुलि पूछन हम गए कै आई रितु सामन की।
कहौ तौ पीहर जाँइ, सामन झूलि आँइ
मैया से मिलि आँइ, सहेली मिलि जाँइ,
कै आई रितु सामन की।
हमे कहा पूछौ री ए बहू, कै आई रितु सामन की,
अपनी जिठाँनी ऐं पूछौ कै आई रितु सामन की,
कहौ तौ पीहर जाऊँ......
हमें कहा पूछौ री मेरी ए छोटीजी कै आई रितु सामन की,
अपनी दौरानी ऐ पूछौ कै आई रितु सामन की,
कहौ तो पीहर जाऊँ.....
हमें कहा पूछौ री मेरी ऐ जिठानी कै आई रितु सामन की,
अपनी ननदिया ऐ पूछौ कै आई रितु सामन की,
मेरी ननदुलि ऐ दीदी जी आई रितु सामन की,
कहौ तो पीहर जाऊँ.....
हम कहा जानें मेरी ऐ भाभीजी कै आई रितु सामन की,
अपनी सासुलिया ऐ पूछौ कै आई रितु सामन की
मेरी सासुलि ऐ माताजी, आई रितु सामन की,
कहौ तो पीहर जाऊँ.....
जितनों कोठी में नाजु कै आई रितु सामन की
जाइ पीसि धरि जाउ, मैया से मिलि आउ,
सामन झूलि आउ, सहेली मिलि आउ कै आई रितु सामन की
जितनौ कुआ में पानी कै आई रितु सामन की
सबरे ऐ घर भरि जाउ कै आई रितु सामन की,
जितने पीपर पै पात कै आई रितु सामन की.
इतनी पोइ धरि जाउ कै आई रितु सामन की,
जाऔ बिरन घर आपने कै 'आई रितु सामन की,
मरेऊँ न मिलनों होइ कै आई रितु सामन की।

—

(सिकन्दराबाद अलीगढ़ क्षेत्र)

चक्की तर मैंनें धनियों बोयौ, हाँ सहेली धनियों बोयौ
धनिये में दो किल्ला फूटे, हाँ सहेली...
किल्ला मैंनें गाय चराई, हाँ सहेली...
गाय नें मोकूँ दुद्धा दीनों, हाँ सहेली...
दुद्धा की मैंनें खीरि पकाई, हाँ सहेली...
खीरि मैंनें भैया ऐ जिमाई, हाँ सहेली...
भैया नें मोइ रुपिया दीन्हों, हाँ सहेली...
रुपिया की मैंनें चुनरी ओढ़ी, हाँ सहेली...
चुनरी ओढ़ि मैं पनियाँ कूँ गई, हाँ सहेली...
पनियाँ भरत मेरें काँटौ लाग्यौ, हाँ सहेली...
काँटौ मैंनें दाऊ पै निकरवायौ, हाँ सहेली...
दाऊ नें मेरें खून निकारौ, हाँ सहेली...
खून मैंनें चुनरी तें पोंछौ, हाँ सहेली...
चुनरी मैंनें धोबी के डारी, हाँ सहेली...
धोबी नें मेरी चीर–चीर करि दई, हाँ सहेली...
चीर–चीर मैनें दर्जी कें डारी, हाँ सहेली...
दर्जी नें मेरे गुड़िया–गुड्ड़ा सींये, हाँ सहेली...
गुड़िया–गुड्ड़ा आरे में रख दए, हाँ सहेली...
आरे ए मैं कुआ पै सिराइबे गई, हाँ सहेली...
कुआँ में मोइ डिबिया पाई, हाँ सहेली...
डिबिया में मोइ रुपिया पायौ, हाँ सहेली...
रुपिया की मैंने चूड़ी पहरी, हाँ सहेली...
चूड़ी मैंनें सासु ऐ दिखाई, हाँ सहेली...
सासु मेरी नें बुरी बताई, हाँ सहेली...
चूड़ी मेरी चटकै, सासु मेरी मटकै।

–द्वारा श्री हरचरन शिवहरे
हनुमान कालोनी, गुना (म.प्र.)

विविध लोकगीत

–संकलनकर्त्ता – श्री हरीशचन्द्र शर्मा 'हरि

सखि री अनपढ़ कूँ ब्याह दई जिन्दी रहूँ कि मर जाऊँ
जेठ मेरौ है गयौ एम.ए. पास, देवर मेरौ है गयै बी.ए. पास
अरी बू तौ गूँठा टेका–जिन्दी रहूँ कि मर जाऊँ.....
जेठ मेरौ ऑफिस कूँ जावै, देवर मेरौ दफ्तर कूँ जावै
अरी बू तौ हर पै जावै, जिन्दी रहूँ कि मर जाऊँ.....
जेठ मेरौ है गयौ थानेदार, देवर मेरौ बनि गयौ तहसीलदार
अरी बू तौ मुँह कौ देखा, जिन्दी रहूँ कि मर जाऊँ.......
जेठ मेरौ लावै पाँच हजार, देवर की इतरावति नारि
सखि बू तौ जेब टटोरा, जिन्दी रहूँ कि मर जाऊँ......
साक्षर करि रही है सरकार, केन्द्र पै पहुँच छोड हर फार
देख तोय पढ़ि जाय छोरा, जिन्दी रहूँ कि मर जाऊँ....

—

मैं तो चली पीहर कूँ
मै तो चली रे पीहर कूँ बलम हिचकी दैकें रोवै
बागन में रोवै बगीचन में रोवै
पेड़न ते मार सिर रोवै–बलम हिचकी दैकें रोवै......
तालन पै रोवै तलइयन पै रोवै
घाटन सौं मार सिर रोवै–बलम हिचकी दैकें रोवै.....
कूँअन पै रोवै तलाबन पै रोवै
बाबरी में मार सिर रोवै–बलम हिचकी दैकें रोवै.....
महलन में रोवै मकानन में रोवै
सेजन पै मार सिर रोवै–बलम हिचकी दैकें रोवै.....
गैलों में रोवै गिरारिन में रोवै
पारन सौं मार सिर रौवै–बलम हिचकी दैकें रोवै....

—

ननद फुलगेंदिया

ननद फुलगेंदिया कौन भरैगौ पानी
सास मेरी रानी सुसर मेरे राजा
बलम म्हारे भोलुआ बेई भरिंगे पानी। ननद फुलगेंदिया....
जेठ मेरे राजा जिठनी मेरी रानी
बलम म्हारे भोलुआ बेई भरिंगे पानी। ननद फुलगेंदिया....
देवर मेरे राजा, दौरानी मेरी रानी
बलम म्हारे भोलुआ बेई भरिंगे पानी। ननद फुलगेंदिया....

—

सास तेरे बोलन पै

बाबाजिन हैंकैं निकरि जाऊँगी सास तेरे बोलन पै
हाय वैरागन हैकैं निकरि जाऊँगी सास तेरे बोलन पै
यों मत जानें सासुल नंगी चली जाऊँगी
तेरे बेटा पै चूनर मँगाय लऊँगी। सास तेरे बोलन पै.....
यों मत जानें सासुल भूखी चली जाऊँगी
तेरे बेटा पै रबड़ी मंगा लऊँगी। सास तेरे बोलन पै.....
यों मत जानें सासुल घरै छोड़ि जाऊँगी
अपने हिस्सा कैं तारौ लगाय जाऊँगी। सास तेरे बोलन पै.....
यों मत जानें सासुल इकली चली जाऊंगी
तेरे बेटाय संग में लै जाऊँगी। सास तेरे बोलन पै.....

—

मोय न्यारे कौ चाव

मोय न्यारे कौ चाव सकारें न्यारी है जाऊँगी
सास नाँय लउँगी सुसर नाँय लउँगी
डुकरियाय लै लउँगी जाय हाल राम लै जाय
मोय न्यारे कौ चाव.......

गाय नाँय लउँगी, भैंस नाँय लउँगी
बकरिया लै लउँगी जाकौ हाल काम है जाय
मोय न्यारे कौ चाव.......
देवर नाँय लउँगी जेठ नाँय लउँगी
ननदियाय लै लउँगी जाय आय ननदेऊ लै जाय
मोय न्यारे कौ चाव.....

—

चंद्रकली कौ हार

चन्दकली कौ हार सखी री बहना
ऊँची अटरिया लाल किवरिया री बहना
चढ़ौ ना उतरौ जाय सखी री बहना
आगें ते देवर चढ़ि गये री बहना
डारि जुलफन तेल सखी री बहना
पीछे से भाभी चढ़ि गई री बहना
करि सोलह सिंगार सखी री बहना
देवर भाभी सोय रहे री बहना
धर छतियन पै हाथ सखी री बहना
पीछे से राजा जी चढ़ि गये री बहना
धरि कंधे पै कटार सखी री बहना
पहली कटार घूँघटे पै मारी री बहना
घूँघट में लइयै फिराय सखी री बहना
दूजी कटारी छतियों पै मारी री मैना
हाथन पैं लइयै फिराय सखी री मैना
तीजी कटारी कनिया पै मारी री मैना
तीजी में तजे हैं पिरान सखी री मैना
घर घर रोटी पानी तौ है रहे मैना
रंडुआ के कटोरे में चून सखी री मैना
घर घर चौका लगि रहे री मैना
रंडुआ के चूल्हे में राख सखी री मैना

घर घर बालक खेल रहे री बहना
रंडुआ कौ सूनौ घरबार सखी री बहना
घर घर सेज बिछ रही री बहना
रंडुआ की गिरारे में खाट सखी री भैना
चन्द्रकली कौ हार सखि री भैना.....

—

मोय राजा मिले

अरी दुःख कौन ते कहूँ मेरी मइया, मोय राजा मिले जरैया
पाँच बरस की मैं मेरी मइया ढाई बरस के संइयाँ। दुःख कौन....
नभा धुवा मैंनें सेज सुवाए अरी वाय लै गई सौत बिलैया। दुःख कौन....
सास बिचारी उनैं ढूँढ़न चाली अरी बे तौ कहूँ न पाए छइया। दुःख कौन....
सुसर बिचारौ खोजन चालौ–झट बोले सोन चिरैया। दुःख कौन....
मैं अलबेली उनैं ढूँढ़न चाली अरी वे तौ बिल ते झाँकें सइयाँ। दुःख कौन...
बिल ते काढ़ि कैं घर में लाई, लिपटाये लाल रजइया। दुःख कौन....

—

भात

राजा दशरथ की नारि कौसल्या भात नौंतवे आई, रंग बरसैगौ
लाख कौ टीका लइयौ मेरे भइया सवा लाख की लरियां, रंग बरसैगौ
इतनौ होय भैया मेरे घर अइयौ मत मेरी हँसी करइयौ, रंग बरसैगौ
लाख कौ कांटौ लइयौ मेरे भइया सवा लाख की नथुली, रंग बरसैगौ
इतनौ होय भैया मेरे घर अइयौ मत मेरी हँसी करइयौ, रंग बरसैगौ
लाख के कुण्डल लइयौ मेरे भइया सवा लाख के झाले, रंग बरसैगौ
इतनौ होय भैया मेरे घर अइयौ मत मेरी हँसी करइयौ, रंग बरसैगौ
लाख कौ पैंडिल लइयौ मेरे भइया सवा लाख कौ हरवा, रंग बरसैगौ
इतनौ होय भैया मेरे घर अइयौ मत मेरी हँसी करइयौ, रंग बरसैगौ
लाख के दस्ते लइयौ मेरे भइया सवा लाख की चुरियाँ, रंग बरसैगौ
इतनौ होय भैया मेरे घर अइयौ मत मेरी हँसी करइयौ, रंग बरसैगौ

लाख के बिछुआ लइयौ मेरे भइया सवा लाख की तगड़ी, रंग बरसैगौ
इतनौ होय भैया मेरे घर अइयौ मत मेरी हँसी करइयौ, रंग बरसैगौ

—

माई डीयर पीहर चाली

माई डीयर पीहर चाली जानें आवैगी कै नाँय
मैं तौ हरवा लायौ टीका लायौ पहरैगी कै नाँय
मैं तौ पहरूंगी तौ बड़े शौक ते आयवे वारी नाऊँ
भैया तेरौ जीजा रोवै मेरौ चलिवौ हत नाँय
माई डीयर पीहर.......
मैं तौ चुरियाँ लायौ घड़ियाँ लायौ पहरैगी कै नाँय
मैं तौ पहरूंगी तौ बड़े शौक ते आयवे वारी नाऊँ
भैया तेरौ जीजा रोवै मेरौ चलिवौ हत नाँय
माई डीयर पीहर.......
मैं तौ पायल लायौ बिछुआ लायौ पहरैगी कै नाँय
मैं तौ पहरूंगी तौ बड़े शौक ते आयवे वारी नाऊँ
भैया तेरौ जीजा रोवै मेरौ चलिवौ हत नाँय
माई डीयर पीहर.......

—

ऊपर रेडियो कौ तार

ऊपर रेडियो कौ तार नीचैं चाय पानी।
पिया हमकूँ ना लाये सिंगार दानी॥
हमनें कहा था पिया किलपें ले आना।
बिंदिया लै आये उनकी महरबानी॥ ऊपर रेडियो......
हमनें कहा था पिया टीका ले आना।
नथुली लै आये उनकी महरबानी॥ ऊपर रेडियो.......
हमनें कहा था पिया झाले ले आना।
पैण्डिल लै आये उनकी महरबानी॥ ऊपर रेडियो......
हमनें कहा था पिया दस्ते ले आना

चुरियाँ लै आये उनकी महरबानी॥ ऊपर रेडियो......
हमनें कहा था पिया तगड़ी ले आना।
गुच्छा लै आये उनकी महरबानी॥ ऊपर रेडियो......
हमनें कहा था पिया पायल ले आना
बिछुआ लै आये उनकी महरबानी॥ ऊपर रेडियो......

ऐसे बादर फारे

तेरे नैन बने कजरारे, जिननैं ऐसे बादर फारे, मेरी जान कूँ ।
मैं तौ कर दऊँगौ निछावर, अपने प्रान कूँ ।
तेरी चाल बड़ी मस्तानी
लचका लैवै मस्त जवानी
मुख पै चंदा की छवि चमकै
दम–दम माथे बिंदिया दमकै
शुभ पहचान कूँ, मैं तौ कर.........
बरसै अधरन पै मधु लाली
गालन पै लटकैं लट काली
छतिया नारंगी मतबाली
पी लूँगौ, यौवन की प्याली
गाऊँ गान कूँ, मैं तौ कर.......
तेरी सुन्दर नरम कलाई
मनुआ देखिकैं ले अँगड़ाई
मधुरिम अलबेली तरुनाई
मानों उतर चाँदनी आई
जीवन दान कूँ, मैं तौ कर..........
तेरौ आँचल पवन हिलावै
मेरे उर कौ ताप बढ़ावै
क्षण–क्षण दूनौ नशौ चढ़ावै
सीने लगजा च्यौं शरमावै
मेरी मान तू मैं तौ कर..........

झाँकि रह्यौ

झाँकि रह्यौ री मेरौ साजन सलौनौ
फोरि डारौ री मेरे कमरा कौ कौनौ
पिया हमारे पेमदी जी कोई देखत मन ललचाय
हँसि–हँसि कैं सौतन दतियावै फूल झरैं मुसकाय
हो हो रे दिन रात लखत है–झाँकि रह्यौ......
सौत बिजुरिया ऐसी चमकी चमकत देह जराय
दै–दै ताने भौत चिराऊं मन ही मन मुसकाय
हो हो रे नाय चैन परत है–झाँकि रह्यौ.....
काहे तू लरिवे कूँ आई काहे करै पटक पछार
हाथ पकरि कैं मैं नाँय लाऊँ रोकिलै तू तौ छिनार
हो हो रे तो पै नाँय रुकत है–झाँकि रह्यौ.....
भौतई घर भीतर समझायौ हार गई समझाय
नैंकऊ नाँय समझ में वैठै पल–पल आँख दिखाय
हो हो रे रैन जरत है–झाँकि रह्यौ........

–होली गेट नगर, जिला–भरतपुर

–

लोकगीतकारन के रचे नये लोकगीत

सात लोकगीत

ब्रज में बास करिंगे

– श्री राधागोविन्द पाठक

ब्रज में यास करिंगे चलौ राधा रटिंगे।
पिछले पाप छटिंगे चलौ राधा रटिंगे॥
तीन लोक ते मथुरा न्यारी, जनम लियौ तहाँ कृष्ण मुरारी।
ता रज सीस धरिंगे, चलौ राधा रटिंगे॥
नन्द भवन अचरज गोकुल में, शिव विरचि से मोहे पल में।

ग्वालन सँग विचरिंगे, चलौ राधा रटिंगे॥
ऊखल बन्धन रमन बिहारी, चिन्ता हरन श्री हलधारी।
खीर कुण्ड परसिंगे, चलौ राधा रटिंगे॥
जै-जै गिरवर जै गिरधारी, मानसी गंगा दान बिहारी।
परिकम्मा कर लिंगे, चलौ राधा रटिंगे॥
धन-धन नंद गाम बरसानौ, मन हरसानौ सुख सरसानौ।
बन उपबन विहरिंगे, चलौ राधा रटिंगे॥
वृन्दावन की कुंज गलिन में, कान्हा रास रचै गोपिन में,।
बाँके बिहारी मिलिंगे, चलौ राधा रटिंगे॥
विरज भूमि की महिमा भारी, संत दरस मुद मंगलकारी।
जीवन सुफल करिंगे, चलौ राधा रटिंगे॥

—

थोरौ-थोरौ तौ पढ़ौ

काका मेरी बात मानों, थोरौ-थोरौ तौ पढ़ौ।
तिखने लौं पहुँचौगे, सीढ़ी पहिली तौ चढ़ौ॥
सबते साँचौ बिद्या कौ धन, सकल कलेसन काटै।
चोर न जाकूँ चोर सकै, कोई भाई बन्धु न बाँटै॥
नीकी सीख कूँ सिखामें, काहे जिद पै अड़ौ
काका बात मेरी मानों.....
साठ बरस की चम्पो दादी, दसकत करिबे लागी,
पोंपा चाचा रम्मो भूआ चिट्ठी पढ़ै सटाकी॥
दुनियाँ गई अगारी, तुम हू आगे कूँ बढ़ौ।
काका बात मेरी मानों....
धीरें-धीरें चलै खरा ते कछुआ जाय अगारी,
चेंटी चलै पहाड़ै नाखैं करतब की बलिहारी॥
देहरी कूँ नाँखौ घरते बाहिरे कढ़ौ।
काका बात मेरी मानों.......
विद्या ही सबकौ अमोल धन, नर होवै चाहि नारी।
बिना पढ़े कोऊ बात न पूछै, रोज-रोज की ख्वारी॥

विद्या कौ फल चाखौ, कोरी [illegible]।
काका मेरी बात मानौ.....

मल्हार

कीर्ति पताका कबहु न झुकि सकै जी
ऐजी कोई भारत पूत महान
फाँसी के तखता पै हँसि-हँसि चढ़ि गये जी।
जननी ते बढ़ि भारत जननी, वे धन्य भये करके करनी
जुग-जुग गूँजै सुजस शहीद कौ जी
ऐ जी कोई अनगिन भये बलिदान॥ फाँसी.....
वा डायर की मनमानी ते, जलियां की करुन कहानी ते
ऊधम पहुँचौऐ लन्दन जायकें जी
ऐजी बम फैंक्यौ ऐ दै ऐलान॥ फाँसी......
लक्ष्मी बाई झाँसी रानी, मरदानी कहुँ केहि नाँय जानी
प्रान निछावर देश पै करि गई जी
ऐजी कोई साक्षी है सकल जहान॥ फाँसी .....
ताँत्या टोपे मंगल पाण्डे, कितनेन्नें सीस कफन बाँधे
सावर तिलक गुरु सुख गोखले जी,
ऐजी कोई शेखर भगत सुजान॥ फाँसी......
नर नाहर सुभाष की तरियाँ जे देश बन्यौ ए जिनकौ रिनियाँ
झुकि-झुकि जिनकूँ जग बंदन करै जी
ऐजी रिपु दल हू करत सनमान॥ फाँसी के......

स्कूटर

सारी जिन्दगी गई है बेकार, मोरे बालमा कबहु न बैठी स्कूटर पै।
देखी न कमाई की पाई, गंगा जमुना तक नाँय न्हाई।
घर में बैठे ही गुजारे त्यौहार, मोरे बालमा॥ कबहु न

कल्लो कौ खसम लै रोज फिरै, मेरौ मनुआ दिन रात जरै,
अब बेगि करौ जी इकरार, मोरे बालमा॥ कबहु न ....
अपने घर की मत फिकर करौ, जर मरे परौसी खूब जरौ,
जोरूँ हाथ दीजौ मन की निकार, मोरे बालमा॥ कबहु न.....
चटनी ते रोटी खाइ लिंगे, पर स्कूटर बिन नाँय रहिंगे
पीं.पीं. बोलैगौ उड़ैगौ धूँआधार, मोरे बालमा॥ कबहु न ......
छोरी छोरन संग नाँय लिंगे, गटपट बोलिंगे डोलिंगे
दुनिया ठोकैगी सलाम, सरकार, मोरे बालमा॥ कबहु न......
च्यौं चुप्प भये बोलौ मुखते, अपने हू दिन बीते सुखते
करौ मन में न सोच बिचार, मोरे बालमा॥ कबहु न.....
जादा मत सोचौ लै आऔ, तुम हू काहू ते कम नाऔ।
पीछें बैठूँ घड़ी बाँध पल्लौ डार, मोरे बालमा॥ कबहु न........

—

बनाइ दई मैं तौ रेलगाड़ी

लम्बौ परिवार बढ़ाइ–बनाइ दई मैं तौ रेलगाड़ी।
पिया ब्रेक न सिगनल होय कहाँ हुई है ठाड़ी॥
उत्पादन कर तैंने साँची महनत कौ फल पायौ।
कौसलता कौ लै प्रभाण दुनिया में नाम कमायौ॥
जे सनमुख आई खाड़ी॥ लम्बौ........
डिब्बा चाल चलै मनमानी द्वार किवरिया खोलैं।
अँधियारे में भिड़ैं मुसाफिर तू तू मैं मैं बोलैं।
अराजकता बाढ़ी॥ लम्बौ.......
प्यार न लखे बहिन भैय्या में विपदा नें घर घेरौ।
कहाँ गई मैय्या की ममता चारौं ओर अँधेरौ॥
बचइयौ देवी पथवारी॥ लम्बौ......
झटिका में दुर्घटना घटि जाय ढूँढ़े टूक न पावै।
करनी कौ फल मिलै मिनट में दुनिया दोष लगावै॥
पी राखी होइगी ताड़ी॥ लम्बौ......
सोचौ समझौ रे मैय्या कछु ऐसौ करौ दिखाऔ।

दृढ संकल्प उठाऔ जिम्मेदारी सबहि निभाऔ॥
कहै रानी हाड़ी॥ लम्बौ.....

—

झींगुर बैठि गयौ बकुचा पै

झींगुर बैठि गयौ बकुचा पै डूबी–डूबी रही सही।
डूबी रही सही कै बिगरी–बिगरी रही सही॥
काहू नें पौधा रोप्यौ अरु कोऊ रह्यौ फल खाय।
ऐसौ पूत कमाल है गयौ खाइ और घुर्राय॥
करुई तापै नीम चढ़ गई कैसी कैसी बेलि बई
झींगुर बैठि गयौ.....
होय अजूबौ खेल घोदुआ गाम में घुसतौ आवै।
कुत्ता पूँछ दबामत डोलै कोऊ नाँय घुर्रावै॥
पल्लै परि गई जुलम गुजरि गये दैय्या उलटी धार बही
झींगुर बैठि गयौ......
कछू न करौ दया तुम हमपै हम अपनौ हक लिंगे
तुमनें प्रान बचाये अब हम तुमकूँ ही धक्का दिगे
दूध पियावै ताहि डसें हम अपनी सच्चुल जात यही॥
झींगुर बैठि गयौ.......
दोऊ आँखिन पै धरी ठीकुरी लाज कहाँ कहु कैसी।
हमते बड़ौ न कोऊ जा खन सबकी ऐसी तैसी॥
गैल बिगारै आँख नटेरै धोबिनिया दिल्ली बन गई
झींगुर बैठि गयौ......

—

धरती के गोपाल

धनि–धनि धरती के गोपाल, गोप गामन के बसिया।
जै–जै–जै किसान भगवान हाथ हर खुरपी हँसिया
बाग–बगीचा मेंड़–मेंड़ पै बहै सुगन्ध समीर।

पनघट दूध दही झलकामें पीयौ सुधा रस नीर॥
तिक तिक हाँकै बैल खेत में छेड़ै रसिया
धनि–धनि धरती के गोपाल.......
रोज टपाटप खून पसीना माटी बीच बहावै।
बैलन के संग जुतै बैल सौ अपनौं धरम निभावै॥
बनी रहै मेरी डूँड़ी गैय्या बूढ़ी बधिया॥
धनि धनि धरती के गोपाल.....
फूटे घर टूटी छानन में मिलजुल करें बसेरौ।
दुख ते बीतै रात वीर की सुख ते होय सवेरौ॥
बोझ मूँड़ पै चलै ठाठ ते लैकें लठिया
धनि–धनि धरती के गोपाल.....
मलहारन की धुनि ते गूँजैं गली और चौपार।
गोरी झूम चलै ठसका ते लम्बौ घूँघट मार॥
छैल छबीलौ फबै देह पै लहँगा फरिया
धनि–धनि धरती के गोपाल........

–विवेकालय, बल्देव, जिला–मथुरा

—

तीनि अलबेले लोकगीत

– श्रीमती माधुरी शास्त्री

माखन कौ लुटैया

चोर–चोर आयौ देखौ, माखन कौ लुटैया रे।
चोर–चोर आयौ देखौ, किसन कन्हैया रे।
बासंती प्रसूनन के चोर लीन्हें रंग सारे,
कहा तौ फिरै पीताम्बर कौ पहरैया रे।
मोरन के पंख मोर मुकुट पै सजैया रे,
मुस्कान चोर लीन्ही काहू नव परणीता की॥
गोपिन कौ चित्त चोरयौ राधे की ओट बैठि

ऐसौ ठगराज मोहन, लुक्यौ वैठ्यौ ओट गैयन की।
गोपिन के वस्त्र चोरे देखौ या ढिटैया नै,
जमुन जल कौ रंग चोर्‌यौ, कालिया नथैया नै।
दुनियाँ कौ चित्त चोर, हियरा में लुकानौ वैठ्यौ,
ऐसे जैसें ताते दूध में मलैया रे॥
चोर–चोर आयौ देखौ, वंसी कौ वजैया रे
रास कौ रचैया रे, दधि माखन कौ लुटैया रे।

—

नटखट स्याम

मन लै चल मोहि गुपाल के गाम
देखन चाहत इन आँखिन तें
वेणु वजावत नटखट स्याम।
कैसें जसुमति दही विलोवति
कैसें माखन चाखत है स्याम
कौनसी गोरी के भाग जगावत
कैसी मटकी फोरत है स्याम।
कैसें उरझाकर वो राखत
कैसें मारत प्रीति के वान
हर गोपिन के मन माँहि मोहन
कैसें प्रीति निभावत राम।
कौनसे मधुवन रास रचावत
वेणु अलापत कैसी तान
देखन चाहत 'माधुरी' मूरत
और राधे कौ मनोहर मान।
छोड़न चाहूँ या जग वंधन
रहिवौ चाहूँ नंद के धाम
मन लै चल मोहि गुपाल के गाम॥

—

सासू

काऊ दिन देख लऊँगी सासू
तैनें बहुत सतायौ मोय।
हाँ तैनें बहुत खिजायौ मोय,
तैनें बहुत रुवायौ मोय। काऊ.....
दिन-दिन भर मोसौं चाकी चलवाई
खावन दियौ नांहि कौर। काऊ दिन.....
लै रसरी मोहि कुइयाँ भेजौ
संग कपड़न की पोट।
धोवत-धोवत सांस उखर गई
मैं है गई बेहोस। काऊ दिन......
बारी उमर मोहे ब्याह कें लाई
गज भर घूंघट और।
तपती धूप ढोरन संग भेजी
खुद सोई जवार्यां ओट। काऊ दिन....
बात-बात मोहे गुलचा मारै
ऊपर से धक्का धोर
अबतौ तेरी एक सुनूँ ना
बहुत सता चुकी मोय। काऊ दिन.....

-सी-8, पृथ्वीराज रोड, सी-स्कीम, जयपुर

—

होरी के द्वै लोकगीत

-श्रीमती विनोदकुमारी 'किरन'

अबके बरस भई जो होरी

अबके बरस भई जो होरी
याकी तौ कछु कही ना जाय।

सुसर लगै देवर होरी में
काहू की यहां पेस ना खाय॥
रंग गुलाल अबीर उड़ायौ
नैनन मारी तिरछी मार।
तक-तक कैं मारी पिचकारी
कमर लचक गई बार हजार॥
रसिया ठाड़ौ कौ ठाड़ौ रह गयौ
गोरी नै गागर दीन्ही डार॥
कारौ पीरौ है गयौ रसिया गोरी दूर खड़ी हरसाय॥
अबके बरस........
अबकैं दाव लग्यौ रसिया कौ
घर लीन्हीं बरसाने नार।
रंग गुलाल अबीर मल्यौ
और गालन गुलचा दीन्हें चार॥
रंग की कमोरी हाथ मे लै लई
केसर गागर दीन्ही डार
गोरी के हाथ की हरी हरी चुड़ियाँ रसिया नै दीन्हीं मुरकाय॥
अबके बरस.........
गोरी के माथे कौ बैना भीज्यौ
गालन बह रही रंग की धार।
काजर बेंदी लाली मिस्सी
काहू की ना रही दरकार॥
लहँगा भीज्यौ चूनर भीजी
चोली की कछू कही ना जाय।
गोरी आँखिन में सरमाय रही रसिया दूर खड़ौ मुस्काय॥
अबके बरस.........

—

या होरी की अजब बहार

होरी तौ हर बरस भई पर या होरी की अजब बहार
परकैं तौ वानें साँकर दै लई

अबकैं खोले झंझन किवार।
या होरी की अजब बहार॥
दस मन तौ मैंनें केसर घोरी
नौ मन लियौ अबीर गुलाल।
पिछले बरस वो कोठे में छिप गई
अबकैं चढ़ी अटरिया नार।
या होरी की अजब बहार.....
पंचरंगी चूनर में सज रही
नथनी में जड़ रहे हीरा लाल।
नैंनन परे गुलाबी डोरा
रूप रह्यौ वाकौ झलका मार।
या होरी की अजब बहार.......
टोली में ते निकस कैं रसिया
पहौंचि गयौ गोरी के द्वार।
हिलमिल कैं फिरि होरी खेली
रंग की परी तगड़ी बौछार।
होरी तौ मैनें बरसन खेली
या होरी के रंग हजार॥
या होरी की अजब बहार.......

—द्वारा डॉ. एस.एल. शर्मा
मारू मन्दिर के सामने वाली गली में, सीकर (राजस्थान)

—

द्वै लोकगीत

—श्री चैतन्य शास्त्री

प्रेम कौ हिण्डोलनौ

पावन देस मेरौ प्रेम कौ हिण्डोलनौ।
केसरिया चूनरिया पै, हिमगिरि सी बादरिया पै,

रिमझिम-रिमझिम, घूँघट सौ खोलनौ ॥ पावन.....
कास्मीर सी वाला याकी देवदार सी चोटी जी,
गेहूँ, चना, बाजरा, मक्की घर-घर खदती रोटी जी
भोरे-भोरे जन-मन सारे इज्जत धरैं कसौटी जी
जग कूँ पढ़ायौ भैया या प्रेम ते बोलनौ
पावन देस मेरौ प्रेम को हिण्डौलनौ..॥ 1 ॥
गंगा जमना की धारा, देवन की भूमी जू
राम और श्याम जू के चरनन कौ चूमी जू
संत और तपसिन की श्रद्धा-ज्ञानी धूनी जू
करम कूँ सिखायौ यानैं ताखरी पै तोलनौ
पावन देस मेरौ प्रेम को हिण्डोलनौ.....॥ 2 ॥
गौतम गाँधी कौ त्याग, भाग महावीर कौ
महाराना, बोस, भगत कौ राम शिवा वीर कौ
लक्ष्मी, दुर्गा, पद्‌मिनी सौ द्रोपदी के चीर सौ
याके कण-कण कौ भैया मोल अनमौलनौ ॥
पावन देस मेरौ प्रेम को हिण्डोलनौ..........॥ 3 ॥
ज्ञान कौ समन्दर काशी विस्वनाथ साम जू
श्रद्धा की फुलवारी सौ बन्यौ अवध रामजू
प्रेम की मल्हारन कौ विन्दावन गाम जू
होरी में स्याम रंग राधे पै उँडेलनौ ॥
पावन देस मेरौ प्रेम कौ हिण्डोलनौ......॥ 4 ॥

—

हिम्मत नाँय हारी

रमलो तौ राम-राम बेजा दुखियारी
कबहूँ मिलै रोटी कबहूँ तरकारी,
याई राह बीत गई उमरिया उधारी ॥ रमलो....
वारी ही भोरी भारी खेली जब आँगना
ऊधम करयौ और पैसा दादा ते माँगना।
पढबे की बात सुनै तौ खेतन पै भाजनौ

अँखियन में कजरा सो मग्गड़पन आँजनौ।
मैया की लाड़िली वो करती नाँय काम जी
याई राह बालपन में खेलि गुजारी॥ 1 ॥ रमलो.....
जीवन की देहरी वाकूँ पूरी नाँय लाँघनी
लँहगा फरिया चुन्नी नित्त अम्मा ते माँगनी।
भैया करि आयौ सगाई जमना के पार जी
कह–कह घर लाली दादा है गई हुसियार जी
सातों फेरन की बातें रमलो कहा जानती
याई राह देहरी ते ह्वै गई नियारी॥ 2 ॥ रमलो.....
गृस्ती की चाकी चाली छोरीऊ छोरीजी,
आठन के ऊपर एक पायौ वर जोरी जी।
बालम नाँय काम धाम कौ कछू नाँय करतौ जी,
बीरी चिलमैं पी पी कै दिन कारे करतौ जी।
मजदूरी करती रमलो, बच्चन कूँ पारती
हड्डिन कूँ कूट–कूट वा जीमती बिचारी॥ 3 ॥ रमलो.....
करमन कौ खोट नाँय जानै, भागन कूँ कोसै जी,
क्षण–क्षण फिरऊ गिरवी हो, राम के भरोसे जी।
मन में बू सोचै निसदिन, दो अक्षर पढ़ लेती,
अनजाने अनचाहे सुख सौं फिर लड़ लेती।
चिन्ता में डूबै उतरै, खुद गलती मानै जी,
याई राह संकट पर हिम्मत नाँय हारी॥ 4 ॥ रमलो.......

–रामदल व्यायामशाला
कृषि उपज मंडी, भीलवाड़ा–1

—

धूम जैपुर में मचाय आई

–श्री छुट्टन खां 'साहिल'

ऐसौ करिकैं गई मैं सिंगार, धूम जैपुर में मचाइ आई।
बड़ी चौपड़ पै घुंघटा उघार, सजन संग फोटू खिंचाइ आई॥
जौहरी देखि के हंसन लागे, गोरे रूप कूँ परखन लागे

मेला सौ बाजार में जुरिगौ टी.वी. पै भयौ परचार
फिलम की सी शूटिंग कराइ आई॥ ऐसौ करिकैं......
चूनर, चोली पहन घाघरौ, जानें मैं देखी भयौ बावरौ
रसिया करन लगे रस बतियाँ, टम्पू में ह्वैकें सवार
मुछैलन कूँ गूँठौ दिखाइ आई॥ ऐसौ करिकैं गई.....
शहर गुलाबी देखौ बाँकौ, हरकोऊ मेरे मन में झांकौ
मायके में सखियन सौं कहूँगी, नैनन में कजरा कूँ डारि
मैं लोगन कैं चूनौ लगाइ आई॥ ऐसौ करिकैं.......
संइयाँ जानें कितकूँ सटकगौ, गलता पै मेरौ पाँव रपट गौ
दइया, मइया करन लागी मैं, एक छैला नैं लई पुचकार
पतौ बाकूँ घर कौ बताइ आई॥ ऐसौ करिकैं.....
कोऊ कहै मोए चम्पा चमेली कोऊ नारि कहै अलबेली
चन्दमुखी कवियन नैं लिखि दई 'साहिल' नैं लिख दई कटार
रपट थाने में लिखाइ आई॥ ऐसौ करिकैं गई.....

—मंडी बाजार, कामां (भरतपुर)

—

जमाने के चार लोकगीत

—श्री वेदप्रकाश शर्मा 'वेदल

मैं तौ करूँगी पढ़ाई अपने नाम कूँ

प्यारी है रह्यौ भारी हेला, लग रह्यौ साक्षरता कौ मेला अपने काम कूँ।
मैं तौ करूँगी पढ़ाई, अपने नाम कूँ॥
दुनियाँ दै रही है जैकारौ,
पढ़िवे आय गयौ हरवारौ।
मैंनें सिगरौ काम संवारौ।
मोते कहन लगौ घरवारौ, चोखे काम कूं।
मत जइयौ तू सकारे, अपने गांव कूँ॥ मैं तौ करूँगी पढ़ाई, अपने नाम कूँ॥
पोथी पढ–पढ़ बने पटवारी,
उनकी इतरावैं घरवारी

पढ़िकैं इज्जत होय हमारी,
पीछे क्यों राखिंगी नारी, अपने पांव कूँ॥ मैं तौ करूँगी पढ़ाई, अपने नाम कूँ॥
औडर आय गयौ सरकारी।
अनपढ़ नाँय रहिंगे नर–नारी।
जड़ता की जंजीरें कट रहीं,
पोथी चौपारन पै बँट रहीं, सिगरे गांव कूँ॥ मैं तौ करूँगी पढ़ाई, अपने नाम कूँ॥
जब जनता कौ हियरा जागै।
डंकल पूंछ दबायकैं भागै
सिगरे मिट जाँएगे घोटाले।
नेतन के होंगे मुंह काले, पद के नाम कूँ॥ मैं तौ करूँगी पढ़ाई, अपने नाम कूँ॥

—

दिल्ली तू बनी महान

दिल्ली तू बनी महान, पल रही है खून हमारे ते।
तेरी रग–रग में छल छायौ है।
ऊपर ते डंकल आयौ है॥
मांथे पै करज बढ़ायौ है।
भारत कौ सीस झुकायौ है॥
तैनें नैंक न करी संभार, पल रही है खून हमारे ते॥ 1 ॥
नेता सग मौज उड़ावत हैं।
कुर्सी पै पैर जमावत हैं॥
हर्षद जैसे पल जावत हैं।
जो बैंकन कूँ लुटवावत हैं॥
तेरौ नांय कोई एतबार, पल रही है खून हमारे ते॥ 2 ॥
है भूख गरीबी बेकारी।
करतूत करीं तैनें कारी।
जनता पिस रही है बेचारी।
पग–पग पै बढ़ रही लाचारी॥
कर रहियै बंटाधार, पल रही है खून हमारे ते॥ 3 ॥
कालौ धन तैनें जोरौ है।

दल-दल मैं शासन बौरौ है॥
अपराध करावै तू भारी।
जल रही है केसर की क्यारी॥
तोपै भरी ना एक दरार, पल रही है खून हमारे ते॥ 4 ॥

—

घूँस सौं का डरनौ

कुर्सी पै जम मौज उड़ावैं, खून रहे हैं चूस।
घूँस सौं का डरनौ॥
धन की महिमा ऐसी बढ़ गई, होय दफ्तर में पूँछ।
घूँस सौं का डरनौ॥
चमचा अपनौ काम बनावैं, उनकौं भारी छूट
छूट कौ का कहनौ॥
छीना झपटी, सीना जोरी, मच रही चहुँ दिसि लूट।
लूट कौ का कहनौ॥
फाइल दब गई, देह पजर गई, बिन नोटन की पोट।
पोट कौ का कहनौ॥
भूखे मर रहे, होठ चिपक रहे, हम पै भयौ कहा खोट।
खोट कौ का कहनौ॥
अफसर मांगै, बाबू मांगै लै चमचन की ओट।
ओट कौ का कहनौ॥
प्रजातंत्र में, भीड़तन्त्र में, सबकूँ लग गये रोट।
रोट कौ का कहनौ॥
घूँस कौ गोला मन में लगि कैं भीतर कर गयौ चोट।
चोट कौ का कहनौ॥
चोर-चोर मौसेरे भाई, मिली ढोल में पोल।
पोल कौ का कहनौ॥
हर दफ्तर की हर टेबिल में, घुस गई भारी घूँस
घूँस कौ का कहनौ॥

तेरी देखै बाट मुरारी

राधा वंशीवट पै आय जइयौ, तेरी देखै बाट मुरारी।
तेरी देखै बाट मुरारी.......
सुनलै री वृषभानु दुलारी।
तू मोकूं प्राणन ते प्यारी॥
तो बिन चैन कहाँ मैं पाऊँ।
जैसे–तैसे रैन बिताऊँ॥
वंशी के बोलन पै राधा, नाच दिखायवे आय जइयौ।
तेरी देखै बाट मुरारी......
तेरी छवि ते मन हरषावै।
काहे तू मोकूँ तरसावै॥
तो बिन माखन कौन खबावै।
बाँसुरिया हू बिरहा गावै॥
तेरी मेरी ˘ोरी मिल जाय, माखन मोय खबाय जइयौ।
तेरी देखै बाट मुरारी........
जो राधा तेरी सखियाँ पूछैं।
तोते काऊ दिना जो रूठैं॥
उलटी सीधी ब। बनावैं।
मोते लड़वे कूँ उकसावैं।
विनकूँ सींग बतायकै राधा, मेरी पीर मिटाय जइयौ।
तेरी दैखै बाट मुरारी........
कुंजन में हम रास रचावैं।
इक दूजे कूँ गले लगावैं॥
नहीं करूंगौ तेरी चोरी।
राधा गोरी तू है भोरी॥
मेरी प्राणन प्यारी, अपने मीठे बोल सुनाय जइयौ।
तेरी देखै बाट मुरारी........

–प्रधानाध्यापक
रा.मा.वि. गुलपाड़ा वाया सीकरी (भरतपुर)

द्वै लोकगीत

—श्री सर्वोत्तम त्रिवेदी 'लघु'

नाज ते सब्जी मत लइयो

सब्जी मति लइयो, चमेली, सब्जी मति लइयो।
बेचिवे वारौ बेईमान, नाज ते सब्जी मति लइयो॥
मोटे छलना ते छानैगौ।
आधौ करिकैं ही मानैगौ।
अपनी ही अपनी तानैगौ।
फटकैगौ फिर, तोल में कम तोलै बेईमान।
आधौ भाव लगायगौ, तू ये हू तौ जान॥
पाँच रुपा मे, एक रुपा की सब्जी मति लइयो।
बेचिवे वारौ बेईमान, नाज ते सब्जी मति लइयो॥
सब्जी मति........
सब्जी भाव लगावै दूनौ।
मावस की कर देयगौ पूनौ।
वासी देय, लगावै चूनौ।
मारैगौ फिर तोल में, भरै न वाकौ पेट।
खून चूस सीधेन कौ, बननौ च्हावै सेठ॥
याकौ मोटौ पेट, भूलकै सब्जी मति लइयो।
बेचिवे वारौ बेईमान, नाज ते सब्जी मति लइयो॥
सब्जी मति.......

—

ज्यौं चंदन में गंध रमै

ज्यौं चंदा सँग रहै चाँदनी, तैसेही चिमटि रहूँगी रे।
ज्यौं सूरज सँग रहै रोसनी, तैसेही सिमटि रहूँगी रे॥
मर प्यार सागर, साजन! मैं सरिता वन जाऊँगी।

तेरी देखै बाट मुरारी

राधा वंशीवट पै आय जइयौ, तेरी देखै बाट मुरारी।
तेरी देखै बाट मुरारी.......
सुनलै री वृषभानु दुलारी।
तू मोकूं प्राणन ते प्यारी॥
तो बिन चैन कहाँ मैं पाऊँ।
जैसे–तैसे रैन बिताऊँ॥
वंशी के बोलन पै राधा, नाच दिखायवे आय जइयौ।
तेरी देखै बाट मुरारी......
तेरी छवि ते मन हरषावै।
काहे तू मोकूँ तरसावै॥
तो बिन माखन कौन खबावै।
बाँसुरिया हू बिरहा गावै॥
तेरी मेरी ‾ेरी मिल जाय, माखन मोय खबाय जइयौ।
तेरी देखै बाट मुरारी........
जो राधा तेरी सखियाँ पूछैं।
तोते काऊ दिना जो रूठैं॥
उलटी सीधी ब. । बनावैं।
मोते लड़वे कूँ उकसावैं।
विनकूँ सींग बतायकै राधा, मेरी पीर मिटाय जइयौ।
तेरी दैखै बाट मुरारी........
कुंन्नन में हम रास रचावैं।
इक दूजे कूँ गले लगावैं॥
नहीं करूंगौ तेरी चोरी।
राधा गोरी तू है भोरी॥
मेरी प्राणन प्यारी, अपने मीठे बोल सुनाय जइयौ।
तेरी देखै बाट मुरारी........

–प्रधानाध्यापक
रा.मा.वि. गुलपाड़ा वाया सीकरी (भरतपुर)

द्वै लोकगीत

—श्री सर्वोत्तम त्रिवेदी 'लघु'

नाज ते सब्जी मत लइयो

सब्जी मति लइयो, चमेली, सब्जी मति लइयो।
बेचिवे वारौ बेईमान, नाज ते सब्जी मति लइयो॥
मोटे छलना ते छानैगौ।
आधौ करिकैं ही मानैगौ।
अपनी ही अपनी तानैगौ।
फटकैगौ फिर, तोल में कम तोलै बेईमान।
आधौ भाव लगायगौ, तू ये हू तौ जान॥
पाँच रुपा में, एक रुपा की सब्जी मति लइयो।
बेचिवे वारौ बेईमान, नाज ते सब्जी मति लइयो॥
सब्जी मति........
सब्जी भाव लगावै दूनौ।
मावस कौ कर देयगौ पूनौ।
बासी देय, लगावै चूनौ।
मारैगौ फिर तोल में, भरै न वाकौ पेट।
खून चूस सीधेन कौ, बननौ च्हावै सेठ॥
याकौ मोटौ पेट, भूलकैं सब्जी मति लइयो।
बेचिवे वारौ बेईमान, नाज ते सब्जी मति लइयो॥
सब्जी मति.......

—

ज्यौं चंदन में गंध रमै

ज्यौं चंदा सँग रहै चाँदनी, तैसेही चिमटि रहूंगी रे।
ज्यौं सूरज सँग रहै रोसनी, तैसेही सिमटि रहूंगी रे॥
मेरे प्यारे सागर, साजन! मैं सरिता बन जाऊँगी।

सरस सरल सुचितन गंगासन पास तिहारे आऊंगी॥
सरित त्वरित, अठखेलि छोड़िकैं, तो में सिमटि रहूंगी रे॥
ज्यौं चंदा सँग......
ओ मेरे मधुकोस, चन्द्रमा! मैं तुम्हरे ढिंग आ जाउंगी।
तुमते निसृत जग में विस्तृत तुममें पुनः समा जाउंगी॥
भाप–ओस–हिम में ज्यों जल है, तैसेही लुपित रहूंगी रे॥
ज्यौं चंदा संग.....
ज्यौं चंदन में गंध रमै, तू ऐसेइ मोय रमा लीजो।
ज्यौं मँहदी में रंग रचौ, तू ऐसेइ मोय समा लीजो॥
महँदी–चंदन के उबटन बन, तो ते चिपटि रहूंगी रे॥
ज्यौं चंदा सँग........
मेरे मोती! मैं तेरी द्युति, तोते भई प्रकासित हूँ।
मैं तेरी आब, तू मेरो साब, रे फूल! तोहि ते सुरभित हूँ॥
पादप रे! पादप रे !!
पादप रे! मैं तेरी वल्लरि, तोते लिपटि रहूंगी रे॥
ज्यौं चंदा सँग...........

—चतुर्भुज प्रसाद, कुटी मोहल्ला, कामां

—

पाँच लोकगीत

—श्री कमलसिंह 'कमल'

बुरौ है चल्ला टी.वी. कौ

बुरौ ये चल्ला टीवी कौ याने दीनौ देश बिगार
प्रोगराम दिनभर सेई आवें ठप्प भयौ रुजगार।
बालक बच्चा पढ़ नाँय पावें होय रोज तकरार॥ बुरौ है.......
गन्दे गन्दे चित्तर आवें देखें सबई निहार।
कैसौ अजब जमानौ आयौ कपटी भये कहार॥ बुरौ है.......
लाज सरम उठ गई धरा सौं उठ गयौ पर उपकार।

विना पंख उड़ रहे हवा मैं भूल जगत आधार॥ वुरौ है......
गन्दौ भयौ चरित्र देश कौ पनपौ देह व्यौपार।
आदर्शन कूँ भूल सभी नैं वेशर्मी लई धार॥ वुरौ है.........
भूले प्रीत अतीत रीत अव हर घर के नर नार।
'कमलसिंह' अव का विधि होवै जीवन नैय्या पार॥ वुरौ है......

—

होरी में

रसिया नैं लूट लियौ सबरस, होरी में

छल करकें छलिया नै पकरी।
कीनी मोसौं खूब मसखरी।
कहती रह गई मै वस वस, होरी में।
रसिया नै.......
भर कैं लायौ रंग वोरी में।
रंग डारी मै रंग रोरी में।
पिचकारी मारी कस–कस होरी मैं।
रसिया नें........
हली चली ना ऐसी कर दई।
या होरी मैं लाजन मर गई।
ढीली कर दीनी नस–नस, होरी मे।
रसिया नैं.....
छोड़ी ना ओढ़ी निठुराई।
'कमल' वहुत मैनें हा हा खाई।
लूट लियौ जोवन हँस–हँस होरी में।
रसिया नैं लूट लियौ सव रस.........

—

मोहन नें आय आँख मीची होरी में

पहल–पहल मैं ब्याही आई।
रीति रिवाज जान ना पाई।

सरम सौं नजर करी नीची होरी में। मोहन........
छलिया नैं कीनी हुश्यिारी
छुपके सौं रंग में रंग डारी।
कौरी मैं भर कैं भीची, होरी में। मोहन नैं....
मीठी-मीठी बात बनाई।
चाल समझ याकी ना पाई।
खवाय दई मौकूं लीची, होरी में। मोहन नै......
रंग कीच भई मेरे अंगना।
टूट गिरौ झरपट में कंगना
कर गह कीच बीच होरी में। मोहन नैं.........
बड़ी अनौखी ब्रज की होरी।
'कमल' करी पूरन बर जोरी।
सहज सहज करकैं सींची, होरी में। मोहन नैं......
मोहन नैं आय आँख......

—

दरस कराय ला लांगुरिया

मेलौ लग रहौ देवी मइया पै दिखायला लांगुरिया।
दिखायला लांगुरिया दरस कराय ला लांगुरिया॥
जग जननी देवी मइया की महिमा अगम अपार।
आदि न अन्त अनन्त है रे सदां सुक्ख कौ सार॥
मेलौ लग रहौ......
अष्टभुजा धारी मैय्या कौ देव करैं गुनगान।
संकट हरनी मंगल करनी देय साँचौ वरदान॥
मेलौ लग रहौ.......
ऊँचे गिर पै मन्दिर प्यारौ लाल ध्वजा लहराय।
सोने के सिंहासन राजत मैय्या सिंह सजाय॥
मेलौ लग रहौ......
दूर-दूर सौं आँय भक्त गण होंवै भीड़ अपार।
घन्टन की घनघोर होत नित गूँजै जै-जै कार॥

मेलौ लग रहौ......
'कमल' सदा सुख देवे वारी जग जीवन आधार।
भक्तन के संकट टारन कूँ धारौ ये अवतार॥
मेलौ लग रहौ..........

—

परे हैं हिंडोला

बागन में छायौ सावन, परे हैं हिंडोला।
गौरा के संग में झूलें झूला पै भोला॥
घेर घुमेर नभ में उमड़ें घटाऐं।
इन्द्र धनुष अपनी बिखेरै छटाऐं।
नाँचै है धरनी अम्बर गावै छन्द रोला॥
गौरा के संग......
सहज–सहज सखियाँ झोटा लगावें।
मधुर मल्हार गायकें नाँच दिखावें।
झाँकी कूँ लख कैं मनुआ लेवै हिचकोला॥
गौरा के संग......
अमुआ की डारी कारी कोयलिया बोलै।
पपिहा की पी पी मन में मिसरी सी घोलै।
पुरवाई खुशबू लावै भर भर कै झोला॥
गौरा के संग....
बरसावै बदरी कारी रिमझिम बुंदरिया।
झूलत में उड़ उड़ जावै गोरा की चुंदरिया।
'कमल' फूल सौं होय कोमल दर्शन सौं चोला॥
गौरा के संग में झूले झूला पै भोला.......

–कन्हैया पान भन्डार, का

—

चार लोकगीत

—डॉ. राम प्रकाश 'सुमन

प्रीति कौ रंग बरसै

प्रीति कौ रंग बरसै, सब रहियौं रे हुसियार।
प्रीति कौ हरे—हरे फाग कौ रंग बरसै॥
फागुन आयो रे मन भावन, अंगन भरी उमंग।
भरि—भरि तान चंग संग नाचें, मदन करत लाचार॥
प्रीति कौ..........
हरौ अबीर उड़ि रह्यौ नभ में, पीरौ लाल गुलाल।
तकि कंचुकि पिचकारी मारें, नेह भरे हुरियार॥
प्रीति कौ..........
लाल—लाल टेसू फूले हैं, सेमल हुइ रहे लाल।
बन—बागन में कोइल कूकति, हिए जगावत मार॥
प्रीति कौ...........
बागन में अमवा बौराए, इत रसिया बौराए।
बौराए रसिया ना आए, घेरि रहे हुरियार॥
प्रीति कौ............
जिय तरसै मन तड़फै भारी, उमरि रही ना बारी।
कैसें मन में धरूँ धीर में, फूलि रही कचनार॥
प्रीति कौ.............
कली—कली पै भँमरा डोलें, रस लोलुप मदमाते।
तितली "सुमन" सुमन पै डोलै, खूब लुटावै प्यार॥
प्रीति कौ........

—

भली मनैगी फाग

संदेसौ आइ गयौ रे, मेरी भली मनैगी फाग।
संदेसौ हरे—हरे सदेसौ आइ गयौ.............

पिय आवत संदेश पाइ कैं, हिय में अति हुलसानी।
छम–छम पग पायल बाजत हैं, मधुर होत झनकार॥
संदेसौ आइ गयौ...........
बिधुरे–बिधुरे केस सँवारति, रचि–रचि माँग बनावै।
बीच माँग सिन्दूर लगावै, बेंदी रचत लिलार॥
संदेसौ आइ गयौ............
मधुर मिलन की सोचि–सोचि कैं, तन–मन फूलौ भारी।
कंचुकि के बंधन सब टूटे, जाग गयौ तन मार॥
संदेसौ आइ गयौ.............
"सुमन" सहेली सब बूझति हैं, कछू सँदेसौ आयौ।
हँसि मुसकाय कहत सैनन सौं, कल आवैं भरतार॥
सँदेसा आइ गयौ.............

—

एकता की होरी

सब गले मिलौ हरसाय, एकता की होरी।
राष्ट्रीय त्यौहार हमारौ, सिग भारत में होरी।
जन–जन सब जन गले मिलत ही, भेद–भाव मिटि जाय॥
एकता की होरी.........
हिन्दू–मुस्लिम सिख ईसाई सभी यहाँ है भाई।
भाईचारौ इत होरी में, और अधिक बढ़ि जाय॥
एकता की होरी..........
सिक्ख और हिन्दुन में झगरा, दोनन कौं दुखदाई।
हिल मिल कैं सब रहौ परस्पर होरी यहै बताय॥
एकता की होरी..........
हिन्दू–मुस्लिम कबहुँ परस्पर कहुँ–कहुँ करै लराई।
मिल–जुल के सब रहौ परस्पर, आग नांहिं फैलाय॥
एकता की होरी............
आजु विस्व बन्धुत्व जगत में देख लेउ खुद भाई।

सब देसन सौं करौ मित्रता "सुमन" सँदेसा पाय॥
एकता की होरी...........

—

सपरी

नाँहि अब हम पै जोग सधैगौ ऊधौ, कैसैं सपरी?
इक मन गयौ स्याम संग ऊधौ, मथुरा जबै पधारे।
दुसरौ मन मोपै है नांहीं, ध्यान धरें कहु का रे॥
कैसैं आराधें निरगुनियाँ.............कैसैं सपरी॥
जाऔ ऊधौ लौटि मधुपुरी, ऐसौ जतन विचारौ।
काहू विधि लै लाऔ मन कौ, साधें जोग तिहारौ॥
सब कौ मन ही है मोहनियाँ.....कैसैं सपरी॥
आँखें मूँदि ध्यान में बैठे, कछू न हमकौं दीखै।
कारे–कारे अंधकार में, स्याम–स्याम ही दीखै॥
लागी निर्गुन नाहिं लगनियाँ......कैसैं सपरी॥
कैसैं साधें जोग तिहारौ, कैसें भसम लगाबैं।
गोरे कोमल अंग हमारे, नंगी क्यों हुइ जाबैं॥
शरम में मरि हैं सबै गुजरिया.........कैसैं सपरी॥
हम सुकुमार जोग के लायक, तुम ही तनिक विचारौ।
लाज सरम तुमनें सब खोई, गयौ विवेक तिहारौ॥
तुमरी जोग पै लगनियाँ..........कैसैं सपरी॥
जोग पंथ तलवार–धार है, हम कैसैं चलि पैइ हैं।
शुक सनकादि ऋषि सब भूले, अवला कैसैं जैइ हैं॥
नांहिं है हम पै कोउ जतनियाँ..........कैसें सपरी॥
निराकार अज अलख अगोचर, मेरे मन नहिं भावै।
जाकौ रूप रंग बपु नाहीं, ताकौं कैसैं ध्यावै॥
साँची है सबको हैरनियाँ..........कैसैं सपरी॥
उधौ! निर्गुन ब्रह्म तिहारौ, तुम ही मन में ध्याऔ।
सगुन ब्रह्म वह स्याम सलौनौ, मथुरा ते लै आऔ॥

खुल गई भागन की किवरिया, कैसी जमकैं
बाजैं ढोलक.........................॥
नामकरन जब भयौ लाल कौ, लखन परौ है नाम।
अपरम्पार खुशी है मन में, छलक रहे हैं ज़ाम॥
सिगरी भीगी है चुंदरिया, कैसी जमकैं।
बाजैं ढोलक.........................॥
लखन लाल की दादी बत्तो, बाबा हीरालाल।
बाँट रहे खुश हैकैं भर–भर, ये लड्डुअन के थाल॥
पुलकित है रही आज नगरिया, कैसी जमकैं।
बाजैं ढोलक.........................॥
कुआ पूजन होय साँझ कूँ, सबके थिरकैं पाम।
रामकिशन बाजे बारिन कूँ, लुटा रयौ है दाम॥
लैकैं रुपियन की पुटरिया, कैसी जमकैं।
बाजैं ढोलक.........................॥
पार परौसिन झूम–झूम कैं, जच्चा रहीं गबाय।
सावित्री भाभी तौ देखौ, फूली नाँय समाय॥
पहरें डोलै लहँगा फरिया, कैसी जमकैं।
बाजैं ढोलक.........................॥
कमला बहन, भुआ रमकल्ली, मंद–मंद मुस्काय।
मीठी–मीठी बोलैं बानी, मन में मोद मनाँय
बजामें ये तौ बेला थरिया, कैसी जमकैं।
बाजैं ढोलक.........................॥
चाचा नेताराम अरु भैया, मोहन यूँ बतराय
समझ ना आबै यार हमारे, का छोड़ैं का खाय।।
धरकैं बैठे हैं, छबरिया कैसी जमकैं
बाजैं ढोलक.........................॥
भाबी अधर हवा में उड़ती, काऊ गिदानैं नाँय।
सबते कहती डोलै दुनियाँ, मेरी जेब के माँय॥
जाकी तिरछी है नजरिया, कैसी जमकैं।
बाजैं ढोलक.........................॥

मोहनी ताई सबते न्यारी, बन गई छम्मक छल्लो।
अँगरेजी में बोलै सबते, माई डियर हल्लो।।
होवै सुबह शाम दुपरिया, कैसी जमकैं।
बाजैं ढोलक............................॥
'व्रजवासी' कवि एक मनौती, प्रभु सौं सदा मनाय।
ऐसी सुंदर और शुभघड़ी, हर काऊ कैं आय।।
सुख ते कट जावै उमरिया, कैसी जमकैं।
बाजैं ढोलक............................॥

—

बस गई मनुवा में व्रज होरी रे

बस गई बस गई रे, मनवा में व्रज की ये होरी रे॥
मोहन अकेलौ, सखियन नें घेरौ।
कर–कर तोरी रे॥ मनवा में . ...॥
केशर मली, रंग छक–छक डारै
भर–भर कमोरी रे॥ मनवा में.......... ....॥
ग्वारिन बनायौ कन्हैया कूँ सबनै,
कर बरजोरी रे॥ मनवा में.........................॥
मन में सिहावै दै–दै कैं तारी,
हँस–हँस किशोरी रे॥ मनवा में............... ....॥
रूप बिगार कहैं, पुनि अइयो,
खेलन होरी रे॥ मनवा मे................. ....॥
'व्रजवासी' पा दरस, धन्य कर
जीवन झोरी रे॥ मनवा में..........................॥

—कामा (भरतपुर)

—

अपने घर कौ खावैं पहरैं, तौ भर जावै गागरिया

—प रमेशचन्द्र भट्ट चन्देश

भाभी– हमकूँ माल विदेसी मन भावन लै अइयो देवरिया।
लइयो देवरिया, हाट कूँ जइयो देवरिया।

देवर– घर में माल विदेसी कबहु भूल नहिं लाऊँ बाबरिया।
लाऊँ बाबरिया, कबहु नहीं लाऊँ बाबरिया।

भाभी– पार परौसन साड़ी पहरैं, अँगरेजी फैसन की।
क्रीम पाउडर पोत–पोत, लावैं ब्यूटि लेसन की।
माल विदेसी लाकैं सान बढ़इयो देवरिया।
हमकूँ माल विदेसी मन भावन लै अइयो देवरिया।

देवर– अरी बावरी माल विदेसी, पैसा जावै भारी।
पैसा जाय देस सौं बाहर, जीवन की है ख्वारी।
बढ़ै देस पै कर्ज़, कर्ज ते टूटै कामरिया।
घर में माल विदेसी कबहु भूल नहिं लाऊँ बाबरिया।

भाभी– संग सहेली जुर मिल हमकूँ ताने दैं मुँह जोर।
बात–बात पै सींग दिखावैं ललचावत मन मोर।
ऐसी मेरी बेकदरी अब ना करवइयो देवरिया।
हमकूँ माल विदेसी मन भावन लै अइयो देवरिया॥

देवर– कारौ आँखर भैंस बराबर तू का जानै नारि।
पाँयन आप कुल्हाड़ी मारै, करै न सोच विचारि।
अपने घर कौ खावैं पहरैं तौ भर जावै गागरिया।
घर में माल विदेसी कबहु भूल नहिं लाऊँ बाबरिया

—नीमघटा मौहल्ला
डीग, (भरतपुर)

—

मैं बालम वाय लुंगी

—डॉ. सत्येदव आजाद

जो हो महलों वारा, मैं बालम वाय लुंगी।
बी.ए. नाँय लुंगी, मैं एम.ए. नाँय लुंगी।
हाँSSS नाँय लुंगी, नाँय लुंगी
मैं बालम वॉय लुंगी, जो होय पैसा वारौ॥

मैं देवर वारौ नाँय लुंगी, जेठौ वारौ नाँय लुंगी।
हाँऽऽऽ नाँय लुंगी, नाँय लुंगी।
मैं वालम याय लुंगी, जो होय घरउ अकेलौ।
कारौ–कारौ नाँय लुंगी, मै गोरौऊ नाँय लुंगी।
हाँऽऽऽ नाँय लुंगी नाँय लुंगी
मैं वालम याय लुंगी, जो होय भोरौ भारौ॥
मेरठ वारौ नाँय लुंगी, नखलउआ नाँय लुंगी।
हाँऽऽऽ नाँय लुंगी, नाँय लुंगी
मै वालम याय लुंगी जो होय विरज कौ वारौ॥

–23/3, अर्जुनपुरा डीग गेट, मथुरा

—

तीन लोकगीत

– श्री छज्जूराम पाराशर

या देस की दसा सुधारौ

थोरौ–थोरौ देऔ सहारौ या देस की दसा सुधारौ।
आज अशिक्षा हमें हटानी, साक्षर सबहि बनाने हैं,
नन्हें मुन्ने बच्चा संग इस्कूलन में भिजवाने हैं,
ग्यान कौ सूरज चमकि उठै, भाजै अग्यान अँधारौ॥ या देस.॥
जनसंख्या पै करैं नियंत्रन, स्वस्थ हौंय सग नर नारी,
कठिन परिश्रम करैं खेत में, खूब बढ़े पैदावारी,
हटै गरीबी खुसहाली होय, जिही हमारौ नारौ॥ या देस.॥
बाल विवाह दहेज प्रथा अरु नसा बन्द करवानौ है,
रिस्वत खोरी चोर बजारी भ्रष्टाचार भगानौ है,
रोटी कपड़ा मकान दैकें सबकौ करैं गुजारौ॥ या देस.॥
उग्रवाद आतंकवाद नैं, करी देस की बरबादी,
भाई–भाई कौ खून बह रहौ, खतरा में है आजादी,
कासमीर, पंजाब अयोध्या, बनैं न मल्ल अखारौ ॥ या देस.॥

देवर– घर में माल विदेसी कबहु भूल नहिं लाऊँ बाबरिया।
लाऊँ बाबरिया, कबहु नहीं लाऊँ बाबरिया।
भाभी– पार परौसन साड़ी पहरैं, अँगरेजी फैसन की।
क्रीम पाउडर पोत–पोत, लावैं ब्यूटि लेसन की।
माल विदेसी लाकैं सान बढ़इयो देवरिया।
हमकूँ माल विदेसी मन भावन लै अइयो देवरिया।
देवर– अरी बावरी माल विदेसी, पैसा जावै भारी।
पैसा जाय देस सौं बाहर, जीवन की है ख्वारी।
बढ़ै देस पै कर्ज़, कर्ज ते टूटै कामरिया।
घर में माल विदेसी कबहु भूल नहिं लाऊँ बाबरिया।
भाभी– संग सहेली जुर मिल हमकूँ ताने दैं मुँह जोर।
बात–बात पै सींग दिखावैं ललचावत मन मोर।
ऐसी मेरी बेकदरी अब ना करवइयो देवरिया।
हमकूँ माल विदेसी मन भावन लै अइयो देवरिया॥
देवर– कारौ आँखर भैंस बराबर तू का जानै नारि।
पाँयन आप कुल्हाड़ी मारै, करै न सोच विचारि।
अपने घर कौ खावैं पहरैं तौ भर जावै गागरिया।
घर में माल विदेसी कबहु भूल नहिं लाऊँ बाबरिया

—नीमघटा मौहल्ला
डीग, (भरतपुर)

—

मैं बालम वाय लुंगी

—डॉ. सत्येदव आजाद

जो हो महलों वारा, मैं बालम वाय लुंगी।
बी.ए. नाँय लुंगी, मैं एम.ए. नाँय लुंगी।
हाँSSS नाँय लुंगी, नाँय लुंगी
मैं बालम बॉय लुंगी, जो होय पैसा वारो॥

सागर चरन पखारै जाके, हिमगिरि मुकट समान,
धवल सिंगार करै, मेरौ भारत देस महान, खेत जहाँ हरे भरे॥
राम कृष्ण गौतम गाँधी की जे है पावन धरनी,
गंगा जमुना मे न्हायवे ते, पार होय वैतरनी,
अधम न तेऊ अधम तरे, मेरौ भारत देस महान्, खेत जहाँ हरे भरे॥
सदा रह्यौ सोने की चिरिया, रिसी मुनिन की खान
सत्य अहिंसा दया धरम कौ, दियौ विस्व कूँ ग्यान,
सकल सिद्धान्त खरे, मेरौ भारत देस महान, खेत जहाँ हरे भरे॥
रामायण गुरुग्रंथ वाइविल गीता और कुरान,.
सर्वधर्म सम भाव सवहि कौ, करैं सदा कल्यान,
रहैं हिल मिल सगरे, मेरौ भारत देस महान, खेत जहाँ हरे भरे॥
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई सब हैं एक समान,
हम सयकौ है एक तिरंगा जैसौ अमर निसान,
सदा नभ में फहरे, मेरौ भारत देस महान, खेत जहाँ हरे भरे॥

–देहली गेट, कामां

-

रसीले लोकगीत

–श्रीमती ऊषा शर्मा

करेजा में लाग रही

करेजा में लाग रही, मेरौ जिया जानै।
सुनौ री सखि राजा तौ गये नौकरिया,
मैं धीरें–धीरें रोय रही .मेरौ जिया जानैं।
सुनौ री सखि राजा नैं भेजी एक पाती,
मैं धीरें–धीरें बाँच रही, मेरौ जिया जानैं।
सुनौ री सखि राजा नैं भेजी एक साड़ी,
मैं धीरे–धीरे काछ रही, मेरौ जिया जानैं।
सुनौ री सखि राजा तौ लाये सौतनिया
मैं धीरे–धीरे झाँक रही, मेरौ जिया जानैं।

-

हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, सग आपस में प्यार करैं,
जाति धर्म अरु सम्प्रदाय पै, बिना बात हम नाँग लरैं,
करैं आपसी झगरेन कौ हम, मिल जुल कैं निबटारौ ॥ या देस.॥
आन–बान अरु शान देस की, हरगिज ना घटने पावै,
अमर तिरंगौ सकल विश्व में, सगते ऊंचौ लहरावै,
भारत रहै अखण्ड सदा नाँय होय कबहू बटवारौ ॥ या देस.॥

—

फागुन की होरी

ग्वालन के संग सखी सामरौ गुपाल,
मारै पिचकारी अरु गेरत गुलाल॥
नांही करी मान्यौ नहिं, सखी सग सान दई,
रंग पिचकारी भरि श्याम तानि–तानि दई,
गोरी–गोरी गोपिन के रंग डारे गाल॥ मारै पिचकारी..॥
खेल सखि फाग रहीं, भीजि–भीजि भाग रहीं,
सामरे कौ संग सबइ जनम–जनम माँग रहीं,
झूम उठैं कामिनी नचाबै नंदलाल ॥ मारै पिचकारी...॥
राधे झकझोर दई, केसर में बोर दई,
मल्यौ है अबीर गात, माला हू तोर दई,
परस पाय प्रीतम कौ है गई निहाल ॥ मारै पिचकारी...॥
बाजै ढप ढोल चंग, झांझ नफीरी मृदंग,
अम्बर भयौ है लाल, देख सुर भये दंग,
नाच रही गोपी गीत गावैं ग्वाल बाल ॥ मारै पिचकारी..॥
सराबोर हैं बसन, रंग बिरंगौ बदन,
देह की न सुधि राधे प्रीति में भई मगन,
कहै सग कान्हा कैसौ करै री कमाल॥ मारै पिचकारी..॥

—

मेरौ भारत देस महान

मेरौ भारत देस महान, खेत जहाँ हरे भरे, खेत जहाँ हरे भरे॥
सुजला सुफला सस्य स्यामला, हरित पीत परिधान,

सागर चरन पखारै जाके, हिमगिरि मुकट समान,
धवल सिंगार करै, मेरौ भारत देस महान, खेत जहाँ हरे भरे॥
राम कृष्ण गौतम गाँधी की जे है पावन धरनी,
गंगा जमुना में न्हायबे ते, पार होय वैतरनी,
अधम न तेऊ अधम तरे, मेरौ भारत देस महान्, खेत जहाँ हरे भरे॥
सदा रह्यौ सोने की चिरिया, रिसी मुनिन की खान
सत्य अहिंसा दया धरम कौ, दियौ विस्व कूँ ग्यान,
सकल सिद्धान्त खरे, मेरौ भारत देस महान, खेत जहाँ हरे भरे॥
रामायण गुरुग्रंथ बाइबिल गीता और कुरान,.
सर्वधर्म सम भाव सबहि कौ, करै सदा कल्यान,
रहैं हिल मिल सगरे, मेरौ भारत देस महान, खेत जहाँ हरे भरे॥
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई सब हैं एक समान,
हम सबकौ है एक तिरंगा जैसौ अमर निसान,
सदा नभ में फहरे, मेरौ भारत देस महान, खेत जहाँ हरे भरे॥

—देहली गेट, कामां

-

रसीले लोकगीत

—श्रीमती ऊषा शर्मा

करेजा में लाग रही

करेजा में लाग रही, मेरौ जिया जानै।
सुनौ री सखि राजा तौ गये नौकरिया,
मैं धीरें-धीरें रोय रही ,मेरौ जिया जानैं।
सुनौ री सखि राजा नैं भेजी एक पाती,
मैं धीरें-धीरें बाँच रही, मेरौ जिया जानैं।
सुनौ री सखि राजा नैं भेजी एक साड़ी,
मैं धीरे-धीरे काछ रही, मेरौ जिया जानैं।
सुनौ री सखि राजा तौ लाये सौतनिया
मैं धीरे-धीरे झाँक रही, मेरौ जिया जानैं।

—

हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, सग आपस में प्यार करैं,
जाति धर्म अरु सम्प्रदाय पै, बिना बात हम नाँग लरैं,
करैं आपसी झगरेन कौ हम, मिल जुल कैं निबटारौ ॥ या देस.॥
आन–बान अरु शान देस की, हरगिज ना घटने पावै,
अमर तिरंगौ सकल विश्व में, सगते ऊंचौ लहरावै,
भारत रहै अखण्ड सदा नाँय होय कबहू बटवारौ ॥ या देस.॥

—

फागुन की होरी

ग्वालन के संग सखी सामरौ गुपाल,
मारै पिचकारी अरु गेरत गुलाल॥
नांही करी मान्यौ नहिं, सखी सग सान दई,
रंग पिचकारी भरि श्याम तानि–तानि दई,
गोरी–गोरी गोपिन के रंग डारे गाल॥ मारै पिचकारी..॥
खेल सखि फाग रहीं, भीजि–भीजि भाग रहीं,
सामरे कौ संग सबइ जनम–जनम माँग रहीं,
झूम उठैं कामिनी नचाबै नंदलाल ॥ मारै पिचकारी...॥
राधे झकझोर दई, केसर में बोर दई,
मल्यौ है अबीर गात, माला हू तोर दई,
परस पाय प्रीतम कौ है गई निहाल ॥ मारै पिचकारी...॥
बाजै ढप ढोल चंग, झांझ नफीरी मृदंग,
अम्बर भयौ है लाल, देख सुर भये दंग,
नाच रही गोपी गीत गावैं ग्वाल बाल ॥ मारै पिचकारी..॥
सराबोर हैं बसन, रंग बिरंगौ बदन,
देह की न सुधि राधे प्रीति में भई मगन,
कहै सग कान्हा कैसौ करै री कमाल॥ मारै पिचकारी..॥

—

मेरौ भारत देस महान

मेरौ भारत देस महान, खेत जहाँ हरे भरे, खेत जहाँ हरे भरे॥
सुजला सुफला सस्य स्यामला, हरित पीत परिधान,

सागर चरन पखारै जाके, हिमगिरि मुकट समान,
धवल सिंगार करै, मेरौ भारत देस महान, खेत जहाँ हरे भरे॥
राम कृष्ण गौतम गाँधी की जे है पावन धरनी,
गंगा जमुना में न्हायये ते, पार होय वैतरनी,
अधम न तेऊ अधम तरे, मेरौ भारत देस महान्, खेत जहाँ हरे भरे॥
सदा रह्यौ सोने की चिरिया, रिसी मुनिन की खान
सत्य अहिंसा दया धरम कौ, दियौ विस्व कूँ ग्यान,
सकल सिद्धान्त खरे, मेरौ भारत देस महान, खेत जहाँ हरे भरे॥
रामायण गुरुग्रंथ बाइबिल गीता और कुरान,.
सर्वधर्म सम भाव सबहि कौ, करै सदा कल्यान,
रहैं हिल मिल सगरे, मेरौ भारत देस महान, खेत जहाँ हरे भरे॥
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई सब है एक समान,
हम सबकौ है एक तिरंगा जैसौ अमर निसान,
सदा नभ में फहरे, मेरौ भारत देस महान, खेत जहाँ हरे भरे॥

–देहली गेट, कामां

रसीले लोकगीत

–श्रीमती ऊषा शर्मा

करेजा में लाग रही

करेजा में लाग रही, मेरौ जिया जानैं।
सुनौ री सखि राजा तौ गये नौकरिया,
मैं धीरें–धीरें रोय रही ,मेरौ जिया जानैं।
सुनौ री सखि राजा नैं भेजी एक पाती,
मैं धीरें–धीरें बाँच रही, मेरौ जिया जानैं।
सुनौ री सखि राजा नैं भेजी एक साड़ी,
मैं धीरे–धीरे काछ रही, मेरौ जिया जानैं।
सुनौ री सखि राजा तौ लाये सौतनिया
मैं धीरे–धीरे झाँक रही, मेरौ जिया जानैं।

सैण्डिल तेरी चाल

सैण्डिल तेरी चाल चलूँ कैसैं धरती तोपै पैर धरूँ कैसैं
सुसर बिके जब मैं हौंती हँसि–हँसि कैं नोट गिनाय देती
सास बिकी जब मैं हौंती रोय–रोय कैं रुदन मचाय देती
सैंडिल तेरी........
जेठ बिके जब मैं हौंती हँसि–हँसि कैं नोट गिनाय देती
जिठानी बिकी जब मैं हौंती रोय–रोय कैं रुदन मचाय देती
सैंडिल तेरी.......
देवर बिके जब मैं हौंती हँसि–हँसि कैं नोट गिनाय देती
दौरानी बिकी जब मैं हौंती रोय–रोय कैं रुदन मचाय देती
सैंडिल तेरी.......

—

पसली कौ दरद

पसली कौ दरद मरी मइया, कनिया कौ दरद मरी मइया
मैं मरी मैं मरी मैं मरी मइया, कनिया कौ....
अपनी कौ सुसर बुलाय दउँगी ओ नहीं ओ नहीं ओ नहीं मइया
अपनी कौ जेठ बुलाय दउँगी ओ नहीं ओ नहीं ओ नहीं मइया
अपनी कौ देवर बुलाय दउँगी ओ नहीं ओ नहीं ओ नहीं मइया
अपनी कौ बलम बुलाय दउँगी ओ नहीं ओ नहीं ओ नहीं मइया
कनिया कौ दरद गयौ मइया, पसली कौ दरद गयौ मइया, पसली कौ....

—

पायलिया बजनी

पायलिया बजनी मंगादो पिया
मइया के बोल गोरी कैसे लगें
सासुल के बोल राजा ऐसे लगैं
जैसे कडवी कचरिया खिला दई पिया–पायलिया.....

भाभी के बोल गोरी कैसे लगैं
जिठानी के बोल राजा ऐसे लगैं
जैसें चूल्है में लकड़ी जराय दई पिया-पायलिया.....
छोटी के बोल गोरी कैसे लगैं
दौरानी के बोल राजा ऐसे लगैं
जैसें कपड़े कैंची चलाय दई पिया-पायलिया.....
भैना के बोल गोरी कैसे लगै
नंदुल के बोल राजा ऐसे लगैं
जैसें आंगन में घोड़ी नचाय दई पिया-पायलिया....
मेरे भी बोल गोरी कैसे लगैं
जैसे चम्मच सौं रबड़ी खवाय दई पिया-पायलिया.....

इस पान फूल में बास नहीं

इस पान फूल में बास नहीं परदेशी पिया तेरी आस नहीं,
मैं लिख-लिख भेजूँ साड़ी में, तुम आओगे कौनसी गाड़ी में
गोरी काहेकू भेजौ साड़ी में, मैं आऊँगौ मारुती गाड़ी में
इस पान फूल.......
मैं लिख-लिख भेजूँ नगीना में, तुम आओगे कौनसे महीना में
गोरी काहे कूँ भेजौ नगीना मे, मैं आऊँगौ मई के महीना में
इस पान फूल ......
मैं लिख-लिख भेजूं जलेबी में, तुम आओगे कौनसी हवेली में
गोरी काहे कूँ भेजौ जलेबी में, हम आइंगे तुम्हारी हवेली में
इस पान फूल......
मैं लिख लिख भेजूं पतिया में, तुम आओगे कौनसी रतिया में
गोरी काहे कूँ भेजौ पतिया में, हम आईंगे पूनम की रतिया में
इस पान फूल.......

सैण्डिल तेरी चाल

सैण्डिल तेरी चाल चलूँ कैसैं धरती तोपै पैर धरूँ कैसैं
सुसर बिके जब मैं हौंती हँसि–हँसि कैं नोट गिनाय देती
सास बिकी जब मैं हौंती रोय–रोय कैं रुदन मचाय देती
सैंडिल तेरी........
जेठ बिके जब मैं हौंती हँसि–हँसि कैं नोट गिनाय देती
जिठानी बिकी जब मैं हौंती रोय–रोय कैं रुदन मचाय देती
सैंडिल तेरी.......
देवर बिके जब मैं हौंती हँसि–हँसि कैं नोट गिनाय देती
दौरानी बिकी जब मैं हौंती रोय–रोय कैं रुदन मचाय देती
सैंडिल तेरी.......

—

पसली कौ दरद

पसली कौ दरद मरी मइया, कनिया कौ दरद मरी मइया
मैं मरी मैं मरी मैं मरी मइया, कनिया कौ....
अपनी कौ सुसर बुलाय दउँगी ओ नहीं ओ नहीं ओ नहीं मइया
अपनी कौ जेठ बुलाय दउँगी ओ नहीं ओ नहीं ओ नहीं मइया
अपनी कौ देवर बुलाय दउँगी ओ नहीं ओ नहीं ओ नहीं मइया
अपनी कौ बलम बुलाय दउँगी ओ नहीं ओ नहीं ओ नहीं मइया
कनिया कौ दरद गयौ मइया, पसली कौ दरद गयौ मइया, पसली कौ....

—

पायलिया बजनी

पायलिया बजनी मंगादो पिया
मइया के बोल गोरी कैसे लगें
सासुल के बोल राजा ऐसे लगैं
जैसे कडवी कचरिया खिला दई पिया–पायलिया.....

भाभी कें बोल गोरी कैसे लगैं
जिठानी के बोल राजा ऐसे लगैं
जैसैं चूल्है में लकड़ी जराय दई पिया–पायलिया.....
छोटी के बोल गोरी कैसे लगैं
दौरानी के बोल राजा ऐसे लगैं
जैसैं कपड़े कैंची चलाय दई पिया–पायलिया.....
भैना के बोल गोरी कैसे लगैं
नंदुल के बोल राजा ऐसे लगैं
जैसैं आंगन में घोड़ी नचाय दई पिया–पायलिया....
मेरे भी बोल गोरी कैसे लगें
जैसे चम्मच सौं रबड़ी खवाय दई पिया–पायलिया.....

—

इस पान फूल में बास नहीं

इस पान फूल में बास नहीं परदेशी पिया तेरी आस नहीं,
मैं लिख–लिख भेजूँ साड़ी मे, तुम आओगे कौनसी गाड़ी में
गोरी काहेकू भेजौ साड़ी में, मैं आऊँगौ मारुती गाड़ी में
इस पान फूल.......
मैं लिख–लिख भेजूँ नगीना में, तुम आऔगे कौनसे महीना में
गोरी काहे कूँ भेजौ नगीना में, मैं आऊँगौ मई के महीना में
इस पान फूल ......
मैं लिख–लिख भेजूं जलेबी में, तुम आओगे कौनसी हवेली में
गोरी काहे कूँ भेजौ जलेबी में, हम आइंगे तुम्हारी हवेली में
इस पान फूल......
मैं लिख लिख भेजूं पतिया में, तुम आओगे कौनसी रतिया में
गोरी काहे कूँ भेजौ पतिया में, हम आईंगे पूनम की रतिया में
इस पान फूल.......

—

बिनु बालम नाँय कदर लुगाई कै

हो हो हों हो शरण शहनाई की,
बिनु बालम नाँय कदर लुगाई की।
सिर के ऊपर सिरका अरु उसके ऊपर साईं का,
दो मिनटों में चाल को बदलै क्या विश्वास लुगाई का॥
हो हो ......
छन कन–कन के तीन घूघरा मेल सौं मेल मिलाय दऊँगी।
जो मोते सासुल लड़ै लड़ाई टूकन कूँ तरसाय दऊँगी॥
हो हो ....
छन कन–कन के तीन घूघरा मेल सौं मेल मिलाय दऊँगी।
जो मोते ससुरा लड़ै लड़ाई आंचन कूँ तरसाय दऊँगी॥
हो हो ....
छन कन–कन के तीन घूघरा मेल सौं मेल मिलाय दऊँगी।
जो मोते जेठजी रहै प्यार सौं भूरी भैंस बंधाय दऊँगी॥
हो हो........
छन कन–कन के तीन घूघरा मेल सौं मेल मिलाय दऊँगी।
जो मोते देवर रहै प्यार सौं छोटी भैन दिवाय दऊँगी॥
हो हो.......

—

हमारे राजा हमकूँ बतामें

हमारे राजा हमकूँ बतामें चन्दा चाँदनी ।
हमारे राजा हमकूँ बतामें लीला गोदनी ।
ससुर हमारे मालिन के नौकर, सास हमारी फुलवा तोड़नी
हमारे राजा हमकूँ ....
जेठ हमारे धोबिन के नौकर, जिठानी हमारी कपड़ा धोमनी
हमारे राजा हमकूँ........
देवर हमारे भरभूँजा के नौकर, दौरानी हमारी भार झौंकनी
हमारे राजा हमकूँ.......
नंदेऊ हमारे भंगिन के नौकर. ननद हमारी गैल झारनी

हमारे राजा हमकूँ.....
बलम हमारे सरकारी नौकर, मैं तौ बैठी पलंग मौज मारनी
हमारे राजा हमकूँ.......

—

मैंनें मना करी बालम ते

मैंनें मना करी बालम ते सड़क पै मत खेलौ सट्टा ।
सासऊ बेची सुसरऊ बेचौ बनवाय लियौ अट्टा ।
चढ़ अट्टा पै पितंग उड़ावै उल्लू कौ पट्ठा ।
मैंनें मना करी बालम ते......
जेठऊ बेचौ जिठानिऊ बेची बनवाय लियौ अट्टा ।
चढ़ अट्टा पै नैन चलावै उल्लू कौ पट्ठा ।
देवर बेचौ दौरानिऊ बेची बनवाय लियौ अट्टा ।
चढ़ अट्टा पै भाभीयै छेडि फोरि रह्यौ ठट्ठा॥

—होली गेट, सुन्दावली रोड, नगर (भरतपुर)

—

तीन लोकगीत

—श्री भूरीलाल

लाटरी

बहना ठगवे कूँ नर–नार चली भारत में लाटरी॥ टेक॥
चार सखी बैठी बतरामें अपने–अपने दुक्ख सुनामें
पहली कहै बात सुन दारी, पति नें बेचे लोटा थारी
फिर लायौ टिकट खरीद परी घर टूटी खाट री॥ बहना....
दूजी कहै जुलम पति कीयौ, टिकट खरीदी घर भर दीयौ
कबहु नाय लाटरी आई, ओढ़न कूँ घर नाँय रजाई
फिर बालक जाड़े मरें सखी हम ओढ़ें टाट री॥ बहना......
तीजी कहै फटौ जाय हीयौ, भैंस बेच दई करजा कीयौ

छोरी कहै बात सुन मम्मी, भारत की सरकार निकम्मी
फिर पापा कूँ समझाय दियौ, घर सारौ काट री। बहना......
चौथी कहै पिया जुलम गुजारे, थार पराल बेच दिये सारे
मोसूँ कहै गहाय दै हँसली, नाहीं करत तोर दई पसली
फिर दियौ बिगार लाटरी नें सब घर कौ ठाट री॥ बहना......
सांसद और बिधायक दोऊ, नेंक न बोलैं मुख सौं कोऊ
जनता में कंगाली आई, इनकौ ना कोऊ बने सहाई
फिर कहते भूरीलाल परी सासन कूँ चाट री॥ बहना.......

—

-श्री गिर्राज पूजा-

श्री गोवर्धन गिर्राज की, महिमा अपरम्पार
सात दीप नौ खण्ड में, होवत जय जयकार॥
श्याम ब्रज बासिन ज्ञान करायौ, ब्रज माँहि गिर्राज पुजायौ,
इन्दर पूजा अति भारी, सब हरसामें नर नारी।
यो बोलें कृष्ण मुरारी, अब कहाँ कूँ करी त्यारी,
ब्रजबासी कहैं गुपाल, सुनौं सब हाल इन्द्र की पूजा।
या ब्रज में इन्द्र समान देव नहीं दूजा॥
इन्दर पूजा हित सुनों लाल ये सब सामान सजायौ। ब्रज में....
यों बोले कुँवर कन्हाई, चौं तुम्हरी मति बौराई
कब इन्दर दरस दिखाये कब सनमुख भोग लगाये।
सुरपति जग पालन हार कहैं नर नार इन्द्र करतारा।
बिन इन्द्र नहीं बरसै जग में जल धारा
हो जाय इन्द्र नाराज समझ फिर ब्रज पै संकट छायौ॥ ब्रज में.....
सुरपति कहा करै तुम्हारौ, जब जगत पिता रखवारौ
कहा इन्दर करै सहाई, जब कोप करें रघुराई
सब जुर मिल आज समाज, चलौ गिर्राज ध्यान उर लाऔ
वहां प्रेम सहित दरशन कर भोग लगाऔ
गिर्राज धनी है दीन बन्धु भक्तन कौ कष्ट मिटायौ। ब्रज में.......

कान्हा की सुन कैं बानी, ब्रज वासिन के मनमानी
पूआ पकवान मिठाई, सब छकड़न में भरवाई
ब्रजबाला गामैं राग अधिक अनुराग चलैं हरसाई
श्री गोवर्धन गिर्राज पहुँच गये जाई.....।
दरस परस हित नर नारिन अति मन मे मोद मनायौ॥ ब्रज में......
इक रूप चतुर्भुज धारौ, दूजौ श्री नन्द दुलारौ
कहैं दरसन करौ अघाई, गिर्राज पधारे आई
निज कर सौं भोग लगाय, चरण लिपटाय हर्ष अति सारौ
परिक्रम्मा रहे लगाय बोल जैकारौ।
'भूरीलाल' गिर्राज शरण में अति आनन्द मनायो॥ ब्रज में......

दधि चाखन दै मोय

मटकिया कोरी सी दधि चाखन दै मोय,
रोज गुजरिया तू आवै है सिर पै गागर भारी
ताजा–ताजा गोरस लावै टिक रही नजर हमारी
ग्वालनी छोरी सी, मैं समझाँऊ तोय॥ मटकिया.....
माखन कौ दै दान आज तू मतना देर लगावै
जो तू नाँहीं करै समझलै फिर पीछैं पछतावै
बात है थोरी सी, पुन्न तेरौ अति होय। मटकिया......
कहन हमारी पै सुन गोरी ध्यान नहीं जो लावै
सारौ दही छीन कै तेरौ ग्वाल बाल खा जावै
मचै फिर होरी सी, दोष न दीजौ मोय। मटकिया......
तू तौ लाला नन्द राय कौ नित प्रति धूम मचावै
करै अनीती सखियन के संग लूट–लूट दधि खावै
करै बर जोरी सी, सरम न आवै तोय॥ मटकिया....
अकड़–तकड़ में तुरत श्याम नें सिर सौं मटकी झपटी
कहते भूरीलाल छीन लई झट माखन की चपटी
लूट लई भोरी सी, ठाड़ी ठाड़ी रोय॥ मटकिया.....

—पूर्व चेयरमैन, मोहल्ला खटीकान
भुमिया बुर्ज के पास, कामां (भरतपुर)

साँवरिया सौं (चार लोकगीत)

– श्रीब्रजबिहारी शर्मा 'सुरील

कान्हा रे कान्हा

कान्हा रे कान्हा कान्हा फिर मुरली बजाना।
कुंजों में ब्रज गोपियन संग फिर रास रचाना॥
चोर–चोर माखन ब्रज बचपन लूट–लूट दही खायौ,
चूँनर खींच फोर नित गागार दिन–दिन हमें सतायौ।
जसुदा कूँ जब दियौ उल्हानौ सींग दिखा भग जाना॥
कान्हा रे कान्हा......
एक बार ब्रज कालीदह पै गेंद कौ खेल रचायौ,
मारी टोल गेंद गई दह में तू गेंदहि संग धायौ।
नाग नाथ काली के फन पै वंशी मधुर बजाना॥
कान्हा रे कान्हा............
गोवर्धन पुजवाय इन्द्र कौ ब्रज में मान घटायौ,
ब्रज पै कोप इन्द्र तब कीयौ भारी जल बरसायौ।
त्राहि–त्रहि ब्रज मची गोवर्धन नख पै तेरा उठाना॥
कान्हा रे कान्हा.....
ब्रज में लुक–छुप खेल–कामवन जब घनश्याम रचायौ,
ऐसे लुके विकल भये ढूँढत गिरि चढ़ दरश करायौ।
बंशी बजा लोक तिहु मोहे गिरि पद चिह्न बनाना॥
कान्हा रे कान्हा...........
बचपन ब्रजरज लोट–पोट छुप श्याम 'सुरीले' खाई,
हरि मुख में इक दिन माटी लख माँ जसुदा रिसियाई।
माँ कूँ मुख तिहु लोक दिखाकर मन्द–मन्द मुस्काना
कान्हा रे कान्हा...........

ऐसी बजाई बंसी

कान्हा, ऐसी बजाई वंशी तान कैं, तान कैं, तान कैं।
सुधि–बुध विसराई नाच उठा मन मोरा॥

नाचै प्रेम दिवानी जोगिन साँवरे, साँवरे, साँवरे।
तेरौ रंग ऐसौ चित पै चढ़्यौ चितचोरा॥
कान्हा, पनघट पहुंची धर गागर शीश पै, शीश पै, शीश पै
नभ घन गरजै, बरसै, दमकै विजुरी घनघोरा॥
कान्हा कुंजों में डोलूं तोहे ढूंढती, ढूँढती, ढूँढती।
म्हारौ विधग्यौ करीलौं में कोमल तन गोरा॥
कान्हा, आकैं उचा जा भारी गागरी, गागरी, गागरी
ठाड़ी यमुना पै भीजूँ तिहारे करूँ निहोरा॥

—

अरज करैं ब्रजनारी

ऊधौ, अरज करैं ब्रजनारी,
काहे निष्ठुर बने मनमोहन,
ब्रज नगरी तज डारी।
माखन चोर लूँट दही खायौ,
गागर फोर बहु भाँति सतायौ।
तबहु दई ना गारी॥
राधे व्यथित पड़ी महलन में,
विरहाकुल की विरहानल में।
देह जरै रतनारी॥
विरहन बन ब्रज की सुकुमारी,
कुंजन खोजत फिरत विहारी।
जोगिन बन मतवारी॥
चंचल, चपल, चतुर चन्द्रावल,
भूल गई चितचोरी छलबल।
जोहत वाट तिहारी॥
टौना जानें कुब्जा कहा कीन्हों,
सौतिन हरि वश में कर लीन्हों।
बैरिन भई हमारी॥

होरी में करी बरजोरी

वारे सांवरिया, होरी में करी जो मोते बरजोरी।
तौ तेरी कर–कर डारूँगी तोर, वारे सांवरिया॥
फोर गागर अकेली छेड़ौ पनघट पै।
तौ गारी दै कैं नचाय दऊँ शोर, वारे सांवरिया॥
रंग डार जो बिगारौ लहँगा पीहर कौ।
तौ बोलूँ कबहुँ न नन्द किशोर, वारे सांवरिया॥
फारी चूँनर जड़ी जो कोरी पचरंगी।
तौ फार कानरी बंसुरिया दूँ तोर, वारे सांवरिया॥
चोली फारी जो मरोर बइया अनमोली।
तौ खाय जहर मरूँगी, चितचोर, वारे साँवरिया॥
गाल मलौ जो गुलाल डार गलवइयाँ।
तौ गुलचा दै दै कैं नचाऊँ बरजोर, वारे सांवरिया॥
मुख, दृगन मरौ जो कुँनकुँम रोरी।
तौ कोड़ा मारूँगी 'सुरीले' पुरजोर, वारे सांवरिया॥

—चौक मोहल्ला, कामां (भरतपुर)

—

ब्रज दर्सन

— श्री भूरी सिंह राना

दर दिवार दर्पण भये, जित देखूं तित तोइ ।
कांकर पाथर ठीकरी, भये आरसी मोइ ॥
एकई नांक नकेल डारि दई अदर्कै ढीट लबार ।
ऐसेई कहुँ दो चारि जने तो फिरि जीवो दुसवार ॥ एकई.......
रहूं देवसी नें मन मारें चित्त कुचित्त हमारौ,
गैल गिरौ चादी कौ गुच्छा पीछें खोलो तारौ
जब तक मैं बाहिर ते आई खपरा डारे द्वार। एकई.......
खुसुर–पुसुर सुनि भजी सार में बिनैं बुलाइकैं लाई

लदर पदर भजि गये सखा भये कदरी ओर कन्हाई
छापौ दयौ घेरि लये मैंनें पकरे भुजा पसार। एकई........
हत प्रभ सी रह गई राना में बड़ी वेर पहचाने
लीले परि गये मारत-मारत मेरे हाथ पिराने
ऊबर निकरि सको ना मैं तो चोर जानि रही मार। एकई.....
बुद्धी भ्रष्ट करि दई मेरी डारो माया जाल
बुरी बनी अनजाने देखो मन में बहुत मलाल
जर्री वर्री दै रहे तबते भेसनि चढ़ौ बुखार। एकई.....

—

आजु गई दधि वेचन गुईयां नजरि परौ नंदलाल ।
आंखि परी किरकिरी न निकरी भई हाल वेहाल ॥
दिशा भूल है गई लाड़ो में मटुकी धरी उतार
हरि आये अपने निवारण ढिंग देखि भये लाचार
झाड़ा फूंकी करी विविध विधि भई निरमल तत्काल। आज........
आजु ऐन ढिंग ते देखे मैं मन्द-मन्द मुसुकाते
कैसौ सुन्दर रूप सलोनो आंखि न पलक सुहाते
जिनि देखे वे बोलि सके ना मन में रह्यौ मलाल। आज.....,
मनकी तो मैं जानि गई परि वे कहते सकुचात
में हाँ ना कछु कहि न सकी विष धरु ढीट खिजात
हाथु न रोकि सकी राना लै भजे अछूतौ लाल। आज....

—

आजु सखी सपने में मैंने पकरे नन्द किशोर –
भागे चपल चितइ मेरे तन-चंचल माखन चोर ॥
उचिटी नींद मेरी चिंता में जागी तीनि पहर में,
अचक-पचक घर आये नटखट मुरली कमरि में
मेरी झपकति आवति नींद तबई कूकर भौंकौ सौं जोर ॥ आज सखी....
हाल भुलाइत उठि देखी मैं पहलें दही दहेंड़ी
परछाई सी लगी मोइ वे चढ़ि रहे श्याम नसेंड़ी

चार पांच चढ़ि गये डंडा तब गह्यौ काछनी छोर ॥ आज सखी...
वे ऊपर सोइ रहे अटा में लौटि परे सुनि खांसी,
पकरी भुजा सम्हरिकैं मैंनैं लगति बात सब सांची,
मैया ढिंग लै जाइ रही तब खुली आँखि भयौ भोर ॥ आज सखी......

—